श्रीरामजी।

बाबरनामा

(अर्थात)

ज़हीरुद्दीन मोहम्मद बाबर बादशाह ग़ाज़ी

(का)

सचित्र जीवनचरित्र

जिसको

मुन्शी देवीप्रसाद कायस्थ मुनसिफ़ राज जोधपुर

(ने)

तुज़ुक बाबरी और दूसरी फ़ारसी तवारीखों की किताबों

(से)

सरल और सुपाठ्य हिन्दी भाषा में उल्था करके

रज़वी प्रेस दिल्ली
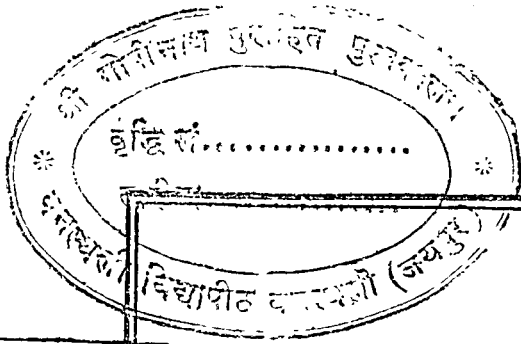
(में)

मीर हसन रज़वी के सुप्रबंध से छपवाकर प्रकाशित किया

भूमिका

मुगलों का राज हिंदुस्तान में बाबर से हुआ है बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, और औरंगज़ेब, ये ६ बड़े बादशाह इसी वंश में हुए हैं जिनके समय में दिन २ राज्य बढ़ता गया था इनमें से अकबर, जहांगीर, शाहजहां के राज्य का इतिहास तो हम पहिले छाप चुके हैं और बाबर का यह अब छपगया है औरंगज़ेब का छपरहा है हुमायूं का अभी नहीं छपा है लिखतो लिया गया है शीघ्र ही वह भी छपनेवाला है इसतरह कई बर्षों के परिश्रम से मुगलवंश के मुख्य २ बादशाहों का इतिहास हिंदी साहित्य के सहायकों की सेवा में अर्पण कियाजाता है आशा है कि उनके पसंद आने से आगे को हमारा और भी साहस इस विषय में बढ़ेगा.

बाबर का यह इतिहास तुज़ुक बाबरी सेही लिखा गया है जो उस का अपना लिखा हुवा रोज़नामचा है कहीं २ दूसरी तवारीखों से भी कुछ टीका टिप्पणि कीगई है और असल में जहां कहीं कुछ हाल बाकी रहगया था वह हबीबुलसियर और तवारीख फ़रिश्ता वग़ैरा से पूरा करदिया गया है।

हिजरी साल और तारीखों के साथ हिंदी तिथि महीने और संवत भी हमने अपनी ऐतिहासिक जंत्री से लिखदिये हैं यह जंत्री अभी न छपी है जब छपेगी तो हिजरी, अंगरेज़ी, और हिंदी तारीखों महीनों और बर्षों के मिलाने में इतिहास बेत्ताओं को बहुत काम देगी.

देवीप्रसाद

बाबर बादशाह की आमदनी

बाबर बादशाह ने तो अपने राज्य की आमदनी ५२ करोड़ टके की लिखी है जिनमें से ८।९ करोड़ टकों का मुल्क देशी राजाओं के नीचे बताया है पर कोई विशेष तफ़सील उसकी नहीं दी है तवारीख़ चग़ताई में अलबत्ता कुछ तफ़सील लिखी है वही हम यहां लिख देते हैं पर कई नाम ठीक नहीं पढ़े जाते हैं और कई में संदेह भी है यह ग्रंथ भी तुर्की भाषा से फ़ारसी में तर्जुमा हुआ है और इस तरह देशी नाम दोनों विदेशी भाषाओं में असावधानी से लिखे जाकर ऐसे घोर अशुद्ध होगये हैं जिनका शुद्ध करना असंभव है।

चग़ताई के तर्जुमे में लिखा है कि जो मुल्क सिंध से इधर बाबर के राज्य में हैं उनकी आमदनी यह है.

(१) सरकारें जो सतलज नदी से इधर हैं बहीरा, लाहोर, स्यालकोट, देपालपुर और कई मुल्क. ... टके ३६३१५९८९

(२) सरहिंद और उसके ज़िले १२९३१९८५

(३) हिसार फ़ीरोज़ा १३०७५१०४ (४) दिल्ली और अंतरवेद ३६९५०२५४

(५) मेवात जो सिकंदर लोदी के समय में अलग था १६९८१०००

(६) बयाना १४४१४९३० (७) आगरा २९७६९१९

(८) बीच की वलायत २९११९०००

(९) गवालियर ४२३५७४५० (१०) कालपी, संथड़ा, गर्रा. ४२८५५९५०

(११) क़न्नोज १३९६३३५८ (१२) संभल १३८४४०००

(१३) लखनऊ, बकसर. १३९८२४३३

(१४) खैराबाद १२९६५००० (१५) अवध भेड़ाइच १९७२१३६९

(१६) जोनपुर ४००८८३३३ (१७) कड़ामानकपुर १८३२७२९०

(१८) बिहार ४०५६०००० (१९) सरोई १५५१७५०६

(२०) सारन ११०१८६७९ (२१) जेपारन (चंपारन) १९०८६८६५

(२२) गोडा ४३३०३०० (२३) कुरहत के राजा के खिदमताने २५०००० टके चांदी के जिसके २७५००००

(२४) रणथंभोर २००००९ (२५) नागोर १३००००००

(२६) राजा बिक्रमाजीत राठौड़ (रणथंभोर)

(२७) राजा कालंजर (२८) राजा सिंहदेव (नरसिंहदेव)

(२९) राजा बिक्रमदे (भीकमदेव)

(३०) राजा बिक्रमचंद (भीकमचंद) और बहुतसे राजाओं का खिराज (कर) मालूम नहीं है।

यह सब मिलकर ४४३७८३४५७ टके इनमें राजा अदकरन (अतिनरायण) के खिदमतानेके २५००० चांदी के टके जिसके कालेटके (तांबे) २७५०००० मिलानेसे कुल ४४६५३३४५७ टके हुवे और ८।९ करोड़ का मुल्क बादशाह ने देशी राजाओं को पहिले से दियाहुवा लिखा है इस तरह ५२ करोड़ की बिधि मिलजाती है।

हमनेजोऊपर लिखे अंकों की जोड़दी तो ४६४२३३७०७ आई सो यह फर्क लेखक का दोषहै हम बाबरबादशाहके लिखने को ही सही मानते हैं उनके नीचे जितनेदेश थे उनकी आमदनी ५२ करोड़ टके की थी येटके ताम्बे थेक्योंकि तवारीख़ चग़ताई में ढाईलाख चांदी केटकेके २७५०००० काले टके लिखेहैं इससे यहभीजानाजाता है कि १ चांदी के टकेके ११ टके तांबे के होते थे अगर यह हिसाब सही होतो बाबरके पास पौने पांच करोड़ चांदी के टके बारूपया का मुल्क ही हिंदुस्तान के मुलकोंमेंसेथा।

जोधपुर (मारवाड़) ६ जून सन १९१० ई	——	देवीप्रसाद. मुन्सिफ़

فہرست مضامین بابرنامہ

आशय	पेज	आशय	पेज
सन ९०८			

ओ३म्

श्रीरामजी

बाबर बादशाह

सन ८९९ हिज्री (सम्बत १५५१।५२)

बाबर बादशाह ६ मोहर्रम सन ८८८ (फागुण सुदि ८ सम्बत १५३९) को पैदा हुए थे इनकी मां कतलक़ निगार खानम मग़ूलिस्तान के बादशाह यूनुसखां की बेटी और सुल्तान महमूद खां की बहन थी १२ वर्ष की उमर में अपने बाप उमर शेख़ मिरज़ा के पीछे ५ रमज़ान सन ८९९ (असाढ़ सुदि ७ सम्बत १५५१) को इंदजान में फरग़ाने के तख़्त पर बैठे बादशाही के वास्ते इन को जितनी बिपति भुगतनी पड़ी उतनी कम किसी बादशाह को पड़ी होगी

इनकी बापोती की विलायत (फ़रग़ाना) समरक़न्द, काशग़र, मग़ूलिस्थान, और बदख़्शान के बीच में थी उसवक़ समरक़न्द में इनके चचा अहमद मिरज़ा और मग़ूलिस्तान इनके मामूं सुल्तान महमूद खां बादशाह थे और वे दोनो ही पच्छिम और उत्तर से इनके बाप उमर शेख़ मिरज़ा पर चढ़े चले आरहे थे उमर शेख़ तो मरगये थे और यह इंदजान के

क़िले में लड़ने को तैयार हो बैठे थे पहिले सुल्तान अहमद मिरज़ा ने फ़रग़ाने के ३ शहरों को लेकर इंदजान को आघेरा मगर लश्कर में बीमारी फैलने और घोड़ों के मरजाने से सुलह करके लौट गया.

सुल्तान महमूदखां ने उत्तर की तर्फ़ से आकर अरवसी को घेरा बादशाह का भाई जहांगीर मिरज़ा और कई अमीर जो वहां थे क़िले से बाहर निकलकर लड़े और हार कर काशान में नासिर मिरज़ा के पास चलेगये जब महमूदखां भी वहीं जा पहुंचा तो सबने मिलकर काशान उसको देदिया तब महमूदखां अरवसी पर फिर आया और बीमार होकर अपने देश को चल दिया

फिर काशग़र और खुतन से अबाबक्र मिरज़ा भी चढ़कर औरगंज पर आया इधर से कई अमीर उससे लड़ने

बादशाह दुश्मनों से छुटकारा पाकर इंदजान से फ़रग़ाने में आये हसनयाक़ूब को वज़ीर बनाकर सबकाम सौंप दिया

शव्वाल के महीने (सावन भादों) में अहमद मिरज़ा मर गया अमीरों ने महमूद मिरज़ा को उसकी जगह समरक़न्द के तख़्त पर बैठा दिया.

सन ९०० (सम्वत १५५१।५२)

महमूद मिरज़ा ने समरक़न्द से बादशाह के पास वकील और तुहफ़े भेजे

याक़ूब हसन बादशाह से बदल कर जहांगीर मिरज़ा

को बादशाह बनाने के तोड़जोड़ करने लगा यह भेद पाकर अमीर और सिपाही बादशाह की दादी एसदौलतबेगम के पास गये जो बहुत स्यानी थी और सब काम उसी की सलाह से होते थे.

बेगम हुसेनयाकूब का काम उतार लेने के लिये क़िले सबीना से इंदजान को गई जहां हसनयाकूब था और बादशाह भी फ़रग़ाने से आये हसनयाकूब जो उसवक़्त शिकार को गया हुआ था ख़बर पाकर समरक़न्द को भाग गया और उसके नौकर चाकर पकड़े गये.

उधर रबीउल आख़िर के महीने (पोसमाह) जनवरी १४९५ में महमूद मिर्ज़ा भी मरगया उसका छोटा बेटा बायसनगर मिर्ज़ा बुख़ारा से आकर तख़्त पर बैठा उसके नाम के दुहाई बादशाह के निकाले हुये अमीर इब्राहीम सारू ने भी क़िले असफ़रे में आकर फेरदी बादशाह शाबान के महीने (बैशाखजेठ) में क़िले असफ़रे पर गये इब्राहीम २० दिन तक लड़कर हाज़िर होगया बादशाह ने जाकर खुजंद में भी अमल करलिया जो बादशाह के बाप की ग़फ़लत में अहमद मिर्ज़ा ने समर क़न्द के नीचे डाल लिया था वहांसे पास ही बादशाह का मामूं सुल्तान महमूदखां भी शाहरुखि-ये में ठहरा हुआ था बादशाह पिछली नाराज़ी दूर करने के लिये उससे मिलने को गये और ३ बेर उसके आगे घुटना[1] टेका वह उठकर मिला और लौटकर उसने भी घुटना टेका फिर बादशाह को अपने पास बुलाकर बराबर बैठाया और बहुत मेहरबानी की.

---

(१) घुटना टेक कर मिलने की पुरानी रीति मुग़लों में थी.

बादशाह २ दिन पीछे बिदा होकर अरखशी में अपने बा
प की क़बर की परिक्रमा देते हुए इंदजान में आगये

सन ९०१ (सम्वत १५५२।५३)

हिरात के बादशाह सुल्तान हुसेन मिरज़ा ने खुरासान
से हिसार और तिरमिज़ पर चढ़ाई की सुल्तान मसऊद मि
रज़ा जो उस मुल्क का मालिक था बग़ैर लड़े ही अपने
भाई सुल्तान बायसंकर के पास समरक़न्द में चलागया
खुसरोशाहने तिरमिज़ में खूब मुक़ाबिला किया जिससे
उसका नाम मशहूर होगया हिसार के मुग़ल सिरदार बा
दशाह के पास भी रमज़ान के महीने (जेठ असाढ़) में आ
ये जिनके साथ हमजा सुल्तान और महदी सुल्तान उज
बक भी थे जो कुछ बर्षों से शेबानीखां का साथ छोड़कर
सुलतान महमूद मिरज़ा के पास आरहे थे.

बादशाह तैमूरिया बादशाहों के दस्तूर से तोशक पर
बैठे थे जब वे दोनो सुल्तान और ममाक सुलतान आये
तो उनकी ताज़ीम को उठकर तोशक से उतरे और मिल
कर दोनो हाथ तकिये से लगाकर उन्हें बैठाया फिर मुग़
ल सरदारों ने आकर भेंट की.

शव्वाल के महीने (असाढ़ सावन) में बायसंकर मि
रज़ा और सुल्तान अली मिरज़ा दोनों भाईयों में बिगा
ड़ होकर लड़ाई हुई बायसंकर मिरज़ा लड़ाई में हारा और
सुलतान अली उसका पीछा करके बुखारा से समरकंद प
र चढ़आया बादशाह भी यह ख़बरें सुनकर समरकंद लेने
के विचार से सवार हुवे सुलतान हुसैन मिरज़ा भी हिरात

को लौट गया था इसलिये मसऊद मिरज़ा और खुसरोशाह भी हिसार और कुन्दुज़ से समरकन्द पर गये समरक़न्द के चारों तरफ़ घेरा लग गया बादशाह के और सुल्तान अलीमिरज़ा के मिलने की बात ठहरी दोनों अपने २ लश्कर से पांच २ सवार लेकर आये और घोड़ों पर खड़े २ मिलकर लौट गये मगर फ़तह किसी की भी न हुई जाड़ा पड़ने और समर क़न्द वालों के मिलावट न करने से सब अपने २ मुल्क को चले गये.

सन् ९०२ (सम्बत १५५३।५४)

बादशाह से और सुलतान अलीमिरज़ा से गरमियों में समरक़न्द पर फिर आने की बात ठहरी थी इसलिये बादशाह रमज़ान के महीने (जेठ असाढ़) में इंदजान से समरक़न्द को रवाने हुवे रस्ते में शीराज़ का क़िला फ़तह करते हुवे जब बाम के पास पहुंचे तो शहर के बाज़ारी और ग़ैर बाज़ारी आदमी उर्दू में सौदा करने को आये थे कि एकाएकी कुछ हुल्लड़ मचा और उनका माल लुटगया मगर बादशाह ने लश्कर को ऐसा अपने काबू में कर रक्खा था कि हुक्म होते ही सबने कुल माल लौटा दिया दूसरे दिन पहर दिन चढ़े तक १ डोरा और टूटी हुई सुई भी लश्कर में न रही थी जिसकी थी उसके पास पहुंच गई थी वहां से चलकर समरक़न्द से ३ कोस पूर्व की तरफ़ योरतखान में डेरे हुवे ४०।५० दिन तक बाहर और भीतर से लड़ाई होती रही फिर शहर घेर लिया गया मगर फिर ठंड ज़ियादा पड़ने पर बादशाह ख्वाजा दीदार के क़िले पर हट आये बायसंकर मिरज़ा ने शैबानी खां को तुर्किस्तान से बुलाया वह ख्वाजा दीदार के क़िले पर आया मगर

फ़तह करने का मौक़ा न पाकर समरक़न्द को लौट गया वहां उससे और बायसंकर से नहीं बनी और वह नाराज़ होकर तुर्किस्तान को चल धरा बायसंकर मिरज़ा ७ महीने तक तकलीफ़ उठाकर जब इधर से भी नाउमेद हुवा तो ४।३ सौ नंगे भूखे आदमियों से खुसरोशाह के पास चला गया.

सन ९०३ (सम्वत १५५४।५५) सन १४९७।८

बायसंकर मिरज़ा के निकल जाने की ख़बर सुनकर बादशाह ख़्वाजादीदार के क़िले से समरक़ंद को गये शहर के भले और बड़े आदमी सब सामने आये बादशाह रबीउल अव्वल महीने के आख़िर (मगसर बदि) में समरक़न्द पहुंच कर अमीर तैमूर के तख़्त पर बैठ गये वहां के सरदारों और अपने अमीरों के साथ बड़ी महरबानी की मगर साथियों के हाथ न तो लूट लगी थी और न बादशाह भी उनको कुछ फ़ायदा पहुंचा सकते थे क्योंकि एक समरक़न्द ही उनके हाथ आया था बाक़ी तमाम परगने सुलतानमिरज़ा के पास थे जिनमें लूट मार भी नहीं करसकते थे इसलिये वे लोग भाग २ कर इंदजान में चले गये और वहां जाकर जहांगीर मिरज़ा को बादशाह बनाने की खटपट करने लगे उधर सुलतान महमूदख़ां ने समरक़न्द लेने में कुछ मदद नहीं की थी तो भी इंदजान को वह लिया चाहता था बादशाह के पास सब मिलाकर १०००. आदमी रहगये थे जो लोग भागे थे वह बाग़ी होकर औज़ून हसन की अफ़सरी में जिसे बादशाह अख़्शी में छोड़ आये थे जहांगीर मिरज़ा को इंदजान पर चढ़ा लेगये थे बादशाह की मांओं. दादिओं.

और क़िलेदार ख्वाजा क़ाज़ी के ख़त आने लगे कि हमको घेरे में लेकर बहुत तंग कर रक्खा है जो हमारी ख़बर न लो-गे तो काम ख़राब होजावेगा समरकंद इंदजान के ज़ोर से लिया गया है जो इंदजान हाथ में रहेगा तो समरक़न्द भी फिर हाथ आजावेगा बादशाह उनदिनों में ऐसे बीमार होरहे थे कि रुई के फोहों से उनके मुंह में पानी टपकायाजा-ता था जीने की कुछ आस नरही थी जब कुछ अच्छे हु-ये तो रज्जब के महीने (फागणचैत) में शनिवार को समर-कंद से चले दूसरे शनीचर को ख़ुजंद में पहुंच कर सुनाकि पिछले शनीचर को जिसदिन समरकंद छोड़ा था इंदजा-न के हाकिम अलीदोस्त तुग़ाई ने बादशाह के सख्त बी-मार होने की ख़बर सुनकर क़िला बाग़ियों को सौंप दि-या है और बाग़ियों ने जो बादशाह का ख़ुजंद में आना सु-ना तो उनकी दादी, मांओं, और दूसरे लोगों की औरतोंको जो उनके साथ थे वहीं बादशाह के पास पहुंचा दिया.

बादशाह लिखते हैं कि "मैंने तो इंदजान के वास्ते समरक़न्द को छोड़ा[१] था अब इंदजान भी हाथ से गया मैं न इधर का रहा न उधर का। बहुत बड़ी मुश्किल में फंस गया जब से बादशाह हुवा हूं कभीं इस तरह नौकरों और बतायत से दूर न हुवा था और न कभी ऐसा दुख स-हा था

---

(१) तवारिख़ हबीबुल सियर में लिखा है कि बाबर बादशाह का अम-ल समरक़ंद में १०० दिन रहा था. जिल्द ३ तीसरा भाग पृ० २७५ बाबर के च-ले जाने पर मिर्ज़ा अलीअकबर समरक़ंद में आगया.

आखिर बादशाह ने खलीफ़ा को ताशकन्द में भेजकर खान (अपने मामूं) को बुलाया जब वह फ़ौज लेकर आया तो दोनों अखशी पर गये बाग़ी भी लश्कर लेकर आये और सुलह का बहाना करके खान को कुछ रिशवत देदी और फिर देने दिलाने का कौल करलिया. खान तो इतने ही पर राज़ी होकर चलागया और बादशाह के ७।८०० साथी भी इंदजान की फ़तह से नाउमेद होकर बादशाह को छोड़ गये क्योंकि उनके जोरू बच्चे इंदजान में थे बादशाह के पास कुल-२।३०० आदमी रहगये थे बादशाह यह हाल देखकर बहुत रोये और खुजंद में लौट आये.

वहां उन्होंने रमज़ान (बैशाखजेठ) का महीना तेरकरके सुलतान महमूद खां के पास आदमी भेजा और उसको बुलाकर फिर समरक़न्द पर चढ़ाई की सुलतान महमूदखां अपने बेटे सुल्तान मुहम्मदखां को ५।६ हज़ार सवारों से छोड़ गया मगर शेबाखां के आने की खबर सुनकर बादशाह को फिर नाउमेदी के साथ खुजन्द में लौट आना पड़ा.

वहां से बादशाह इंदजान लेने के इरादे से ताशकंद में महमूद खां के पास मदद मांगने के वास्ते गये खान ने कुछ दिनों पीछे ७।८०० आदमी उनके साथ कर दिये बादशाह खुजंद के पास होकर रातों रात गये और नसैनी लगाकर नसूख का क़िला जो खुजंद से १० कोस पर था चोरी से लेलिया मगर साथियों ने कहा कि इस क़िले से क्या होता है इसलिये उसको छोड़कर खुजंद में चले आये.

अब खुसरो शाह ने मसऊद मिरज़ा को निकालकर

साथ संकर मिरज़ा को हिसार में बैठाया और फिर इब्राही म मिरज़ा बलख में जा घेरा जहां कुछ अमीर हिरात के बादशाह सुलतान हुसैन मिरज़ा के भी थे वहां कुछ लड़ाई हुई इतने में मसऊद मिरज़ा भी खुसरो शाह के पास आ गया मगर उसने नमक हरामी करके उसको अंधा कर दिया.

सन ९०४ (सम्बत १५५५ (ई) सन १४९८।९९

बादशाह ने समरकन्द और इन्दजान पर चढ़ाईयां की मगर कुछ काम न बना और नाकाम खुदंज से लौटना प ड़ा खुदंज छोटी सी जगह सो दोसौ आदमियों के गुज़ारे की थी होसले वाला सरदार क्योंकर उसपर सबर कर सक ता था इसलिये बादशाह ने आदमी भेजकर मोहम्मद हुसे न[1] गोरगान से समरकन्द लेने के वास्ते सागरज़ का क़स बा मांग लिया और खुजंद से वहां जाकर रबात ख्वाजा का क़िला लेने को धावा किया मगर लोगों के खबरदा र होजाने से उसी तरह से दौड़ते हुवे सागरज़ में पीछे आ गये तब चढ़ी हुई थी तो भी १३।१४ फरसंग (६५।७०) मी ल के धावे मुफ़्त में खाये और इसतरह जाड़े भर आसपा स के किले लेने के लिये भटकते रहे जो मुग़लों और उ ज़बकों के डर से गांव २ में बनाये हुवे थे। उन दिनों बादशाह बड़ी तकलीफ़ में थे नहीं जानते थे कि क्या करें कहां जावें आखिर १ दिन अली दोस्त के १ सवार ने

(१) यह हिरात के बादशाह सुलतान हुसैन मिरज़ा का बेटा था

आकर कहा कि अलीदोस्त कहता है कि मुझसे बड़ा गुना-ह हुवा है अगर माफ़ करके इधर आओ तो मैं मर्गेबान का क़िला सौंप दूं और बंदगी करके पाप से छूट जाऊं.

बादशाह उसीवक़्त कि ख़ास पहुंगई थी और मर्गेबान २४ फ़रसंग (९६ मील) के क़रीब था सवार होकर २ रात औ-र २ दिन के धावे में वहां जा पहुंचे अलीदोस्त ने दरवाज़ा खोलकर बादशाह को अंदर लेलिया २४० आदमी बाद-शाह के साथ और सौएक अलीदोस्त के पास थे

दूसरे दिन बाग़ी अमीर औज़ूनहसन और सुलतान अहमद तंबल जहांगीर मिर्ज़ा और मुग़लों को लेकर मुर्ग़ेबान लेने को आये और कुछ लड़कर इंदजान को लौट गये क्योंकि बादशाह के पास सुलतान महमूद ख़ां की तर्फ़ से मदद आगई थी रैयत और सिपाही जो बाग़ि-यों के ज़ुल्मों से तंग होरहे थे बादशाह के पास झुंड के झुंड आने लगे थे

औज़ून हसन इंदजान के क़िले में अपने बहनोई ना-सिरबेग को छोड़ आया था उसने क़िले को मज़बूत कर के बादशाह के बुलाने को आदमी भेज दिये थे यह सु-नकर बाग़ियों में फूट पड़गई औज़ून हसन तो अख़्शी और सुलतान अहमद तंबल ओश को चलागया जहांगीर मिर्ज़ा भी अहमद तंबल के पास था.

बादशाह नासिरबेग का संदेसा पहुंचते ही दिन नि-कलने से पहिले मर्ग़ेबान से सवार होकर इंदजान में पहुंचे और २ वर्ष पीछे फिर अपने बाप के तख़्त पर बैठे अख़्शी और काशान में भी बादशाह का क़ब्ज़ा होगया

बाग़ी लोग कुछ निकलगये और कुछ पकड़े आये बादशाह ने औज़ून हसन को जान और माल की अमान देकर हिसार की तर्फ़ चले जाने दिया तंबल जहांगीर मिर्ज़ा को लेकर एक दो दफ़े ओश से इंदजान पर आया.

सन ९०५ हि० (सम्वत १५५६।५७) सन १४९९ से १५०० ईस्वी.

बादशाह ने लड़ाई का सामान करके १८ मोहर्रम (आसोज बदि ४।२९ अगस्त) को ओश पर चढ़ाई की उधर से अहमद तंबल आया दोनों लश्कर १ कोस की दूरी से खंदक खोदकर आमने सामने उतर पड़े ३०।४० दिन तक लड़ाई होती रही उधर खुसरो शाह ने बलख़ पर चढ़ाई करने के बहाने से बायसुंकर मिर्ज़ा को हिसार से बुलाकर मार डाला जो उसका मालिक था उसके नौकरों ने बादशाह को ख़बर दी.

फिर बादशाह की तंबल और जहांगीर मिर्ज़ा से लड़ाई हुई बाग़ी लोग हारकर भाग गये बादशाह लिखते हैं "कि मेरी पहली लड़ाई मैदान की यही थी ख़ुदा ने मुझको अपनी मेहरबानी से जिता दिया और इसको मैंने आगे के वास्ते अच्छा शकुन जाना."

सुबह ही इंदजान से बादशाह की दादी शाह सुल्तान बेगम इस मतलब से आईं कि जो जहांगीर मिर्ज़ा पकड़ा गया हो तो उसकी सिफ़ारश करें जाड़ा पड़ने से बादशाह भी इंदजान को लौट आये ओरकन्द पर नहीं गये जहां जहांगीर मिर्ज़ा था तंबल ने अपने भाई

को ताशकंद में भेजकर सुलतान महमूदखां से तोड़ जोड़ लगाया और उसके बेटे सुलतान मोहम्मदखां को ५।६ हज़ार सवारों से बुलाकर काशान पर चढ़ाई की बादशा ह भी यह खबर सुनकर इंदजान से चढ़े उसरात ऐसी स रदी पड़ी कि बहुत से आदमियों के कान सुकड़ गये- काशान में पहुंचने तक तंबल और सुलतान मोहम्म दखां वहां से चले गये थे बादशाह ने उनका पीछा कि या आखिर दोनों तर्फ़ के अमीरों ने इस तौर पर सुलह की कि खुजंद नदी से अखशी की तर्फ़ का मुल्क ज हांगीर मिरज़ा के और इंदजान की तर्फ़ का बादशाह के पास रहे और दोनों भाई मिलकर समरक़ंद पर जावें जब समरकन्द का तख्त बादशाह के हाथ आजावे तो इंद जान भी जहांगीर मिरज़ा को देदिया जावे यह सुलह रज्जब के महीने के अखीर (चेतबदि सं० १५५६ फ़रवरी १५००) में ठहरी उसके दूसरे दिन जहांगीर मिरज़ा और अहमद तं बल बादशाह से मिलने को आये बादशाह उनको अख शी की तरफ़ बिदा करके इंदजान आगये दोनों तर्फ़ के क़ैदी भी छूट गये.

अब अलीदोस्त का ज़ोर बहुत बढ़गया था उसने खलीफ़ा और इब्राहीम वग़ैरा अमीरों को जो बादशाह के बिखे (आपतकाल) में साथ रहे थे निकाल दिया और उसका बेटा मोहम्मद दोस्त बादशाहों की तरह से कचहरी दरबार और खाना पीना करने लगा बादशाह का इतना भी अखतियार नहीं रहा कि उसको ऐसी बातों से रोक सकें क्योंकि तंबल जैसा दुश्मन पास ही उसको हि

मायत करने के लिये बैठा हुवा था। गरज़ कि बादशाह को उनदिनों में उन बाप बेटों से बहुत तकलीफ़ और ख्वारी पहुंची

अहमद मिरज़ा की बेटी आयशा बेगम से बादशाह की सगाई उनके बाप और चचा ने बचपन ही में करदी थी अब आवान के महीने (चैत बैसाख सम्वत १५५७। मार्च १५००) में शादी हुई बादशाह लिखते हैं कि "ब्याह के शुरू में मेरी मोहब्बत बुरी नहीं थी मगर पहिली शादी थी इस लिये शर्म के मारे १३। १५ और कभी २१ दिन में १ बार उसके पास जाता था फिर वह मोहब्बत भी नहीं रही और खिफ़्फ़त ज़ियादा बढ़गई मेरी मां महीना ४० दिन में सख्ती से झिड़क कर भेजती थी उन्हीं दिनों में उससे १ लड़की हुई" यह लिखकर बादशाह ने १ बाज़ारी लड़के बाबरी नाम पर दिल आजाने और शर्म के मारे अपना हाल छिपाने को नंगे सिर और नंगे पांव गली कूचों तथा बाग़ बग़ीचों में फिरने का सच्चा २ हाल लिखा है.

उन्हीं दिनों समरक़न्द में भी सुलतान अली मिरज़ा और मोहम्मद मजीद तरखां से बिगाड़ होगया तरखां ने सब मुल्क और माल पर अपना क़ब्ज़ा कर रखा-था मिरज़ा के हाथ कुछ भी नहीं आता था मिरज़ा-ने तंग आकर मजीद तरखां को पकड़ना चाहा मगर उसने होशयार होकर मिरज़ा को उसके मुसाहबों समेत पकड़ लिया और बादशाह को बुलाया बादशाह ज़ीक़ाद के महीने (छ. जेठ असाढ़ - जून) में सवार हुवे और जहांगीर मिरज़ा के वास्ते डाक बैठा आये शैबानी खां ने

भी बुखारा पर चढ़ाई करदी बादशाह जब योरतखान[1] में पहुंचे तो मजीदतरखां वग़ैरा समरक़ंद के अमीर आकर मिले और समरक़ंद लेने की सलाह करने लगे जो ख्वाजा याह्या के हाथ में था इतने में ही ख़बर आई कि शेबाख़ां[2] बुख़ारा लेकर समरक़ंद पर आरहा है और सुलतान अलीमिर्ज़ा की मां ज़ुहराबेगम आग़ा ने यह कहला दिया है कि जो तू मुझे लेवलेगा तो मेरा बेटा तुझे समरक़ंद देदेगा और तू उसके बाप की विलायत (बुख़ारा) उसको देदेना.

बादशाह यह ख़बरें सुनकर समरक़न्द के पास से केश को चलेगये जहां समरक़ंद के अमीरों के क़बीले (जोरू बच्चे थे)

सन ९०६ हि. (सम्वत १५५७।५८) सन १५००।१ ई.

शेबाख़ां उस औरत के बुलाने से आकर समरक़ंद के बाहर ठहरा दोपहर को सुलतान अलीमिर्ज़ा भी अपने सरदारों और नौकरों से ख़बर किये और सलाह लिये बिना ही कुछ आदमियों के साथ ख़ान के पास गया ख़ान भी अच्छी तरह से नहीं मिला और मिले पीछे भी अपने से नीचे बैठाया यह सुनकर ख्वाजा याह्या वग़ैरा भी ख़ान से जा मि-

(१) समरक़ंद से १ फ़रसंग (५ मील)

(२) यह चंगेज़ख़ां के बेटे जूतीख़ां के वंश में शेबानाम १ ख़ान की औलाद में था इससे शेबानी कहलाता था नाम मोहम्मदख़ा था बाबरने कहीं शेबाख़ां और कहीं शेबकख़ां लिखा है.।

ले। वह खसम की भूखी बेवा इसतरह अपने बेटे का घर खराब करके खान के पासगई खान ने येक दो दिन भी उसको कुछ खातिर नहीं की बल्कि गूमा और गूनची (खवास, उपस्त्री,) के बराबर भी खयाल नहीं किया। उधर सुलतान मिरज़ा भी जाकर घबराया और पछताया। उसके साथ वालों ने चाहा कि उसको लेकर भाग जावें मगर उसने न चाहा क्योंकि उसकी मौत आपहुंची थी और ४।५ दिन पीछे मारागया फिर शेबाखां ने समरकंद के और भी कई बड़े २ आदमियों को मारा.

बादशाह शेबानी खां के समरकंद लेलेने की खबर सुनते ही देश के हिसार को चलादिये और मजीद तरखां बगैरः समरकंद के अमीर भी उनका साथ छोड़ कर चले गये खुसरोशाह ने बादशाह के घराने पर उतना जुल्म किया था तो भी उनको लाचार उसके इलाके में से निकलना पड़ा उनका इरादा अपने छोटे खानदादा उलंबाखां (सुलतान महमूदखां के छोटे भाई) के पास जाने का था मगर न जा सके और पहाड़ों की तंग घाटियों में तकलीफें उठाते और घोड़े ऊंट खपाते हुवे बड़ी मुश्किलों से यारदेलाक नाम किले में पहुंचे वहां सुना कि शेबानीखां समरकंद के किले में ५०० आदमी रखकर ३। ४ हज़ार आदमियों से ख्वाजा दीदार के परगने में जा बैठा है बादशाह के पास सब मिलकर २४० आदमी अच्छे बुरे थे तो भी उन्होंने १ दफ़े फिर समरकंद जाने की हिम्मत करके रातों रात धावा किया मगर किले वालों को खबर होगई थी. इसलि-

ये लौट आये फिर २ दिन क़िले सफ़ेद में बैठे हुवे ग-
पें मारते २ समरक़ंद पर धावा बोल दिया और आधी
रात को वहां पहुंचकर कुछ जवानों को अंदर भेजा जि-
न्हों ने ताला तोड़कर दरवाज़ा खोलदिया बादशाह दिन
निकलने से पहिले २ कि शहर वाले अभी सोही रहेथे
शहर में दाख़िल होगये किलेदार भाग कर शेबा खां के
पास गया फिर वो शहर वाले भी ख़बर पाकर दुआयें
देते हुवे आये और खाना भी लाये कुछ उजबकों ने
शहर के १ दरवाज़े पर जम कर लड़ाई शुरू की बाद
शाह १०।१५ आदमियों से उनपर गये उधर से शेबानीख़ां
भी दिन निकलते ही घबराया हुवा ५५० आदमियों से
दरवाज़े पर आपहुंचा बादशाह लिखते हैं कि "ख़ूब क़ाबू
में आगया था मगर हमारे पास आदमी बहुत कम
थे.

शेबाखां भी क़ाबू न देखकर लौट गया शहर के
बड़े और भले आदमियों ने आकर बादशाह को मुबा-
रक बाद दी बादशाह लिखते हैं कि "१४० बर्ष से हमा
रे घराने का तख़्त समर क़ंद में रहा है गैर बाग़ी ने आ
कर दबा लिया था ख़ुदा ने मुझे फिर दिया जिस तरह
यह मेरे हाथ आया है उसी तरह सुलतान हुसेन मिर-
ज़ा ने भी ग़फ़लत में हिरात को लिया था उसमें और
इस काम में बड़ा फ़र्क़ है.

(१) सुलतान हुसेन मिरज़ा बहुत से काम किया हु
और बहुत देखा हुवा बड़ी उमर का बादशाह था.

(२) उसका दुश्मन यादगार मोहम्मद मिरज़ा १७।१८

बर्ष का छोटा लड़का था

(३) दुश्मनों में पूरे हाल के जाननेवाले मीर अली मिरज़ा ने आदमी भेजकर ऐन ग़ाफ़ली में बुलाया था.

(४) उसका दुश्मन क़िले में नहीं था बाग़ में शराब पिये हुये गाफ़िल पड़ाथा. और उस रात उसकी ड्योढ़ी पर ३ ही आदमी थे और तीनो ही नशे में धुत.

(५) इतनी बड़ी गाफ़िली में मिरज़ा हुसेन ने आकर हिरात लिया था.

---

(१) और मैं समरकंद लेते वक्त १९ ही वर्ष का था मैंने बहुत काम देखे थे न कुछ तजुर्बा (अनभव) हुवा था.

(२) मेरा ग़नीम शैबा खां जैसा बहुत देखा हुवा और बड़ी उमर का तजुर्बा किया हुवा आदमी था.

(३) मुझे समरकंद में किसी ने नहीं बुलाया था हां लोग मुझको चाहते ज़रूर थे मगर शैबाखां के डर से कोई उस बात का ख़याल भी नहीं कर सकता था.

(४) मेरा ग़नीम क़िले में था.

(५) मैंने दो बार आकर ग़नीम को हुशयार भी कर दिया था."

कुछ दिनों पीछे शैबाखां के क़बीले आगये और वह समरक़न्द के पास से बुखारा को चला गया. बादशाह का काम बढ़गया उनके भी क़बीले इंदजान से आगये आयशा बेगम से लड़की हुई यह पहली औ-

लाद बादशाह की थी जो ३०।४० दिन पीछे मर गई.

बादशाह ने समरकंद लेकर आसपास के ख़ानो और सुलतानों के पास भी आदमी भेजकर मदद मं गाई पर जितनी उम्मेद थी उतनी नहीं आई अबूबकर की तरफ़ से ४००, जहांगीर मिरज़ा की तर्फ़ से २००, आदमी आये सुलतान हुसेन मिरज़ा जैसे तजरुबे वाले बाद शाह ने जो शेरखां की चाल ढाल को ख़ूब जानता था कुछ मदद नहीं भेजी न बदीउलज़मान मिरज़ा ने किसी को भेजा ख़ुसरो शाह के तरफ़ से भी डर के मारे कोई न हीं आया क्योंकि उसने बादशाह के घराने से बहुत बु राई की थी.

बादशाह ने शव्वाल के महीने (बैशाखजेठ) में शे बाखां के निकाल ने को चढ़ाई की उधर से शेबा खां भी आया दोनो आमने सामने खंदक खोदकर बैठ गये रोज़ इधर उधर के सवार निकल २ कर लड़ते थे बाद शाह के पास फिर कुछ मदद आगई आख़िर १ बड़ी लड़ाई हुई बादशाह की फ़ौज हारी मुग़ल जो मदद को आये थे वे बादशाही उर्दू को लूटकर चम्पत बने.

बादशाह लिखतेहैं कि "इन कमबख़्तों का यही मा मूल रहा है कि ज़रा हार हुई लूट खसोट कर अलग हुवे."

बादशाह के अच्छे २ आदमी मारे गये और बहुत से भागकर ख़ुसरो शाह के पास कुंदज़ में चलेगये बादशाह लौटते हुवे घोड़े समेत नदी में गिरे घोड़े पर पाखर पड़ी थी और ख़ुद भी बख़्तर पहिने हुवे थे इसलिये निक लने में मुशकिल पड़ी निकलते ही पाखर काट कर

फेंकदो और आम पड़ते २ समरक़ंद में पहुंचगये क़बीलों को अपने के क़िले में भेज दिया खुद छूड़ी सवारी से समरकंद के क़िले में रहे ३ दिन पीछे शेबाखां भी आगया शहर को घेर लिया जब वह शहर के पास आता था तो बादशाह क़िले के दरवाज़े पर से तीर मार मार कर उसको पास नहीं आने देते थे इसतरह बहुत दिनों तक लड़ाई होती रही नाज अंदर नहीं आने पाता था ग़रीब लोग कुत्तों और गधों का मांस खाते थे घोड़ों को पत्ते चराते थे लकड़ियों का बुरादा भी उबाल २ कर घोड़ों को देते थे बादशाह ने हर तर्फ़ आदमी भेजे और मदद मांगी-मगर जब हार से पहिले ही किसी ने मदद नही दी थी तो अब कौन देता.

बादशाह लिखते हैं कि "पिछले लोगों ने कहा है कि क़िला मज़बूत रखने के लिये सिर चाहिये २ हाथ चाहिये और २ पांव चाहिये सो सिर से सरदार है हाथ मदद हैं जो २ तर्फ़ से आवे और पांव सामान और पानी है। जो लोग हमारे पास थे और जिनसे मदद की उम्मेद थी वे दूसरे ही ख़याल में पड़े हुवे थे सुलतान हुसेन मिर्ज़ा जैसे मरदाने और स्याने बादशाह ने हमारे वास्ते मदद तो क्या तसल्ली के लिये ईलची भी नहीं भेजा और शेबा खां के पास वकील भेजदिया सुलतान महमूद खां खुदजंगी आदमी नहीं था सिपाहीगरी से भी खाली था.

सन ९०७ (संवत १५५८।५९) सन १५०१।२.

जब कहीं से मदद न पहुंची और क़िले में कुछ सामान भी नहीं रहा तो बादशाह शेबानी खां से सुलह कर-

के रात को बाहर निकले मां को तो साथ ले आये औ
र बड़ी बहन खानज़ाद खानम निकलते २ शैबाखां के हाथ
पकड़ गई रात अंधेरी थी बहुत तकलीफ़ हुई बादशाह
चलते २ पीछे फिरकर देखने लगे कि कितने सवार पीछे र-
ह गये हैं परन्तु घोड़े का तंग टूट गया काठी लोट गई
और बादशाह ज़मीन पर गिर पड़े पर उसीदम उठकर स
वार होगये जब दूसतरह से भागते भटकते गांव खलीलमें
पहुंचे तो कहा कि मरने से बचे। यहां खाना भी मिला
जिससे भूख भी जाती रही वे लिखते हैं कि "उमर भर में
ऐसा आराम और अमन[1] नहीं मिला था"

फिर बादशाह ताशकंद में अपनी ननसाल के लो
गों से मिलने को गये वहां उनकी मां बीमार होगई उन
को उमेद थी कि मेरे खानदादा (सुलतान महमूद खां) को
ई वलायत या परगना देंगे मगर उसने कुछ नहीं दि
या. बादशाह कई दिन वहां रहकर दकत नाम १ गां-
व में चले आये जो परगने आरावते के पहाड़ों में था
और एक मुखिया के घर में उतरे वह ७०-८० बर्ष का
बूढ़ा था और उसकी मां १११ बर्ष की उमर में थी
जब तैमूरबेग हिन्दोस्तान में आये थे तो उसका को-
ई रिश्तेदार उसलश्कर में था वह बात उसको याद
रहगई थी और कभी २ उसका ज़िकर किया कर

(१) राजा बुद्धसिंह से जब बूंदी छूटगई थी तबउन्होंने भी ऐसा कहा था:

दोहा. भलीभई बूंदीगई तब सुख पायो देह॥
मित्र कुटंबी बांधवा जीनो आयो छेह॥१॥

ती थी वह मुखिया इसी औरत से इसी गांव में पैदा हुआ था और अब उसके पोते पर पोते सब मिलाकर ९६ आदमी मोजूद थे और मरे हुवों को मिलाकर २०० तक होते थे.

बादशाह जबतक चकत में रहे अकसर नंगे पैर पहाड़ों में फिरा करते थे इसलिये उनके पैर भी पत्थर के समान होगये थे साथी जो इसतौर से नहीं फिर सकते थे बिदा होकर इंदजान को जाने लगे क़ासिम बेग ने बहुत सा कहकर बादशाह से १ ताकी जहांगीर मिरज़ा के वास्ते भिजवाई और उसने तंबल के वास्ते भी एक चीज़ भेजने की अर्ज़ की बादशाह की मर्ज़ी नहीं थी तो भी क़ासिम बेग के हट से १ तलवार तंबल के वास्ते भेजी बादशाह लिखते हैं कि "अगली साल जो तलवार मेरे सिर पर पड़ी वह यही तलवार थी."

बादशाह की दादी ऐशदौलत बेगम जो समरक़ंद में रहगई थी बादशाह की बेगमों को लेकर भूखी प्यासी हारी थकी बादशाह के पास आगई थी.

ओबारखां इस जाड़े में खुजंद नदी को जो पाला पड़ने से जमगई थी शाह रुखिया और बशकत के ज़िले में आया बादशाह भी यह सुनते ही अपने थोड़े से आदमियों के साथ उसपर चढ़गये जाड़ा बहुत पड़ता था कई आदमी ठंड से ऐंठ कर मर गये रास्ते में १ नदी मिली जिसके किनारों का पानी तो पालेसे जम गया था मगर बीचकी धार बहती थी बादशाह उसमें

नहाये और ९ डुबकियां लीं जिससे सरदी लगगई रात को अशकल में पहुंचे शेबाखां लूटमार करके कोट गया था वहां "नोयान कोकलताश" पुलपर से गिरकर मर गया बादशाह लिखते हैं कि "उसके मरने से जितना दुख हुआ उतना कम किसी के मरने का हुवा था। ९।१० दिन तक मैं रोता रहा।"

बादशाह फिर चक्र में आगये जब बहार (बसंत ऋतु) आई तो शेबाखां ने अरापते पर चढ़ाई की-बादशाह फिर पहाड़ों में होकर उसके मुकाबले को गए पर वह इनके पहुंचने के पहिले चलागया था.

इसी तरह १ दिन बादशाह ने कहा कि न कोई व लायत पास है और न बैठने को जगह है यों बेफ़ायदा पहाड़ों में भटकने से तो ताशकंद में खान के पास जाना अच्छा है मगर क़ासिम बेग जाने पर राज़ी न हुवा और अपने आदमियों को लेकर हिसार की तर्फ़ चलागया बादशाह ज़िलहिज्ज के महीने (असाढ़, सावन, जून, जोलाई.) में ताशकंद पहुंच कर खान से मिले कुछ दिनों पीछे तंबल अरापते पर आया खान ने फ़ौरन चढ़ाई की चंगेज़ खां ने जो तुज़क (क़ायदा) लशकर का बांधा था वही अब तक जारी था और दाईं बाईं फ़ौजों के अफ़सर भी पीढ़ी दर पीढ़ी जब ही से चले आते थे उसी तौर से अब भी सुलतान महमूद खां फ़ौज सजाकर चला था और बादशाह को भी साथ ले लिया था खुजंद की नदी पर से सुलतान बेस वग़ैरा कई सरदार भागकर तंब

ल के पास चलेगये.

सन् ९०८ (संवत १५५९। ६०) सन १५०२।३

बादशाह लिखते हैं कि "यह चढ़ाई बेफ़ायदा थी की न कोई क़िला लेनो था और न ग़नीम को हरा ना था गये और आये ताशकंद में मुझपर बहुत नादारी और ख्वारी आगई थी न वलायत पास थी और न किसी विलायत की उम्मेद थी नौकर अकसर खिसक गये थे जो थोड़े से रह गये थे कंगाली के मारे मेरे साथ नहीं फिरते थे मैं जब खानदादा की ड्योढ़ी पर आता था तो कभी १ आदमी से और कभी २ आदमी से जाता था मगर यह बात अच्छी थी कि कोई ग़ैर नहीं था सब अपने ही थे खानदादा को सलाम करके शाह बेगम के पास जाता था अपने घर की तरह से नंगे पांव नंगे सिर चला आता था आख़िर इस तरह भटकने और बेघरेपन से तंग आकर मैंने अपने मां सूं से कहा कि ऐसे बेइज़्ज़त जीने से तो यही अच्छा है के अपना मुंह लेकर जहांतक चलाजाऊं चला-जाऊं" मेरा इरादा बचपन से खता की सैर करने का था मगर बादशाही के झगड़ों से वक्त नहीं मिलता था अब बादशाही भी जाती रही थी और मां[१] भाई भी दूर रहगये थे इसलिये मैंने खता जाने का पक्का इरादा कर लिया मगर किसी से यह बात नहीं कही मां से भी नहीं कही ख्वाजा अबुल क़ासिम से इतना कहा कि शेबाखां जैसा दुश्मन खड़ा होगया है और उसे मुग़ल

[१] और.

ओर तुर्क दोनों का नुकसान बराबर है. उसकी फिक्र अभी से कि उसने खूब ज़ोर नहीं पकड़ा है ओर हमारे घराने को बिल्कुल नहीं दबाया है; करना ज़रूर है। कीचकखां ओर मेरे दादा २४।२५ वर्ष से नहीं मिले हैं ओर मैंने भी अपने छोटे खानदादा को नहीं देखा है जो ऐसा हो कि में चलाजाऊं तो अपने छोटे खानदादा कीचकखां को भी देखलूं मतलबमें ए यह था कि जो इस बहाने से निकल जाऊं तो मुगुलिस्तान(२) ओर तुर्फ़ान(३) में जानेका कुछ खटकान रहै। ख्वाजा ने यह बातें शाहबेगम ओर मेरे दादा से कहीं मगर वे कुछ राज़ी नहुवे इतने ही में एक आदमी आया कि खान खुद आते हैं मगर किसी को कुछ ख्याल नहुआ जब दूसरा आदमी खान के नज़दीक आजाने की खबर लाया तो शाह बेगम, छोटी बहन सुलतान निगारखानम, दौलत सुलतान खानम, मैं, ओर सुलतान मोहम्मदखां, वगैरा सब खानदादा की चकखां की पेशवाई को निकले ताशकंद ओर सीरान नेसान गांव के बीच में कुछ बस्तियां हैं वहां तक गये मुझे कीचकखां खानदादा के आने का वक्त मालूम नथा इसलिये बेजाने घूमने को सवार होगया ओर एका एकी खान के पास होकर आगे निकल गया उसी वक्त मेरे आने की खान को खबर होगई तो

---

(२) मंगोलिया.

(३) चीनी. तातार.

वे बहुत घबराये क्योंकि एक जगह उतर कर और बै-
ठकर ताज़ीम के साथ मुझ से मिलना चाहते थे मगर
दिन थोड़ा रहगया था जगह भी उतरने के लिये नहीं
थी तो भी मैं तो फ़ौरन उतर पड़ा और घुटना टेक कर
मिला इससे उनको और भी शर्मिंदगी हुई. और उसी
दम सुलतान सईदखां और बाबा खां सुलतान को फ़र
माया वे दोनो घोड़ों से उतरे और घुटने टेक कर मुझ
से मिले खान के बेटों में से यही दो सुलतान आये थे
जो १३। १४ वर्ष के होंगे इन सुलतानों से मिलकर ह-
म सवार हुये और शाहबेगम के पास आये फिर मेरे
दादा कीचक खां शाह बेगम वग़ैरा घर वालों से मिले
और आधी रात तक सब का हाल पूंछते रहे। दूसरे दि
न खान दादा ने मुझे अपनी मुग़ली पोशाक हथियार
और घोड़ा जीन समेत दिया वहां से ताशकंद को
चले मेरे बड़े खानदादा भी ताशकंद से ३। ४ कोस
पेशवाई को आकर १ शामयाने में बैठे थे छोटे खां-
न सामने से आये और बायें हाथ की तर्फ़ होकर खा-
न के पीछे से ज्योंही सलाम करने की जगह पर पहुं
चे ९ दफ़े घुटना टेक कर आगे बढ़े बड़े खान भी छोटे
खान के पहुंचते ही खड़े होगये और मिलकर बहुत
देर तक लिपटे रहे लौटते वक्त भी छोटे खान ने ९
बेर घुटना टेका था भेंट दिखाते हुवे भी बहुत बेर घु
टना टेका था फिर आकर बैठ गये खान के आदमी
भी मुग़लों की तरह से सजे हुवे और सब खताई अ-
तलस के जामे पहिने हुवे और तरकश लगाये हुवे हरी

जौन के मुग़ली घोड़ों पर बैठे थे छोटे खान के साथ आदमी कम आये थे १,००० से ज़ियादा और २,००० से कम होंगे.

मेरा दादा कीचक खां अजब तरह का आदमी था तलवार मारने में बहुत मज़बूत और मरदाना था सब हथियारों से तलवार पर ज़ियादा भरोसा रखता था वह कहता था कि तीर तबर और तेशा (फरसा) तो जहां लगे वहीं काम करता है और तलवार सिर से पांव तक कार करजाती है अपने भरोसे की तलवार को कभी अलग नहीं करता था उसकी तलवार याता कमर में रहती थी या उसके हाथ में वह मुल्क के किनारे और कोने पर रहता था इसलिये उसमें कुछ गंवारपन भी था और बोलने में भी बहुत बैंडा था."

"मैं भी उसी ऊपर लिखे हुवे मुग़ली ठाठ से छोटे खानदादा कीचकखां के साथ आया था इसलिये बड़े-खानदादा ने नहीं पहिचाना और ख्वाजा अबुलमुकारम से पूंछा कि यह कौन सुलतान हैं जब उन्हों ने कहा तो पहिचान लिया."

ताशकंद में आकर खानों ने जल्दी से सुलतान अहमद तंबल के ऊपर चढ़ाई की रस्ते में बड़े खान ने छोटे खान और बादशाह को आगे रवाने कर दिया था मगर तुरफ़ान और करसान के आस पास दोनो खान फिर इकट्ठा होगये और उन्होंने १ दिन अपने लश्कर की हाज़री ली तो ३० हज़ार सवारों का तख़-

छीना किया तंबल भी अपनी फ़ौज जमाकरके अखशी
में आगया था खानों ने सलाह करके बादशाह को कु
छ फ़ौज के साथ औश और औरगंज की तर्फ़ जाकर
पीछे से उसपर धावा करने के लिये भेजा बादशाह
रातों रात चलकर तड़के ही औश के क़िले पर क़ि-
ले वालों की ग़फ़लत में जा पहुँचे जिन्हों ने क़िला
सौंप दिया यह सुनकर ईल और उलूस (बादशाह
की क़ौम और बिरादरी) के बहुत से आदमी बाद-
शाह के पास आगये और "औरकंद" (औरगंज) के
लोगों ने भी आदमी भेजकर ताबेदारी क़बूल की
यह शहर फरग़ाने का पुराना सदर मुक़ाम था और
क़िला भी यहां का अच्छा था फिर मुर्ग़ बान वाले
भी अपने दारोग़ा[१] को निकाल कर बादशाह से
आमिले ग़रज़ कि खुजंद नदी से उधर के सब कि
ले इंदजान के सिवाय बादशाह के हाथ आगये तो
मुल्क में ग़दर बना रहा और तंबल अखशी
और काशान के बीच में खानों के मुक़ाबले पर
अपना लश्कर जमाये पड़ा था और उससे लड़ता भी
था इंदजान वाले बादशाह को चाहते तो थे मगर
उसके डर से कुछ नहीं कर सकते थे बादशाह १
दिन सवार होकर आधीरात को इंदजान के पास पहुँ
और कंबरअली को अंदर वालों से मिलावट
करने के लिये भेजा बादशाह घोड़े पर वैसही स-

(१) तहसीलदार, हाकिम,

सवार खड़े थे और उनके साथी नींद में ऊंघ रहे थे रा-
त भी ३ पहर आगई थी कि अकस्मात नक्कारे की
आवाज़ और सवारों की आहट सुनकर सब लोग
भाग गये बादशाह ने आने वालों को बाग़ी समझ
कर घोड़ा उठाया कुल ३ आदमी साथ हुवे वे लो-
ग भी तीर मारते हुवे आ पहुंचे १ घोड़ा तो बा-
दशाह के पास ही आगया बादशाह ने उसपर तीर
मारा साथियों ने कहा रात बहुत अंधेरी है ग़नी-
म नहीं मालूम कितना है लशकर सब भाग गया
है हम चार आदमी कितने आदमियों को मार सक-
ते हैं बादशाह भागे हुवों को लाने के लिये गये औ-
र कासची मार २ कर ठहरने को कहने लगे मगर
कोई नहीं ठहरा तब फिर लौटकर उन्हीं तीनों
आदमीयोंसे तीर मारने लगे उन लोगों ने जब देखा
कि ३।४ आदमियों से ज़ियादा नहीं है तो वे फिर
तीर मारते हुवे पीछे आने लगे मगर बादशाह ने
फिर २ कर मारे तीरों के उनका मुंह फेर दिया औ-
र ३ कोस तक उनका पीछा किया पास पहुंच कर
उनके ऊपर घोड़े डाले तो मालूम हुवा कि वे भी बा-
दशाही लशकर के ही मुग़ल थे और लूट खसोट
के वास्ते बादशाह से पहिले इधर चले आये थे ज-
ब बादशाह के आने की गड़बड़ मची तो दौड़कर
आगे आये मगर अंधेरे में ग़लती हो जाने से दुशमन समझ कर
नक्कारा बजाने और तीर मारने लगे। औरों ने (१) अपने प-

(१) परवर, जो कि अंगरेज़ी छावनियों में रात के वक़्त अपने पराये

राये की पहिचान के वास्ते १ इशारा ठहरा लियाजाताहै और सबलोगों को सिखादिया जाता है उसचढ़ाई के दिन का औरान ताशकंद और सेराम था मगर जब मुग़लों ने आकर औरान। पूंछा तो आदशाही साथियों में से ख़्वाजा मोहम्मद अली ने जो ताज़ीकी (ईरानी) आदमी था घबराकर ताशकंद से राम तो कहा नहीं और ताशकंद ताशकंद कहदिया इस ग़लती से बादशाह को औरा में पीछे आना पड़ा और काम जो सोचा था वह न हुवा.

५। ६ दिन पीछे ही बादशाह के पास ज़ियादा आदमी आने और तंबल के पास से भागने लगे बादशाह के पास जो लोग आते थे यही कहते थे कि ३।४ दिन में तंबल भी भाग जायगा बादशाह यह बातें सुनकर फिर इंदजान के क़िले पर चढ़गये उधर से तंबल का भाई आया बादशाह उसको हटाकर क़िलेतक जा पहुंचे मगर अंधेरा पड़गया था इसलिये अपने पुराने मुसाहिबों नासिर बेग और कंबरबेग के कहने से क़िले के दरवाज़े पर न जाकर रात को रात पीछे हट आये जो न हटते तो क़िले में चले जाते क्योंकि तंबल के भागने की ख़बर इंदजान में आचुकीथी और अंदरवाले क़िला सौंप देते बादशाह लिखतेहैं कि "इस काम को लड़के पर छोड़ने में

को पहिचान के लिये सिपाहियों को बतादिया जाता है कि अगर उस में मिलजायें तो परस्पर पूंछलें जो न बता सकै उसको पकड़लें.

बड़ी ग़लती हुई ज़मीन पर उतरना पड़ा न कोई क़रावल (खबरलानेवाला) था न कोई ज़ग़दावल (पहरेवाले) पड़कर ग़ाफ़िल सोगये लड़के मीठी नींद में थे कि कंबर अली यह कहता हुवा कि ग़नीम आ पहुंचा है चलागया मैं कपड़े पहिने ही सोया करता था फ़ौरन उठकर तलवार व तरकश बांधा और सवार होगया. तौग़ बांधने की फ़ुरसत न हुई तौग़ को उसी तरह हाथ में लिये हुवे चल खड़ा हुवा ग़नीम उधर से आरहा था १ तीर के टप्पे पर पहुंचने तक तो ग़नीम की अगली अनी आ मिली मेरे साथ १० ही आदमी थे तो भी तीर मार २ कर बढ़ने वालों को हटा दिया और फिर १ तीर के टप्पे पर जाकर ग़नीम की बिचली अनी को जा मिला या यहां तंबल १००, आदमियों से खड़ा था, मेरे पास ३-४ ही आदमी. दोस्तनासिर, मिरज़ाकुली, कोकलताश, करीमदाद, और खुदादाद तुरकमान थे और १ तीर कमान में था वह तंबल पर छोड़ा दूसरा तीर तरकश से निकाल तो लिया मगर मारने का अवकाश न मिला कमान में रखकर आगे बढ़ा वे तीनों आदमीभी पीछे रहगये मेरे सामने २ आदमी थे उनमें १ तंबल था वह भी आगे वढ़ा बीच में १ सड़क थी हम दोनों उसमें होकर आमने सामने आये मेरा दाहना हाथ तंबल की तर्फ़ और तंबल का मेरी तर्फ़ था उसके पास (१) केजम के सिवाय और हथियार भी थे पर मेरे

(१) एक हथियार.

पास तलवार और तरकश के सिवाय और हथियार नहीं था मैंने वही १ तीर मारा जो मेरी कमान में था उधर से १ तीर आकर मेरी जांघमें लगा। तंबल को जो तलवार बादशाह ने भेजी थी वही उसने बादशाह के सिरपर मारी बादशाह लिखते हैं कि

"मेरे सिर पर दुबलग़ा(१)की थी वह कटी नहीं तो भी सिर में कुछ घाव होगया मैंने तलवार पर बाड़ नहीं रखवाई थी काठ लगा हुवा था मैं बहुत से दुश्मनों में अकेला रहगया ठहरने की जगह नथी इसलिये घोड़े की बाग मोड़ी उसवक़ फिर १ तलवार मेरे ऊपर पड़ी ७।८ क़दम लौटा था कि पैदलों में से ३ आदमी आकर मेरे साथ होगये आगे बड़ी गहरी नदी थी घोड़ा १ घाट में होकर उतर गया मैं घाटियों के ऊजड़ रस्ते से ओश की तर्फ़ आया हमारे अच्छे २ आदमी और बहुत से छोटे बड़े सिपाही मारेगये।"

बड़े और छोटे खान भी तंबल के पीछे इंदजान में आगये २ दिन पीछे बादशाह भी ओश से आये और बड़े खान से मिले उसने जो जागीरें बादशाह को दीथीं वे छोटे खान को देदीं और बादशाह को यों समझाया कि शेबाखां जैसा ग़नीम समरकंद जैसे शहर को लेकर ज़ोर पकड़ता जाता है इसवास्ते मैं छोटे खान को कहां से लाया हूं और उसके पास इधर कोई जगह नहीं है उसकी वलायतें दूर २ हैं खुजंद नदी के दक्षिण में इंदजान तक

(१) दुपलड़ी टोपी।

मुल्क उसको दे देना चाहिये और खुजंद के उत्तर में अखशी तक तुमको दिया जायगा यहां अमल जम जाने पर समरकंद तुमको जाकर ले देंगे फिर तमाम फरगाना छोटेखान का होजायगा" बादशाह लिखते हैं कि "ये बातें मुझे धोखा देने की थी पर कुछ बस नहीं था लाचार मैं राजी होगया। और जब वहां से सवार होकर छोटे खान के पास जाने लगा तो रस्ते में कंबर अली बेग ने आकर मुझसे कहा कि "देखा अभी जो विलायतें हमारे पास थीं वे भी लेलीं अब जो ओश मुर्गीनान और औरकंद वगैरा किले तुम्हारे पास हैं उनको मजबूत कर के तंबल से सुलह करलो और मुगलों(१) को मार कर निकाल दो फिर दोनो छोटे बड़े भाई(२) विलायतें बांट लो" मैंने कहा कि खान मेरे घर के हैं और अपने हैं इनके पास मेरी नौकरी करना तंबल पर बादशाही करने से अच्छा है तब उसने देखा कि उसकी बात नहीं चली तो खिसयाना होकर लौट गया।"

बादशाह जब कीचक खां के डेरे के पास पहुंचे तो वह कनात से बाहर तक लेने को आया बाद-

(१) अर्थात् महमूद खां वगैरे को क्योंकि वे चंगेज़ खां की औलाद में से थे और उजबक भी मुग़ल ही थे और वे भी चंगेज खां के वंश में थे पर उनका शोक बड़ा था इसलिये मुग़ल नहीं कहलाते थे.

(२) अर्थात् तुम और जहांगीर मिर्ज़ा जिसका मुख्तारकार (प्रधानमंत्री) तंबल था

शाह के पांव में तीर का घाव लगा हुआ था इसलि
ये लकड़ी टेकते २ बड़ी तकलीफ़ से चलते थे खान
हाथ पकड़ कर चादर के भीतर लेगया बैठक की ज-
गह बहुत सीधी सादी थी खरबूज़े और अंगूर बहुत
मौजूद थे बादशाह खान के पास से उठकर अपने उर्दू
में आगये बादशाह का जख़्म देखने के लिये खान
ने अतका बख़्शी नाम जर्राह को भेजा बादशाह लिख
ते हैं कि " मुग़ल लोग जर्राह को भी बख़्शी कहते
हैं वह जर्राही[1] में बहुत होशयार था जो किसी का
मग़ज़ भी निकल आता था तो दवा देता था नसों
में जो घाव पड़जाते थे उनका भी इसी तरह से स-
हज में इलाज करता था कई २ ज़ख्मों में तो मल्ह
म जैसी दवा लगाता था और कई २ में खाने को
दवा देता था उसने मेरी जांघ के ज़ख़्म पर पट्टी
बांधी उसमें बत्ती रक्खी और पत्ते जैसी कोई चीज़
भी २ बेर खिलाई . वह कहता था कि १ दफ़े एक
आदमी का पांव टूट गया था १ मुट्ठी भर हड्डियां टुक
ड़े २ होगई थीं मैंने मांस को चीर कर तमाम टूटी हु
ई हड्डियां निकाल लीं और उनकी जगह पैवंद दवा
ई की लुगदी बनाकर रखदी जो हड्डी की जगह
पिघल कर हड्डी जैसी बनगई और वह आदमी
अच्छा होगया " उसने बहुत ऐसी बातें कहीं . इस
विलायत के जर्राह उसतौर के इलाज करने में ला
चार हैं ."

(१) चीर फाड़ .

बादशाह ने कंबर अली को जो जवाब दिया उससे दिल में डरकर वह ३।४ दिन पीछे इंदजान को भाग गया कुछ दिनों बाद दोनों खानों ने अईयूब चक को सेनापति बनाया और बादशाह को हज़ार दो हज़ार सवार देकर अरख़शी की तर्फ़ भेजा अरख़शी में तंबल का भाई शेख़ बायज़ीद और काशान में शहबाज़ कारलूक था जो उन दिनों में नौकंद के क़िले के पास ठहरा हुवा था बादशाह खुजंद नदी से उतर कर धावा मारते हुवे दिन निकले पहिले नौकंद के पास पहुंचे अमीरों ने कहा कि शहबाज़ ख़बरदार होगया है फ़ौज जमा कर चलें तो ठीक होगा इस पर बादशाह बहुत धीमें पड़गये शहबाज़ ग़ाफ़िल ही था इनके पहुंचने पर ख़बरदार होकर भागा और क़िले के भीतर चलागया.

बादशाह लिखते हैं कि " इस तरह बहुत दफ़ै हो चुका है कि दुशमन को ख़बरदार कहकर ग़लतीं होगई और कामका वक़्त जाता रहा है. तजरुबा (अनुभव) ऐसी ही बातों से होता है मतलब यह है कि क़ाबू पहुंचने पर कोशिश करने में कसर नहीं रखना चाहिये कि फिर पछताने से कुछ फ़ायदा नहीं होता.

दिन निकलने पर क़िले के पास कुछ लड़ाई हुई फिर बादशाह तो लूट के वास्ते पहाड़ की तर्फ़ चले गये और शहबाज मौका पाकर काशान को भाग गया बादशाह लौटकर नौकंद में आबैठे उनके

लशकरने इधर उधर जा जा कर लूट खसोट की १ दफ़े अखशी के और एक दफ़ा काशान के गांव भी लूटे- शहबाज़ लड़ने को आया और शिकस्त खाकर भागा अखशी के मज़बूत क़िलों में से १ क़िला आब नाम का भी था जिसे वहां वालों ने बादशाह के आदमी सैयद क़ासिम को बुलाकर सौंप दिया सैयद क़ासिम १ रात को ग़ाफ़िल सोया हुआ था कि शेख़ बायज़ीद के ७०-८० जंगी जवान नसैनियां लगाकर आब के क़िले में चढ़ आये मगर क़ासिम झट उठा और तीर मार २ कर उन लोगों को निकाल दिया कई येकों के सिर काट कर बादशाह के पास भेजे. बादशाह लिखते हैं कि " इस तरह ग़ाफ़िल सोना उसको नहीं चाहिये था मगर थोड़े से आदमियों से ऐसे ख़ूब तीरंदाज़ों को मार कर निकाल देना भी उसका बड़ा मरदाना काम था."

उन दिनों में दोनों ख़ान इंदजान के घेरे में लगे हुवे थे मगर क़िलेवाले उनको पास नहीं फटकने देते थे उनके जवान बाहर निकल २ कर लड़ते थे शेख़ बायज़ीद ने अपने भाई तंबल की सलाह से आदमी भेजकर बादशाह को जलदी से अखशी में बुलाया इससे उसका यह मतलब था कि जो किसी तरह बादशाह को दोनो ख़ानों से अलग करले तो फिर दोनो ख़ान खड़े भी नहीं रह सकेंगे। मगर बादशाह को उससे मेलकरना मंज़ूर नहीं था इसलिये ख़ानों को उसके बु-

लाने की खबर देदी उन्हों ने कहलाया कि जैसे बने बायज़ीद को पकड़ लो बादशाह लिखते हैं कि " दगा फ़रेब करने की आदत तो हमारी नहीं थी मगर यह सोच कर कि जो किसी तरह अख़्शी में पहुंच जावें और बायज़ीद को तंबल से तोड़ लें तो १ तरह से काम बनजावे हमने भी आदमी भेजा बायज़ीद ने क़ौल क़सम करके हम को अख़्शी में बुलाया जब हम गये तो सामने आया और मेरे छोटे भाई नासिर मिरज़ा को भी लाया और हमें अख़्शी के क़िले में लेजा कर मेरे बाप की बनाई हुई इमारतों में ठहराया।"

तंबल ने अपने बड़े भाई बेगतलिबा को भेज कर शैबाखान को बुलाया था और शैबाखां के परवाने भी उसके पास आगये थे कि मैं आता हूं बादशाह ने यह खबर खानों को दी तो वे घबराकर इंदजान से उठगये यह सुन कर औश और मुरगेबान के लोगों ने उनके मुग़लों को मार २ कर निकाल दिया जो वहां बहुत जुलम और बदमाशी करते थे खान खुजंद नदी से न उतर कर मुरगेबान और कंद बादाम के रस्ते से लौट गये तंबल भी उनके पीछे २ ही मरगेबान में आया बादशाह बड़ी फ़िक्र में थे क्योंकि ठहरने में तो (तंबल बग़ैरा) पर पूरा भरोसा नथा और यौंही क़िला छोड़ जाना भी पसंद न था।"

एक दिन तड़के ही जहांगीर मिरज़ा तंबल

के पास से भाग कर आया और हम्माम में बादशाह
से मिला फिर उसीवक्त शेख बायज़ीद भी घबराया हुआ
आया मिरज़ा और इब्राहीम बेग ने बादशाह से उसके प
कड़ने और क़िला लेलेने को कहा यह बात ठीक ही थी
मगर बादशाह ने कहा कि मैं इसको बचन देचुका हूं
उसके खिलाफ़ कैसे कर सकता हूं बायज़ीद क़िले में
चला गया और पुल की चौकसी पर भी कोई नहीं र
हा लड़के ही तंबल २।३ हज़ार सिपाही लेकर पुल से
उतरा और क़िले में आया बादशाह के आदमी उस
वक़्त तहसील और दूसरे कामों पर गये हुवे थे आख़
री में २०० से ज़ियादा जवान उनके पास न थे वे उन्हीं
को लेकर सवार हुए और गली कूचों में मोरचे बैठाते
हुवे लड़ने मरने पर तुलगये तंबल की तर्फ़ से शेख़
बायज़ीद और क़ंबर अली सुलह के वास्ते आये बा-
दशाह उनको लेकर अपने बाप के क़बरस्तान में
सलाह करने को गये जहांगीर मिरज़ा ने इब्राहीम की
सलाह से उनके पकड़ लेने की बात बादशाह के का
न में कही बादशाह ने कहा कि यह लोग ज़बर दस्त हैं
हम कमज़ोर हैं यह क़िले में हैं हम नीचे शहर में हैं
इसलिये घबराहट से ऐसा काम मतकरो मिरज़ा ने इ-
शारे से इब्राहीम को मनाकिया वह शायद उलटा
समझा क्योंकि तुरत फुरत बायज़ीद और क़ंबर प
कड़ लियेगये इसपर लड़ाई शुरू होगई तंबल के आ
दमी गलियों में बढ़ते चले आये १ गली में जहांगीर
मिरज़ा उनके दबाव से भाग निकला फिरतो बाद-

शाह के आदमियों में भी भागड़ पड़गई.

बादशाह भी तीर तलवार से लड़ते भिड़ते और वा वज़ीद वगैरा कई बाग़ियों को ज़खमी करते हुवे शहर से निकले और दूर तक बाग़ियों से लड़ते चलेगये जो उनके पीछे आरहे थे १ जगह उनका घोड़ा ज़खमी होकर दुश्मनों के झुंड में घुसगया और वहां उनको लेकर गिरपड़ा मगर वे फ़ौरन उठे और दूसरे घोड़े पर जो १ साथी ने दिया था चढ़ कर निकल आये इस तरह उस भागड़ में कई घोड़े निकम्मे होने से बदलने पड़े थे जो उनके साथी देते जाते थे २ कोस चलकर जो पीछे को देखा तो फिर कोई ग़नीम नज़र (१) नहीं आया मगर साथ में ७ ही आदमी थे उन्हीं के साथ पशाक नदी के ऊपर घाटियों की तर्फ़ चले पिछले दिनको १ टेकरी पर से मैदान में धूल उड़ती दिखाई दी।

---

(१) हबीबुल सियर में लिखा है कि सन ९०६ में मोहम्मद खां शैबानी अहमद तंबल के बुलाने से आया लड़ाई में मोहम्मद खां और उलजा खां तो पकड़े गये थे और बाबर मग़ूलिस्तान को भागे मोहम्मद खां ने ताशकंद वालों को हुकम भेजा कि मैंने उलजाखां को तो पकड़ लिया है बाबर भाग कर उधर गया है जो तुम मेरे गुस्से की आग से बचना चाहो तो उसको रोक लेना दो तीन दिन क़ैद रखने के पीछे मोहम्मद खां ने दोनो खांनो को छोड़ दिया कि जहां चाहें चले जावें मगर ताशकंद उनके चचाओंके बेटों कूची खां और सोनजक खां को मिलगया.

बादशाह अपने लोगों को आड़ में छिपाकर खब
र लाने को गये और १ टीले पर से ग़नीम के बहुत
से आदमियों को पीछे की टेकरी पर चढ़ते देखक-
र कम ज़ियादा का अंदाज़ा किये बग़ैर ही लौट
आये लेकिन पीछे मालूम हुवा कि वे २४ ही आ
दमी थे. बादशाह लिखते हैं कि "मैं जो पहिले ही
जान जाता कि वे इतने ही हैं तो खूब लड़ता मगर
इस खियाल से कि इनके पीछे और भी होंगे च-
ला आया था क्योंकि भागने वाले जो बहुत भी
हों तो थोड़े से पीछा करने वालों के सामने नहीं
हो सकते हैं.।"

खान क़ुली ने बादशाह से कहा कि यों तो ये
हम सबको पकड़ लेंगे आप और मिरज़ा क़ुली
कोकलताश सब में से २ अच्छे २ घोड़े चुनलो
और सवार होकर दौड़ा दो शायद निकल सकोगे
बादशाह को ग़नीम के सामने उतरना और भा
गजाना पसंद न हुआ आख़िर एक एक करके स-
बही रहगये बादशाह का घोड़ा बहुत सुस्त था ख़ा
न क़ुली ने उतर कर अपना घोड़ा दिया बादशा
ह अपने घोड़े पर से कूद कर उस पर बैठ गये ख़ा
न क़ुली बादशाह के घोड़े पर चढ़ा जब वह घो
भी धीमा पड़ने लगा तो कंबर अलीने उतरकर
ना घोड़ा दिया बादशाह उसपर सवार हुवे और
कंबर अली बादशाह के घोड़े पर बैठा अब मिर
ज़ा क़ुली कोकलताश का घोड़ा भी पीछे रह-

ने लगा बादशाह फिर फिर कर मिरज़ा कुली को देखते जाते थे आख़िर मिरज़ा ने कहा कि मेरा घोड़ा थक गया है जो आप मेरा रस्ता देखोगे तो अपने को पकड़ा दोगे चलेजाओ शायद बचाने वालों में बादशाह लिखते हैं कि "मेरी अजब हालत होगई मिरज़ा कुली भी रहगया मैं अकेला रहा दुश्मन के दो आदमी बाबा सराई और बंदे अली मेरे बहुत पास आन पहुंचे मेरा घोड़ा थका हुवा था पहाड़ भी १ कोस पर था बीच में पत्थरों का ढेर था और २० तीर तरकश में थे मैंने चाहा कि इस ढेर पर उतर पड़ूं और जब तक तीर रहें तीरंदाज़ी करूं फिर सोचा कि शायद पहाड़ तक पहुंच जाऊंगा और वहां पहुंचने पर कई तीर गाड़ कर पहाड़ से चिमट जाऊंगा मुझे अपने तीर मारने का बड़ा भरोसा था इस विचार से चलदिया घोड़े में तेज़ चलाने की ताक़त न थी वे लोग भी तीर मारने तक आ पहुंचे थे मगर मैंने कम होजाने के सोच से तीर नहीं मारे वे भी कुछ सोच विचार कर बहुत पास नहीं आये उसी तरह से पीछे २ आते रहे मैं सूरज के छुपते २ पहाड़ के पास पहुंच गया उन्होंने कहा कि "ऐसे कहां जाते हो जहांगीर मिरज़ा को हम लेआये हैं नासिर मिरज़ा हमारे पास ही है" इस बात के सुनने से मुझे खटका तो बहुत हुवा क्योंकि जो हम सब ही उनके हाथ में हों तो बड़े जोखम की बात है मगर कुछ ज-

बाग नहीं दिया और पहाड़ की तर्फ़ चलता रहा वे
फिर बोले और नर्म होकर घोड़ा से उतरे पड़े मगर
मैंने उनकी बातों पर कान नहीं धरा और पहाड़ों के
दरों पर चढ़ता चला गया सोने के वक़्त १ पत्थर के
पास पहुंचा जो घर के बराबर ऊंचा था उसके पी-
छे फिर कर जाने लगा मगर घोड़ा न चढ़ सका वे
भी घोड़े से उतर पड़े और बड़े अदब से गिड़ गिड़ा
कर बोले कि रात अंधेरी है रस्ता नहीं है इस तरह
कहां जाते हो और क़समें खा खा कर कहने लगे
कि सुल्तान अहमद बेग (वही तंबल) आपको
बादशाह बनाता है मैंने कहा कि मेरा दिल नहीं
पतिआता और वहां जाना भी नहीं होसकता अग-
र तुम कोई ख़िदमत करना चाहते हो कि जि-
सका बरसों मेंभी कभी मौक़ा नहीं मिलता है तो
मुझे एक ऐसा रस्ता बतादो कि मैं ख़ानों के पा-
स पहुंच जाऊं और तुम्हारी चाहना से बढ़कर तु-
म्हारी रिआयत करूं जो यह भी नहीं करो तो
जिधर से आये हो उधर ही चले जावो फिर जो
मेरी क़िसमत में लिखा है हो रहेगा. तुम्हारी तो
यह भी अच्छी ख़िदमत होगी। उन्होंने कहा कि
हम नहीं आते तो अच्छा होता अब हम तुमको
इसतौर से छोड़कर क्योंकरलौट जावें वहां नहीं च-
लो तो जहां चलना चाहते हो चलो हम ख़िद-
मत में रहेंगे। मैंने कहा कि जो सच कहते हो
तो क़सम खाओ उन्होंने बहुत सी क़समें कुरान व-

ग़ैरा की रवाई मुझे कुछ तसल्ली हुई मगर फिर
भी उनको आगे रखकर पीछे पीछे चलने लगा
और उनसे कहा कि इस घाटी में १ चौड़ा रस्ता
आता है उधर चलो मगर आधी रात तक चलते
रहे और वह रस्ता नहीं मिला शायद उन्होंने द-
ग़ा बाज़ी से छोड़ दिया था आधी रात को १
नाले पर पहुंचे तो बोले कि हम भूलगये वह र-
स्ता तो पीछे रह गया है। मैं ने कहा कि फिर अब
क्या करना चाहिये कहा कि आगे "गवा" का र-
स्ता है वह फ़रग़ात को जाता है यह कह कर उ-
धर चलदिये तीन पहर रात गई होगी कि कर-
सान के रस्ते पर पहुंचे जो गवा से आता है बाबा
सगाई ने कहा कि यहीं खड़े रहो। मैं जाकर गवा
के रस्ते को देख भालकरके आता हूं। वह गया
और बहुत देर से आकर कहने लगा कि इस
रास्ते से तो कई आदमी मैदान में आये हैं इस
लिये उधर से तो चलना नहीं होता। मैं यह सुन
कर सुनकर सुन होगया, वलायत बीच में सवेरा
नज़दीक और मतलब दूर था. मैंने उनसे कहा
कि कोई एमा रस्ता लो कि दिनको वहां छुप रहें
और जब रात पड़ जावे और कोई घोडा और खाना
वग़ैरा हाथ आजावे तो खुजंद की नदी से उतर
कर खुजंद की तर्फ चले जावें उन्हा ने कहा कि
यहां १ टेकरी है उसमें छुप सकते हैं बंदा अलीजो
करसान का दारोग़ा था बोला कि हमारा तुम्हा

रा और घोड़ों का निभाव कुछ खाये बग़ैर अब हो नहीं सकता है इसलिये मैं करसान में जाता हूं और जो कुछ मिले ले आता हूं इसपर व-हां से लौटकर करसान को चले और एक को-स पर खड़े रहे बंदाअली गया पर फ़ज्र होने को आगई है और यह कुछ नहीं लाता है इससे बड़ी घबड़ाहट हुई और सुबह होते ही वह दौड़ा हुआ आया घोड़े का दाना चारा तो कुछ नहीं लाया ३ रोटियां लाया हम तीनो ने एक एक रोटी बग़ल में मारली और जल्दी से लौटकर उस टेकरी पर गये जहां छुपा चाहते थे और घोड़ों को पानी के नाले पर बांध कर तीनो तीन तर्फ़ की चोटियों पर चौ-कसी करने को बैठ गये।

दोपहर के वक़्त अहमद कोसची ४ सवारों के साथ गयासे अख़शी को जाता हुआ नज़र आया. पहिले तो यह ख़याल हुआ कि इसको दिलासा देकर घोड़े लेलें क्योंकि हमारे घोड़े १ रात और १ दिन के मारे कूटे हारे थके थे और दाना भी उनको नहीं मिला था मगर फिर उनपर भरोसा करने को दिल ने गवाही नहीं दी इसलिये उनदोनो से कहा कि ये रात को अख़शी में रहेंगे हम छुपकर उन-के घोड़े लेलें और किसी जगह और किसी ज-गह पहुंच जावें फिर दूर से १ चीज़ चमकती हुई दिखाई दी यह मोहम्मद बाक़िर बेग था जो अख़शी से मेरे साथ निकला था और बिछड़ कर

रहगया था बंदाअली और बाबाअली मुझसे क-
हते थे कि २ दिन से घोड़ों को खुराक नहीं मिली
है किसी बांड़ में उतर कर इन्हें घास चरने को छो
ड़ दें" खैर वहां से सवार होकर १ हरयाली में प-
हुंचे और घोड़ों को चरने के वास्ते छोड़ दिया पिछ
ले दिन से १ सवार टेकरी पर होकर जिसके नीचे ह
म छुपे थे जाता हुआ दिखाई दिया मैंने पहिचाना
तो क़ादिर बरदी था उनसे कहकर उसे बुलाया व-
ह आया मैंने उससे महरबानी की बातें करके अंगु-
आ. घास काटने को दरांती. कुल्हाड़ा. पानी से उत
रने का सामान. घोड़े का दाना. खाना. और जो हो-
सके तो घोड़ा भी मांगा और शाम तक लेआने को
कहा शाम पड़गई थी कि १ सवार करसान से गव
को जाता हुआ निकला बुलाकर पूंछा कि तू कौन
है- यह बाक़र बेग ही था जहां आज छिपा था वहां
से दूसरी जगह छिपने को जाता था मगर इसने
अपनी बोली ऐसी बदल लीथी कि बरसों मेरे साथ
रहा था तो भी मैं नहीं पहिचान सका जो उसको
पहिचान कर साथ ले लेते तो खूद था उसके चले
जाने से खटका हुआ और क़ादिर बरदी से जहांत
क ठहरने के लिये कहा गया था ठहरना न चाहा
बंदे अली ने कहा कि करसान में महलों के फूले
बगीचे हैं जिनका कोई शक भी नहीं कर सकता
है वहां चलकर क़ादिर बरदी के पास आदमी भे
जा जावे और वह वहीं आजावे । इस विचार से

सवार होकर करसान के महलों में आये जाड़ाथा
बड़ी ठंड पड़ती थी एक पुराना फटा हुवा पोस्ती-
न और १ पियाला चेना के दालिये का मिला
वही मैंने पहिना और खाया। और बंदे अली से पूं-
छा कि क़ादिर बरदी के पास आदमी भेजा। बो-
ला कि भेज दिया मगर इन कम बख्त गंवारों ने क़ा
दिर बरदी से मिलावट करके उसको ख़ुसरो सं-
म बख्त के पास भेज दिया था मैं १ दो भांते में जा
कर दम भर सोया था कि इन्होंने फिर कारस्तानी
करके मुझसे कहा कि "जबतक क़ादिर बरदी आ
वे यहां से महलों में जो बागों के किनारे पर हैं
चले चलें वहां कोई कुछ शक नहीं कर सकता"
आधीरात को सवार होकर महलों के किनारे पर १
बाग़ में गये बाबासराई छत पर से इधर उधर देख
भाल करता रहा दो पहर होने पर उस नीचे मेरे
पास आकर कहा कि "युसुफ़ दारोग़ा आता है"
मुझे बड़ा खटका हुवा मैंने कहा जाकर समझ कि
क्या वह मुझे जानकर आया है वह गया और कु
छ बातें करके आया और बोला कि यूसुफ़ दारोग़ा
कहता है कि ख़ज़ानची के दरवाज़े पर १ पैदल ने
कहा था कि बादशाह करसान में फ़लानी जगह
हैंमैं किसी को खबर न करके और उस पियादे
को उसी ख़ज़ानची के साथ जो लड़ाई में मेरे हाथ
लगाथा १ जगह बैठाकर दौड़ा हुआ तुम्हारे पास आ
या हूं अमीरों को इस हाल की ख़बर नहीं है।

मैंने कहा कि तेरे दिल में क्या आता है कहा कि सब आपके नौकर हैं क्या कर सकते हैं जाना चाहिये आपको बादशाह बनाते हैं मैंने कहा कि इतना लड़ाई झगड़ा होचुका है किस भरोसे पर जाऊं यह बातें होही रही थीं कि यूसफ़ ने आकर दोनो घुटने मेरे आगे टेके और कहा कि मैं आप से क्या छुपाऊं सुल्तान अहमद बेग को तो खबर नहीं है शेख़ बायज़ीद बेग ने तुम्हारी खबर पाकर मुझे भेजा है" इस बात के सुनने से मेरी अजीबहालत होगई क्योंकि दुनियां में जानकी जोखम से बुरी चीज़ कोई नहीं होती है मैंने कहा कि सच कह जो और तरह हो तो मैं वज़ू करलूं (पवित्र होजाऊं)[१] यूसुफ़ ने क़समें खाईं मगर उसकी सौगंदों को कौन मानता था। मैंने अपने में कमज़ोरी पाई उठकर बाग़ के १ कोने में गया और खूब सोचकर अपने दिल में कहा कि जो कोई १००. बर्ष और १००,० बर्ष की भी उमर पावे तो आखिर मरना है" (१)

सूचना.

फिर आगे सन ६१० के शुरू तक कुछ हाल नहीं लिखा है.।

(१) अपवित्र न मरूं।

(१) असल में यहीं तक लिखा है मालूम नहीं आगे का हाल क्या हुआ।

सन ९१० (सम्वत १५६१।६२) सन १५०४।५ ई०
फ़रग़ाना छोड़कर खुरासान को जाना.

मोहर्रम के महीने (असाढ़ सावन १५६१ जून जोलाई सन १५०४) में बादशाह फ़रग़ाने की वलायत से खुरसान[1] जाने का इरादा करके गरमियों में रहने के लिये हिसार की विलायत की १ ठंडी जगह असलाक नाम में आये वे लिखते हैं कि "यहीं २३वें वर्ष के लगते ही मैं ने अपने चिहरे पर उस्तरा फिराया छोटे बड़े आदमी जो उमेदवारी में मेरे साथ फिरते थे २०० से ज़ियादा ३०० से कम थे उनमें अकसर पैदल थे उनके हाथों में लाठियां पावों में चारुक और कंधों पर चापान थे नादारी यहां तक थी कि हमारे पास २ चादरें (कनातें) थीं मेरी चादर मेरी मा के वास्ते लगाई जाती थी और मेरे वास्ते हरेक मंज़िल में १ अलाजूक बना लिया जाता था जिसमें

(१) हबीबुल सियर में लिखा है कि बाबर बादशाह एक दो दिन तो मग़ूलिस्तान की तर्फ चले फिर यह सुनकर कि दुश्मनों ने आगे घाट को रोक लिया है ऊजड़ रस्ते से हिसार शादमां को लौट आये वहां से तिरमिज़ में गये जहां अमीर मोहम्मद बाक़िर ने यह सलाह दी कि तूरान के मुल्कों को तो मोहम्मद खाने दबा लिया है इसलिये आप काबुल (आगे ४८ पृष्ठ में)

में बैठा करता था

" इरादा तो खुरासान का किया गया था मगर हाल यह था और इन विलायतों तथा खुसरोशाह के नौकरों से उम्मेद वारी थी हर रोज़ एक आदमी आता था विलायत और कौम की तर्फ़ से ऐसी बातें कहता था कि जिनसे उम्मेद वारी बढ़ती थी"

बादशाह ने मुल्ला बाबा सागरी को खुसरो शाह के पास भेजा था वह भी यहीं आया खुसरो शाह की तर्फ़ से तो कोई बात तसल्ली की नहीं लाया मगर कौम और क़बीलों की तर्फ़ की बातें ठीक थीं बादशाह अमलाक से ३।४ मंज़िल चलकर ख़्वाजा इमाद नाम जगह में ठहरे जो हिसार के पास ही थी। यहां मोहम्मद अली कोरची खुसरो शाह के पास से आया। बादशाह लिखते हैं कि "खुसरो शाह सखावत और फ़ैय्याज़ी में मशहूर था और हमारा आना २ दफ़े उसकी विलायत में हुआ मगर उसने कोई अदल मनसी जो छोटे २ आदमियों से की थी हमसे नहीं की हमको क़ौम और क़बीलों से उम्मेद थी इस लिये रोज़ रोज़ एक एक मंज़िल में ठहरना होता था।

(४७ पृष्ठ की बाक़ी) की तर्फ़ जाकर उजबकों से दूर पड़जावें बाबर दूसरा पक्ष को पसंद करके सन ९१० में काबुल को रवाना हुवे रस्ते में अमीर खुसरो शाह की वलायत पड़ती थी वह आकर मिला और फिर डर कर हिरात के बादशाह सुलतान हुसेन मिरज़ा के बेटे बदीउल ज़मान मिरज़ा के पास भाग आया और बाबर ने जाकर मुक़ीम से काबुल छीन लिया पृ० (५२७)

उन दिनों में शेरम तुग़ाई से बड़ा कोई आदमी बादशाह के पास नहीं था वह भी ख़ुरासान जाने को राज़ी न होकर रस्ते से लौट जाना चाहता था बादशाह लिखते हैं कि कई बार ऐसी हरकतें कर चुका था नामर्द आदमी था जब हम क़बादियान में गये थे तो ख़ुसरो शाह के छोटे भाई शाह बाक़ी चग़ानीने जो शहर सफ़ा और तिरमिज़ का हाकिम था ख़तीब करशी को भेजकर ख़ैरख़्वाही की बातें कहलाईं और हमारे साथ होगया शाह इसमाईल सफ़्वी की मदद से लड़ाई का उपाय कियागया मगर बहादुरी और तलवार मारने से कुछ काम नहीं निकला क्योंकि तूरान का लेना तक़दीर में नहीं था आमू नदी से उतर कर चग़ानियों से मुलाक़ात की बाक़ी चग़ानियानी भी तिरमिज़ के सामने से आया हमने बाक़ी सामान और बेगमों को भी नदी से उतरवाकर अपने साथ लिया कहमर्द और बामियां की तर्फ़ जो उनदिनों में ख़ुसरो शाह के भानजे और बाक़ी के बेटे अहमद क़ासिम के पास थे कूच किया कि घरवालों को परगने कहमर्द के क़िले अजर में रखकर फिर जो बात ठहरे उसके मुवाफ़िक़ किया जावे.

जब एबक में पहुंचे तो यार अली बिलाल जो पहिले मेरे पास था और ख़ूब तलवारें मार चुका था मगर पिछली भागड़ में भागकर ख़ुसरो शाह के पास चलागया था कई जवानों के साथ वहां से भाग आया और ख़ुसरो शाह के पास के मुग़लों की तर्फ़ से ख़ैरख़्वा-

ही की बातें अरज़ करने लगा."

"फिर जब दरे दंदान में पहुंचे तो कंबर अली बेग भागकर ३।४ कूच में कहमर्द में आगया मैंने आजर के किले में घर के आदमियों को रखा और कई दिन वहां रहा जहांगीर मिरज़ा का ब्याह सुलतान मिरज़ा की बेटी से जो खानज़ादा बेगम से हुई थी कर दिया जिसकी मगनी मिरज़ा के जीते जी होगई थी"

"इस अरसे में बाकी बेग ने कई दफ़े मुझसे कहलाया कि १ विलायत में दो बादशाहों और १ लश्कर में २ अमीरों का रहना खराबी लाता है और कहा भी है कि १० फ़कीर तो १ कमली में सो रहते हैं मगर २ बादशाह १ विलायत में नहीं समाते. बादशाह सातों विलायतें लेकर भी दूसरी विलायत लेने की फ़िक्र में रहता है ऐसी उमेद कीजाती है कि आजकल में तमाम नौकर और सवार खुसरो शाह के आकर बादशाह की बंदगी क़बूल करलेंगे मगर वहां अयूब बेग के बेटे जैसे फ़सादी आदमी बहुत हैं जो मिरज़ाओं (शाहज़ादों) में झगड़ा बखेड़ा कराते रहे हैं."

"उन्हीं दिनों में जहांगीर मिरज़ा को खैर खूबी के साथ खुरासान की तर्फ़ रुखसत कियागया कि कल के दिन कोई बात शर्मिंदा होने और पछताने की नहीं होवे मेरी आदत ऐसी नहीं थी कि भाई बंद चाहें जितनी बे अदबी करके भी मुझसे नुकसान पावें जहांगीर मिरज़ा से और मुझसे नौकरी और मुल्क के वास्ते बहुत बिगाड़ रहा था मगर अब तो

वह उस विलायत से मेरे साथ होगया था मेरा भाई था ताबेदार था और इसवक्त उससे कोई हरकत भी ऐ-सी नहीं हुई थी जो नाराज़ी का कारण हो और उसने कई दफ़े अर्ज़ भी कराई पर मैंने क़बूल नकी-आखिर जैसा कि बाक़ी बेग ने कहा था वही फ़सादी लोग जो अयूब के बेटे यूसफ़ और बहलूल थे मेरे पास से भाग कर जहांगीर मिरज़ा के पास जाघुसेऔर छल कपट से उसको मुझसे अलग करके खुरासान में लेगये"

इन्हीं दिनों में सुलतान हुसेन मिरज़ा के फ़रमान मेरे, बदीउलज़मान मिरज़ा के खुसरो शाह और ज़ुल नून बेग के पास ऊल जलूल मज़मूनों के पहुंचे वे फ़रमान अबतक मेरे पास हैं उनमें यह लिखा था कि "जब सुलतान अहमद मिरज़ा, सुलतान महमूद मिरज़ा अली बेग मिरज़ा, वग़ैरा सब मिलकर मेरे ऊपर चढ़ आये थे तो मैंने मुरग़ाब (नदी) का किनारा मज़बूत पकड़ लिया था मिरज़ा लोग पास पहुंच कर भी कुछ काम न कर सके और लौट गये।

अबजो उजबक आवें तो मैं मुरग़ाब का किनारा मज़बूत पकड़ लूंगा और बदीउल ज़मान मिरज़ा बलख, शेरग़ाम और अंदखुद के क़िले अपने भरोसे के आदमियों से मज़बूत करके आप कजरबान और दरे रंग वग़ैरा पहाड़ों को मज़बूत करे" मेरे इधर आने की खबर उस (सुलतान हुसेन मिरज़ा) को लग गई थी इसलिये मुझे लिखा था कि तू कहमर्द, आजर, और

उस पहाड़ को मज़बूत कर और खुसरोशाह हिसार और कुंदुज़ के किले में अपने मोतबर आदमियों को छोड़कर आप अपने छोटे भाई वली समेत बदख़शां और ख़ुतलान के पहाड़ों को मज़बूत करके उजबक कोई काम न करके लौट जावेगा।

"सुलतान हुसेन मिरज़ा के इन ख़तों से ना उमेदी हुई क्योंकि तैमूरबेग के घरों में आज दिन उससे बड़ा और बहादुर बादशाह क्या तो उमर में क्या विलायत में और क्या लशकर में दूसरा नहीं था ऐसी उमेद की जाती थी कि लगातार एलची और तवाची आकर ऐसा हुकम लाते कि तिरमिज़ कल्लफ़ और करकी के घाटों, नावों, सामानों और पुलों के बांधने की ऐसी तैयारी करें और नाकों के ऊपर पहरे चौकी का ऐसा बंदोबस्त बांधें कि लोग जो इन कई बर्षों में उजबकों के फ़सादों से घबरा रहे हैं तसल्ली पाकर उमेदवार होजावें जबकि सुलतान हुसेन मिरज़ा जैसा शख़्स जोकि तैमूरबेग की जगह बैठा है और बड़ा बादशाह है ग़नीम के ऊपर जाने का नहीं कहे जगहों के मज़बूत करने का नहीं कहे तो लोगों को क्या उमेद रहे जो आदमी और घोड़े जो हमारे साथ आये हैं भूखे और दुबले हैं ख़ैर, हम अपने खटले बाक़ी चग़ानी और उसके बेटे अहमद क़ासिम और उनके साथ के सिपाहियों और बिरादरी वालों के जोरू बच्चों और असबाब को आजर के किले में रखकर और उनके लशकरों को साथ

लेकर वहां से निकले खुसरो शाह के मुग़लों के आदमी लगातार आने लगे (जो कहते थे) कि तमाम मुग़ल बादशाह की खैरख्वाही कबूल करके ताल कान से अशकमश, और कुलूल, की तर्फ चले गये हैं बादशाह जल्दी करके जलदी आवें क्योंकि खुसरो शाह के अक्सर मुग़ल और आदमी उसको छोड़कर बादशाह की बंदगी में आते हैं."

इसी जगह शेबारखां के इंदजान ले लेने कुंदुज़ और हिसार के ऊपर चढ़ाई करने की खबर आई जिसको सुनकर खुसरो शाह कुंदुज़ में न ठहर सका और अपने साथ के सब आदमियों का कूच कराकर काबुल को चलदिया खुसरो शाह के निकलते ही उसके क़रीबी और भरोसे वाले नौकर मुल्ला मोहम्मद तुर्किस्तानी ने तिरमिज़ का क़िला शेबारखां को सौंप दिया."

"जब हम क़ामीमूं के रस्ते से सुरखाब को जाने लगे तो तीन चार हज़ार घर मुग़लों के जो खुसरो शाह से इलाक़ा रखते थे और जो हिसार और कुंदुज़ में रहते थे अपनी फौजों समेत आकर साथ होगये कंबरअली मुग़ल बकवादी आदमी था और उसका ढंग बाक़ी बेग को नहीं भाया था इसलिये बाक़ी बेग की खातिर से उसको रुखसत देदी गई उसका बेटा अबदुलशकूर उस वक़्त से जहांगीर मिरज़ा का नौकर होगया."

" खुसरो शाह यह खबर सुनकर कि मुग़लों का

थोक हमारे साथ होगया है बहुत घबराया और कोई इलाज न देखकर अपने जमाई याक़ूब को भेजा तांबेदारी और खैर ख्वाही की बातें कहला कर यह चाहा कि जो क़ौल क़सम करो तो मैं बन्दगी में आऊं। उसवक़्त सब अख़तियार बाक़ी चग़ानियों के हाथ में था और वह अपने को बहुत ही कुछ खैरख्वाह जानता था मगर भाई की तर्फ़दारी भी उसने नहीं छोड़ी थी इसलिये उसने कहा कि इस तौर का क़ौल होजावे कि उसकी जान का बचाव रहे और माल खज़ाने में से जितना कुछ वह चाहे लेजाने दियाजावे। आख़िर इसी तरह पर क़ौल किया गया और याक़ूब को जाने की इजाज़त देकर हम सुरख़ाब से चलकर इलाकी नदी पर उतरे दूसरे दिन तड़के ही रबीउलअव्वल के बिचले दिनों में छड़ी सवारी से नदी को उतर कर दोशी के इलाक़े में एक बड़े चिनार (वृक्ष) के नीचे बैठे उधर से खुसरोशाह अपने लशकर के बहुत से आदमियों के साथ आकर दस्तूर के मुवाफ़िक़ दूर से उतर पड़ा और पास आकर ३ दफ़े और घूम कर तीन दफ़े ही उसने घुटना टेका खैरियत पूंछने और भेंट रखने में भी एक २ बार घुटना टेकता रहा जहांगीर मिरज़ा और खान मिरज़ा के आगे भी यही बरताव किया उस बूढ़े आदमी ने जो बरसों तक सिवाय इसके कि १ खुतबा अपने नाम का नहीं पढ़ाया था बाक़ी सब सामान सल्तनत का उसके पास था. २५।२६ मर्तबे लगातार घुटना टेका आने जाने मे थक गया

नज़दीक था कि गिरपड़े कई वर्ष की बादशाही औ
र अमीरी सब उसकी गोमेंसे निकल आई मिलने
और भेंट रखने के बाद मैंने फ़रमाया कि बेडजा-
वे १ घड़ी बैठकर इधर उधर की बातें करता रहा
वह नामर्दी और नमक हरामी के सिवाय फोर्स और
फीकी बातें करने वाला भी था ऐसी जगह पर कि ज-
हां उसके भरोसे के नौकर उसकी आंखों के आगे झुंड
के झुंड आकर मेरे नौकर होते जाते थे और उसकी
यहां तक नौबत पहुंच गई थी कि बादशाही करता २
इतनी गिरी हुई हालत में देखाजाता था तो भी उसने
अजब २ बातें कहीं जिनमें से येक यही थी कि अपने
नौकरों के फटजाने से उनका मन मनाने की जगह
उसने कहा कि ये नौकर ४ दफ़े इसी तरह से मेरे पास
से अलग होगये हैं और फिर आगये हैं। दूसरे जब
उसके छोटे भाई वली के लिये मैंने पूछा कि कब
आवेगा और आमू नदी के किस घाट से उतरेगा तो
कहा कि जो घाट मिलगया तो आप चला आवेगा
नहीं तो पानी के बढ़जानेसेघाट ही बदल जाते हैं यह
वही मसल हुई कि " घाट को पानी बहा लेगया " उस
की रियासत और नौकरों के बदल जाने में ख़ुदा ने
यह बात उसी के मुंह से कहलवा दी दो एक घड़ी
पीछे मैंतो सवार होकर अपने उर्दू में आगया और
वह भी जहां उतरा था वहां चलागया उसी दिन
से उसके छोटे बड़े और अच्छे बुरे अमीरों के दल
के दल अपने जोरू बच्चों और माल असबाब-

समेत उसको छोड़ २ कर हमारे पास आने लगे सु-
लह से तीसरे पहर और शाम तक फिर कोई उस
के पास नहीं रहा। सच है कि मुल्क का मालिक ख़ु-
दा है वह जिसको चाहता है देता है और जिससे
चाहता है छीन लेता है इज़्ज़त देना और बेइज़्ज़त
करना सब उसके अख़तियार में है।

वह अजब क़ादिर (शक्तिमान) है कि जिस आद-
मी के पास २०।३० हज़ार नौकर थे और कहलू-
के से जिसे आहनी दर बंद (लोहे का घाटा) भी कहते
हैं हिन्दूकुश पहाड़ तक जो वलायत सुलतान महमूद
मिरज़ा की थी वह सब उसके पास थी और उस
का १ बूढ़ा तहसीलदार हसन अल्लास नाम गिरफ़्ता-
री करके हमको इलाक़ा से एवाज़ में सख़्ती के
साथ हकालता और उतारता था आधे ही दिन में
जब न तो लड़ाई हुई न हथियार चला इसको हमारे
२।३।। टल्टिट्टी और कंगले आदमियों के सामने
ऐसा लाचार और बेबस किया कि न तो उसका नौ-
करों पर कुछ अख़तियार रहा और न अपनी जान
और मालपर। उसी रात को जबकि मैं ख़ुसरोशाह को
देखकर लौटा था ख़ान मिरज़ा ने मेरे पास आकर
अपने भाईयों के ख़ून का दावा किया और हम मेंसे
बहुत लोग भी यही चाहते थे और शरअ़ तथा रिवाज
से भी यही मुनासिब था कि ऐसे लोग अपनी सज़ा
को पहुंचें मगर वचन दिया जा चुका था इसलिये
मैंने ख़ुसरो शाह को छोड़ दिया और यह भी हुक्म

देदिया कि जो कुछ अपना असबाब लेजासके ले जावे। उसके पास जो ३।४ ऊंट और खच्चर थे उन्हींपर उसने जवाहरात और सोने चांदी वगैरा की कीमती चीजें लाद लीं मैंने शेरम तुगाई को उसके साथ करके कहा कि खुसरो शाह को गोरी और दहाने के रस्ता से खुरासान में पहुंचा दे और फिर कह मर्द जाकर बेगमों को काबुल ले आवे" फिर हम उस जगह से काबुल जाने के वास्ते कूच करके ख्वाजे ज़ेद में ठहरे उसी दिन उजबक हमज़ा खोज देखता हुआ आया और दोशी के ऊपर दौड़ा हमने क़ासिम ऐशक आका और मोहम्मद क़ासिम पहाड़ काटने वाले को भेजा ये उजबकों को खूब ज़ेर करके कई सिर काट लाये।"

" इस मंज़िल में खुसरो शाह के खासे बकतर बांटेगये यह सब ७।८०० बकतर और कुरते थे खुसरो शाह की चीज़ों में से रखने की चीजें यही थीं चीज़ें तो और भी थीं मगर पसंद के लायक़ नहीं थीं।"

" ख्वाजा ज़ेद से हम ३।४ कूच में गोर बंद पहुंचे जब असीर शहर में उतरे तो खबर पाई कि शेरक नाम अरगून जो मुक़ीम के बड़े अमीरों में से था फौज लेकर आया है। और आबेबारां के किनारे पर उन आदमियों के रोकने के लिये बैठा है जो पंजहरे के रस्ते से अबदुल रज्ज़ाक मिरज़ा के पास जाने वाले थे क्योंकि मिरज़ा काबुल से भाग कर लमग़ान के तरकलानी जाति के अफ़ग़ानों में चलागया

था ओरशेरक" को हमारे आने की खबर नहीं है."

"हम इस लश्कर के पहुंचते ही तीसरे पहर को वहां से कूच करके रातों रात होपियां की घाटी से उतरे हमने कभी सुहेल (अगस्त का तारा) नहीं देखा था यहां जब पहाड़ पर चढ़े तो दक्षिण की तर्फ नीचे से उस सितारे की रोशनी जाहिर हुई मैंने कहा कहीं सुहेल तो नहो. लोगों ने कहा कि सुहेल ही है बाक़ी बगानियांने १ बैतपढ़ी जिसका मतलब यह था कि तू सुहेल ही है कहां चमकता है और कब उगता है तेरी आंख जिस किसी पर पड़ती है उस के वास्ते दौलत की निशानी है."

"सूरज १ भाले के बराबर चढ़ा होगा कि हम संजद के घाटे में जो उतरे हमने कुछ जवानों को तो पहिले गिरदावरी के लिये भेज दिया था और कुछ करा बाग़ और अलदरी के पास से फिर भेजे वह पहुंचते ही ओरक पर दौड़े और थोड़ी सी लड़ाई में ऐरक के ७०।८० अच्छे जवानों को गिराकर उनको पकड़ लाये."

"उधर खुसरोशाह जो अपने मुल्क (कोम और कर्बाले) को छोड़ कर कुंदुज़ से काबुल को रवाने हुआ था शेख़ तुग़ई का साथ छोड़ कर खुरासान को भाग गया उसके साथी ५।६ जमायतें बनकर आगे पीछे मेरे पास आगये और क़राबाग़ में जुल्म करने लगे क्योंकि उन्होंने यही बात सीखी थी आखर मैंने सैयद अली दरबान के १ अच्छे नौकर को

जिसने किसी से घी का कुल्हड़ा छीन लिया था और जो उसके घर से निकला था दंडों से पिटवाया वह पिटते २ मरगया इस सज़ा से सब लोग डरगये.

"१ जलालुद्दीन खुसरोशाह के छोटे भाई वली के साथ खुत्तलान से अमी की मुराद के घाटे से उतरते हुवे उधर के मुग़लों ने उसे जा घेरा. वली अपनी जमाअत को ज़ेर कराकर उज़बकों के पास गया शेबा खां ने समरक़ंद के बाज़ार में उसको मरवा डाला. इसतरह से वली के मरजाने पर उसके नौकर चाकर भी बादशाह के पास दरा बाग़ में आगये.

बादशाह की काबुल पर चढ़ाई

संजव में बादशाह ने काबुल पर जाने न जाने की सलाह की यूसफ़ बेग और कई लोगों ने तो कहा कि जाड़ा नज़दीक है अभी तो लमग़ान में चलें और वहां जैसी कुछ बात ठहरे वैसा करें बाक़ी चिग़ानियानी और कई दूसरे आदमियों ने काबुल जाने और काबुल लेने की सलाह दी बादशाह वहां से कूच करके कोरूक में उतरे यहीं उनकी मांयें बेगमें और दूसरे लोगों की औरतें भी जो कहमर्द में रहगई थीं रस्ते में बाग़ियों से लुटतीं पिटतीं शेरम के साथ आकर बादशाह के शामिल होगईं.

बादशाह कोरूक से कूच करके १ मंज़िल बी-

डीर में टेकर औलांग चालाक में ठहरे वहां फिर सलाह होकर काबुल को घेरने की बात ठहरी· बादशाह ने कूच करके काबुल को घेर लिया बीच की फ़ौज बादशाह के मोरचे में. दहने हाथ की जहांगीर मिरज़ा के मोरचे में· और बायें हाथ की नासिर मिरज़ा के मोरचे में. थी·

बादशाह के आदमी मुक़ीम के पास जाते थे वह कभी कुछ बहाना करता था और कभी मीठीर बातों में टाल जाता था क्योंकि जब बादशाह ने शेरक को पकड़ा था तो मुक़ीम ने अपने बाप और भाई के पास क़ासिद दौड़ाया था और उधर की उमेद वारी पर ढील करता था. १ दिन बादशाह ने तमाम सिपाहियों और घोड़ों को बकतर और पाखर पहिना कर अंदर वालों को डराने के लिये काबुल पर धावा किया कुछ लोग जो लड़ने को बाहर निकले थे थोड़ा सा मुक़ाबिला करके भाग गये और बहुत से आदमी कोट पर तमाशा देखने को चढ़े थे वे भी घबराकर लौटते हुवे गड़ बड़ में नीचे गिर पड़े बादशाह का हुकम लड़ने का न था इसलिये इतने पर ही बस करके लशकर लौट आया क़िलेवाले· हिम्मत हार गये.

मुक़ीम ने अमीरों को बीच में डालकर हाज़िर होना और काबुल सोंप देना क़बूल करलिया और बाक़ीबेग चग़ानियानी के साथ बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर होगया। बादशाह लिखते हैं कि "हमने

भी महरबान होकर उसके दिलका खटका दूर किया और यह बात ठहराई कि कल अपने सब नौकरों सर्दारों और माल असबाब को लेकर निकल आवे और किला सौंप दे खुसरोशाह के आदमी बेसिरी और लूट मार सीखे हुवे थे इसलिये हमने जहांगीर मिरज़ा, नासिर मिरज़ा, बड़े २ अमीरों और कोटवालों को हुक्म दिया कि जाकर मुक़ीम और उसके आदमियों को माल असबाब के साथ निकाल लावें और मुक़ीम को उतारने की जगह पत्तेथूरत में तजवीज़ कीगई."

"तड़के ही वे मिरज़ा और अमीर जो दरवाज़े पर गये और वहां भीड़ बहुत देखी तो उन्होंने आदमी भेजकर मुझसे कहलाया कि जबतक तुम नहीं आवोगे इन लोगों को कोई नहीं रोक सकेगा."

"आख़िर में खुद सवार होकर गया ४।५ आदमियों को तीर से मारा और दो एक को टुकड़े २ करा दिया तब वह कोला हल बंद हुआ और मुक़ीम अपने सब आदमियों के साथ सही सलामत जाकर पत्ते में उतरा खुदा ने अपनी महरबानी से मुक़ीम की सब विलायत (काबुल और ग़ज़नी) लड़ाई भिड़ाई के बिना ही मुझे रबीउल आख़िर के महीने (आसोज कातिक सम्वत १५६१। सितंबर अकतूबर सन १५०४ ई.) को फ़तह करदी.

काबुलका कुछहाल

"काबुल की विलायत चौथी अक़लीम[१] में से आ-

(१) दुनियां के सातवें भाग का नाम. क्योंकि मुसलमानी मतसे दुनिया के ७ भाग हैं जिनको ७ अकलीम कहते हैं.

वादी के बीच में है उसके पूर्व में लमगान, पशावर काशगर, और हिन्दोस्तान की बाजी विलायतें हैं। पश्चिम में पहाड़ करनु और गोर उन्हीं पहाड़ों में हैं। उत्तर में कुन्दुज़ और ईराब है हिन्दूकुश पहाड़ बीच में है। दक्षिण में फ़रमल, नग़र, बन्नू, और अफ़ग़ानिस्तान, है छोटी सी विलायत है लंबी ज़ियादा है उसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम को है चौतर्फ़ पहाड़ही पहाड़ हैं।

"दूसरी विलायत ग़ज़नी है बाज़े लोग उसको तूमान भी कहते हैं सुबुक्तगीन, सुलतान महमूद और उसकी औलाद का तख़्त ग़ज़नी में रहा है ग़ज़नी का नाम ग़ज़नीन भी लिखा है सुलतान शहाबुद्दीन गोरी का तख़्त भी ग़ज़नी में ही था इस सुलतान शहाबुद्दीन को तबक़ाते नासिरी और हिन्दोस्तान की बाज़ी तवारीखों में "मुअज़्ज़ुद्दीन" लिखा है ग़ज़नी तीसरी अक़लीम में से है इसको ज़ाबुल भी कहते हैं ज़ाबुलिस्तान इसी का नाम है कई लोगों ने कंधार को भी ज़ाबुलिस्तान में माना है पर काबुल से पश्चिम को १४ फरसंग (४२ मील) है तड़के से शाम तक काबुल जा सकते हैं और आदिनापुर १३ फरसंग ही है मगर रस्ता ख़राब होने से कभी में १ दिन में नहीं पहुंच सकता था। ग़ज़नी में सुलतान महमूद और उसकी औलाद में से मसऊद और इब्राहीम की क़बरें हैं और भी बुजुर्गों की कबरें बहुत हैं। जिस साल मैंने काबुल लिया था और अफ़ग़ानिस्तान मर

चढ़ाई करके लौटती वक़्त ग़ज़नी में गया था तो लोगों ने मुझसे कहा कि यहां १ क़बर है जो दरूद पढ़ते ही हिलने लगती है। मैंने जाकर देखा तो हिलती हुई मालूम हुई आख़िर को पता लगाया गया कि मुजावरों की चालाकी है उन्होंने क़बर पर १ चलपा (फूला) लगा रखा था और जब वे उसके पास जाते और वह हिलने लगता तो क़बर भी वैसी ही हिलती हुई जान पड़ती थी जैसे कि नाव में बैठे हुए आदमियों को नदी के किनारे हिलते हुये मालूम देते हैं। मैंने मुजावरों को चलपा से दूर खड़ा किया और ख़ूब दरूद पढ़वाई मगर क़बर ज़रा भी नहीं हिली। तब मैंने हुक्म दिया कि चलपे को क़बर पर से हटा कर गुंबद बनादेवें और मुजावरों को धमका दिया कि फिर ऐसा छल कपट न करें.

ग़ज़नी छोटी सी जगह है जिन बादशाहों के नीचे हिन्दुस्तान और ख़ुरासान था ख़ुरासान को छोड़ कर क्यों ऐसी छोटी सी जगह में अपना तख़्त रखा था. इसका मैं हमेशा अचंभा करता रहा हूं सुलतान महमूद ग़ाज़ी के वक़्त में यहां ३।४ बंद पानी के थे सुलतान ने पश्चिम और उत्तर में ३ फ़रसख़ बड़ा बंद पानी का बंधवाया था जो ४०।५० गज़ ऊंचा ३ सौ एक गज़ लम्बा था जिसमें पानी जमा रखकर ज़रूरत के मुवाफ़िक़ खेतों में देते थे अलाउद्दीन जहां सोज़ (दुनियां को जलाने वाले) ग़ोरी ने जब इस विलायत पर कबजा किया था तो इस बंद को तोड़

ड़कर सुल्तान महमूद के बहुत से बेटों पोतों की क़बरें जलादी थीं और शहर ग़ज़नी को उजाड़ कर लोगों के लूटने मारने में कसर नहीं रखी थी उस वक़्त से यह बंद ख़राब पड़ा था जिस साल मैंने हिंदोस्तान फ़तह किया था तो इस बंद को बनादेने के लिये बहुत से रुपये ख़्वाजा कलां के हाथ भेजे थे ऐसे ही एक और बंद भी जो ग़ज़नी से पूर्व २।३ कोस पर ख़राब पड़ा है दुरुस्त कराने के लायक़ है। किताबों में लिखा है कि ग़ज़नी में १ चश्मा (झरना) है जिसमें अगर मैला कुचैला कूड़ा किरकट डालें तो उसी दम मेंह और बर्फ़ ज़ोर से गिरने लगे और १ किताब में देखा गया था कि जब हिन्दोस्तान के राजा ने सुबुक्तगीन को ग़ज़नी में आ घेरा था तो सुबुक्तगीन ने उस चश्मे में मैला कुचैला कूड़ा डलवाकर मेंह और बर्फ़ के ज़ोर से अपने दुश्मन को हरा दिया था मैंने ग़ज़नी में उस चश्मे को बहुत ढूंढा मगर किसी ने उसका पता नहीं बताया।"

" विलायत काबुल की कुल जमा लमग़ानों और जंगलों में रहने वालों (के हासिल) समेत ८ लाख शाहरुखी की हुई.

इस विलायत में जंगलों के रहने वाले हज़ारे और अफ़ग़ान लोग हैं जैसाकि ख़ुरासान और समरकंद में तुर्क और ऐमाक जंगली लोग हैं हज़ारों लोगों में बहुत बड़ा आदमी सुलतान मसऊद है और अ-

फ़गानों में बहुत बड़े लोगमहम्मद हैं.

मुक़ीमको बिदाकरना

कुछ दिनों पीछे मुक़ीम ने कंधार जाने की रुख़सत मांगी और वह आया भी वचन कचन से था इस लिये बादशाह ने उसे सब उसके आदमी और माल असबाब समेत सही सलामत उसके बाप और बड़े भाई के पास जाने दिया और उसके जाने के पीछे काबुल की विलायत महमान अमीरों को बांट दी जो अमीर और जवान क़ज्ज़ाक़ियों (लूटमार) में साथ २ फिरते थे उनमें से बाज़े २ को गांव ज़मीन और हल दिये विलायत किसी को नहीं दी । बादशाह लिखते हैं कि "यह ऐसा अभी ही नहीं हुवा है बल्कि जब कभी ख़ुदा ने मुझे दौलत दी है तो मैंने महमान और अजनबी अमीरों तथा जवानों को बाबरियों और इंदजानियों से ज़ियादा और अच्छा दिया है और फिर भी ग़ज़ब यह है कि लोग हमेशा मुझे बुरा कहते हैं कि सिवाय बाबरियों और इंदजानियों के किसी को कुछ नहीं देता है तुरकी कहावत है कि "दुशमन क्या नहीं कहता है और सपने में क्या नहीं दिखाता है शहर का दरवाज़ा बंद कर सकते हैं मगर दुशमनों की ज़बान नहीं बंद कर सकते."

काबुल और ग़ज़नीन पर नाज का कर

हिसार. कुन्दुज़. और समरकंद से बहुत से ऐल और उलूस (बिरादरी वाले) आगये थे इसलिये यह सलाह हुई कि काबुल छोटी सी जगह तलवार चलाने की है क़लम चलाने की नहीं है तमाम आदमियों को तो कुछ भी नहीं देसकते इनके बाल बच्चों को कुछ २ अनाज देकर लशकर के साथ सवारी की जावे यह बात ठहरकर काबुल और ग़ज़नी की विलायत पर नाज की ३० हज़ार खरवार (गौने) डाली गई। बादशाह लिखते हैं कि "काबुल के हासिल को नजानकर ऐसा भारी बोझ डाला गया था इससे ये विलायत ख़राब होगई और इसी मौक़े पर बाबरी हिस्सा (कर) मैंने नया निकाला और सुलतान मसऊद की जाति के हज़ारा लोगों पर बहुत से घोड़े और बकरियां डालकर तहसीलदार भेजदिये.

हज़ारा लोगों को लूटना.

कुछ दिनों पीछे तहसीलदारों ने ख़बर भेजी कि हज़ारा लोग माल नहीं देते हैं बाग़ी होगये हैं। उन्हों ने पहिले भी ग़ज़नीन और गुरदेज़ के रस्ते में लूटमार की थी इसलिये बादशाह उनपर चढ़गये और न[illegible] की घाटी से रातों रात उतर कर तड़के ही उनपर जा पड़े और मन चाही लूट खसोट करके संगसुरा-

ख़ के रस्ते से लौटे जहांगीर मिर्ज़ा को ग़ज़नीन जा-
ने की रुख़सत हुई.

हिन्दुस्तान की पहिली चढ़ाई और।
पठानों को लूटमारकर काबुल में आना

काबुल में उतरते ही दरियाख़ां का बेटा यार हुसे-
न बहीरे से बंदगी में आया था कई दिनों पीछे बा-
दशाह ने लशकर सजाकर उन आदमियों को जो हरत-
र्फ़ का हाल जानते थे बुलाकर पूछ ताछ की बा-
ज़ों ने दश्त नाम इलाक़े में जाने को कहा बाज़ों
ने बंगश को ठीक समझा और बाज़ों ने हिन्दुस्तान को
अच्छा जाना आख़िर हिन्दुस्तान पर ही चढ़ाई कर-
ने की ठहरी शाबान के महीने (माह फागुण १५६१
दिसम्बर १५०४ जनवरी १५०५) में जबकि सूरज कुंभ
राशि पर था बादशाह ने काबुल से हिन्दुस्तान पर
चढ़ाई की चश्मे बादाम और जगदलक के रस्ते से
६ मंज़िल चलकर आदीना पुर में मुक़ाम किया बा-
दशाह ने गर्म विलायत और हिन्दुस्तान की तलहटी
कभी नहीं देखी थी इसलिये यहां पहुंचते ही उनको
दूसरी दुनियां नज़र आई जंगली जनावर परेन्द और
आदमी नये नये रंग ढंग के देखकर बड़ी हैरत हुई
और हैरत की बात ही थी.

नासिर मिर्ज़ा और उधर के लशकरी लोग तो सब
जाड़ों में रहने के वास्ते लमग़ानों[1] में आगये थे कुछ

(१) कारस और काबुल के बीच में गर्म ज़िला.

लशकर पीछे भी रहगया था उसके वास्ते बादशाह दो एक दिन आदीना पुर में रहकर फिर सब के सब जू ये शाही नाम नदी से उतरे और क़ौस गुबंद में ठहरे वहां से चलकर गर्म चश्मे में रहे यहां से काक सानी जाति के मुखिया याह्या नाम को जो कार्‌वानियों (सौदागरों) के साथ आया था ज़मीन और रस्ते का भेद होने से अपने पास रखकर दो येक कूच में खेबर के घाटे से उतरे और जाम में ठहरे.

बादशाह ने गोरख सत्री (छत्री) की तारीफ़ सुनी थी कि जोगियों का धाम है और हिन्दू लोग दूर २ से आकर वहां सिर और डाढ़ी के बाल मुंडाते हैं बादशाह जाम में उतरते ही बिकराम की सैर को सवार होगये १ बड़े बृक्ष को देखकर बिकराम के आस पास घूमे मलिक सईद बिकरामी अगुवा था उससे गोरख सत्री को पूछा तो कुछ न बोला जब बादशाह लौटकर उर्दू के पास आये तो उसने मोहम्मद अमीन से कहा कि गोरख सत्री बिकराम के पास ही थी मगर तंग गुफ़ायें और जोखम की जगह होने का ख़याल करके बादशाह से न कहा.

जब मोहम्मद अमीन ने यही बात बादशाह से कही तो बादशाह ने कहा कि "उसने बुरा किया" मगर बेवक़्त होगया था और रस्ता भी दूर था इस लिये बादशाह वहां न जासके और डेरे पर आकर यह सलाह पूछी कि सिंध से उतर कर किधर जाना चाहिये बाक़ी चग़ानयानी ने अर्ज़ की कि सिंध

से न उतर कर खटनाम जगह में मालदार आदमी ब हुत रहते हैं वहां चलें और वह कई कानिलियों को लाया जिन्होंने भी उसके कहने के मुवाफ़िक ही अर्ज़ की.

बादशाह लिखते हैं कि "मैंने कभी इस जगह का नाम नहीं सुना था मगर जब १ बड़े आदमी ने उधर जाने की सलाह दी और अपनी बात साबित करने के लिये गवाह भी गुज़रा दिये तो सिंध नदी से उतरने और हिन्दुस्तान पर जाने का इरादा तोड़ दिया गया.

बादशाह जाम से कूच करके बाड़े की नदी को उतरे और शेख मोहम्मद दामानी नाम मुक़ाम के पास ठहरे काकयानी जाति के अफ़ग़ान जो पिशावर में थे लशकर के डर से पहाड़ में चलेगये थे उनके मुखिया लोगों में से खुसरो काकयानी आकर मिला बादशाह ने उसको रस्ता और ज़मीन देखते चलने के वास्ते याहा के साथ कर दिया और आधी रात से कूच करके तड़के ही खट को जा मारा गायें भैंसें बहुत हाथ आईं बहुत से अफ़ग़ानी भी पकड़े गये बादशाह ने क़ैदियों को अलग करके सबको छुट्टी देदी उनके घरों में नाज बहुत भरा हुआ था लुटेरे भी सिंध नदी तक लूट मार करके दूसरे दिन बादशाह से आ मिले बाकी चग़ानियानी ने जैसा कहा था वैसा कुछ लशकर वालों के हाथ न पड़ा इससे वह शर्मिन्दा सा होगया. बादशाह

ने दो दिन रात खट में रहकर सिपाहियों को जमा किया और यह सलाह की कि अब किधर जाना ठीक है आखिर यह बात ठहरी कि बन्नू और बंगश के पठानों को लूट कर नगर और फरमल के रस्ते से लौट चलें.

दरिया खां के बेटे यार हुसेन ने जो काबुल में आकर मिला था अर्ज़ की कि जो दिलज़ाक, यूसफ़ज़ई, और कांकयानी, पठानों के नाम हुक्म लिख दिया जावे कि मेरे कहने से बाहर नहो तो मैं सिंध के उधर जाकर " बादशाह की तलवार मारूं"

बादशाह ने उसकी मरज़ी के मुवाफ़िक़ फ़रमान लिखकर उसको खटसे बिदा किया और आप हंगू के रस्ते बंगश को रवाने हुए पठान पहाड़ों में जमा होकर लड़े मगर मलिक बूसईद किकयानी के रस्ता बताने और भेद देने से मारे और पकड़े गये निदान मुंह में तिनके लेलेकर आये.

बादशाह लिखते हैं कि " जब पठान लड़ने से थक जाते हैं तो मुंह में घास लेकर अपने दुशमन के पास जाते हैं कि हम तुम्हारी गायें हैं यह रस्म यहीं देखी गई.

मगर जो पठान मुंह में घास लेकर आये थे और जो पकड़े गये बादशाह ने उन सब के सिर काटकर उसी जगह[१]

(१) बादशाह की जगह अगर कोई हिन्दू राजा होता तो कभी उन पठानों को नहीं मारता पठान क्या दूसरे मुसलमान भी हिन्दु

यह कि जहां ठहरे हुए थे कल्ले मीनार (मस्तक स्तंभ)[1] बनाने का हुक्म दिया.

दूसरे दिन बादशाह ने हंकू में जाकर वहां के पठानों का संगर जो उन्होंने १ पहाड़ी में बनाया था तोड़ कर सौ २ सौ पठानों के सिरों से वैसा ही मीनार उठवाया वहां से चलकर बंगशबाला[2] के नीचे तंकल नाम जगह में डेरा किया और पठानों की संगर लूटने को किसी सिपाहियों को भेजा.

दूसरे दिन १ तंग घाटी से उतर कर बन्नू में लशकर डाला रस्ते में आदमियों घोड़ों और ऊंटों को बहुत तकलीफ़ हुई. लूट के गाय बैल छूट गये सीधा रस्ता सीधे हाथ को २ कोस पर रह गया था यह रस्ता सवारों का नहीं गड़रियों का था.

मलिक अबू सईद कियानी रस्ता बताने वाला था अकसर लोगों ने रस्ते से बाईं तर्फ़ पड़जाना उसी से समझा.

पहाड़ी पर चढ़ते ही बन्नू और बंगश दिखाई

स्तान में वक्त पर ऐसे ही मुंह में तिनके लेलिया करते थे "ग़यासुल्लुग़त" के १५८ पृष्ठ में लिखा है कि मुंह या दांतों में तिनके लेलेना आजिज़ी (दीनता) करना और पनाह मांगना है जब हिन्दू किसी के जबरदस्त लिवआते हैं तो उस फ़ौज के लोग मुंह में तिनके ले लेते हैं कि हम आपकी गाय हैं हमारा मारना रवा नहीं है" इस किताब वाले ने बात तो पूरी लिखदी है पर मुसलमानों का नाम नहीं खोला है. (१) राजपूत ऐसे स्तंभ को मबर कोट कहते थे (२) बंगश के दो भाग हैं एक तो पहाड़ के ऊपर है वह बंगश बाला कहलाता है और दूसरा पहाड़ के नीचे है वह बंगश पाईन कहा जाता है.।

हिये थे सम चौरस मैदान में थे उत्तर में नगार और बंगश के पहाड़ थे बंगश की नदी बन्नू से आती है बन्नू इसी नदी से आबाद है दक्खन में चौपारा और सिंध नदी है। पूर्व में धनकोट है। पश्चिम में ताक नाम जंगल है करानी, क्यूई, सूर, ईसा खेल और न्याजी जाति के पठान इस विलायत को जोतते बोते हैं.

बादशाह ने बन्नू में उतरते ही सुना कि इस मैदान के पठान उत्तर के पहाड़ में संगर बनाये बैठे हैं जहांगीर मिर्ज़ा ने जाकर क्यूई लोगों के संगर को दम भर में लेलिया और क़तल आम करके बहुत से सिर काटलाया जिस्से बन्नू में भी कल्लामीनार बनाया गया लूट भी लशकर के हाथ बहुत आई.

इस संगर के हाथ आजाने के पीछे शादीखां जो क्यूई लोगों में बड़ा आदमी था दांतों में घास लेकर हाज़िर हुआ बादशाह ने क़ैदी उसको बख़्श दिये और सुबह ही बन्नू से कूच करके ईसाखेल के गांव में डेरा किया वहां ईसा खेलों का जूबारे के पहाड़ों में जाना सुनकर उन पहाड़ों के नीचे गये सिपाहियों ने पहाड़ों में जाकर ईसा खेल का १ संगर तोड़ा बकरियां और असबाब लेआये इसी रात को ईसाखेल पठानों ने छापामारा मगर कुछ न कर सके क्योंकि बादशाही लशकर में चौकी पहरा खूब रहता था दाई बाईं बीच की ओर आगे की फ़ौजों को हुक्म था कि रात को हथियार बांधकर डेरों कनातों

से १ तीर के टप्पे पर लशकर के आस पास पैदल ख-
ड़े रहें और तीन चार चौकीदार मशाल लिये हुये बा-
हर २ से उर्दू के चौतर्फ़ फिरा करें १ बार बादशाह खु
द भी फिरते थे और जो कोई फिरने को नहीं निकल
ता होता तो उसकी नाक चीरकर लशकर के गिर्द फि
राते थे.

दहनी फ़ौज में जहांगीर मिर्ज़ा बाक़ी चग़ानियानी
वग़ैरा. बाईं में मिर्ज़ा खान वग़ैरा और हिरावल में स
शक आक़ा वग़ैरा अमीर थे बीच की फ़ौज में कोई ब
ड़ा अमीर नहीं था बादशाह के पास के रहने वाले अ
मीर थे.

लशकर के ६ तुंग किये हुये थे हरेक तुंग की
बारी १ रात दिन के पहरे चौकी की थी.

फिर पहाड़ के नीचे से कूच होकर पश्चिम को
बग़ैर पानी के मैदान में मुक़ाम हुआ जहां सिपाहि
यों ने ज़मीन खोदकर अपने रेवड़ को पानी पिला
लिया बादशाह लिखते हैं कि "१ गज़ या १॥ गज़ खो-
दने से पानी निकल आता था अकेली दूसी सूखी न
दी से पानी नहीं निकला बल्कि हिन्दुस्तान की
कुल नदियों की यही ख़ासियत है कि गज़ डेढ़ गज़ खो
दने से ज़रूर पानी निकल आता है खुदा की अजी-
ब कुदरत है कि हिन्दुस्तान में जहां दरियाओं के सि
वायं बहता पानी नहीं होता है नदियों के भीतर इ
सी तरह से पानी बहुत पास रहता है.

सुबह ही बादशाह उस सूखी नदी से कूच कर

के दश्त नाम गांव में छड़ी सवारी से पहुंचे और कई लुटेरे सिपाही गांव को लूट कर रेवड़ असबाब और घोड़े ले आये.

इस रात दूसरे दिन दूसरी रात बल्कि तीसरी रात तक लश्कर के पियादे बोझ के असबाब रेवड़ और ऊंट आते रहे.

बादशाह दूसरे दिन भी वहां रहे चापकूनची (लुटेरे) उस जंगल के गांव में से गायें और बकरियां बहुत २ लाते रहे फिर वे सौदागरों से लड़भिड़ कर सफ़ेद कपड़े, किराना खांड मिसरी वगैरा सौदागरी माल लेआये ख्वाजा खिज़र लोहानी पठानों में बड़ा सौदागर था सैदी मुअल्म उसको मारकर सिर काट लाया. सेरम तुगाई की उंगली १ पठान प्यादे ने तलवार मारकर काट दी.

बादशाह दूसरे दिन कूच करके उसी जंगल में तबरीक (नामगांव) के पास. और वहां से चलकर कोतल नदी के किनारे पर ठहरे.

इस जंगल में पच्छिम से दो रस्ते जाते थे १ तो संगसुराख का रस्ता जो तबरीक में होकर फ़रमल जाता था और दूसरा भी कोतल के किनारे किनारे तबरीक को छोड़ता हुआ फ़रमल में जा पहुंचता था । इसलिये यह सलाह होने लगी कि किस रस्ते से जाना चाहिये.

कुछ लोगों ने कोतल के रस्ते को पसंद किया मगर उन दिनों में मेंह बराबर बरसता रहा था

और नदी में पानी बहुत आगया था इसका भी ख्या
ल था अभी कोई बात नहीं ठहरी थी कि बादशा
ह नगाड़ा बजाकर सवार होगये घोड़े पर चढ़ी बाल
कि किधर होकर चलने को कहने आते थे उस
दिन ईद फ़ितर (शव्वाल- चैत सुदि २ सम्वत १५६२
९ अप्रैल १५०५) थी. बादशाह तो नहाने में लग
रहे और जहांगीर मिर्ज़ा बेग वगैरह आपस में
सलाह करके सुलेमान नाम पहाड़ के नीचे का रा
स्ता लेकर चलदिये जब बादशाह नहाने से नि
कले तो वे लोग पहाड़ के नाके तक जापहुंचे थे
और कुछ लोग तो कोतल नदी से भी उतर गये थे

बादशाह ने ईद की नमाज़ इसी नदी के
किनारे पर पढ़ी इस बर्ष ईद और नौरोज़ में १ ही
दिन का फ़र्क रह गया था.

फिर बादशाह नदी से उतर कर पहाड़ के
नीचे नीचे आगे बढ़े पठान सामने आते हुवे मि
ले कुछ मारे कुछ मारेगये जो पकड़े आये थे
उनको बादशाह ने छोड़ दिया.

३ दिन पीछे बादशाह उसी पहाड़ी रस्ते से
बीला नाम १ छोटे से क़सबे में पहुंचे जो मुल-
तान के इलाक़े में सिंध नदी के किनारे पर था
वहां वाले नावों में बैठकर भागे कुछ पानी में तै
र जरहीं निकले सामने को १ दल दल थी जि
समें अपने हथियार और घोड़े छोड़ गये वहां
पीछा करते हुवे कई बादशाही आदमी डूब ग

की छीन लेंगे दो घोड़े ले आये.

इस तरह उस तर्फ़ के तमाम आदमी जहां से बैठ बैठ कर सिंध के उधर चलेगये और जो उस झील में हथियार समेत उतरे थे वे पानी की लम्बाई चौड़ाई का भरोसा करके दूसरे किनारे पर तलवारें चमकाने लगे तब इधर से औवरी दरूतावल[1] अकेला नंगी पीठ के घोड़े पर उस पानी से उतर कर उनपर गया कोई उसकी मदद को न पहुंचा था और न पहुंचने की उम्मेद थी तो भी उसने घोड़ा दौड़ा कर दो तेक तीर मारे जिनके लगते ही वे लोग भाग गये और इसने उनका मोरचा फ़तह कर लिया फिर तो और सिपाही भी जाकर बहुत सी लूट ले आये.

दरीट बवरची था परन्तु ऐसी ही ऐसी बहादुरियों से बवरची खाने का दारोग़ा होगया था.

फिर बादशाह सिंध नदी का किनारा पकड़ कर नीचे को चले जब तक जंगल आता रहा लुटेरे सिपाही घोड़ों को मार मार कर बकरियां और कुछ रद्दी चीज़े लूट लूट कर लाते थे मगर जंगल से आगे तो गायें ही गायें थीं इन कूचों में अकसर ऐसा हुआ कि एक एक कोलूनची (लुटेरा) तीन तीन सौ और चार चार सौ गायें ले आ

(१) बवरची.

ता था. और बहुत होजाने से वे वैसीही रहजाती थीं.

३ कूच में पीर कालू की क़बर के सामने नदी का रस्ता लूटा लशकर के कई आदमियों ने पीर के मुजावरों को भी सताया इसलिये बादशाह ने सज़ा के वास्ते एक को टुकड़े २ करवा डाला बादशाह लिखते हैं कि "हिन्दुस्तान में यह मज़ार (क़बर) बहुत मानी जाती है जो सुलेमान पहाड़ की तलहटी में है."।

बादशाह इस मज़ार से चलकर १ नदी पर उतरे जो दूकी नाम विलायत के इलाक़े में बहती थी वहां से कूच हुआ तो १ मंज़िल बीच में देकर दूकी के इलाक़े में ही १ चौपान (चराई के जंगल) के पास उतरे सिंध के दोनो तर्फ़ लूट हुई इस दौड़ धूप में घोड़ों के वास्ते जो घास मिला तो दाना नहीं मिला पर दाना बहुत जगह नहीं था जिससे घोड़े थक थक कर रहजाने लगे ये चौपान से आगे की मंज़िल में तो घोड़ों के रहजाने से बादशाह के डेरे भी रह गये थे रात को जो मेंह बहुत बरसा तो चादरों (क़नातों) में पिंडलियों तक पानी भर गया बादशाह ने कंबलों पर बैठ कर बड़ी तकलीफ़ से सुबह की.

दो एक कूच के पीछे जहांगीर मिरज़ा ने आकर बादशाह के कान में कहा कि बाक़ी चग़ानियानी ने आकर मुझसे कहा है कि बादशाह

को तो ७१८ आदमियों के साथ सिंध से उतार दें गे और तुमको बादशाह बनायेंगे."

बादशाह ने पूंछा इस सलाह में और कौन २ शरीक हैं मिरज़ा ने कहा मुझसे तो बह बाल बाकी बेग ने कही है. दूसरों को मैं नहीं जानता.

बादशाह ने कहा कि दूसरों को भी मालूम करो शायद सैयद हुसेन अकबर-सुलतान अली चहरा. और कुछ खुसरो शाही अमीर.होंगे.

बादशाह लिखते हैं कि यहां जहांगीर मिरज़ा खूब चाल चला और सबका मकर लाया उस वक्त यह मेरे उस काम के मुवाफ़िक़ था जो मैंने कहमर्द में इसी कमबख्त (बाक़ी) के बहकाने से किया था.

फिर बादशाह वहां से कूच करके दूसरी मंज़िल में पहुंचे तो जिन लोगों के पास घोड़े थे उनको जहांगीर मिरज़ा के साथ उधर के पठानों पर भेजा इस मंज़िल से भी लशकर वालों के घोड़े गिर गिर कर खेत में रहने लगे किसी २ दिन दो दो और तीन तीन सौ घोड़े रहजाते थे लशकरी और अच्छे २ जवान पयादे होगये मोहम्मद औग़लाकची के तो तमाम ही घोड़े रहगये बेचारा पैदल आया यह बादशाह के अच्छे औलक़ाचियों (लुटेरों) में से था.

ग़ज़नी पहुंचने तक घोड़ों का यही हाल रहा जहांगीर मिरज़ा ३ कूच के पीछे पठानों को

२ जमाअत को लूटकर कुछ बकरियां लाया फिर दो
मंजिल कूच के पीछे " आबे इस्तादे " (खड़ा पानी)
पर पहुंचे बादशाह लिखते हैं कि अजब तरह का
बड़ा पानी नज़र आया कि उसके उधर के जंगल
दिखाई नहीं देते थे पानी ही आसमान से ल-
गा हुआ दिखाई देता था पहाड़ और टीले सुरा
ब (मृगतृष्णा) से पहाड़ों और टीलों की तरह
अजब नज़र आते थे। करे दाऊद, जलकोर, ज़रमस्त,
ग़ज़नी, की नदी करावाग़ के रमनों और खेति
यों से बचे हुवे महावटों के पानी सब आके यहां
जमा होजाते हैं।"

बादशाह ने उस खड़े हुवे पानी तक पहुंचते
पहुंचते और भी एक चीज़ अजब लाल लाल देखी
थी जो उसी पानी और आसमान के बीच में उड़
ती थी कभी छुप भी जाती थी जब बहुत पास प-
हुंचे तो मालूम हुआ कि क़ाग़लान[1] काज़ें थीं जो १०
या २० हज़ार तक वहां थीं उड़ने और चक्कर खा
ने में उनके सुर्ख़ सुर्ख़ पर कभी दिखते थे और क
भी नहीं अकेले यह जानवर ही नहीं थे बल्कि इ-
नके बहुत से अंडे भी इस पानी के किनारों पर र-
खे हुवे थे कई पठान जो उन अंडों को लेने
आये थे बादशाह को देखकर भागे और पानी में
गिर पड़े पीछा करने वाले १ कोस तक जाकर कई

(१) पक्षी. सुर्ख़ाब

एक को पकड़ लाये इतना दूर जाने में पानी (१)
क़ायदे से घोड़ों के पेट तक रहा. नीचे सम चौरस
ज़मीन थी पानी गहरा नहीं था.

बादशाह दरतदस्ते की नदी के किनारे आ
ये जो खड़े पानी में आकर गिरती है यह सूखी
नदी है कभी बादशाह ने बहते नहीं देखी थी म
गर इसवक़ महाघटों का इतना पानी आगया था
कि घाट नहीं मिला पाट तो चौड़ा नहीं था म
गर पानी बहुत गहरा था तमाम घोड़े और ऊंट
तिराकर उतारे गये असबाब के बुगचे बांध कर
इधर से उधर खेंच लिये गये.

इस तरह बादशाह उस पानी से उतर कर ग़
ज़नी में गये जहांगीर मिर्ज़ा ने एक दो दिन मिज़
मानी की यहां से ज़िलहिज के महीने (जेठ आ
साढ़- मई) में काबुल पहुंचे रस्ते में नादियां च
ढ़ रही हुई थीं नावों में बैठकर उतरना पड़ा.
मगर नासिर मिर्ज़ा नहीं आया और उसके नहीं
आने से और भी कई अमीर नहीं आये.

बदख़्शान

बादशाह के तूरान छोड़े पीछे शेबानी खां
कंबर बे को कुंदज़ देकर ख़्वारज़्म को चला गया

(१) इससमय बदख़्शां अमीर काबुल की और ख़्वारज़्म रूसकीअमलदारी में है.।

का बंकर ने मख़दूमी के बेटे को बदख़्शां वालों-
के राज़ी करने के लिये भेजा मगर मुबारक शाह ने
जो बदख़्शां के अमीरों की औलाद में था बाग़ी
होकर उसको और कई उज़बकों को मार डाला
और शाह शेर के किले को मज़बूत करके ज़-
फ़र किला नाम रखा तब और भी कई बाग़ी व-
हां खड़े होगये खुसरो शाह जो पहिले बदख़्शान
का हाकिम था भागकर कई बिगड़े हुवे तैमूरी अ-
मीरों के साथ हिरात में सुलतान हुसेन मिरज़ा के
पास चलागया सुलतान को इन लोगों से पहि-
ले बहुत कुछ नुक़सान और दुख पहुंच चुका था
क्योंकि ये उससे बाग़ी रहा करते थे तो भी उसने
इनकी बहुत ख़ातिर और इज़्ज़त की.

बादशाह लिखते हैं कि "जो मैं खुसरो शाह को
नहीं बिगाड़ता और काबुल जुलनून बेग के बेटे
मुक़ीम से नहीं ले लेता तो ये लोग कभी ख़ुरा-
सान में जाकर सुलतान हुसेन मिरज़ा से नहीं मि-
लते."

कुछ दिनों पीछे खुसरो शाह ने उज़बकों से
बदख़्शानियों के बदल जाने की ख़बर सुनकर उ-
धर जाने की रुख़सत मांगी सुलतान टालता रहा
और किसीने उससे यह भी कहा कि जब तेरे पा-
स ३०,००० हज़ार सवार थे तब तूने क्या किया औ-
र (अब) ५०० सवारों से जो तेरे पास रहे हैं क्योंकर उज-
बकों को उन विलायतों से निकालेगा मगर उ-

मने नहीं माना और जैसे होसका सुलतान से इजाज़त लेकर उन्हीं आदमियों के साथ उधर चलदिया इधर से नासिर मिरज़ा भी बदख़शां को खाने होगया था रस्ते में दोनो मिले आशकमश में लड़ाई की तैयारी करके नासिर मिरज़ा तो बदख़शां को गया और ख़ुसरो शाह कुंदुज़ पहुंचा। शैबानी खां उसवक़्त इंदजान में था तैमूरी शाहज़ादे और हाकिम अपनी२ विलायतों को छोड़२कर हिसार में जमा होरहे थे शैबानी खां अपने अमीरो को हिसार के घेरे पर छोड़कर कुंदुज़ में आया और वह इलाक़ा अपने भाई सुलतान महमूद को देकर फ़ौरन ख्वारज़्म में हुसेन सूफ़ी पर चढ़गया."।

वह अभी समरक़ंद में भी नहीं पहुंचा था कि सुलतान महमूद कुंदुज़ में मरगया यह सुनकर उसने कुंदुज़ कंबर बे को देदी जब ख़ुसरो शाह कुंदुज़[1] में पहुंचा तो वह वहीं था. और बाग़ियों पर फ़ौजें भेज

(१)-हबीबुलसियर में लिखा है सन ९१० के रमज़ान महीने (फागुन चैत सम्वत १५६१-फ़रवरी १५०५) में सुलतान हुसेन मिरज़ा ने शाहज़ादे बदीउलज़मां मिरज़ा को हुक्म दिया कि मुरग़ाब नदी के किनारे पर जाकर डेरा करें मोहम्मदख़ां शैबानी आवे तो उससे लड़े। शाहज़ादे ने तो मुरग़ाब की तर्फ़ कूच किया और ख़ुसरो शाह कुंदुज़ को गया वहां बहुत लोग उसके पास इकट्ठे होगये कुंदुज़ में जो मोहम्मद खां की तर्फ़ का दारोग़ा था वह ख़ुसरो शाह से लड़ा

रहा था खुसरो पर भी एक फ़ौज गई वह कुंदुज़ में पकड़ा गया और उसका सिर ख्वारज़्म में शैबानी खां के पास भेजा गया.

सन ९११ (सम्वत १५६२) सन १५०५

मोहर्रम (असाढ़-सावन-सम्वत १५६२। जून १५०५) के महीने में बादशाह की मां क़तल निगार ख़ानम बीमार हुईं फ़सद खुलाई कुछ न हुआ खुरासानी तबीब ने खुरासान के दस्तूर पर तरबूज़ खिलाया। ६ दिन पीछे सोमवार को मर गईं बादशाह

खुसरो शाह ज़ख्मी होकर पकड़ा गया उजबकों ने उसको कुंदुज़ में फिराकर मारडाला। खुसरो शाह १५ वर्ष तक सुलतान महमूद मिरज़ा की नौकरी में कुंदुज़ का हाकिम रहा था और उसके मरने पर हिसार शादमान खुत्तलान, तिरमिज़, बदख़्शान, कुंदुज़, बक़लान, का मालिक ही बन बैठा उसने राज के लोभ में अपने मालिक के १ बेटे को तो अंधा कर दिया था और दूसरे को जान से मार डाला था कद चाक जाति का बुज़ुक-बाबरी में लिखा है कि महमूद मिरज़ा और उसके नौकर चाकर सब व्यभचारी और पापी थे उनमें से १ खुसरो शाह था उसके नौकर भी वैसे ही थे एक नौकर किसी आदमी की औरत को निकाल लेगया उसने खुसरो शाह से पुकार की तो कहा कि कुछ दिनों से तेरे पास रही अब कुछ रोज़ उसके पास भी रहे।

और क़ासिम कोकलताश ने बाग़ नौरोज़ी में लेजा-कर दफ़न किया इसी मातम में खानदारा उलंजा खां और बड़ी मां रोसन दौलत बेगम का मरना भी बादशाह को सुनाया गया चालीसवें पर खुरासान से कुछ बेगमें और शाहज़ादे आये सोग फिर से ताज़ा हुआ ग़रीबों को खाने खिलाये गये मुर्दों की रूहों (आत्माओं) को सवाब (पुण्य) पहुंचाये गये.

भौंचाल

जब बादशाह इन कामों से निवड़े और काले कपड़े उतारे गये तो बाक़ी चग़ानियानी की कोशिश से कंधार पर चढ़ाई हुई मगर पहिली मंज़िल में बादशाह को तप चढ़कर ऐसी बेहोशी हुई कि आंख नहीं खुलती थी लोग बहुत जगाते थे मगर फेर आंख लग जाती थी ५।६ दिन तक यही हाल रहा फिर आराम होगया.

उन्हीं दिनों में ऐसा भौंचाल आया कि क़िले शहर और घरों की दीवारें गिर पड़ीं लोग छतों और तहखानों में मरगये लमग़ान के गांव में सब घर गिर पड़े ७०।८० बड़े २ आदमी घर बार समेत तहखानों में दब मरे लमग़ान और बकनूत के बीच ज़मीन का १ टुकड़ा उड़कर अंदर धसगया और वहां से पानी उबलने लगा.

अस्तरग़ाच से ७ कोस तक ज़मीन ऐसी फटी

कि कहीं ऊंचे २ टीले होगये कहीं बड़े २ खड्डे पड़गये. और कहीं ऐसा होगया कि कोई जा-आ नहीं सकता था.

बादशाह लिखते हैं कि भोंचाल के वक़ सब पहाड़ों से बड़ी गर्द उड़ती थी. नूर अल्लाह तम्बूरची मेरे आगे बाजा बजा रहा था एक बाजा और भी रखा हुआ था भोंचाल के आते ही उसने दोनों हाथों से उठा लिये. और ऐसा बेबस होगया कि दोनो बाजे आपस में लड़गये जहांगीर मिरज़ा और उलग़ बेग मिरज़ा छतों पर से कूद कर बच गये जहांगीर मिरज़ा के एक मुसाहिब पर छत गिर पड़ी मगर उस को ख़ुदा ने बचा लिया बहुत से घर गिर पड़े उस दिन ३३ बेर ज़मीन हली फिर एक महीने तक रात दिन में कभी १ बेर और कभी २ बेर धूजती रही क़िले की गिरी हुई दीवारों और बुरजों की मरम्मत अमीरों और सिपाहियों को सोंपी गई जो महीना २० दिन में बड़ी मिहनत से पूरी हुई.

क़लात पर चढ़ाई.

बादशाह की बीमारी और भोंचाल से कंधार की चढ़ाई बंद रह गई थी उसके वास्ते अब फिर बादशाह ने अमीरों से सलाह पूंछी तो बाक़ी चग़ानियानी और जहांगीर मिरज़ा की खैंच तान से क़लात पर जाने की ठहरी इतने में ही ख़बर लगी

कि शेर अली चहरा, कंजक, और बाक़ी दीवाना. कई आदमियों के साथ भागने का मनसूबा कर रहे हैं बादशाह ने उन्हें पकड़वा कर शेर अली को तो मरवा डाला जो पहिले भी कई ऐसी हरकतें कर चुका था. और दूसरों के हथियार तथा घोड़े छीन लिये फिर कलात पर चढ़ाई करके लड़ाई की जिसमें ख़्वाजा कलों का बहुत भाई फ़जक बेग मारा गया जो पहिले कई बेर बादशाह के सामने कुल तलवारें मार चुका था और कई आदमी काम आये तो बादशाह ने ज़ोर डाल कर क़िला ख़ाली करा लिया जो ज़ुलनून अरग़ून ने मुक़ीम को सौंप रखा था और उसके नौकरों के गुनाह बख़्श दिये क्योंकि ज़ुलनून की तरफ़ से ग़नीम पीछे लगे हुए थे इस लिये इन लोगों से नहीं बिगाड़ना चाहा किलात मिरज़ा जहांगीर को दिया मगर उसने क़बूल न किया तब बाक़ी से कहा तो उसने भी कोई ठीक जवाब न दिया जिससे वह मेहनत बे फ़ायदा हुई. और बादशाह कलात के दक्खिन में सवाद संग और अलातार के पठानों को लूट कर काबुल में आ गये।

बाक़ी चग़ानियानी के बुरे दिन

बाक़ी चग़ानियानी की बात दरबार में बहुत चली थी मगर वह बड़ा निकम्मा आदमी था बादशा-

ह उसके बहुत से ऐबों का ज़िक्र करके लिख
ते हैं कि "कंजूस यहां तक था कि जब तिरमिज़
को छोड़ कर अपने माल और खटले समेत हमा
रे साथ हुआ था तो उसकी अपनी ३०।४० ह-
ज़ार बकरियां थीं जो हर मंज़िल में हमारे साम
ने होकर निकला करती थीं हमारे नौकर सिपा
ही भूखों मरते थे मगर उसने १ बकरी भी नहीं
दी आखिर कहमर्द से चलते वक्त ५० बकरि
यां दीं उसने मुझे बादशाह बनाया था तो भी
नक्कारा अपनी ड्योढ़ी पर बजाता था किसी आ
दमी से साफ़ नहीं था किसी को नहीं देख स-
कता था काबुल का जो हासिल है वह तमग़ा
(माल का महसूल) है सो सब तमग़ा काबुल-
का और दरबार का कुल अख़तियार उसके हाथ
में था और वह इतनी रिआयत पाकर भी बिल
कुल राज़ी और शुक्र गुज़ार नहीं था उसके बहुत
से बुरे इरादों को जो वह किया करता था मैं क-
भी याद नहीं करता था और न उसके मुंह पर ला
ता था इसपर भी वह इतरा कर हमेशा रुख़सत मां
गा करता था और मैं निहोरे कर कर के टाल
जाता था एक दो दिन पीछे फिर वही रुख़सत
करने लगता था आखिर मैंने तंग आकर रुख़स
त देदी तबतो वह बहुत पछताया और घबराने
लगा मगर कुछ फ़ायदा न हुआ आखिर मुझ-
से कहलाया कि तुमने तो शर्त [illegible]

ब तक मुझ से क़सूर नहो कुछ न कहेंगे। मैं
ने उसके ११ क़सूर एक एक करके मुल्ला बा-
बा को समझा कर उसकी ज़बानी कहला भे-
जा तो चुप होगया. तब उसको माल असबाब
समेत हिन्दुस्तान जाने की इजाज़त देदी उसके
कुछ नोकर खेबर के घाट से उतर कर आगये
जहां वह बाक़ी चाकयानी के क़ाफ़िले के सा-
थ होकर नीलाब से उतरा दरियाखां का बेटा
मोहम्मद यार हुसेन जो मेरा फ़रमान रख के लेगया
था कच्छ कोट में था और उस सनद से कुछ
पठानों कुछ जटों और कुछ गूजरों को अपना
नोकर और भेड़ू बनाकर लूटमार किया करता
था जब उसने बाक़ी चगानियानी के आने की
ख़बर सुनी तो रस्ता रोक कर उसको सब सा-
थियों समेत पकड़ लिया और बाक़ी चगानि
यानी को मार कर उसकी औरत लेली मैंने तो
उसके साथ कुछ बुराई नहीं की थी लेकिन
उसकी बुराई उसके आगे आई और वह अप-
नी करनी में आप पकड़ा गया- "तू अपने बुरे
करने वाले को ज़माने को सोंप दे क्योंकि ज़-
माना तेरा बदला लेने वाला चाकर है"।

हज़ारा तुर्कमानों पर चढ़ाई।

बादशाह जाड़े भर काबुल के चारबाग़ में बैठे

रहे फिर शाबान के महीने (पोस. माह- जनवरी १५०६) में हज़ारा जाती के तुर्कमानों पर चढ़ाई करके गये. जो इस अर्से में बहुत कुछ लूट मार कर- ते थे दरे खुश में लड़ाई हुई रस्ता तंग था मुश किल से एक २ आदमी निकल सकता था बादशाह एक जगह ठहरे एक मोटा ऊंट रस्ते में मिला उसी को मार कर खाया आगे हज़ारा लोग नदी के पानी को लकड़ों से बंद करके लड़ने की तैयारी क- र रहे थे बादशाह वहां जा पड़े उस बर्ष पाला ब- हुत पड़ा था नदी के किनारे बर्फ़ से बंधे हुवे थे जिन के पास से हज़ारा लोग तीर मारते थे बाद शाह का नामी अमीर मोहम्मद अली मुब्बशर बे- ग. तीर से मारा गया दो तीन तीर बादशाह के सिर पर होकर निकल गये अहमद यूसफ़ बेग घबरा कर बार बार कहने लगा कि इस तरह नंगे बदन क्या चले जाते हो मैंने दो तीन तीर तुम्हारे सिर पर से जाते हुवे देखे हैं बादशा- ह ने कहा तुम मज़बूत रहो ऐसे तीर तो मेरे सिर पर से बहुत निकल गये हैं इतने में हो तो क़ासिम बेग क़ोचीन ने बायें हाथ की तर्फ़ से रस्ता पाकर घोड़ा डाला उसको आता देखकर हज़ारा लोग भाग गये फिर तो उनका पीछा कि- या गया और जहां वे गरमियों में रहने के वास्ते ठहरे हुवे थे वहां पहुंचकर लूट हुई बाद शाह ने ४१५०० बकरियां और २५ घोड़े जमा कि

ये बादशाह लिखते हैं कि मैंने दो बार खुद लूट की है एक तो यही और एक इसके पहिले खुरासान से आकर इन्हीं हजारा लोगों के बहुत कुछ बकरी बकरे और घोड़े लूटे थे हजारे पैदल भाग कर दर्फ़ के ढेरों पर जा खड़े हुवे बादशाह रात को उन लोगों के घरों में उतरे पहरे वाले रात भर घोड़ों पर सवार खड़े रहे दूसरे दिन बादशाह सिपाहियों को उन लोगों पर भेजकर नगराद का हासिल तहसील करने के मतलब से तोगदी के परगने में जा ठहरे जहां पर जहांगीर मिरजा भी ग़ज़नीन से आ गया·

१३- रमज़ान (माह बुदि १४ - ८ फ़रवरी) को बादशाह के गठिया की बीमारी होगई ४० दिन तक दूसरे लोग करवटें लिवाया करते थे नगराद और लमगान की घाटियों में वहां का मुखिया हुसेन अली आक़ा बाग़ी होगया बादशाह ने जहांगीर मिरज़ा और क़ासिम बेग को उसपर भेजा इन्होंने उसके संगर में पहुंच कर सजा दी·

बादशाह डोली जैसी एक चीज़ में पड़कर "बे बारां" नाम मुक़ाम से शहर (का बुल) [illegible] गमे और बुस्तां सरा (बाग़) में उतर पड़े अभी गठिया में आराम न हुवा था कि मुंह पर ... उठ आई उसमें नश्तर लगा और जुलाब ...

हुआ आराम होने पर चार बाग़ में आगये जहांगीर मिर्ज़ा भी आकर हाज़िर होगया म-गर अयूब के बेटे यूसुफ़ और बहलोल के बहकाने से ग़ज़नी को चल दिया और वहां वालों को लूट कर अपने सब छोटे बड़े आ-दमियों के साथ हज़ारा लोगों में होता हुआ कालियां को चला गया.

खुरासान जाना

खुरासान के बादशाह सुलतान हुसेन मिर्ज़ा ने मोहम्मद खां शेबानी के निकाल देने का इ-रादा करके अपने सब बेटों को बुलाया औ-र बादशाह के लेने को भी सैयद अफ़ज़ल को भेजा बादशाह लिखते हैं कि "हमें खुरा-सान जाना कई बातों से ज़रूर हुवा अव्वल तो यही कि सुलतान हुसेन जैसे बड़े बादशाह ने जो तैमूर बेग की जगह बैठा है फ़ौज जमा क-रके अपने बेटों और अमीरों को हर तर्फ़ से बुलाया है और फिर शेबानी खां जैसे दुशमन के ऊपर, अगर और लोग लठ लेकर पावों से जावें तो हमें पत्थर लेकर सिर से जाना चा-हिये । एक यह भी बात थी कि जहांगीर मि-र्ज़ा नाराज़ होकर चला गया था उसकी नारा-ज़ी मिटानी थी या उसके नुक़सान को दूर

करना था.

शैबानी खां ने इस साल ख़्वारज़्म को-
१० महीने तक घेरा रखकर फ़तह कर लिया
था ख़्वारज़्म वाले ख़ूब लड़े ऐसे ऐसे तीर मा-
रे जो ढालों और बकतरों को तोड़ तोड़ कर
निकल गये जब कहीं से कुछ मदद नहीं पहुं
ची तो कुछ थुड़ दिले लोग मिल कर उज़
बकों को क़िले पर लेगये तब भी हुसेन सू
फ़ी ख़ूब लड़ा शैबानी खां ख़्वारज़्म, कबक ना-
म १ अमीर को सौंप कर समर क़ंद को च
लागया.

ज़िल हिज के महीने (बैशाख-१५६३- एप्रेल
१५०६) में सुलतान हुसेन मिरज़ा ने शैबानी-
ख़ां पर चढ़ाई की मगर रस्ते में ही मरगया[१]
यह सन ८४२ (सम्बत १४९५- सन १४३८) में
पैदा हुआ था मंसूर का बेटा. बायक़रा का पो-
ता. उमर शेख़ मिरज़ा का परपोता. और तैमू-
र बेग का सरपोता. था इसकी मां फ़ीरोज़ा बे-
गम भी तैमूर बेग की पोती थी इसके पीछे अ
मीरों और शाहज़ादों ने मिलकर बदीउल ज़मान
मिरज़ा और मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा को सीर में
तख़्त पर बैठाया बादशाह लिखते हैं कि यह

---

(१) सुलतान हुसेन मिरज़ा १५ ज़िलहज्ज सन ९११ सोमवार (जेठ सुदि २
सं- १५६२। ३१ मई १५०६) को मरा था। हबीबुल सियर रौज़तुल सफ़ा.

अजब बात थी कभी बादशाही में साझा नहीं सुना गया. शेख़सादी ने इसके ख़िलाफ़ गुलिस्तां में लिखा है कि "१० फ़क़ीर तो १ कमली में सोजाते हैं मगर २ बादशाह १ वलायत में नहीं समाते."

सन ९१२ हि॰ (सम्वत १५६३) सन १५०६ ई.

मोहर्रम (जेठ-असाढ़-जून) के महीने में बादशाह काबुल से उज़बकों से लड़ने के वास्ते ख़ुरासान की तर्फ़ रवाना हुवे जहांगीर मिरज़ा रूठ कर चला गया था इसलिये फ़सादी आदमियों को क़ाबू में कर लेने के लिये गोरबंद और गोरतूकोयके क़बीलों को उसाता शहर में छोड़ कर हल्की सवारी से ज़ुहाक के क़िले में पहुंचे वहां से गंबदक और सर्ख़ां शिकन घाटियों को उतर कर वाहसर्द के रमनों में उतरे वहां से सैयद अफ़ज़ल को अपने काबुल से रवाने होने की अर्ज़ी देकर सुल्तान हुसैन के पास भेजा जहांगीर मिरज़ा जो बाग़ियों को आता था रस्ते में बादशाही क़बीलों के डेरे देखकर बादशाह के ख़याल से वहां न ठहरा और पर मारा इक्के औलांग को चला गया.

शेबां ख़ां ने बल्ख़ को घेर कर दो तीन सुल्तानों को ३।४ हजार सवारों से बदख़्शां

ढूंढने के लिये भेजा जो शादमान नाम मुकाम
में नासिर मिरज़ा के ऊपर जाकर गिरे मगर
नासिर मिरज़ा ने लड़कर उनको भगा दिया
हज़ार १५ सौ उज़बक मारे गये । मिरज़ा के
आदमियों ने कहमर्द में आकर यह सब ख़
बर बादशाह को दी यहीं सुलतान हुसैन
मिरज़ा के मरने की ख़बर के ख़त आये तोभी
बादशाह अपने घराने की इज़्ज़त के लिये ख़ु-
रासान को रवाने हुवे आज़र के घाटे से हो-
कर नूक और मंदागान होते हुवे बलख़ाब के
घाटे से उतरे और साफ़ नाम के पहाड़ों पर च-
ढ़े वहां सामान और जारीक स्थानों पर उज़ब-
कों की चढ़ाई का हाल सुन कर क़ासिम बेग
को कुछ लशकर से भेजा यह लोग उज़बकों को
हराकर बहुत से सिर काट ले आये फिर बाद
शाह ने जहांगीर मिरज़ा और अपनी क़ौम के
लोगों के पास आदमी भेजे और उनके आने त-
क उन्हीं पहाड़ों पर कुछ दिनों तक रहे उधर
हरन बहुत थे १ बेर उनकी शिकार भी खेली
दो एक दिन के पीछे क़ौम और क़बीले के
तमाम लोग आकर हाज़िर होगये बादशाह लि-
खते हैं इनके बुलाने को जहांगीर मिरज़ा ने
बहुत आदमी भेजे थे मगर उसके पास नहीं
गये और हमारे पास आगये आख़िर मिर
ज़ा जहांगीर को भी हमारे पास आना पड़ा

जब हम पहाड़ों पर से उतरे तो उसने बायना घाटे में आकर सलाम किया हमको खुरासान जाने की फ़िकर थी इसलिये मिरज़ा से नहीं मिले और न क़ौम और क़बीले के आने की परवा करके बान. अलगार, बेसार और हरचकतू, के घाटों से दरे बाम नाम गांव में पहुंचे जो दादगेण के ज़िले में है वह गल्ले का वक्त था और हर कोई विलायत और वहां की क़ौमों से जबर दस्ती कुछ न कुछ ले लेता था इसलिये हमने भी तुर्कों और अपनी क़ौम वालों पर बोझ डालकर लेना शुरू किया एक दो महीने में शायद कि ३००, तुमन कबेकी (सिक्के लिये होंगे.

कुछ पहिले खुरासान से १ फ़ौज जुलनून बेग के आदमियों की उजबकों पर जा चुकी थी उसने पंददह और "फ़रगचाक" में ज़ोर डाल कर बहुत से उजबकों को मारा था इस पर बदी उल ज़मान मिरज़ा मुजफ़्फ़र हुसेन मिरज़ा, बरन्दूक, बरलास, जुलनून, अरगून, और शाह बेग ने शेबानी खां के ऊपर जो बलख में सुलतान क़ुली खां को घेरे हुये था जाने का पक्का इरादा करके सुलतान हुसेन मिरज़ा के सब बेटों को बुलाया और हिरात से कूच किया बादगेस में पहुंचने पर अबुल मुहसन मिरज़ा चहल दुख़तरान नाम मकान से साथ होगया-

इफ़ हुसेन मिरज़ा भी तून और काइन से आगया था मगर कबक मिरज़ा मशहद से नहीं आया. क्योंकि उसको अपने भाई मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा से नाराज़ी थी कि जब वह बादशाह होगया है तो मैं कैसे उसके सामने जाऊं. बादशाह लिखते हैं कि "ऐसे मौक़े पर सब छोटे बड़े भाईयों को एक जगह मिलकर शिबानी खां जैसे दुशमन पर जाना चाहिये था.

बादशाह का सुल्तान हुसेन मिरज़ा के बेटों से मिलना.

—ः—

बादशाह लिखते हैं कि मेरे बुलाने को भी एलची आये और पीछे से मोहम्मद बरन्दूक[1] बरलास भी आया मैं क्यों न जाता २०० फ़रसंग (६०० कोस) इसी वास्ते चला था सो मोहम्मद बेग के साथ रवाना होगया इस अर्से में मिरज़ा लोग मुरगाब में आगये थे. ६ जमादिउल आख़िर सोमवार (कातिक सुदि ८ सम्वत १५६३ । २६ अकतूबर १५०६) को मिरज़ाओं से मुलाक़ात हुई अबुल मुहसन मिरज़ा

(१) यह मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा का वैसे ही मुख़तारकार था जैसा कि बदीउलज़मान मिरज़ा का ज़ुलनून बेग था.

आठ कोस पेशवाई को आया नज़दीक पहुंचने
पर मैं इधर और वह उधर घोड़े से उतरा
फिर दोनों मिलकर सवार हुवे कुछ आगे उर्दू
के पास मुज़फ्फ़र हुसैन मिरज़ा और इब्नहु-
सैन मिरज़ा आये ये उम्र में अबुल मुहस्सन
मिरज़ा से छोटे थे इनको पहिले पेशवाई में
आना था मगर ऐसा नशे की सुस्ती से हुवा
होगा न ग़रूर(१) से - मुज़फ़्फ़र हुसैन मिरज़ा के ब-
हुत सा कहने पर मैं घोड़े पर ही मिला औ-
र ऐसे ही इब्न हुसैन मिरज़ा से भी मिलना हुवा
फिर हम बदीउल ज़मान मिरज़ा के घर उतरे
वहां इतनी बहुत सी भीड़ होरही थी कि च-
लना मुशकिल था आदमी भी एक दूसरे पर
होकर जाते थे हम मिरज़ा बदीउल ज़मान के
दीवान खाने में पहुंचे यह बात ठहरी थी कि
मैं दीवान खाने में घुसते ही घुटना टेकूं औ-
र बदीउल ज़मान मिरज़ा उठकर आवे. और
मिले सो मैंने तो वहां पहुंचते ही घुटना टे
का और जल्दी से आगे बढ़ा मगर बदीउल
ज़मान मिरज़ा धीमे से उठा और धीरे धीरे आ-
ने लगा क़ासिम बेग ने मेरी इज़्ज़त में अप
नी इज़्ज़त समझ कर पीछे से मेरा पटका खें
चा मैं भी समझ कर होले होले चलने ल-

(१) घमंड.

का मुक़र्रर जगह पर दोनों मिले उस घर में ४ जगह तोशकें बिछाई हुई थी बदीउल ज़मान मिरज़ा और मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा १ तोशक पर बैठे दूसरी तोशक में दाहिनी तर्फ़ में और अबुल मुहसन मिरज़ा बैठे बदीउल ज़मान मिरज़ा की तोशक से नीचे बायें तर्फ़ की तोशक पर क़ासिम सुलतान उज़बक जो शैबानी ख़ां के सुलतानों में से मिरज़ा बदीउल ज़मान का जमाई और क़ासिम हुसेन सुलतान का बाप था इब्न हुसेन मिरज़ा के साथ बैठा मेरी तोशक के नीचे दूसरी तोशक पर जहांगीर मिरज़ा और अबदुल रज़्ज़ाक़ मिरज़ा बैठे बन्दूक़ बेग ज़ुलनून बेग क़ासिम बेग दाहिने हाथ को क़ासिम सुलतान और इब्न हुसेन मिरज़ा से बहुत नीचे बैठे. मजालिस नहीं थी तो भी खाना चुना गया चांदी सोने की सुराहियां दस्तर ख़्वान पर लगाई गईं हमारे बाप दादे और बड़े भाई चंगेज़ ख़ां के तोरे का बहुत ख़ियाल रखते थे मजालिस, कचहरी, ख़ुशी खाना खाने, बैठने, और उठने, में तोरे के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करते थे, तोरा कोई ख़ुदा का हुकम नहीं है कि जिसकी तामील ज़रूर कोई करे हां जिस किसी से जो अच्छा क़ायदा रहगया हो उस पर अमल करना

चाहिये बाप ने जो कोई बुरा काम किया हो तो उसको अच्छे काम से बदला देना चाहिये.

खाने के बाद सवार होकर हम अपने डेरे पर आगये हमारे और मिरज़ाओं के उर्दू के बीच में १ कोस की छेटी थी जब मैं दूसरी बार गया तो बदीउल ज़मान मिरज़ा ने पहिले कीसी ताज़ीम नहीं की तब मैंने अब्दुल्क बेग और जुलनून बेग से कहला भेजा कि मैं बर्षों में तो छोटा हूं मगर तोरा मेरा बड़ा है क्योंकि मैं समरकंद को दो दफ़े अपने भुजबल से फ़तह करके बापोली के तख्त पर बैठ चुका हूं और इस घराने की इज़्ज़त के वास्ते बाग़ी ग़नीम से मैंने ही यह सब लड़ाईयां की हैं फिर मेरी ताज़ीम में ढील करना बेजा है.

यह बात वाजबी थी जब मिरज़ा से कही गई तो उसने क़ायल होकर मेरी मनचाही ताज़ीम की १ बार फिर मैं बदी उल ज़मान मिरज़ा के पास गया दो पहिर के पीछे शराब की मजलिस जुड़ी मैं उन दिनों में शराब नहीं पीता था अजब सजी हुई मजलिस थी थालों में हर तरह के गज़क लगे हुवे थे मुर्ग़. तथा. क़ाज़[1], के कबाब और हर क़िस्म के खाने चुने गये थे

(१) कुंज पक्षी.

लोग बदीउल जमान मिरज़ा की बहुत तारी फ़ करते थे हक़ीक़त में बहुत खरी और ऊंची हुई मजलिस थी मुर्गाब नदी के रहने के रहने के दिनों में मैं दो तीन दफ़ै मिरज़ा की शराब की मजलिस में भी गया वे लोग मेरा नहीं पीना जानते थे इसलिये मुझे तकलीफ़ नहीं दी १ बार मुज़फ़्फ़र हुसैन मिरज़ा की मजलिस में भी गया हुसैन अली जलायर और मीर बदर जो उसके पास नौकर थे उस मजलिस में हाज़िर थे नशा जमने पर मीर बदर खूब नाचा शायद इस तरह नाचना मीर बदर का ही निकाला हुआ हो."

मिरज़ा ओं के हिरात से निकलने और जमा होकर मुर्गाब में आने तक ३।४ महीने लग गये थे सुलतान कुलीखां ने तंग आकर बलख का क़िला उजबकों को सौंप दिया इस ख़बर के साथ ही यह भी सुना था कि उजबक बलख लेकर समरकंद को लौट गये."

ये मिरज़ा लोग मेल मिलाप और मजलिसें रचाने में तो कुछ थे भी. लेकिन सिपाहगरी के छल बल से दूर और लड़ाई भिड़ाई से अलग थे. मुर्गाब में रहते रहते ही ख़बर आई कि हक़नज़र ने ४।५०० आद-

ज़ियों से चल्कदू के पास आकर लूट
मार की है सब मिरज़ाओं ने जमा होकर
बातें तो बहुत बनाईं लेकिन इन लुटेरों प-
र कोई दौड़ नहीं भेज सके मुरग़ाब से च-
ल्कदू ३० ही कोस था और जो ग़ैरत से मैं
ने इस काम को करना चाहा तो मुझे भी
रुख़सत नहीं दी."

जब शैबान ख़ां चला गया था तो बर्ष भी
पूरा होगया था इसलिये यह बात ठहरी कि
इस जाड़े में तो मिरज़ा लोग हर कोई मुना
सब जगह में जा रहें और गरमी आने से
पहिले जमा होकर दुश्मनों को दफ़ै करने-
के लिये जावें और मुझे भी ख़ुरासान के
ज़िले में क़िशलाक़ करने (जाड़े में रहने)
की तकलीफ़ दी- मगर काबुल और ग़ज़नी
दोनों झगड़ों के दंगल थे तुरकों, मुग़लों, पठा-
नों, और हज़ारों, की अनमिल क़ौमें और
क़बीले वहां जमा होगये थे ख़ुरासान और
काबुल का नज़दीकी रस्ता जो बर्फ़ और को
ई चीज़ रोकने वाली नहो तो पहाड़ों में हो
कर १ महीने का और मैदान का रस्ता ४०।
५० दिन का है और वह मुल्क अभी हम
से ख़ूब राज़ी नहीं हुवा था इस लिये ख़ैर ख़्वा
हों ने वहां ठहरने की सलाह नहीं देखी औ
र मिरज़ाओं से माफ़ी मांगी मगर मिरज़ाओं ने

बहुल ज़िद्द की बदीउलज़मान मिरज़ा, अबु ल मुहसन मिरज़ा, और मुज़फ़्फ़र हुसैन मिरज़ा सवार होकर मेरे घर आये और जाड़े भर रहने की तकलीफ़ दी मैं उनके मुंह पर कुछ नहीं कह सका क्योंकि ऐक तो ऐसे बादशाहों ने ख़ुद आकर रहने के निहोरे किये दूसरे दुनियां भर में हिरात जैसा कोई शहर नहीं है और सुलतान हुसैन मिरज़ा के ज़माने से तो उसकी रौनक़ २० गुनी बढ़ गई है उसके देखने की भी बहुत चाह थी इन बातों से रहना क़बूल कर लिया गया अबुल्मुहसन मिरज़ा अपनी विलायत मर्व में और इब्न हुसैन मिरज़ा अपनी विलायत तून और क़ायन में चले गये, बदीउलज़मान मिरज़ा और मुज़फ़्फ़र हुसैन मिरज़ा हिरात को कूच करगये उनके दो तीन दिन पीछे चहल दुख़्तरांन तास और बात के रस्ते में मैं भी हिरात को गया. पायंदा सुलतान बेगम मेरी बुआ ख़ुदेजा बेगम, आफ़ाक़ बेगम, और अबू सईद मिरज़ा की दूसरी लड़कियां जो मेरी भुआऐं थी सब सुलतान मिरज़ा के मदरसे में और दूसरी तमाम बेगमें मिरज़ा के मक़बरे में जमा थीं मैंने पहिले पायंदा बेगम के सामने जाकर घुटना टेका फिर ख़ुदेजा बेगम से घुटना टेक कर मिला

और कुछ देर वहां ठहरा जब हाफ़िज़ लोग कुरान पढ़ चुके तो मदरसे के दक्षिण में जहां खुदेजा बेगम का डेरा था गया वहां खाना तैयार था खाना खाकर पायंदा सुलतान बेगम के घर में आगया और रात को वहीं रहा मेरे वास्ते नये बाग़ में मंज़िल मुकर्रर कीगई सुबह वहां जाकर उतरा और १ रात रहा मगर फिर वहां रहना मुना सब न देखा तो अली शेर बेग के घर बता दिये गये हिरात से निकलने तक उन्हीं घरों में रहा दूसरे तीसरे दिन बाग़ जहां आरा में जाकर बदीउल्ल ज़मान मिरज़ा को कोरनिश (सलाम) कर आता था कुछ दिनों पीछे मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा ने अपने घर में बुलाया वह सफ़ेद बाग़ में बैठता था खुदीजा बेगम भी वहां थीं जहांगीर मिरज़ा भी मेरे साथ खुदीजा बेगम की खिदमत में गया खाने के बाद मुजफ़्फ़र हुसेन मिरज़ा हमको मिरज़ा बाबर के महल में लेगया जिसका नाम तरबखाना (१) रख छोड़ा था वहां शराब की मजलिस हुई तरबखाने की छोटी सी इमारत १ बगीचे में थी ऊपर के खंड में सुलतान अबू सईद मिरज़ा

(१) खुशी का घर।

ने अपनी लडाईयों की तसवीरें बनवाई हैं उस-
र के शाहनशीन (झरोके) मे आमने सामने दो
तोशके बिछी थीं येक तोशक परतो मैं और
मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा बैठा दूसरी पर सुल-
तान मसऊद मिरज़ा और जहांगीर मिरज़ा बैठे
मैं मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा के घर में महमान
था इसलिये उसने मुझे अपने से ऊंचा बैठा
या प्याले भरे गये साक़ी (पिलाने वाले) ख-
ड़े हुवे और मजालिस वालों को प्याले देने
लगे वे लोग लाल शराबों को अमृत की
तरह पीने लगे मजलिस गर्म हुई नशे दि-
माग़ों में चढ़े वे इस फ़िक्र में थे कि मुझे
भी इस चौकड़ी में मिला लें मैंने तब तक
शराब नहीं पी थी और न मैं उसके मज़े
और नशे को बुरा २ जानता था मगर श-
राब पीने की मुझे चाह थी और दिल इधर को
खिंचता था बचपन में यह चाह नहीं थी
शराब के नशे और मज़े को भी नहीं जान
ता था मेरा बाप जो कभी शराब पीने को
तकलीफ़ देता था तो मैं उज़र कर देता था
और नहीं पीता था बाप के पीछे ख्वाजा
काज़ी के क़दमों की बरकत से बड़ा जती
सती था शुभेदार (संदिग्ध) खाना खाने से
भी बचता था फिर शराब पीने का प्रसंग ही
क्या था. मगर जब जवानी की उमंगों और

विषय वासना की तरंगों से मन ललचा तो कोई ऐसा नहीं था कि जो शराब पीने की मनसा को जानता मैं शराब पीना तो चाहता था लेकिन ऐसे नहीं करने के काम को अपने आप करना मुशकिल था पर अब यह बात जी मेंजची कि जो यह सब कहते हैं और हम हिरात जैसे सजे सजाये शहर में आये हैं जिसमें ऐश आराम (भोग बिलास) की पूरी २ सब सामग्री तैयार है फिर जो अब मैं शराब नही पियूंगा तो कब पियूंगा यौं मैं ने शराब पीना अपने दिल में पक्का करलिया तो भी यह बातमनमें उपजी कि बदीउल ज़मान मिरज़ा बड़ा भाई है जब मैं ने उसके हाथ से उसके घर में नहीं पी तो अब जो उसके छोटे भाई के हाथ से उसके घर में पिऊं तो वह अपने दिल में क्या कहेगा यह सोच कर मैंने अपने मन की धुकड़ पुकड़ उनसे कही तो उन्हों ने भी ठीक समझ कर मुझको उस महिफ़ल में शराब की तकलीफ़ नहीं दी और यह बात ठहरी कि बदीउल ज़मान मिरज़ा और मुज़फ्फ़र हुसेन मिरज़ा के १ जगह होने पर दोनो के हाथ से शराब पीजावे·

उस मजालिस में जाने वालों में से हाफ़ि-

ज़ हाजी जलालुद्दीन मसऊद नाई (बांसरी ब-जाने वाला) था गुलाम आदी चंग बजाता था हाफिज हाजी ख़ूब गाता था हिरात के लो-ग धीमे सम और नीचे स्वरों में गाते हैं जहांगीर मिरज़ा का १ गवैया मीरखां समरक़ंदी था वह ऊंचा भद्दा और बेसुरा गाता था जहांगीर मिरज़ा ने नशे में उससे गाने को कहा वह अजब तरह से चिल्ला कर भोंड़ा और बे मज़ा गाया खुरासान के आ-दमी बग़ैर दिल्लगी के[1] जीते हैं उसके इस तौर पर गाने से बाज़े लोग अपने कान दबा-ते थे बाज़े मुंह मोड़ते थे. मगर मिरज़ा के मुलाहज़े से उसको बंद नहीं कर सक-ते थे.

शाम की नमाज़ पढ़ने के पीछे हम लो-ग तरब खाने से मिरज़ा मुज़फ्फ़र हुसेन के नये बनाये हुवे जाड़े में रहने के घर में आये उसवक़्त नशे उतरते हुवे थे यूसफ़ अली कोकल ताश उठकर नाचने लगा वह ताल जानने वाला आदमी था खूब नाचा इस घर में आये पीछे मजलिस खूब गर्म हुई मुज़फ़्फ़र हुसेन मिरज़ा ने १ तलवार १ जुब्बा (चोला) बकरे की खा-

(१) रहते हैं.।

लश्कर और १ तबचाक घोड़ा मुझे दिया क
ना माह और कचक माह नाम जो दो गु
लाम मुजफ्फ़र हुसेन मिरज़ा के थे नशे में
हो चुके गाये और नाचे बहुत देर तक मज
लिस रही फिर लोग बिखर गये इस रात को
मैं उसी घर में रहा।

मुझे शराब की तकलीफ़ देने का हाल
क़ासिम बेग ने सुनकर जुलनून बेग के पा-
स आदमी भेजा उसने नसीहत से बुरी भ-
ली बातें मिरज़ाओं से कहकर शराब की
तमाम तकलीफ़ों को उठा दिया बदीउल ज़मा
न मिरज़ा ने मुजफ्फ़र हुसेन मिरज़ा की म
हमानी का हाल सुनकर बाग़ जहां आरा
में मजलिस जोड़ी और मुझे बुलाया मे-
रे बाज़े सिपाहियों और जवानों को भी बु-
लाया मेरे पास रहने वाले मेरी शंका से शरा
ब नहीं पीते थे और कभी पीना चाह-
ते भी थे तो महीना ४० दिन के पीछे द-
रवाज़े बंद करके डरते डरते पीते थे वैसे ही
लोग बुलाये गये थे और मैं ने ऐसी सुहबत
में आम तौर पर लोगों को पीने की इ-
जाज़त देदी थी क्यों कि यह सुहबत वैसे
ही थी जैसी कि बाप की बड़े भाई के सा
थ होती है। तो भी वे मुझे ग़ाफ़िल करके
और कभी अपने हाथों की आड़ करके ब-

ड़ी घबराहट से पीते थे."

"उठते वक़्त काज़ (कुंज) के कबाब मेरे वास्ते लाये गये मैं इस जानवर की काट छांट नहीं जानता था और न कभी मैंने की थी इस लिये मैंने उनके हाथ नहीं लगाया बदी उल ज़मान मिरज़ा ने पूछा कि क्यों नहीं खाते हो मैं ने कहा कि मैं इसे काट नहीं सकता मिरज़ा ने मेरे सामने के काज़ को काट कर और टुकड़े २ करके मेरे आगे रख दिया इस तौर के कामों में बदी उल जमान मिरज़ा बेबदल (अद्वितीय) आदमी था."

"सुहबत आख़िर होने पर मिरज़ा ने १ जड़ाऊ खंजर ४ क़ाबे(१) और तपचाक (तुर्की घोड़ा) मुझ को दिया."

"मैं २० दिन हिरात में रहा रोज़ सवार हो कर नहीं देखी हुई सैर करने की जगहों में जाया करता था यूसफ़ अली कोकलताश मेरे साथ रहता था और जहां कहीं मैं उतरता था वहीं वह नित नये खाने तैयार करा कर लाता था इस तरह(२) से मैंने थोड़े ही दिनों में सब देखने लायक़ रमणीक स्थानों को देख

(१) थाल.

(२) आगे बादशाह ने उन सब रमणीक स्थानों के नाम लिखे हैं।

लिया"

"सुलतान अहमद मिरज़ा की छोटी बेटी मासूमा सुलतान को उसकी मां हबीबा सुलतान बेगम (तुर्कस्थान में) गड़बड़ होने से खुरासान में ले आई थी १ दिन मैं जो अपनी आका से मिलने गया था तो वह अपनी मां के साथ आकर मुझसे मिली उसको देखते ही मुझे बहुत चाहत हुई और मैंने पोशीदा तौर पर आदमी भेजकर अपनी आका और और बीगा से यह बात ठहराई कि मेरे पीछे मेरी बीगा अपनी लड़की को लेकर काबुल में आजावे मैं पायंदा सुलतान को तो आका और हबीबा सुलतान को बीगा कहता था"

"मोहम्मद बरून्दक़ बेग और जुलनून बेग ने कह तो दिया था कि किशलाक (जाड़े में रहना) यहीं करो और वे कोशिश भी (रहने की) बहुत करते थे लेकिन ठहराने का सामान ठीक नहीं देते थे जाड़ा आगया (हिरात और काबुल) के बीच के पहाड़ों में बर्फ़ बरस ने लगा और काबुल की तर्फ़ का खटका और जियादा होगया ये लोग न कोई जगह किशलाक़ की बताते थे और न किशलाक का सामान करते थे और मैं साफ़ नहीं कह सकता था आख़िर ज़रूरत होने पर किशलाक के बहाने ७ शाबान (पोस सुदि ८ सम्बत

१५६३ । २४ दिसम्बर १५०६) को हिरात से निकलकर बादग़ेस के इलाके में चला आता हुए हरेक पड़ाव पर एक एक और दो दो दिन ठहर कर कूच करता था कि जो आदमी तहसील और काम के वास्ते मुल्क में गये हैं आकर साथ होजावें देर इतनी होगई थी कि लंगर मीर ग़यास से गुज़र ने के पीछे दूसरे या तीसरे कूच में रमज़ान का चांद देखा था जो लोग कामों और तहसील के वास्ते गये थे उनमें से कुछ तो आकर साथ होगये और कोई २ मिरज़ाओं के नोकर होकर रह गये जिनमें से एक सैदम अली दरबान भी था जो मिरज़ा बदीउल ज़मान का नोकर होगया खुसरो शाह के नोकरों में से मैं ने उसके बराबर किसी की खातिर नहीं की थी जबकि जहांगीर मिरज़ा ग़ज़नीन को छोड़ गया था तो मैं ने ग़ज़नीन सैदम अली को दी थी वह अपने साले दोस्त एक शेख को वहां रखकर लशकर में आगया खुसरो शाह के नोकरों में दो आदमियों से बहतर कोई नहीं था एक तो यही सैदम अली दरबान और दूसरा मुहब अली क़ोरची था सैदम अली में कई अच्छे गुण भी थे बहादुर, बिलासी, सखी, और ठठोल भी था अब-गुण यह था कि झूंठा और बद

चलन था फिर जब बदीउल ज़मान मिरज़ा हिरात गनीम को देकर कंधार में शाहबेगम के पास आता था तो सैद्म अली को मार कर हीरमंद नदी में डाल आया था।"

बर्फ़ से तकलीफ़ें

बादशाह लिखते हैं कि "मीर ग़यास" के लंगर से चलकर ख़रजस्तान के गांवों को खूंदते हुवे नरखचीरान में पहुंचे वहां से यहां तक बर्फ़ ही बर्फ़ था ज्यों ज्यों आगे बढ़ते थे बर्फ़ भी बढ़ता जाता था नरखचीरान में तो बर्फ़ घोड़े की रांग से भी ऊंचा पड़ा हुआ था नरखचीरान जुलनून बेग के पास था उसका नौकर मीरक खां वहां था उसने जुलनून बेग के सब अनाजों का मोल देकर ले लिया था जब हम नरखचीरान से चले तो बर्फ़ दो तीन दिन में बढ़ते बढ़ते घोड़े की गर्दन से ऊंचा होगया था बहुत जगह तो घोड़े का पांव ही ज़मीन से नहीं लगता था बर्फ़ और भी बरसता जाता था जब चराग़दान से आगे बढ़े तो बर्फ़ भी बहुत ऊंचा होगया था और रस्ता भी नहीं मालूम होता था।

लंगर मीर ग़यास में यह सलाह कीगई

थी कि काबुल को किस रस्ते से चलें मेरी और अकसर आदमियों की तो यह राय थी कि जाड़ा है क़ंधार का रस्ता कुछ दूर तो है मगर बे खटके चल सकते हैं और पहाड़ के रस्ते में जोखम और खटके बहुत हैं क़ासिम बेग ने उस रस्ते को दूर और दूसरे को नज़दीक बताकर बहुत हठ किया जिस से हमको यही रस्ता लेना पड़ा सुलतान नामी एक आदमी अगुआ बना था न जाने उस ने लाग से या घबराहट से या ढेरों बर्फ़ होने से चलता हुआ रस्ता खो दिया आगे न चला सका.

यह रस्ता कासिम बेग की कोशिश से लिया गया था इसलिये शर्म के मारे वह और उसके बेटे पैदल होकर बर्फ़ को खूंदते और रस्ता निकालते आगे आगे चलते थे १ दिन बर्फ़ भी बहुत या और रस्ता भी नहीं दिखता था हमने बहुत महनत की मगर रस्ता नहीं मिला लाचार लौट कर एक जगह जहां लकडियों का ढेर लगा था ठहर गये और ६० ।७० अच्छे जवानों को कहा कि इसी रस्ते से पिछले खोजों को खूंदते हुये पीछे जावें और गुफ़ाओं के नीचे हज़ारा लोगों या दूसरे आदमियों में से जो जाड़ा तेर करने के वास्ते रहते हों रस्ता बताने के लिये अगु-

आ ढूंढ लावें उनके आने तक हमने ३।४ दिन उस मंज़िल से कूच नहीं किया मगर वह भी कोई अच्छा अगुआ नहीं लासके तब हमही खुदा तवक्कुल (राम भरोसे) उसी सुल्तान अबु वे को आगे करके फिर उसी रस्ते पर चले कि जिसको आगे चलता न देखकर लौट आये थे.

इन कई दिनों में बहुत ही तकलीफ़ हुई थी और उमर भर में कभी ऐसी मुसीबत नहीं उठाई गई थी एक हफ़्ते (सप्ताह) तक तो बर्फ़ को खूंद खूंद कर १ कोस और डेढ़ कोस से ज़ियादा कूच नहीं कर सके में और १०।१५ पास रहने वाले क़ासम बेग और उसके २ बेटे दस्तकारी, बर्दी, कंबर अली और २।३ उसके नौकर कुल जमा यही आदमी पैदल होकर बर्फ़ को खूंदते थे पांव रखते ही कमर और छाती तक बर्फ़ में डूब जाते थे जो आदमी सबसे पहिले होता था वह कई क़दम चलने के पीछे सुन होकर खड़ा रहजाता था तब दूसरा आदमी आगे आता था १०।१५ आदमी जो बर्फ़ को खूंदते थे तो इतना होता था कि १ कोतल घोड़ा खेंचा जाता था और वह भी रकाब और खोगीर तक गड़ा हुआ (१०।१५ क़दम चलकर थक जाता था

तो उसको अलग करके दूसरा कोतल घोड़ा आगे खेंचते थे इस तौर से १०।१५।२० आदमी बर्फ़ खूंदते थे और यही १०।१५ घोड़े आगे खेंचे जाते थे दूसरे सब अच्छे जवान और बेलोग जो अमीर कहलाते थे घोड़े पर चढ़े चढ़े ही उस खूंदे हुवे तैयार रस्ते में सिर झुकाये हुवे चले आते थे वह ऐसा मौक़ा न था कि किसी को तकलीफ़ दीजा सके जिसमें हिम्मत और जुरअत होती थी वही आप ऐसे कामों को मांग कर करता था।"

"इस तरह से हम बर्फ़ को खूंदते और रस्ता निकालते ३।४ दिन मे खूक़ान नाम जगह में पहुंचकर घाटी के नीचे ख़ोल नाम खोल (गुफ़ा) में उतरे यह दिन अजब दौड़ धूप का था और बरफ़ भी बरसता था सब लोगों को मर जाने का वहम होगया था।

इधर के आदमी गुफ़ाओं और पहाड़ों की खोहों को ख़ोल कहते हैं इस ख़ोल में पहुंचे ते वक़्त ठंड बहुत होजाने से इसी के पास उतर पड़े बर्फ़ ऊंचा था रस्ता बंद था उसको खूंदकर १ घोड़ा मुशकिल से जाता था दिन बहुत छोटे थे आगे के आदमी तो दिनके उजाले में इस खोल के पास पहुंच

गये थे शाम से पहर रात गये तक भी पी-
छे से आते रहे फिरतो जो आदमी ज-
हां खड़ा था वहीं उतर पड़ा बहुत आद
मियों ने घोड़ों के ऊपर ही रात तेर की
खोल (गुफ़ा) तंग दिखाई देती थी जि-
ससे मैंने फावड़ा लेकर बर्फ़ हटाया और
अपने लिये नमद तकीय (गद्दी तकिये) के
बराबर जमीन निकाल ली बर्फ़ को छाती के
बराबर खोद डाला तोभी ज़मीन तक नहीं
पहुंचे हां हवा से कुछ बचाव होगया मैं
वहीं बैठा रहा कई लोगों ने कहा कि गुफ़ा
के भीतर चले जावो मगर मैं तो नहीं ग-
या और अपने दिल में कहा कि सब आ-
दमी तो बर्फ़ और ठंड सहें और मैं गर्म ज-
गह में जाकर आराम करूं उधर तो सब सा-
थी तकलीफ़ और मुसीबत में रहें और मैं
यहां निश्चिंत नींद लूं यह मुरव्वत से दूर
और दोस्ती के खिलाफ़ काम है जो मिह-
नत और तकलीफ़ हो उसे भुगतूं और जि-
स तरह और लोग अपनी ताक़त से खड़े रहें
मैं भी उनके साथ खड़ा रहूं. फ़ारसी में एक
मसल है कि यारों के साथ मरना भी ईद
है."

"मैं ने जो उस जाड़े और पाले में बर्फ़
खोदकर नई बैठक बनाई थी उसमें सोने

के वक़्त तक बैठा रहा बर्फ़ ऐसे ज़ोर से
बरसा कि मैं जो उखड़ूं बैठा था मेरे पी
ठ सिर और कानों पर चार चार उंगल
बर्फ़ जमगया उसी रात को मेरे कान में ठंड
घुस गई सोने के वक़्त लोगों ने जो गुफा
को खूब देखा तो पुकार कर कहा कि
गुफ़ा बहुत चौड़ी है सब आदमियों को
जगह मिल सकती है यह सुनते ही मैं अ-
पने सिर और चहरे की बर्फ़ झाड़ कर
गुफ़ा में गया और जो लोग गुफ़ा के आस
पास थे उनको बुला लिया ४० । ५० आद
मियों के लिये खासी जगह निकल आई
जिसके पास जो चीज़ खाने की मौजूद थी
लाई गई उस तरह के जाड़े पाले और ब-
र्फ़ से बचाव की अजब गर्म जगह में हम
आगये थे सबेरे जब बर्फ़ और पाला थमा
तो कूच करके उसी तौर पर बर्फ़ खूंदते औ
र रस्ता बनाते हुवे घाटी के ऊपर चढ़कर
नीचे को चले नीचे पहुंचते पहुंचते दिन
छुप गया था रात बहुत ठंडी थी बड़ी त-
कलीफ़ से तेर हुई बहुत से आदमियों के
हाथ पांव ठंड से ऐंठ गये.

दूसरे दिन तड़केही घाटे से नीचे को
उतरने लगे कई जगह तो फ़िसल फ़िसल
कर उतरे शाम के वक़्त घाटे से बाहर निक

तो किसी बड़े बूढ़े को भी याद नहीं था कि इस घाटी से जबकि इतनी ऊंची बर्फ़ पड़ी हो कोई उतरा होगा बल्कि इस मोसम में तो मालूम नहीं है कि किसी के दिल में भी इस घाटे से उतरने का खयाल हुआ हो."

"हमको बर्फ़ की बुलंदी पर कई दिन तक तकलीफ़ तो बहुत हुई मगर आखिर को इसी ऊंचे बर्फ़ पर से अपनी मंज़िल को पहुंच गये जो यह उतना ऊंचा बर्फ़ नहीं होता तो ऐसे ऊजड़ और औघट घाट से कौन उतर सकता था बल्कि जब इतना ऊंचा बर्फ़ नहीं होता तो पहिले ही फ़िसलने में घोड़े और ऊंट सब रह जाते सोने के वक़्त इक्षेऔलांग में आकर उतर गये वहां के लोगों ने खबर पाकर गर्म घरों में उतारा मोटी ताज़ी बकरियां घोड़ों के वास्ते बहुत सा घास दाना और आग जलाने के लिये उपले लाये उस जाड़े और बर्फ़ से छूट कर ऐसे गर्म गांव और घरों में उतरना और इतनी बहुत रोटियां और मोटी बकरियां पाना कितना अच्छा था जिसकी क़दर तकलीफ़ वाले ही जान सकते हैं।

१ दिन यक्का औलंग में आसूदगी और दिलजमई से रहकर वहां से चले और २ फर संग (६ कोस) पर आरहे दूसरे दिन

ईद रमज़ान (फागुन सुदि २। १५६३ १५ जनवरी सन १५०७ ईस्वी) हुई बामियां में होकर शेरनो की घाटी से उतरे और जगदलक में ठहरे हज़ारे तुर्कमान अपने क़बीलों और माल असबाब समेत हमारे रस्ते पर ही किसलाक़ किये हुवे थे उनको हमारी बिलकुल ख़बर नहीं थी हम सवेरे ही कूच करके उनके डेरों में गये २। ३ डेरे लूटे गये थे कि लोग घर बार छोड़ छोड़ कर बाल बच्चों समेत पहाड़ में चलेगये आगे से ख़बर आई कि कई हज़ार हज़ारा लोगों ने अगले लश्कर के आदमियों को १ तंग जगह में घेर रखा है और मारे तीरों के किसी को आगे नहीं बढ़ने देते हैं। इस ख़बर के सुनते ही मैं दौड़ कर गया और पास पहुंच कर देखा तो जगह तंग भी नहीं है और हज़ारे जाति के कई आदमी १ पहाड़ी से आकर तीर छोड़ रहे हैं और लश्कर वाले १ टीले पर जमा होरहे हैं कुछ आगे भी जाते हैं मैं अकेला वहां गया और उन लोगों को पुकार पुकार कर तसल्ली देने लगा मगर किसी ने नहीं सुना वे ग़नीम की तर्फ़ भी नहीं गये जगह जगह खड़े होगये मेरे पास तरकश और कमान के सिवाय न बकतर था न पाखर था न और हथियार थे मैं ने फ़र

साया कि नौकर को रखने का यह सब
ब होता है कि किसी जगह काम आवे
और साहिब के ऊपर कुरबान होवे न यह कि
नौकर खड़ा रहे और साहिब दुशमन के ऊ
पर जावे यह कहकर मैंने घोड़ा डाला जब
आदमियों ने देखा कि मैं चल पड़ा तो वे
भी साथ होगये जिस पहाड़ पर हज़ारे थे जा
लिपटे और उनको खयाल में न लाकर क-
भी सवार और कभी पैदल ऊपर चढ़ने लगे
दुशमन ने जब देखा कि लशकर चढ़ आ
या तो ठहर न सके चल खड़े हुवे ये लोग
भी उनका पीछा करके पहाड़ पर चढ़ गये
और हिरनों की तरह घेर कर उनका शिका
र करने लगे जो कुछ कि उन्होंने लिया था
वह उनके माल असबाब से अलग कर लिया
और उनके बाल बच्चों को भी पकड़ा मैंने खु
द भी हज़ारा लोगों को कुछ बकरियां घे
रीं और मार कर तुगाई को सोंपी फिर आ
गे बढ़ कर पहाड़ों की घाटियों पर उतरा
और उन लोगों की घोड़े और बकरियां आ
गे रख कर तैमूर बेग के लंगर में जा उतरा।
हज़ारा लोगों के १४।१५ मुखिये भी जो
दंगई और बटमार थे हाथ आये मेरा तो
इरादा था कि जिस मंज़िल में उतरूं वहां
इनको ऐसी बुरी तरह से मारूं कि सब

कओं और लुटेरों को डर होजावे मगर क़ा सिम बेग ने बेजा रहम करके छोड़ दिया फिर और क़ैदी भी तरस खाकर छोड़ दि ये गये.

इन हज़ारा तुर्कमानों पर चढ़ाई करते वक़ सुना गया था कि मोहम्मद हुसेन मिरज़ा गलत(१) और सुलतान संजर बरलास(२) ने कुछ मुग़लों को जो काबुल में रहगये थे अपनी तर्फ़ खेंचकर खान मिरज़ा को बादशाह ब- नाया है और काबुल को घेर रखा है और यह बात उड़ा दी है कि बदी उल ज़मान मिर- ज़ा और मुज़फ्फ़र हुसेन मिरज़ा ने बादशाह को पकड़ कर हिरात के क़िले मेंक़ैद कर दिया है सर दारों में से मुल्ला बाबा सागरची खलीफ़ा मोहब अली. कोरची अहमद यूसुफ़ और अह मद क़ासिम काबुल के क़िले को बचा रहे हैं.

मैंने तैमूर बेग के लंगर से क़ासिम बेग के नोकर मोहम्मद अंदजानी के हाथ अपने य- हां तक आ पहुंचने की कैफ़ियत काबुल के अमीरों को लिख भेजी और यह भी लिख दिया कि हमने यह बात ठहराई है कि ग़ोरबंद की तंग घाटी से निकल कर हल्ला करें और निशा- न (संकेत) के वास्ते मिनार (नाम) पहाड़ से

(१-२) मुग़लों की जातें. ।

उतरते ही बहुत सी आग जलादें सो तुम ह-
मारा आना जान कर अंदर से बाहर निकलो औ-
र जो कुछ होसके उसके करने में कसर
मत रक्खो. इधर से हम भी पहुंच जायेंगे.
मैं मोहम्मद अंदजानी को रवाने करके
सुबह ही सवार हुआ और अस्तर शहर के
बराबर ठहरा वहां से तड़के ही चलकर रा-
त पड़ते पड़ते गोरबंद की घाटी से गुज़रा
और पुल के ऊपर ठहरा घोड़ों को दम देकर
दो पहर पीछे पुल पर से सवार हुआ तका-
वल तक तो बर्फ़ नहीं था वहां से जितना
चलता गया उतना ही बर्फ़ बढ़ता गया दमा
कुचली के बीच में तो बहुत ही ठंड होगई
जो ऐसी थी कि मैं ने तो उमर भर में कभी
वैसी नहीं देखी थी अहमदी परवानची बाका-
द और अहमद योसुफ़ को काबुल के अ-
मीरों के पास भेजकर कहलाया कि हम
उसी मियाद पर पहुंचते हैं तुम हुशयार
और मर्दाने रहना। जब मनार पहाड़ से उत-
कर तलहटी में पहुंचा तो मारे जाड़े के सुन्न
होगया था आग जलाकर तापा आग ज-
लाने की जगह तो नहीं थी मगर ठंड के
मारे लाचार होकर जलाई गई सुबह होते हो-
ते उस पहाड़ की तलहटी से चले काबुल
और मनार के बीच में अर्क़ घोड़े की रानों

तक था तमाम रस्ते में इतना बर्फ़ पड़ा था कि जो कोई इस रस्ते मे आता था घबरा कर लौट जाता था हम बर्फ़ में गड़े गड़े रास्ता चलते थे जिससे ठहराये हुवे वक्त पर बड़ी मुशकिल से काबुल में पहुंचे क़िले पर से बहुत सी आग जलती हुई दिखाई दी जिससे मालूम होगया कि वे लोग खबरदार होगये हैं हमने सैयद कासिम के पुल पर पहुंच कर शेरम तुग़ाई को बाईं फ़ौज के सिपाहियों के साथ मुल्ला बाबा के पुल पर भेजा क़ौल और दहिने हाथ के लशकर को लेकर हम बाबा अली के रस्ते से गये.

खान मिरज़ा एक छोटे से बग़ीचे के हाते में बैठा था वहां सबसे पहिले सैयद कासिम एशक-आक़ा क़म्बर अली, क़ासिम बेग का बेटा. शेर कुली करावल मुग़ल, और सुलतान अहमद मुग़ल ये चारों दर्राये हुवे चले गये खान मिरज़ा गड़ बड़ होते ही घोड़े पर चढ़ कर भाग गया उसके आदमियों ने शेर कुली को तलवार मार कर गिरा दिया मगर जब उसका सिर काटने लगे तो छूट गया और ये चारों जने तीरों और तलवारों से ज़खमी होकर हमारे पास आये एक तंग गली में आदमियों की बहुत भी-

ड़ हो रही थी जो न आगे जा सकते थे और न पीछे आ सकते थे मैं ने अपनी नज़दीक के जवानों से कहा कि उतरो और ज़ोर करो दोस्त नासिर मोहम्मद अली किताबदार बाबा शेरज़ाद शाह महमूद और कई दूसरे जवानों ने उतर कर तीर मारे ग़नीम भाग गया हमने क़िले वालों का बहुत रस्ता देखा मगर वे काम के वक़्त पर नहीं पहुंच सके ग़नीम को हटा देने के पीछे एक २ या दो दो दौड़ २ कर आने लगे हम अभी उस चार बाग़ में कि जहां खान मिरज़ा ठहरा हुआ था नहीं पहुंचने पाये थे कि क़िले के आदमियों में से यूसुफ़ और सैयद यूसफ़ आये और मेरे साथ उस बाग़ में गये मगर मैं ने देखा कि खान मिरज़ा नहीं है निकल भागा है मैं जलदी से लौटा अहमद यूसफ़ मेरे पीछे था चार बाग़ के दरवाज़े से निकलते ही दोस्त सरपुली नाम एक पियादा जिसको बहादुरी करने से मैं ने काबुल की कोटवाली देकर छोड़ा था नंगी तलवार किये हुए मेरे सामने आया मैं जेबा (बकतर) तो पहिने हुवे था मगर गरीची नहीं बांधे था और दुबलग़ा पहिने भी नहीं था इसलिये हे दोस्त! हे दोस्त! कह कर पुकारा और अहमद

यूसुफ़ भी चिल्लाया मगर यातो हमारे चह्रे बदले से और ढंग से बिगड़े हुवे होने से या लड़ाई की घबराहट से उसने मुझे न पहिचाना और मेरे नंगे बाज़ू पर तलवार मारदी लेकिन खुदा की महरबानी से तलवार ने बाल बराबर भी काट न किया.

वहां से हम बागे बहिश्त में आये जहां मोहम्मद हुसैन मिरज़ा था मगर वह तो भाग गया था और बाग़ के रस्ते में ७। आदमी तीर कमान लिये हुवे खड़े थे मैंने उनके ऊपर अपने घोड़े को सड़ दी वे ठहर न सके भाग निकले मैं ने पहुंच कर एक को तलवार मारी जो इस तरह अधर से निकल गई कि मैंने जाना कि उस का सिर कट गया होगा. फिर मालूम हुवा कि वह खान मिरज़ा का कोकलताश (धाभाई) था और तलवार उसके हाथ में लगी थी मोहम्मद हुसैन मिरज़ा जिन घरों में बैठा था उनके दरवाज़े पर पहुंचते ही १ मुग़ल ने जो मेरा नौकर था और जिसको मैं पहिचानता था तीर जोड़ कर मेरे ऊपर खैंचा जब इधर और उधर से लोगों ने कहा हैं! हैं! बादशाह हैं तो तीर फैंक कर भाग गया.

अब तीर मारने का भी काम नहीं रहाथा

मिर्ज़ा और उसके सिरदार या तो भाग गये थे या पकड़े गये थे फिर किस के वास्ते तीर मारा जाता इसी जगह सुलतान संजर बरलास को भी गर्दन बांधकर लाये जिसको रया अत करके मैं ने नेक निहार का तूमान (परगना) दिया था और वह भी इस फ़साद में शामिल होगया था वह गिड़ गिड़ा कर पुकारने लगा। मेरे दादी मां शाह बेगम उसकी भानजी होती थी इस लिये मैंने कहा कि इसका ऐसी बेइज्जती से ज़मीन में नहीं खेंचें कोई मौत और बला नहीं है वहां से चलकर मैंने अहमद क़ासिम कोह बुर पहाड़ काटनेवाले को जो क़िले वालों में से था कुछ जवानों के साथ खान मिरज़ा के पास भेजा.

इसी बाग़े बहिश्त के एक कोने में शाह बेगम और खानम घर बनाकर बैठी थी मैं बाग़ से निकल कर उनके पास गया शहर के आदमी और लुच्चे लोग लाठियां लिये हुवे कोनों कुचालों में जमाहोकर लोगों को पकड़ने और माल लूटने की ताक में थे मैं ने आदमी तैनात करके उनको पिटवा कर निकलवा दिया शाह बेगम और खानम १ घर में बैठी थी मैं हमेशा जहां उतरा करता था वहीं उतर कर

बेगमोंका आना बादशाहकेपास

बड़े अदब और ताज़ीम से गया वे दोनो बहुत ही शरमाईं घबराईं नीचे सिर करके रह गईं न कोई ठीक बात कह सकीं न मेहरबानी से ख़ैरियत पूंछ सकीं। इनसे मुझे ऐसी उमेद नहीं थी कि जो इनका कहना नहीं मानता खान मिरज़ा तो शाह बेगम के पोते का बेटा ही था रात दिन इन्हीं के पास रहता था जो ये उसकी बातों में न आकर खान मिरज़ा को नहीं छोडतीं थी मैं पहिले भी कई बार दिनों के फिर जाने से तख्त मुल्क और नौकर चाकर पास न रहने पर उनके पास गया था और मेरी मां भी गई थी मगर इनसे कुछ रियाअत और मेहरबानी नहीं देखी गई मेरे छोटे भाई खान मिरज़ा और उसकी मां सुलतान निगार खानम के पास आबाद और उपजाऊ विलायतें थीं मैं और मेरी मां विलायत तो कहीं रही १ गांव और कुछ जानवरों के मालिक भी नहीं होसकते थे क्या मेरी मां यूनसखां की बेटी नहीं थी? और मैं उसका नवासा नहीं था? फिर जब शाह बेगम मेरे पास आईं तो मैंने लमग़ान को जो काबुल के अच्छे इलाकों में से है उनको देकर बेटे पने और ख़िदमत करने में किसी तरह का क़सूर नहीं किया सुलतान सईदखां काशग़री पैदल

और नंगा कई बार आया मैंने अपने स-
गे भाईयों की तरह मिलकर लमग़ान के पर
गनों में से मंदावर का परगना उसको भी
दिया जब कि शाह इसमाईल सफ़वी ने शे-
बांखां को मर्व में मारा और उस भया-
नक दुश्मन को हमारे सिर पर से दूर कि-
या तब मैं कुंदुज़ में गया तो इंद्जान के
आदमियों ने मेरी तर्फ़ देखकर अपने दारोग़ों
को निकाल दिया और कई जगहों को
मज़बूत करके मेरे पास आदमी भेजे मैंने
सुलतान सईद खां को अपने बाबरी नौकर
मदद के वास्ते साथ करके इंद्जान की वला
यत बख़्शी और खान करके भेजा इस ता-
रीख़ तक भी उन लोगों में से जो कोई आया
है मैंने उसे अपने सगे भाईयों से कम नहीं
देखा है जैसे चीन तैमूर सुलतान, अवैस तैमू
र सुलतान तोख़ता बूग़ा सुलतान, और बा
बा सुलतान इसवक़्त मेरे पास हैं और मैं
ने उनको अपने बेटों से बढ़कर देखकर रि-
याअत और महरबानी की है इस लिखने
से मेरी ग़रज़ शिकायत करने की नहीं है
सच्ची बात है जो मैंने लिखी है और इस लि
खने से मेरी मतलब अपनी तारीफ़ करनेका
भी नहीं है ठीक ठीक हाल है जो मैंनेलि
खा है और इसतारीख़ (दिन) से मैंने रि-

सी ठान ली है कि सचाई से हर बात लिखी जावे और हर काम कठीक बयान किया जावै इस वास्ते बाप की और भतीजों की जो बुराई भलाई मशहूर थी वह मैं ने कह दी हैं और अपने परायेमें जो गुण अवगुण थे वह लिख दिये हैं पढ़ने वाला मुझे माफ़ रखे और सुनने वाला एतराज़ न करे.

फिर मैं वहां से उठकर उस चार बाग़ में कि जहां खान मिरज़ा ठहरा था जा उतरा वलायत में और सब क़ौमो तथा क़बीलों में फ़तह नामे (विजय पत्र) भेजे इसके पीछे सवार होकर अर्क(१) (किले) में गया मोहम्मद हुसैन मिरज़ा मारे डरके तोशे खाने में जा छिपा था और तोशक के बाग़ (ग़िलाफ़) में अपनी गठड़ी सी बांध ली थी मैंने क़िले के आदमियोंमेंसे मीरम दीवान और कई दूसरों को छोड़दिया और कहा कि इन घरों में से मिरज़ा को ढूंढ़ लावें उन्होंने खानम के दरवाज़े पर जाकर सख़्ती और बे अदबी की बातें कहीं और मोहम्मद हुसैन मिरज़ा को तोशाखाने में से मेरे पास अरक में ले आये मैंने प-

(१) काबुल का क़िला अरक कहलाता है।

हिले की तरह उठकर ताज़ीम को उठकर और मि ला और कोई बात उसके मुंह पर नहीं ला या मोहम्मद हुसेन मिरज़ा ने ऐसी बुरी २ हर कतें की थीं और इतने बड़े २ फ़साद उठा ये थे जो उनके दंड में मैं उसके टुकड़े २ कर देता तो करने को जगह थी और व ह ऐसही बुरी सज़ा के लायक था मगर उस से एक तरह की रिश्तेदारी होगई थी मेरी बहन खानम की जनी हुई खूब निगार खा नम से उसको औलाद होगई थी मैं ने इसी हक़ से उसको कुछ तकलीफ़ नहीं दी और खुरासान जाने की रुखसत देदी उस बेमुरव्व त नाहक़ शनास (कृतघ्नी) ने मेरी इतनी नेकियों को कि मैं ने उसकी जान बख्शदी बिलकुल भूलकर शैबान खां के आगे मे री शिकायतें की थी और चुगलियां खाई थीं शैबान खां ने कुछ दिनों पीछे ही उस को मार कर सज़ा देदी.

अहमद क़ासिम कोह बुर और कई दूसरे जवान जो खान मिरज़ा के पीछे भे जे गये थे क़राह लाक के टीलों में उस के पास जा पहुंचे और पकड़ लाये वह नतो भाग सका और न उसको हाथ पांव हि लाने की ताक़त हुई.

मैं नीचे के महल के पुराने दीवान

खाने में पूर्व उत्तर की तर्फ़ मुंह किये बैठा था मिर्ज़ा से बोला कि आवो मिलें वह घबराहट में घुटना टेक कर आने तक २ दफ़े गिर पड़ा मिलने के पीछे मैं ने उस को अपने पास बैठा कर तसल्ली दी और शरबत आया मैंने मिर्ज़ा का वहम दूर करने के लिये पहिले खुद पिया फिर उस को दिया सिपाही रैयत मुग़ल और चग़ताई सब वहम में पड़े हुवे थे इसलिये सावधान करके मिर्ज़ा से कहदिया कि कुछ दिनों अपने ही घर में रहे । ऊपर लिखे लोगों की तर्फ़ से अभी खटका ही था इस वास्ते मिर्ज़ा का काबुल में रहना ठीक न समझ कर कुछ दिनों पीछे उसको खुरासान जाने की रुख़सत देदी·

मिर्ज़ा को रुख़सत करके मैं सईयारां चाशत् और गुलबहार की तलहटी में गया इन मुक़ामों के उधर खूब बहार होती है काबुल की वलायतों में दूसरी जगहों से उधर हरयाली अच्छी होती है तरह तरह के गुल लाले खिलते हैं १ दफ़े मैंने गिन्ने का हुक्म दिया तो ३४ तरह के निकले मैंने इन जगहों की तारीफ में १ बैत कही थी अब इस सैर करनेमे पूरी ग़ज़ल बनादी सचतो यह है कि बहा-

र के मौसम में सैर करने, जानवर उड़ाने और तीर मारने के लिये इन जगहों की बराबर कम कोई जगह होगी वलायत ग़ज़नीन और काबुल की तारीफ़ लिखी जा चुकी है।"

बदख़शान

इसी साल में नासिर मिरज़ा के चाल चलन से उसके घाले हुवे और बदख़शान के अमीर मोहम्मद क़ोरची, मुबारक शाह वज़ीर और जहांगीर बाग़ी होकर चमचान के पास बहुत से सवारों और पैदलों से चढ़ आये नासिर मिरज़ा के पास जो आदमी थे वे बग़ैर तजरुबे और सोच बिचार के उनसे लड़े और भागे मिरज़ा बदख़शानियों से हार कर अशक मशक के रस्ते से सुरख़ाब के ऊपर ऊपर ख़ोरतू की घाटी में होता हुआ ७०।८० लुटे खुसे नंगे और भूखे नौकरों से काबुल में आया।

बादशाह लिखते हैं कि "ख़ुदा की अजब कुदरत है कि नासिर मिरज़ा जो बाग़ी होकर तमाम क़ौम और क़बीलों को काबुल से बदख़शां में उठा लेगया था और वहां के नाकों घाटों और क़िलों को मजबूत

करके किस ख़ियाल में फिरता था अब अपने पिछले कर्मों से शरमाया और सिर झुकाया हुआ आया मैं ने भी उसके मुंह पर कुछ न कहा और खूब मिज़ाज पुरसी और महर बानी करके उसकी शर्मिंदगी दूर कर दी.

सन ९१३ हि. (संवत १५६४) सन १५०७ ईस्वी.

बादशाह ने ग़िलजईयों की लूट मार का खटका होने पर काबुल से सवारी करके सरहद में मुक़ाम किया वहां ख़बर आई कि यहां से ३ कोस पर ही बहुत से मह मंद लोग ग़ाफ़िल बैठे हैं अमीरों और सि पाहियों ने उनके लूटने की सलाह दी म गर बादशाह ने कहा कि जिस काम के वा स्ते आये हैं उसको छोड़कर अपनी ही रै यत को लूटना ठीक नहीं है यह कह कर रात को ही सवार होगये रात अंधेरी थी रस्ता नहीं दिखता था मगर पहिले ए क दो बार इधर आये थे इस लिये कुतु ब (ध्रू) को दहने हाथ पर लेकर आप

अगुवा बने और १ नदी पर पहुंचे जहां से गिलज़ईयों के बैठने की जगह ख़्वाजा इसमाईल को रस्ता जाता था सूरज निकलते ही ३ कोस से धुंवां देख कर लशकर ने धावा किया बादशाह ने दो येक कोस दौड़ने के पीछे आदमी और घोड़े दौड़ा कर सिपाहियों को रोका वे लिखते हैं कि "इस तरह ५।६ हज़ार दौड़ते हुवे लशकर को थमा देना बहुत मुशकिल होता है ख़ुदा ने आसान किया और लशकर खड़ा होगया १ कोस चलकर पठानों की गई देखी तो फिर दौड़ कीगई इस दौड़ में बहुत सी बकरियां हाथ आईं इतनी पहिले कभी किसी दौड़ में नहीं आई थीं।"

"कुछ देर पीछे पठानों की टोलियां हर तर्फ़ से लड़ने को आईं १ टोली को कुछ अमीरों और पास रहने वालों ने पकड़ा और दूसरी को नासिर मिरज़ा ने लड़कर हराया ग़रज़ सब पठानों को मार कर उनके सिरोंसे मीनार उठवा या गया।"

फिर बादशाह ने ख़्वाजा इसमाईल से बारलाबनों में आकर हुक्म दिया कि अमीरों और मुसाहिबों से पांचवां हिस्सा लूट का ले ले क़ासिम और कई दूसरों से रियाअत करके नहीं भी लिया गया तो

में १६००० बकरियां आईं जो ८०००० का पांचवां हिस्सा था। जो मेरी रिआयत कर के नहीं लीगईं उन सबके मिलाने से एक लाख बकरियां होने में कोई शक नहीं था।

फिर बादशाह वहां से चलकर रस्ते में हिरनों और गोर खरों का शिकार खेलते हुए काबुल में आगये उन्होंने लिखा है "कि यहां के हिरन बहुत मोटे थे ओरम तुमान वगैरा ने तअज्जुब करके कहा कि "मुग़लिस्तान में इतने मोटे हिरन कम देखे जाते हैं।

खुरासान में उजबक.

इस साल के अखीर में शैबांखां ने खुरासान के ऊपर चढ़ाई की नमक हराम बखशी शाहमनसूर ने अपनी जागीर अंदखूद से उसके पास अपने आदमी भेजे और जब वह अंदखूद के पास आया तो नज़र लेकर मिलने गया मगर बे सिरे उजबकों ने उसको उसके आदमियों, और उसकी नज़र को दम भर में लूट खसोट कर तबाह करदिया।

बदी उलज़मान मिरज़ा, मुजफ़्फ़र हुसेन मिरज़ा मोहम्मद बरन्दूक़ बरलास और जुलनून, अरगून वगैरा सब बाबा खाकी के

मुक़ाम पर लशकर लिये पड़े थे मगर न लड़ने का इरादा था न क़िला मज़बूत करने की फ़िकर थी वैसे ही सुस्त और निकम्मे बैठे थे मोहम्मद बरन्दूक़ जो हुशयार और हिसाबी आदमी था कहता था कि मैं और मुज़फ़्फ़र हुसैन मिर्ज़ा तो हिरात के क़िले को मज़बूत करें बदी उल ज़मान मिर्ज़ा और ज़ुलनून अरग़ून हिरात के आस पास पहाड़ों में जाकर सीस्तान से सुलतान अली अरग़ून को कंधार और ज़मीन दावर से शाह बेग और मुक़ीम को, लशकरों समेत अपने साथ ले लें हज़ारों और तक़दीरी के लोगों को भी जमा करके तैयार रहें ग़नीम का पहाड़ों मे आना मुशकिल है और वह बाहर के लशकरों के डर से क़िले पर भी नहीं आ सकेगा.

यह राय उसकी थी तो ठीक. मगर ज़ुलनून बेग जो बदी उल ज़मान के घर में करतम करता था और कंजूस भी बहुत था बरन्दूक़ के शहर में रहने पर राज़ी न हुआ- और फ़ज़ूल बातें करता रहा न क़िला मज़बूत किया न लड़ाई का सामान जोड़ा न क़राबल और चग़दावल छोड़े कि जो

दुश्मन के आने की खबर देवें न लशकर को सजाया कि जो दुशमन न आवे तो मन चाही लड़ाई करें।

आखिर शैबां खां मुहर्रम के महीने (सन ९१३ - जेठ सुदि तथा बैसाख बदि सम्बत १५६४ मई या जून सन १५०७) में मुर्गाब से उतर कर उनके पास तक आ पहुंचा जुलनून बेग खुशामदी लोगों के उभारने से सौ डेढ़ सौ आदमी लेकर क़रार बातं में ४०। ५० हज़ार उजबकों के सामने गया सो वहां पहुंचते ही मारा गया और मिर्ज़ा लोग भाग कर हिरात में पहुंचे आधी रात तक घोड़ों को दम देते और सोते रहे पहर के तड़के भाग गये न क़िला पकड़ा और न अपने जोरू बच्चों मां बहिनों को साथ लिया जो सब माल और खज़ाने समेत अलाकोरगान के क़िले में थीं और जिन लोगों को उन्हों ने इस क़िले की हिफ़ाज़त पर भेजा था वे भी वहां नहीं पहुंचे थे.

शैबांखान[1] ने आकर वह क़िला लेलिया

(१) शैबां खां (मोहम्मद शैबानी) ने सुलतान हुसेन के मरने और उसके २ बेटों बदीउल ज़मान मिरज़ा और मुजफ़्फ़र हुसेन गोरगान के हिरातमें बादशाह होने की खबरें सुनकर सन ९१२ के

और उन बादशाहों की बेगमों और शहर के सब लोगों को बहुत कुछ सताया मुजफ्फर हुसैन मिरज़ा की बीबी खान ज़ादा बेगम से खाबंद के जीते ही निकाह कर लिया और भी बहुत ज़ुल्म किये वह उल जलूल और कह कर बाज़ार में लटका देता था और शहर वालों से उसका इनाम उघा लेता था.

फिर उसने अबुल मुहसन(१) मिरज़ा और केबक मिरज़ा पर लशकर भेजकर उनसे किलात और मशहद भी छीन लिया और वे दोनो भाई पकड़े जाकर मारे गये.

—•—
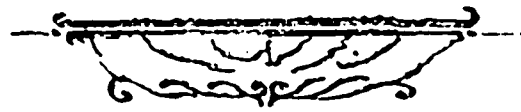
ज़िलहिज महीने में बलख से चढ़ाई की और उनको हराकर ८ मोहर्रम सन ९१३ शुक्रवार (जेठ सुदि ९ संम्बत १५६४ । २१ मई सन १५०७) को हिरात में अमल कर लिया बदीउल ज़मान मिरज़ा भाग गया अमीर जुलनून मारा गया अमीर तेमूर के पोतों की सल्तनत तूरान और खुरासान मेंसे जाती रही । (रोज़तुल सफ़ा)

(१) किताब अखलाक़ मोहसनी जो मुसलमानों नीति की एक अच्छी पुस्तक है इसी अबुल मुहसन मिरज़ा के नाम पर लिखी गई है. ।

बादशाह का कंधार जाना

शाहबेग और उसके भाई मुक़ीम ने शेबां
खां के डर से बादशाह के पास अर्ज़ियां भेजी
और उनको बुलाया वे अमीरों से सलाह करके
कंधार को गये ग़ज़नीन में हलीमा सुलतान
अपनी बेटी मासूमा सुलतान को लेकर उन·
के पास आगई जिसके वास्ते उन्होंने हिरात में
उससे कहा था हिरात के भागे हुवे कुछ अ
मीर भी वहां उनसे आ मिले

जब किलात में पहुंचे तो वहां हिन्दुस्ता
ने के सौदागर सौदागरी करने को आये हु
वे थे लशकर वालों ने उनको बाग़ी वला
यत से आया हुवा कहकर लूटना चाहा म
गर बादशाह ने राज़ी न हो कर कहा कि
सौदागरों का क्या क़सूर है जो इस थोड़े से
फायदे को ख़ुदा के वास्ते छोड़ देंगे तो बहु
त फ़ायदा होगा जैसा कि कुछ दिनो पहि
ले भी जो महमंदों को नहीं लूटा था तो
बाग़ी पठान गिलजइयों की लूट से कितना
बहुत माल हाथ लगा था जो किसी दौड़ में
नहीं मिला था·

इस तरह बादशाह ने अपने लशकर को स-
मझाकर सौदागरों से एक एक चीज़ बतौर न-

ज़र के लेली किलात से आगे कूच होने पर
खान मिरज़ा जो काबुल से बदख़्शां को रु
ख़सत हुआ था और अबदुल रज़्ज़ाक़ मिर
ज़ा जो ख़ुरासान से आया था दोनों कंधार से
भाग कर बादशाह के पास आगये बहार मिर-
ज़ा का पोता जहांगीर मिरज़ा का बेटा मीर मो
हंमद भी अपनी मां के साथ आकर हाज़िर हो
गया.

बादशाह ने शाहबेग और मुकीम को ख़त
लिखे कि मैं तुम्हारे कहने से यहां आया
हूं और उजबक जैसे बाग़ी दुशमन ने ख़ुरासान
लेलिया है तुम आवो तो तुम्हारी सलाह से
कोई बात कीजावे मगर वेतो बुलाने और लि
खने से ही मुकर गये और गंवारों कासा अ
क्खड़ जवाब लिख भेजा बादशाह लिखते हैं कि
"उनका गंवार पन एक यह भी था कि जो ख़
त उन्होंने मुझे लिखा था उसकी पीठ पर ज
हां अमीर अमीर के बल्कि बड़े अमीर छोटे
अमीर के ख़त में मुहर करते हैं वहां उन्होंने
बीच में मुहर की थी जो वे ऐसी गंवारी हर
कत नहीं करते और सख़्त जवाब नहीं लि
खते तो ३०।४० बरस के बने हुये अपने
घर को ख़राब नहीं करते."

बादशाह कूच करते हुवे शहर सफ़ा तक
पहुंच गये तब भी उन्हों ने कुछ परवाह नहीं

की आख़िर बादशाह ने अपने अमीरों की सलाह से लशकर सजाकर कंधार में आनेवा ली लहरों को रोकने के लिये ख़लीशक की तर्फ़ गये वहां आख़िर को लड़ाई हुई शाह बेग और मुक़ीम दोनो भाई ५। ६ हज़ार आद मियों से लड़ने को आये बादशाह के पास २००० आदमियों में से उस वक़्त १,००० ही थे- बाक़ी बिखरे हुवे थे मगर बादशाह ने उन थो ड़े आदमियों के ही परे ऐसी नई तरकीब से खू बी और मज़बूती के साथ जमाये थे कि वैसे कभी दूसरे पहिले किसी जगह नहीं जमा ये थे जो काम के आदमी थे उनके नाम १० ।१० और ५०।५० आदमियों की अफ़सरी पर लिख दिये थे और वे लोग दायें बायें आ स पास आगे पीछे और बीच में अपने ख ड़े होने की जगह को जानकर लड़ाई के वक़्त पहुंच गये थे और हमले के वक़्त आसानी से तवाचियों (नक़ीबों) के कहे बग़ैर ही अप नी अपनी जगह से आगे बढ़ चले थे.

इस नई तज़ुक (व्यूह रचना) के नाम भी नये नये रक्खे गये थे जैसे दाईं बाईं फ़ौ ज के सिवाय क़ल्ब (बीच की फ़ौज) के दायें बायें दुर्गों (समूह) को अवंग क़ौल और मूल क़ौल लिखा था और क़ौल में थी कि जहां खास ताबीन (नोकर) होते हैं।

दाहीं भुजका नाम अवंगवान और बाईं भु-
ज का सूलबान रखा था खास ताबीन के
कुछ जवान जो बहुत ही नज़दीक रहते हैं उन
की दाईं और बाईं अनियों को अवंग और
सूल की पदवी दी थी·

कौल में अमीर कोई नहीं था पासवाले
और यसावली (तुर्क) ही थे जो अमीरी के
दर्जे को नहीं पहुंचे थे

उधर शाह बेग और मुकीम की अलग
२ फ़ौजें थीं मगर उनका इन्तज़ाम ठीक नहीं
था शाह बेग बादशाह की दाहनी और बी-
च की फ़ौज पर आया उसके सिपाही ६।
७००० कहे जाते थे पर ४।५००० तो ज़रूर
थे और मुक़ीम ने बाईं फ़ौज पर बड़े ज़ोर
शोर से हमला किया कासिम बेग ने जो उ-
स फ़ौज का अफ़सर था दो तीन बेर आ
दमी भेजकर बादशाह से मदद मांगी मगर
यहां भी ग़नीम का ज़ोर था इसलिये बाद-
शाह ने अपने पास से आदमियों को जुदा
करना मुनासब न समझा और हमला कर
के शाह बेग को भगा दिया बादशाही फ़ौज
उसके आदमियों के मारने और पीछा करने
को चली गई बादशाह के पास कुल ११
आदमी रहगये और मुकीम अभी लड़ रहा
था बादशाह ने उन्हीं ११ आदमियों से उन

धावा बोल दिया मुक़ीम भी बादशाही नक़्क़ारा सुनते ही मैदान छोड़ कर भागा बादशाह फ़तह पाकर कंधार को गये वहां शाह बेग और मुक़ीम ने कोई ऐसा आदमी नहीं छोड़ा था जो किला मज़बूत करके मुक़ाबला करता उन लोगों के भाईयों में से अहमद अली तरख़ां वग़ैरा क़िले में थे जो बादशाह को चाहते थे उन्होंने आदमी भेजकर अपने भाईयों के जान की अमान मांगी बादशाह के क़बूल कर लेने पर उन्हों ने एक दरवाज़ा खोल दिया दूसरे दरवाज़े में बादशाही लोगों को बे क़ाबू देखकर नहीं खोले बादशाह उसी दरवाज़े से अंदर गये और बे काबू आदमियों पर आंकू और तुक्के मार कर एक दो को मार डालने का भी हुक्म दे दिया फिर जाकर पहिले मुक़ीम के ख़ज़ाने को देखा जो ऐक मज़बूत गढ़ी में था वहां अबदुल रज़्ज़ाक़ मिर्ज़ा पहुंच गया था बादशाह ने उसको उस ख़ज़ाने में से कुछ देकर बख़्शियों का पहरा बैठा दिया फिर अरक में जाकर शाह बेग के ख़ज़ाने को देखा और उसका बंदोबस्त किया और वहां के सरदारों को पकड़ वाया बादशाह लिखते हैं कि "इन विलायतों में इतना रुपया कभी नहीं देखा गया था बल्कि किसी से सुना भी नहीं था कि उसने इतना रुपया देखा हो.

बादशाह रात को अरक में रहे सवेरे फर्रु
ख़ज़ाद बाग़ में आगये कंधार की वलायत ना
सिर मिरज़ा को देकर वहां से कूच कर दिया-
मगर ख़ज़ाने सब उठालिये अरक से ख़ज़ाने
निकालते हुये नासिर मिरज़ा ने रुपयों का
भरा हुआ १ ऊंट रख लिया बादशाह ने भी
उससे नहीं मांगा उसको बख़्श दिया रस्ते में
दोनों भाईयों (शाह बेग और मुक़ीम) के मा
ल और ख़ज़ाने के संदूक़ और बोरे अलग
अलग किये गये तबचाक घोड़े नर और मा-
दीन, खच्चर, कपड़े, डेरे, कनातें, मख़मल बा
नात के शामयाने, बरतन और चांदी के
टके और भी बहुत से अच्छे अच्छे सा-
मान असबाब थे बकरियां भी बहुत थीं म
गर बकरियों की कौन परवाह करता था
कंधार के इलाके मेंतो बादशाह को ख़ज़ाना
बांटने की भी फ़ुरसत न हुई मगर क़रा बा
ग़ में आकर बांटना शुरू किया गिनती क
रना तो मुशकिल था तराज़ू में तोल तोल
कर रुपया दिया जाता था अमीर सरदार
और नौकर चाकर बोरे और थाल भर भर
कर अपनी तनख़ाह के हिसाब में ले जाते
थे फिर भी बहुत से माल असबाब के सा
थ बादशाह धूम धाम और शेख़ी से काबु
ल में आये और अहमद मिरज़ा की बेटी

मासूमा सुलतान से जो काबुल में बुलाली गई थी शादी करली

शैबाखां का कंधार घेरना

लड़ाई हारने के पीछे शाह बेग तो मस्तंग में और मुक़ीम ज़मीन दावार में, भाग गया था जहां से जाकर वह शैबाखां से मिला और शाह बेग ने भी उसके पास आदमी भेजे जिनके वह कहने से शैबांखां ने हिरात से पहाड़ों में होकर धावा किया क़ासिम बेग जो तजरुबे कार आदमी था जलदी करके बादशाह को निकाल लाया था जिसके पीछे ही शैबां खां ने आकर कंधार को घेर लिया नासिर मिरज़ा ने बादशाह के पास आदमी भेजा जो बादशाह के काबुल पहुंचने पर ६।७ दिन पीछेही वहां पहुंचा बादशाह ने अमीरों से सलाह की तो यह बात निकली कि शैबां खां पुराना दुशमन है जिसने ले सब विलायतें छीन ली हैं जो तैमूर बेग की औलाद के पास थीं तुर्क और चग़ताई जो कोनों कुचालों में रहगये थे वे बाज़े तो राज़ी-और बाज़े लाचारी से उज़बकों से मिलगये हैं बादशाह लिखते हैं कि "मैं ही एक काबुल में रहगया था दुशमन ज़बर दस्त और हम

कमज़ोर न सुलह की उमेद न लड़ने की ता
क़त अपने वास्ते १ जगह की तो फ़िक्र कर
ना ज़रूर ही था और इस थोड़ी सी फ़ुरसत
में मानों उस बड़े दुश्मन से दूर चला जाना चा
हिये या हिन्दुस्तान का इरादा करना और इ
न दो तर्फ़ों में से किस तर्फ़ जाना। सो क़ासि
म बेग क़ोरची और उनके नौकर चाकर तो ब-
दख़्शान जाने की सलाह देते थे और दूसरे
अमीर हिन्दुस्तान की तर्फ़ जाने को अच्छा
समझते थे इसी को मानकर हम लमग़ा-
न की तर्फ़ रवाने हुवे और मिरज़ा अबदुल
रज़्ज़ाक़ को काबुल में छोड़ गये जिसको क़ं-
धार फ़तह करने के पीछे क़िलात दिया गया
था और जो अब शैबां ख़ां का कंधार घेरना
सुन कर क़लात को छोड़ आया था और ब-
दख़्शान में कोई बादशाह या शाहज़ादा न-
हीं था इसलिये ख़ान मिरज़ा को शाह बेग की
रिश्तेदारी और सलाह से बदख़्शां जाने की
रुख़सत दीगई शाह बेगम भी उसके साथ ग-
ईं मेरी ख़ाला महर निगार बेगम को चलना
तो मेरे साथ चाहिये था क्योंकि उनका ना-
ता मुझ से बहुत नज़दीक था और मैंने उन
को मना भी बहुत किया था मगर वे भी
बदख़शां को चली गईं।

बादशाह का कूच हिन्दुस्तान को.

बादशाह ने जमादि उल अव्वल के महीने (आसोज सुदि तथा कातिक बदि। सितंबर या अकतूबर) में काबुल से हिन्दोस्तान को कूच किया जब छोटी काबुल होते हुवे "कोरूक साय" के घाटे से उतरे तो पठान जो काबुल और लमगान के बीच में रहते हैं और अमन के ज़माने में भी चोरियों से नहीं चूकते हैं और ऐसी बातों (जैसे बादशाह के काबुल छोड़ कर हिन्दुस्तान जाने) को तो ख़ुदा से चाहते हैं बादशाह को जगदलक की तर्फ़ कूच करते ही रस्ता रोकने के वास्ते उत्तर के पहाड़ पर इकट्ठे होकर ढोल बजाने और तलवारें चमकाने लगे। ये ख़िज़र ख़ैल शम्स ख़ैल, खरलची और जोगियानी. वग़ैरा जाति के पठान थे मगर जब बादशाह ने उस पहाड़ पर हमला किया तो वे १ तीर भी नहीं मार सके भाग निकले एक पठान बादशाह के पास से निकलकर भागा जाता था बादशाह ने उसको तीर मारा क़ैदियों में वह भी पकड़ा आया बादशाह ने उन में से कई एक को मरवा डाला और

नेक निहार तूमान (परगने) में आदीना पुरके पास डेरा किया छावनी डालने की पहिले से कोई तजवीज़ नहीं कीगई थी और न जाने की कोई जगह मुक़र्रर थी इसलिये ६ तुर्गों में कूच होता था तीर महीना (असाढ़ व साव न) पूरा होने को था लोगों ने मैदान में से धान उठा लिया था जो लोग इन तर्फ़ों को जानते थे उन्होंने कहा कि अलीशक तूमान के ऊपर काफ़िर लोग धान बहुत बोते हैं जा-ड़ों के वास्ते नाज वहां लशकर को मिल जावेगा बादशाह ने नेक निहार से बराईन घा टे पर धावा किया और काफ़रों को मार कर एक रात में बहुत सा धान ले लिया फिर कु छ दिनों मंदरावर के परगने में और कुछ दिनों अतर नाम गांवमें डेरे रहे. बादशाह कुनड़ वग़ैरा गांव को देखने गये वहां से जा-ले (घड़नाव) में बैठ कर उर्दू में आये इस से पहिले जाले में नहीं बैठे थे जाला पसं-द आया और फिर उसका रिवाज (प्रचार) हो गया हिन्दुस्तान जाने की सलाह नहीं ठहरी.

कंधार छूट जाना

यहां ख़बर आई कि शेबां खां कंधार लेकर लौट गया और नासिर मिरज़ा ग़ज़नी

न में चला आया है उसवक्त जाड़ा बहुत पड़ रहा था तो भी बादशाह बाद-पेच के रस्ते से काबुल में आगये उस्ताद शाह मोहम्मद सिलावट से कह आये थे कि हमारे "बादपेच" के आने की तारीख एक पत्थर पर खोद दे मगर जल्दी में अच्छी नहीं खुदी.

नासिर मिरज़ा को गज़नीन और अब्दुल रज़्ज़ाक मिरज़ा को नेक निहार मंदावर दर्रा नूर कुनड़ और नूर-कुल के परगने दिये गये.

बादशाह लिखते हैं कि इस तारीख तक तैमूर बेग की औलाद को बादशाही करने पर भी मिरज़ा कहते थे पर अब मैं ने हुक्म दिया कि मुझे इसी तारीख से बादशाह कहा करें.

४ ज़ीक़ाद मंगल वार चैत सुदि ४। संबत १५६५ (७ मार्च १५०८) की रात को काबुल के अर्क में एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम ३।४ दिन पीछे हुमायूं रखा गया ५।६ रोज़ बाद बादशाह ने चार बाग़ में आकर उसके पैदा होने की ख़ुशी की सब छोटे बड़े अमीर और नौकर चाकर नज़र लेकर आये रुपयों का ढेर लग गया बादशाह लिखते हैं कि "इससे पहिले इतना बहुत रुपया एक जगह इकट्ठा नहीं देखा गया था ख़ुशी ख़ूब हुई."

सन ६१४ (सम्बत १५६४।६५) सन १५०८।८ ई.
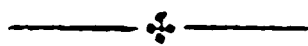
बादशाह ने गर्मियों में नग़ज़ नाम मुक़ाम पर धावा करके महंमद आलि के पग़नो को लूटा और अपने कुछ अमीरों को सज़ा दी जो बागी होगये थे.

सन ६१५ से सन ६२४ तक का हाल तवारीख़ हबीबुल सियर और फरिश्ता से.

बम्बई की छपी हुई तुज़ुक बाबरी में सन ६१४ से आगे का हाल नहीं है वह हम तवारीख़ हबीबुल सियर से जो उसी समय की बनी हुई है और तवारीख़ फ़रिश्ता से लिख कर इस कमी को पूरा करते हैं.

हबीबुल सियर से

अमीर तैमूर के घराने से तूरान और खुरासान की बलायतों के निकल जाने का हाल तो पहिले लिख आये हैं और ईरान में जो तीन

री सलतनत उसके घराने की थी वह भी कुछ पहिले जा चुकी थी आधी तो तुर्कमानो ने ले ली थी और आधी उन्हीं के अमीरों ने द-बा रक्खी थी जिनसे शाह इसमाईल सफ़वी ने छीन ली यह शेख सफ़ी नाम १ सैयद की औलाद में था जो अमीर तैमूर के समय पीरी फ़क़ीरी में मशहूर था और अमीर तैमूर जो बहु-त से क़ैदी रूम से पकड़ लाये थे उनको शेख़ सफ़ी के कहने से छोड़ दिया था वे सब शेख़ के चेले होकर उसी के पास रहने लगे थे इ-स से शेख़ का भेद बहुत बढ़ गया था और उ-सने पहिचान के वास्ते उनको लाल टोपियां देदी थीं जिनसे वे और उनके बेटे पोते क़-ज़ल बाश (लाल टोपी वाले) कहलाने लगे थे-शाह इसमाईल उन्हीं की मदद से तुर्कमानों को मार कर सन ९०६ (संवत १५५७ सन १५०० ई.) में तबरेज़ के तख़्त पर बैठ गया जो अमीर तैमूर ने अपने तीसरी बेटे मीरां शाह को दिया था और उसके पोते अबू सईद से तु-र्कमानों ने छीन लिया था.

फिर शाह इसमाईल ने धीरे धीरे १० बर्स में ईरान का बाक़ी मुल्क भी अमीर तैमूर के घराने के बाग़ी अमीरों से लेलिया जिससे उ-सकी सलतनत की हद बढ़ती २ सन ९१६ (संवत १५६७ सन १५१० ई.) में ख़ुरासान

कोर को तर्फ़ से मोहम्मद खां शेबानो को अमलदारी से जा मिली तो शाह ने उसके पास रुक़ा और वकील भेजकर दोस्ती करना चाहा मगर उसने अपने ज़ोर के घमंड से नहीं माना और उलटा कर मान को बलाबत में खूदयार करने के लिये अपना लशकर भेजदिया।

(१) तवारीख़ फ़रिश्ता में लिखा है कि जब शाह इसमाईल सफ़वी ईरानी और शेबानी खां को सलतनत के बीचमें कुछ छेटो नहीं रही और उज़बक क़ज़ल बाशों की सरहद में रोक टोक करने लगे तो शाह इसमाईल ने शेबानी खां को रुक़ा भेज कर ईरान की अमलदारी में दख़ल नहीं करने के लिये लिखा शेबानी खां ने जवाब दिया कि सलतनत का दावा और बादशाहों के साथ झगडा तो वही कर सकता है कि जिसके बाप दादों ने बादशाही की हो तेरा तुर्कमानों के संडेमें बादशाही का दावा करना थोथा है तो उस हालत में जबकि मुझ ऐसा बादशाह सातों बिलायत का हक़दार मौजूद हो तूतो १ फकीरहै चुप बैठा रह और सौग़ात में असा और कजकूल (दंड कमंडल) भेज कर कह लाया कि ये तेरे और तेरे बाप दादों का बाना है इसको ले और जो इसे छोड़ कर आगे बढ़ा तो तेरे सिर को खैर नहीं है राज लक्ष्मी रूपी दुलहन को तो

शाह इसमाईल ने यह सुनकर सन ९१६ के रजब महीने (कातिक सुदि तथा मगसर वदि संवत १५६७ अकतूबर १५१०) में खुरासान पर चढ़ाई की मोहम्मद खां हिरात से मर्व में चलागया इसमाईल ने पीछा करके उसको वहीं जा घेरा मगर मोहम्मद खां लड़ने को बाहर नहीं निकलता था इसलिये शाह इसमाईल २९ शाबान बुधवार (पोस वदि ३०। ४ दिसम्बर) को मर्व से हट कर ३ कोस पर चला गया मोहम्मद खां उसको भागा समझ कर पीछा करने के लिये मर्व से निकला मगर शाह इसमाईल ने लड़कर उसको भगा दिया और वह (१)चौभीते में घेरकर बुरी तरह से मारागया और शाह इसमाईल का

वही अपनी बगल में मार कर सोता है जो तेज़ तलवार के होठों को चूमता है

शाह इसमाईल ने जवाब में लिखा कि जो सलतनत एक घराने की ही बपौती होती तो पेशदादी बादशाहों से कयानि के बादशाहों को कब पहुंचती और फिर क्यों चंगेज़ खां के हाथ आती और तुझको मिलती और यह तो मैं भी कहता हूं कि राजलक्ष्मी रूपी दुलहन को वही अपनी बगल में लेता है जो खांडे की धार को चूमता और चाटता है. ले! मैं वह आता हूं जो तूभी मुझसे लड़ने को आया तो बाकी बातें रूबरू रण में कही जावेंगी नहीं तो यह चरखा और तकला तेरे वास्ते भेजा है इसको अपने पास रख और वह काम कर जो तेरे लायक हो।

(१) शैबानीखां ५०० आदमियों से मारागया जो सब अमीर अमीरजादे थे तवारीख फ़रिश्ता जिल्द १ पृष्ठ २०० "तुहफ़तुल तवारीख

अमल खुरासान में होगया तब बाबर बादशाह ने शाह इस्मा-
ईल के पास अपने वकील भेजे शाह ने कहलाया कि तुम
तूरान में से जितना कुछ फतह कर लोगे वह तुम्हारे पास
रहेगा बाबर ने यह सुनकर ताजिकिस्तान (ग़जनीन) से
हिसार शादमां पर चढ़ाई की हम्ज़ा सुलतान और महदी
सुलतान जो उन मुल्कों के हाकिम थे फ़ौज सजकर वख़्श
र में लड़े पर लड़ाई में मारेगये हिसार शादमां कुंदुज़ कुत-
लान और खुत्तलान फिर बाबर के हाथ आगये.

बाबर ने शाह इस्माईल को अर्ज़ी लिख कर एक बड़ा
अमीर मांगा जिसकी मदद से तूरान को फ़तह करके आपके
नाम का सिक्का और खुतबा चलाया जावे और उजबकों
को निकाल दिया जावे शाह ने अर्ज़ी मंज़ूर करली और शाह
नूर बेग अफ़शार को बाबर की मदद पर हिसार शादमां में
भेजा बाबर उनको साथ लेकर समरकंद पर गये वहां
मोहम्मद तैमूर सुलतान और बुखारा में उबेदुल्लाहखां हा-
किम था वे दोनो अपने अपने इलाकों को छोड़ कर
तुर्किस्तान में चले गये.

बाबर बादशाह ने समरक़ंद में शाह के नाम का खु-
तबा पढ़वा कर हिसार शादमां, खुत्तलान, और बदख़-

में लिखा है कि शाह इस्माईल ने शाहबेग (यानी मोहम्मद
खां शैबानी) की खोपरी सोने से मंढवा ली थी वह उसमें
शराब पिया करता था. शाह के शायर क़ासिम गुनाबादी
ने इसके बाबत [illegible] कहा है जिसका यह मतलब है कि अभी
[illegible]
[illegible]

रूहां के मुल्क खान मिरज़ा को सौंप दिये और शाह के वा
स्ते भी बहुत सी सौगातें भेजीं मगर मोहम्मदखां एशक
अकाशी वकील के विदा करने में ढील करदी फिर जब
वह शाह के पास पहुंचा तो अर्ज़ की कि बाबर शाह बद
ल जाने की धुन में है यह सुनकर शाहने बहुत सी फ़ौज
तूरान को भेजी मगर उसके पहुंचने के पहिले ही उजबक
सुलतानों ने फिर तूरान पर चढ़ाई करके बाबर को भगा
दिया जिसका खुलासा हाल यह है कि तैमूर सुलतान-
और उबैदुल्लाहखां ने ईरानी लशकर के लौट जाने की
खबर सुनकर जानी बेग सुलतान वगैरा के साथ बुखारा
पर चढ़ाई की बाबर बादशाह थोड़े से आदमियों से उन
के सामने जाकर बहादुरी से लड़े लेकिन हारकर सम
रकंद में आये और वहां भी न ठहर सके हिसार शादमां
को लौटे उजबक वहां भी जा पहुंचे थे मगर किले की
मज़बूती देखकर लौट गये.

नजमसानी जो ईरान के लशकर का अफ़सर था
यह खबरें सुनकर बलख में पहुंचा अमीर ग़यासुद्दीन
को बाबर के पास भेजा फिर आप भी सन ९१८ के रमज़ान
महीने (आसोजसुदि तथा कातिक बदि सम्बत १५६९ सितं
बर अकतूबर सन १५१२ ईस्वी) में तिरमिज़ को गया व-
हां बाबर बादशाह उससे आमिले फिर नजमसानी बुखारा
पर चढ़ा पीछे से बाबर बादशाह भी वहां जा पहुंचे ३ रम
ज़ान सन ९१८ मंगलवार (मगसर सुदि ५-१६ नवम्बर) को
जानी बेग सुलतान और उबैदुल्लाह सुलतान लड़ने को
आये नजमसानी सेना सजाकर उनसे लड़ा और बाबर

आड़ शाह की तरह रक्खा कि जिधर ज़रूरत पड़े जाकर मदद देवें उजबकों ने बढ़कर बहादुरी से जंग की और नजमसानी को शिकस्त दी तब बाबर तो अपनी फ़ौज समेत हिसार शादमां को चलदिये और उबैदुल्लाहखां के सिपाही नजमसानी को पकड़कर अपने बादशाह के पास लेगये उसने उसको मरवा डाला उसदिन बहुतसे ईरानी और खुरासानी अमीर भी मारेगये.

यह ख़बर शाह इस्माईल को असफ़हान में ठीक उस वक़्त पर पहुंची कि जब शाहज़ादे तुहमास्प के जनमने की ख़ुशी होरही थी जो सन ९१८ के आख़ीर में जन्मा था.

उधर जानी बेग सुलतान ने सन ९१८ के ज़ीक़ाद के महीने (माह सुदि तथा फागुन बदि। दिसम्बर या जनवरी १५१३ ईस्वी) में हिरात पर चढ़ाई की और ६० दिन तक उसक़िले को घेरे में रक्खा मगर जानी सुलतान और उबैदुल्लाह खां में बिगाड़ होजाने से दोनो सुलतान ३ मोहर्रम सन ९१९ (चैत सुदि ४ सम्बत १५७०। १३ मार्च सन १५१३ ई.) को नोरोज़ के दिन कूच करके अपने मुल्क को चलदिये

जानीबेग तो आमूया नदी से उतरगया उबेदुल्लाह खां और तैमूर सुलतान मिलकर फिर खुरासान पर आये तैमूर सुलतान ने हिरात में और उबैदुल्लाह खां ने मशहद में अमल करलिया मगर फिर शाह इसमाईल के आने की ख़बर सुनकर दोनो समरकंद को कूच करगये बाबर बादशाह गजतक हिसार शादमां में ही थे.

तवारीख फ़रिश्तासे.

जान (यारखान) मिरज़ा जो बदख़्शां के पुराने बादशाहों के घराने से था और ख़ुसरो शाह के पीछे वहां बादशाह होगया था मोहम्मद खां के मारे जाने की ख़बर बाबर बादशाह को भेजकर कुंदुज़ में गया और बादशाह को लिखा कि यह वक्त ग़नीमत है जल्दी आओ और अपने मौरूसी मुल्क फ़रग़ाने वग़ैरे को लेलो.

बादशाह जल्दी से सन ९१९ (सम्बत १५७०। सन १५१३ ई.) में हिसार की तर्फ़ गये और जान मिरज़ा के साथ अमूया नदी से उतर कर हिसार के नीचे पहुंचे मगर उजबकों ने उस क़िले को ऐसा मज़बूत कर रखा था कि कुछ बस नहीं चला और कुंदुज़ में लौट आये.

बादशाह की बहन ख़ानज़ादा बेगम जो पहिले समरकंद छूटे वक्त शैबानी खां के हाथ में पड़गई थी और उस के निकाह में थी अब शाह इसमाईल ने उसे बड़ी इज़्ज़त के साथ मर्व से कुंदुज़ में भेजदी बादशाह ने भी जान मिरज़ा को उमदा सौगातों के साथ शाह इसमाईल के पास हिरात में भेजकर मदद मंगाई और फिर हिसार पर चढ़ाई की उजबक सुलतान ने ख़ज़ाब में जिसे अब करशी कहते हैं जमा होरहे थे उनसे लड़ने में फ़ायदा न देखकर विकट घाटियों में चले आये और कुछ दिनो पीछे जब फ़ौज इकट्ठी होगई और जोर बंधगया तो उनसे लड़कर लड़ाई जीत गये हमजा सुलतान और महदी सुलतान को जो पकड़े आये थे क़तल करके जान मिरज़ा

पर बहुत महरबानी की क्योंकि उसदिन उसने ख़ूब बहादुरी की थी.

फिर अहमद सुलतान सूफ़ी ओग़ली अली कुली ख़ां अस्ताजलू और शाहरुख़ अफ़शार भी शाह इसमाईल सफ़वी की तर्फ़ से मदद को आ पहुंचे हिसार, कुंदुज़ और बग़लान फ़तह होगये बादशाह की फ़ौज बढ़ते बढ़ते ६० हज़ार तक पहुंच गई तब बुख़ारा पर चढ़े उबेदुल्लाह ख़ां और जानी बेग सुलतान वग़ैरा उजबक सुलतानों को निकाल कर रज्जब में समरकंद पहुंचे और तीसरी बार वहां अपने नाम का ख़ुतबा और सिक्का चला कर रहने लगे नासिर मिरज़ा को काबुल की हुकूमत पर भेजदिया और शाह इसमाईल सफ़वी के लशकर को बड़ी इज़्ज़त से बिदा किया ८ महीने वहां आराम से रहे जब बसंत रुत आई तो उजबक जो तुर्किस्तान को चलेगये थे फिर लशकर सजकर आये और तेमूर सुलतान जो शैबानी ख़ां की जगह बैठा था उबेदुल्लाह ख़ां और जानी बेग सुलतान के साथ बुख़ारा लेने को चढ़ा बाबर बादशाह भी उनके पीछे २ बुख़ारा को गये उजबक बुख़ारा के पास लड़े बादशाह लड़ाई हार कर बुख़ारे से गये मगर उजबकों के ज़ोर से वहां ठहर नहीं सके समरक़ंद में लोट आये वहां भी चैन से बैठने न पाये तब हिसार शादमां में चले गये वहां क़ज़लबाशों की फ़ौज का सिपह सालार (जनरल) नजम सानी असफ़हानी जो बलख़ फ़तह करने को आया था बादशाह से मिला बादशाह फिर मोरूसी मुल्क के लालच में पड़े नजमसानी ने थोड़ी सी मिहनत में ही क़रशी

का किला उज़बकों से लेकर १५ हज़ार आदमियों को क़त्ल करदिया और फिर बड़े घमंड से बाबर बादशाह के साथ जाकर ग़ज़दवान के क़िले को घेरा उज़बक सुलतानों ने बड़े ठाठ के साथ बुख़ारा से आकर जंग की और नजम ख़ानी को मारडाला बाबर बादशाह अपनी फ़ौज लेकर निकल गये मुग़ल अमीर जो साथ थे नमक हरामी करके १ रात उनके डेरे पर चढ़आये बादशाह नंगे बदन और नंगे पांव डेरे से निकल कर बड़ी कमबख़्ती से हिसार के क़िले में चले गये मुग़ल डेरों और लशकर को लूटकर चंपत बने फिर बादशाह उन तर्फ़ों में रहना मुनासिब न समझ कर काबुल में लौट आये और नासिर मिर्ज़ा को ग़ज़नीन की हुकूमत पर भेजदिया

सन ९२३ (संवत १५७४। सन १५१७ ई.) में दिल्ली का बादशाह सुलतान सिकन्दर लोदी[1] मरगया इब्राहीम उसकी जगह बैठा मगर पठानों में फूट पड़जाने से बादशाही कमज़ोर होगई.

सन ९२५ (संवत १५७५। सन १५१८ ई.) में बाबर बादशाह ने काबुल से स्वात बिजोर पर चढ़ाई की वहां के यूसफ़ज़ई पठानों ने ताबेदारी नहीं की इसलिये १,००० पठानों को मारकर उनके जोरू बच्चों को क़ैद किया और वहां की हुकूमत पर ख़्वाजा कलां को रख दिया.

---

(१) सिकंदर लोदी ७ ज़ीकाद सन ९२३ मगसर बदि ८। २३ नवंबर को मरा

सन ९२४ से आगेका हाल तुज़ुकबाबरी
में मौजूद है और वहीं यहां लिखाजाताहै.

सन ९२५ हि.

बिजोर (बाजोड़)

१ मोहर्रम सोमवार (माह सुदि ३ संवत १५७०। ३ जनवरी सन १५१९) को जंडोल में भोंचाल आया और आध घंटे तक रहा दूसरे दिन बादशाह यहां से कूच करके किले बिजोर (बाजोड़) के नीचे उतरे और सुलतान बिजोरी से किला सौंप देने को कहलाया उसने नहीं माना तो तूर शातूर लगाने का हुक्म दिया ४ मोहर्रम जुमेरात माह सुदि ६। ६ जनवरी) को किले पर हल्ला बोलागया तीर और बंदूक की लड़ाई हुई जो लोग दुशमनों का सर काट कर लाये उनको इनाम दियागया उस्ताद अली कुली ने ५ आदमियों को बंदूक से मारा दूसरे बंदूकचियों ने भी बंदूकें मारने में अच्छी बहादुरी दिखाई रात तक ७। ८ बाजोड़ी बंदूक से मारे गये.

बादशाह लिखते हैं कि जो शातूर और तूर के तैयार होने में देर नहीं लगती तो उसी दिन किला फ़तह होजाता.

५ मोहर्रम (माह सुदि ७। ७ जनवरी) को जुम्मे के दिन फिर किले पर हमला हुआ तूर लाकर शातूर को... और किले से चिपट गये खोदने और मारने में म... हुवे उस्ताद कुली भी वहां था इस दिन भी उसने

खूब बंदूक चलाई दो दफ़े फ़रंगी भारी वलीख्वाज़िन ने भी आदमी को बंदूक से मारा बीच की फ़ौज के बायें हाथ से मलिक अली कुतबी भातू पर चढ़कर बहुत देर तक लड़ा फिर मोहम्मद अली जंगजंग और उसके भाई नौरोज़ ने दूसरी भाते से भातू पर चढ़कर भाले और खांडे चलाये दूसरे भातू पर से बाबाय यसावल ने क़िले की छत गिराने के वास्ते तीर मारे अकसर जवानों ने वहां खूब खूब तीरंदाज़ी करके ग़नीम को सिर नहीं उठाने दिया दूसरे जवान ग़नीम के तीर कमान की मार को ख़याल में न लाकर क़िले के खोदने (सुरंग लगाने) में लगे रहे दो पहर से पहिले ही उत्तर पूर्व के बीच की बुर्ज जिसको दोस्त बेग के आदमी खोद रहे थे फाड़ दी गई और वे लोग दुश्मन को भगाकर उसपर चढ़गये और ऐसा मज़बूत क़िला दो तीन घंटे में फ़तह होगया बाजोड़ वाले क़तल हुये उनके बालबच्चे पकड़े गये ३००० हज़ार से ज़ियादा आदमी मारे गये होंगे। बादशाह क़िले में गये कुछ देर वहां के सुलतानों के घरों में बैठकर बाजौड़ का मुल्क ख्वाजा कलांको दे आये दूसरे दिन कूच करके चशमे बाबा पर उतरे कुछ क़ैदियों के गुनाह ख्वाजा कलां के कहने से बख़्शे गये और वे बाल बच्चों सहित ख्वाजा कलां के साथ करदिये गये कुछ सुलतान और फ़सादी आदमी जो हाथ आ गये थे क़तल किये गये और उनके सिर फ़तह की खुशख़बरी के साथ काबुल भेजे गये बलख़, बदख़्शां, और कुंदुज़ को भी फ़तह नामे लिखेगये. शाह मनसूर यूसफ़ज़ई, जो यूसुफ़ ज़ई पठानों की तर्फ़ से आया था और

इस वास्ते आप में मौजूद था बादशाह ने उसको खिलअ्‌त देकर वापस भेजा और यूसफ़ज़ियों के नाम धमकी के परवाने लिख भेजे.

६ मंगलवार (माह सुदि ११ । ११ जनवरी) को बादशाह २ कोस चलकर बिजोर के पास १ हयाती में ठहरे और एक ऊंची जगह पर कल्ले मीनार (सिरों का मिनार) उठवाया.

१० बुधवार (माह सुदि १२ । १३ - १२ जनवरी) को बादशाह बाजोड़ का क़िला देखने आये ख़्वाजा कलां के घर में शराब की मजलिस जुड़ी बाजोड़ के आस पास रहने वाले काफ़िर कई मशकें शराब की लाये थे शराब और मेवे बाजोड़ में सब काफ़रस्तान (काफ़रों के मुल्क) से आते हैं बादशाह रात को बाजोड़ में रहे दूसरे दिन क़िले के कोट और बुर्जों को देखकर उर्दू में आगये दूसरे दिन कूच करके जंडोल की नदी पर ठहरे जो लोग ख़्वाजा कलां की मदद पर लिखे गये थे उन सबको बाजोड़ चले जाने का हुक्म हुआ.

१४ इतवार (फागुण बदि २ । २६ जनवरी) को ख़्वाजा कलां को तोग़ इनायत होकर बाजोड़ जाने की रुख़सत हुई.

सवाद (स्वात) पर चढ़ाई

१७ बुधवार (फागुण बदि ५ - २९ जनवरी) को स्वात का सुलतान अलाउद्दीन जो सुलतान वैस स्वाती का दुशमन था आकर बादशाह से मिला.

१८- जुमेरात (फागुण बदि ६। २० जनवरी) को बाद शाह ने महर पहाड़ के ऊपर जाकर शिकार खेला जो बाजोड़ और जंडोल के बीच में है वे लिखते हैं कि "इस पहाड़ के पहाड़ी बैल और गैंडे काले होते हैं इससे नीचे हिन्दुस्तान के बैल और गेंडे बिलकुल काले होते होंगे और इसी दिन २ काला हिरन भी पकड़ा गया.

लशकर में अनाज होचुका था इसलिये बादशाह ने खराज के घाटे में से अनाज लेकर यूसफ़ जई पठानों पर चढ़ाई की ठानी वे जुमे को कूच करके जंडोल बाजोड़ और पंज कोड़े की नदियों के मिलने की जगह (संगम) पर ठहरे वहां से कूच करके खराज घाटे की चूंपट पर पंच कोड़ा नदी के सामने मुक़ाम हुआ लशकर के वास्ते खिराज के आदमियों पर धान की ४००० गोनों की उथाई डालकर सुलतान वैस स्वाती को उसकी तहसील पर भेजा मगर वहां के किसानों और पहाड़ी लोगों ने कभी ऐसी उथाई का बोझ नहीं उठाया था इसलिये वे धान नहीं देसके और अपना इलाक़ा उजाड़ कर चलेगये.

२३- मंगल (फागुण बदि ११- २५ जनवरी) को हिंदूबेग पंचकोड़े में लूट मार करने के लिये भेजागया जो वहां के लोगों से गायें और नाज छीन लाया.

२५- जुमेरात (फागण बदि १३। २७ जनवरी) को बादशाह लशकर के वास्ते अनाज लाने के मंदल चन्द देश में जाकर ठहरे जो खराज के घाट में था और वहां उन्होंने बड़ा चबूतरा पत्थरों का बनाया जिसके वास्ते सब सिपाही और मुसाहिब पत्थर उठा २ कर लाये.

वहीं यह भी ख़बर आई कि यूसफ़ज़ई पठान शाह मनसूर की बेटी जिसे बादशाह ने उन लोगों की तसल्ली के लिये मांगी थी माल सहित आती है शाम को शराब की मजलिस हुई जिसमें बादशाह ने सुलतान अलाउद्दीन को बुलाकर बैठाया और ख़ासा ख़िलअत दिया

२८- इतवार (फागुन बदि ३०। ३० जनवरी) को बादशाह ने घाटे के बाहर डेरा किया शाह मनसूर का छोटा भाई ताऊसख़ां अपनी भतीजी को लेकर आया- बादशाह ने उसको बाजोड़ के क़िले में लेजाने के लिये यूसुफ़ अली बकावल के डेरे पर भेजदिया और काबुल में जो लशकर रहगया था उसके बुलाने को फ़रमान लिखा.

३- सफ़र जुमा (फागुन सुदि ४। ४ फ़रवरी) को बाजोड़ और पंचकोड़े की नदियों के पास पर मुक़ाम हुआ. जहां से बादशाह इतवार को बाजोड़ में गये ख़्वाजा कलां के घर में शराब की मजलिस हुई.

७- मंगल (फागुन सुदि ८। ८ फ़रवरी) को दिलाज़ाक पठानों की सलाह से यह बात ठहरी कि वर्ष पूरा होगया मीन संक्रांत के एक दो दिन रहगये हैं अनाज जंगलों में से सब उठालिया गया है इन दिनों में जो स्वात को जायेंगे तो नाज के न मिलने से लशकर को बहुत तकलीफ़ होगी इसलिये अभी तो स्वात की नदी से उतरकर यूसफ़ज़ई और मोहम्मद ज़ई पठानों पर जो जंगल में बैठा करते हैं चढ़ाई करें और अगले वर्ष अनाज कटने के वक़्त आकर स्वाती पठानों को पूरी २ सज़ा

दे इसपर दूसरेदिन बुध को सुलतान वैस सुलतान अ-
ली, और सुलतान अलाउद्दीन, को घोड़े खिलअत औ
र तसल्ली देकर बिदाकियागया और वहां से कूच होकर
बाजोड़ के सामने डेरा हुआ शाह मनसूर की बेटी लशकरके
लौटने तक वहीं छोड़ी गई बादशाह कूचकरके ख्वाजा
खिजर के नीचे ठहरे ख्वाजा कलां को रुख़सत दीगई.
भारी असबाब कुनड़ के रस्ते से लमग़ान को भेजेगये. दू-
सरे दिन तड़के ही कूच हुआ भारी बोझ और ऊंट ख्वाजा
मीरां के साथ कराकू घाट के रस्ते से रवाने किये गये
और आप अम्बालार घाटे से उतर कर पानी पाली में
ठहरे औग़ान बरदी को खबर लाने के लिये भेजा वह
आगेजाकर १ पठान का सिर तो काट लाया मगर बाद
शाह की मनचाही खबर नहीं लाया बादशाह दोपहर
को स्वात की नदी से उतर कर आगे बढ़े दूसरे दिन रु-
स्तम तुर्कमान ने जो क़िराबली पर भेजा गया था आक
र यह ख़बरदी कि पठान खबर पाकर बिखर गये हैं उन
का १ झुंड तो पहाड़ में होकर जारहा है बादशाह ने
धावा करके कुछ लोगों को आगे भेजा वे कई पठानों
को मारकर उनके रेवड़ ले आये और कई को क़ैद भी
करलाये.

बादशाह ने काटलंग से ओरूक (बहीर) को कह
ला भेजा कि मुक़ाम नाम जगह में हमसे आ मिले.

१०- मंगल (चैत बदि १। १५ फ़रवरी) को जब मु-
काम में मुक़ाम हुआ तो बहीर भी वहां आकर साथ
होगई वहां १ पहाड़ी पर शहबाज़ क़लंदर की क़बर थी

वह बहुत अच्छी जगह थी जहां से सब जंगल देखाई देते थे शाहबाज़ कलंदर ने यूसफ़ज़ई और दिलाज़ाक पठानों में बहुत से लोगों में ३०।४० वर्ष पहिले कुछ बातें मुसलमानी धर्म के खिलाफ़ फैलाई थीं इसलिये बादशाह ने कहा कि ऐसे पाखंडी की क़बर ऐसी जगह पर बेजा है इसको गिराकर ज़मीन के बराबर करदें वह बहुत बहार की जगह थी इसलिये बादशाह वहां कुछ देर बैठे और माजून खाई.

बहीरे पर चढ़ाई.

बादशाह बाजोड़ से लोटकर काबुल तक आगये थे मगर उनके दिलमें हिन्दुस्तान फ़तह करने की धुन थी और बाजोड़ में ३।४ महीने तक तकलीफ़ उठाने पर भी कोई अच्छी लूट लशकर के हाथ नहीं आई थी और बहीरा हिन्दुस्तान की सरहद पर ही था इसलिये यह मनसूबा हुआ कि छड़ी सवारी से वहां जाया जावे तो कुछ न कुछ लशकर के हाथ लगे उसवक़्त बाज़े खैरख्वाहों ने अर्ज़ किया कि कुछ लशकर तो काबुल रहगया है और बहुत से अच्छे जवान बाजोड़ में छोड़े गये हैं और बहुत सा लशकर घोड़ों के थक जाने से लमग़ान को लौट गया है और ये लोग जो साथ हैं इनके घोड़े भी थक रहे हैं १ दिन की दौड़ का भी क़रार इनमें नहीं है मगर बादशाह तो इरादा कर चुके थे इसलिये उन्हों ने इन बातों पर कुछ ध्यान न देकर सिंध की तर्फ़ कूच कर दिया और मीर मोहम्मद जालेबान को उसके भाईयों और कई दूसरे आदमियों

के साथ घाट की देख भाल करने के लिये नदी के ऊपर और नीचे भेजा. और उर्दू को नदी की तर्फ रखाने पार के गेंडों की शिकार खेलने की स्वारी में गये मगर जंगल घना था १ भी गेंडा नहीं निकला १ मादीन बच्चे समेत निकली थी वह भी भागी उसपर बहुत से तीर मारे गये मगर जंगल में घुसगई जंगल में आग लगाई गई पर वह तो नहीं मिली दूसरा १ गेंडा आग में जला हुआ मिला जो हाथ पाँव पीट रहा था उसी को मार कर हर एक ने अपना हिस्सा लेलिया फिर वहां से लौट कर भटकते हुवे पहर रात गये उर्दू में पहुँचे जो लोग घाट देखने गये थे वेभी देखकर आगये थे.

दूसरे दिन तड़के ही १६ जुमेरात (चैत बदि ३। १० फरवरी) को बादशाह घोड़े ऊंट और डेरों सहित पार से उतर गये उर्दू के बाज़ार और पैदलों को जाले से उतारा गया इसी दिन घाट पर नीलाब के रखवाले १ घोड़ा पाखर वाला और ३०० शाहरुखी नज़र लाकर मिले ज्योंही सब लोग उतरकर चले त्योंही बादशाह दो पहर पीछे कूच करके पहर रात गये तक कच्छ कोट की नदी पर आठहरे और वहां से तड़के ही उस नदी से पार होकर रातों रात संगदा की घाटी से भी उतर गये पर क़ासिम एशक आक़ा जो लशकर के पीछे २ आता था कई चोरों के सिर काटकर लाया.

संगदा की घाटी से सवेरे ही कूच होकर दोपहर पीछे तक सोहान नदी से उतरकर ठहरगये पिछला लशकर भी आधीरात तक आगया यह बहुत लंबा कूच हो

ों को पकाने वाला था जो बहुतदिनों के हारे मांदे थे.

बहीरे से ७ कोस उत्तर को १ पहाड़ था जिसको ज़फ़रनामे और दूसरी किताबों में जोदा का पहाड़ लिखा था बादशाह को इसके इसनाम का अर्थ मालूम नथा आख़िर यह पता लगा कि इस पहाड़ में १ बापकी औलाद से २ घराने के लोग रहते हैं १ को जोदा दूसरे को जनजोहा कहते हैं नीलाब और बहीरे के बीच में जो क़ौमें रहती हैं उनपर जनजोहा लोग क़दीम से हाकिम हैं मगर भाईयों और दोस्तों की तरह हुकूमत करते हैं मनचाहा कर नहीं लेसकते हैं इनका लेना उनका देना ठहरा हुआहै १ जानवर पीछे १ शाहरुखी देते हैं और शादी में ७ शाहरुखी और उनके लशकरों के साथ भी जाते हैं जोदा की कई शाखायें हैं और ऐसी ही जनजोहा की भी.

यह पहाड़ जो बहीरे से ७ कोसपर है हिंदूकुश और काशमीर के पहाड़ों से अलग है पच्छिम और दक्खिन के बीचमें धनकोट तक चला गया है और सिंधु नदी में जाकर खतम हुआ है इस आधे पहाड़ में तो जोदा हैं और आधे में जनजोहा। मगर सारा पहाड़ जोदा के नाम सेही पुकारा जाता है इनमें से १ बड़ा आदमी राय का ख़िताब पाता है छोटे भाई और बेटों को मलिक कहते हैं सोहा नदी के पास जो क़ौम और क़बीले रहते हैं उनके हाकिम का नाम तो असद था मगर हिन्दुस्तानी उसको हस्त कहते थे और जनजोहा लोग लशकरखां के मामूं होते थे इसलिये बादशाह ने

डेरा करते ही लशकरखां को मलिक हस्त के लाने के लिये भेजा वह उसको बादशाही इनायतों का उम्मेदवार करके लेआया सोनेके वक्त वह १ घोड़ा को चमड़ेदार (पाखर पड़ा हुआ) नज़र करके मिला.

बादशाह लिखते हैं इसकी उमर २२।२३ वर्ष की होगी इन लोगों के पास भेड़ बकरियां बहुत थीं मगर हिन्दुस्तान लेने का ख़याल हमेशा दिल में रहता था. बहीरा, खुशाब, चिनाब, और चेनोट के इलाके कई बार तुर्कों के क़ब्ज़े में रहचुके थे इसलिये में इनको अपने ही मुल्क के मुवाफ़िक़ समझता था और यह जानता था कि ज़ोर से या सुलह से इनपर कबज़ा करलूं गा और इसी लिये इनलोगों से अच्छा बरताव करना ज़रूर था इसवास्ते हुक्म दियागया कि कोई आदमी इनके रेवड़ गल्ले टूटी हुई और धागे का भी नुक़सान न करे और वहां से कूच करके तीसरे पहर को कलदेकनार में आगया आसपास बहुत खेती थी.

कलदाक-नार बहीरे से १० कोस पहाड़ में १ अच्छी और चौड़ी जगह थी यहां १ बड़ी झील थी जिसमें पहाड़ों का बरसाती पानी आकर जमा होजाता था इसका गिरदाव ३ कोस का होगा.

उत्तर में १ नदी बहती है पच्छिम में १ झरना है जिसका पानी इस झील के ऊपर की टेकरियों से गिरता है मैंने यहां १ बाग़ लगाया और उसका नाम बाग़े सफ़ा रक्खा जिसका हाल आगे आवेगा.

बादशाह ने कलदेकनार से सुबह ही कूच किया.

घाटी पर भी कई जगह के लोग थोड़ा २ नज़राना लेकर आ
के बादशाह ने उन लोगों को अबदुल रहीम शक़ावल के
साथ करके बहीरे में भेजा कि वहां के लोगों को तसल्ली
देकर कहें कि ये विलायतें क़दीम से तुर्कों के पास रहता
आई हैं किसी तरह का धोका अपने दिलमें न रक्खो औ
र आदमियों को दिखने मत दो क्योंकि हमको इस वि
लायत से और इन आदमियों से काम है लूट मार नहीं
होगी.

पहर दिन चढ़े बादशाह ने घाटी से उतरकर कुछ आ
दमियों को खबर लाने के लिये भेजा जो लोग आगे गये
थे उनमें मीर मोहम्मद महदी १ आदमी को लेकर आया
उसवक्त पठानों के सरदारों में से कई आदमी नज़राने ले
कर आये बादशाह ने उनको लशकरखां के साथ बहीरे
वालों की दिलजमई के लिये भेजा घाटी और जंगल से
निकलकर लशकर का लाम बांधा और बहीरे की त-
र्फ़ कूच किया क़रीब पहुंचने पर दौलतखां यूसफ़खेल के
बेटे के नौकरों में से अलीखां देवा हिन्दू और सखतूव
ग़ैरा बहीरे से आकर मिले बादशाह तीसरे पहर बहीरे
के आदमियों को कुछ नुक़सान न पहुंचाकर और न त
कलीफ़ देकर बहीरे से पूर्व में भट नदी के तट पर १ ह-
बन में उतरे वे लिखते हैं कि जबसे तैमूरबेग हिन्दु
स्तान में जाकर आगये थे ये कई विलायतें जो बहीरा
खुशाब, चिनाब, और चैनूट हैं तैमूरबेग की औलाद औ
र उसके नौकर चाकरों के क़बज़े में रही हैं शाहरुख
मिरज़ा के बेटे स्यूरग तमश मिरज़ा का बेटा सुलतान

मसऊद मिर्ज़ा काबुल और ज़ाबुल (ग़ज़नीन) का हाकिम था और इसीलिये उसको सुलतान मसऊद काबुली कहते थे उसके पाले हुवों में से अमीर अली बेग का १ बेटा बाक़खां था जिसको पीछे से ग़ाज़ीखां भी कहते थे उसने सुलतान मसऊद मिर्ज़ा और उसके बेटे अली असग़र मिर्ज़ा से हठ धर्मी करके काबुल जाबुल और हिन्दुस्तान की इन विलायतों को दबा लिया था सन ९१० (सम्वत १५६१) में जब मैं पहिली पहल काबुल में आया और हिन्दुस्तान लेने के इरादे में खेबर के घाटे से उतरकर पशोर में गया था और बाकीचग़ानियानी के कहने से बंगश में फिरकर लौट आया था तो उन दिनों में बहीरे खुशाब और चिनाब की हुकूमत पर मीरअली बेग का पोता और गाज़ीखां का बेटा सैयद अलीखां था वह सुलतान बहलोल लोदी के नाम का खुतबा पढ़वाकर उसी का ताबेदार होगया था और हमारे आने से डरकर बहीरे को छोड़कर भागा था भट नदी के परे शेरकोट में जा रहा था जो बहीरे का एक गांव था जब दो एक वर्ष पीछे पठानलोग हमारे संडे से सैयदअली का भरोसा नहीं करनेलगे थे और वो भी इसलिये दुब्धा में पड़कर इस विलायत से निकलगया और तातारखां यूसफ़खेल के बेटे दौलतखां ने जो उसवक़्त लाहौर का हाकिम था बहीरा अपने बड़े बेटे अलीखां को देदिया था जो अब बहीरे का हाकिम था.

दौलतखां का बाप तातारखां उन ६।७ सरदारों में से था जो ज़ोर पकड़कर हिन्दुस्तान को दबा बैठे थे और

जिन्होंने बहलोल लोदी को बादशाह बनाया था सरहिंद और सतलज नदी के उत्तर की सब वलायतें तातारखां-के पास थी और ये वलायतें ३ क्रोड से जियादा जमा की थी तातारखां के मरने पर सुलतान सिकंदर लोदी ने अपनी बादशाही में यह वलायत तातारखां बेटे से ले ली थी जब हम काबुल में आये तो उससे २ वर्ष पहिले यही एक लाहोर दोलतखां को दिया था."

दूसरे दिन कई जगह सिपाही भेजे गये और बादशाह जाकर बहीरे को देखा इसी दिन लशकरखां न जोहे में आकर घोड़ा नज़र किया.

२२- बुध (चैतबादि ९ । २३ फरवरी) को बहीरे के बड़े आदमियों और चौधरियों ने ४ लाख शाहरूखी का माल अपने बचाव के लिये देना ठहराया बादशाह ने तहसील करने के आदमी भेजदिये.

बहीरे और खुशाब में जो बलोच बैठा करते थे उनके पास हैदर अलमदार भेजा गया था उस्ने एक घोड़ा और कुछ चीज़ें नज़र करके अर्ज़ किया कि लशकर के लोग हुकम न मानकर बहेरा के लोगों को लूटते हैं बादशाह ने आदमी भेजकर कई को तो मरवा डाला और कई को नाक चिरवाकर उर्दू के आस पास फिराया बादशाह लिखते हैं कि यह वलायत तुर्कों के बैठने की थी इसलिये हमने अपनी समझ कर लूटमार नहीं की थी लोग कहते थे कि जो सुलह के वास्ते वकील जावे तो इन वलायतों के देने में जो तुर्कों के पास थी मुज़ायका नहीं करेंगे इसलिये सुलतान इब्राहीम के

नाम जो इन्हीं ५।६ महीनों में अपने बाप सुलतान सि-कन्दर लोदी के मरने पर हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ था मुल्ला मुरशिद को सुलह के वास्ते भेजा और खत लिख कर ये वलायतें मांगी हिन्दुस्तान के आदमी और खास करके पठान अजब बेवकूफ़ लोग हैं जो अकल और तदबीर से दूर पड़े हुये हैं न लड़सकते हैं न मार सकते हैं न बागी होना जानते हैं न दोस्ती का रस्ता निकाल सकते हैं हमारा जो यह आदमी गया था उसको दौलतखां ने कई दिनों तक लाहौर में ठहरा रखा न आप मिला और न इब्राहीम के पास भेजा आखिर जवाब न पाकर काबुल में लौट आया.

जुमे के दिन खुशाब के लोगों की अर्जी आई.

२५- शनिवार (चैतबदि १२।२६ फ़रवरी) को शाह हुसेन खुशाब में चला गया.

इतवार को ऐसा मेंह बरसा कि तमाम जंगल में पानी ही पानी होगया बादशाह दो पहर पीछे सैर करने को गये थे लौटते वक्त आंधी और मेंह का इतना ज़ोर होगया था कि पानी में तिर कर आये और लशकर के बहुत से आदमी मारे डर के डेरे छोड़ भागे जीन खोगीर और हथियार कंधों पर उठाकर और घोड़ों को नंगी पीठ तेराकर निकलगये दूसरे दिन अक्सर आदमी दरिया में से नावें लाये और उनमें डेरे और असबाब लाद कर लेगये क्योंकि तमाम जंगल में पानी ही पानी भर रहा था कूच बेग के आदमियों ने शाम को १ कोस पर जाकर रस्ता ढूंढा जहां से बाकी आदमी निकलगये.

मंगल को बादशाह मेह और पानी की तकलीफ से ब हीरे से उतर ऊंची टेकरियों में जाकर उतरे लोगों ने जो रुपया देना किया था और देते नहीं थे उसको उघाई के लिये खलीफा कूचबेग नासिर बेग सैयदकासिम और मुहब अली मुकर्रर किये गये

२-रबीउल अव्वल(१) शुक्रवार (चैत सुदि ३ संवत १५७६ ३ मार्च १५१९) को शेबक और दरवेश अली पियादे कि जो पीछे से बंदूकचियों में होगये थे काबुल से शाहजादे के पैदा होने की खबर लाये बादशाह ने हिंदुस्तान फ़तह होने के शुकन से उसका नाम हिंदाल रखा.

कंबर बेग भी बलख से मोहम्मद ज़मान(२) मिर्ज़ा की अर्ज़ियां लाया.

दूसरे दिन बादशाह कचहरी करके घूमने के वास्ते सवार हुवे और नाव में बैठकर शराब पी फिर माजून खाई मजलिसी (साथी) भी नशे में चूर होकर उर्दू को लौटे यहां भी वही शराब चली माजून और शराब का साथ नहीं निभा कई लोगों के मतवाले होजाने से बादशाह का मज़ा किरकिरा होगया.

५ सोमवार (चैत सुदि ६ १७ मार्च) को बहीरे की विलायत हिंदूबेग को और चिनाब की विलायत हुसेन

---

(१) असल किताब में शाबान ग़लती से लिखा है रबीउल अव्वल चाहिये क्योंकि आगे भी रबीउल अव्वल आता है.

(२) यह हिरात के पिछले बादशाह सुलतान हुसेन मिर्ज़ा का पोता और बदीउलज़मां मिर्ज़ा का बेटा था.

अमजाफ़ को इनायत हुई.

इन्हीं दिनों में सैयदअलीखां का बेटा मनूचहरखां जो
बादशाह को कहकर हिन्दुस्तान को गया था और जिसे ता
तारखां गक्खड ने अपनी बेटी देकर कुछ अरसे तक ठ
हरा रक्खा था बादशाह की बंदगी में आया बादशाह लि
खते हैं कि नीलाब और बहीरे के बीच में जोधा और ज
नजोहे के सिवाय कशमीर के पहाड़ों तक जट और कम्बू
वग़ैरा बहुत से जाती के लोग घाटियों और दर्रों में गांव
बसाकर रहते हैं जिनके ऊपर गक्खड़ लोग हाकिम हैं इन
की हुकूमत भी जोधा और जनजोहे की तरह की है इ
सवक़्त इन पहाड़ी कौमों के हाकिम १ बाप के बेटे तातार
गक्खड़ और हाथी गक्खड़ हैं जो आपस में चचेरे
भाई हैं इनकी मज़बूत जगह रहने की पहाड़ और खोहें
हैं तातार के रहने की जगह का नाम परहाला है जो
बर्फ़ वाले पहाड़ों से बहुत नीचे है और हाथी की विला
यत पहाड़ से मिली हुई है और कजरजा का इलाक़ा
बाबूखां के पास था जिसे हाथी ने अपनी तर्फ़ करलि
या था तातार गक्खड़ दौलतखां से मिला था उसकी बं
दगी में भी था हाथी नहीं मिला था और फ़साद करता
रहता था तातार हिन्दुस्तानी अमीरों के कहने और
मेल मे आकर हाथी को दूर २ से घेरे बैठा था मगर
इन्हीं दिनों में जबकि हम बहीरे में थे १ बहाने से ग़
फ़लत में हाथी तातार पर चढ़ गया था और उसको
मारकर उसकी विलायत और खजानों को ले बैठा
था।

बादशाह इतना लिखकर अपनी बीती इसतौर से लिखते हैं कि पहिली नमाज़ (दोपहर) के पीछे हम सैर करने (घूमने) को सवार हुवे नाव में बैठकर शराब पीने लगे दोस्तबेग, मिरज़ाकुली, अहमदी, गदाई, मोहम्मद अली जंगजंग, असस पठान, और वुरुदी मुग़ल तो मजलिसी थे और गानेवालों में रूहदम, बाबाखां, क़ासिमअली, यूसफ़अली तंकरीकुली, अबुलक़ासिम और रमज़ान लूली थे अगली नमाज़ से सोने की नमाज़ तक शराब पीते रहे फिर मैं नशे में चूर होकर नांव से उतरा और मशाल हाथ में लेकर घोड़े पर सवार हुआ नदी के किनारे से उर्दू तक घोड़ा कभी इधर और कभी उधर जाता था मैं नशे में धुत था घर पहुंचने पर बहुत उलटी हुई दूसरे दिन लोगों ने मेरा उसतरह मशाल लिये हुवे उर्दू तक आना बयान किया मुझे बिल्कुल याद न था

जुमे के दिन फिर घूमने को सवार हुआ नांव में बैठकर नदी से उतरा उधर के बाग़ फूल गन्नों के खेत- पानी खेंचने के डोल और अरहट देखे और पानी निकालने की तरकीब पूंछ कर कहा कि पानी निकालो घूमते हुये माजून खाई और मनूचहरखां को भी खिलाई वह ऐसा नशे में होगया था कि २ आदमी बांह पकड़कर उसको खड़ा रखते थे कुछ देर तक पानी में लंगर डालकर नांव खड़ी रखी फिर पानी के नीचे २ लेगये बहुत देर पीछे पानी के ऊपर लाये उसरात नांव में सोये और दिन निकलते उर्दू में आये"

१०- रबीउलअव्वल शनिवार (चैत सुदि ११ । १२मार्च) को सूरज मेख राशि पर आया इस दिन भी बादशाह ने नाव में बैठकर शराब पी मजलिसवाले और गानेवालेभी वेही लोग थे इसी दिन शाह हुसेन खुशाब से आया.

काबुलकोकूच

अब गरमी पड़ने लगी थी और जो विलायतें क़दीम से तुर्कों के पास थीं वह सुलह से लेली गई थीं और जो रुपया ठहरा था उसमें भी बहुत वसूल होचुका था इसलि ये बादशाह ने शाह मोहम्मद वग़ैरा जवानों को हिंदूबे ग की मदद पर छोड़ कर लशकरखां को खुशाब दिया जिसने यह चढ़ाई कराई थी और उसको हिन्दूबेग की म दद पर छोड़ा जो तुर्क और देशी सिपाही बहीरे में थे उ नको भी तनख़्वाह बढ़ाकर हिन्दूबेग की मदद पर रखा जि नमें मनूचहरखां शकरखां जनजोहा और मलिक हस्त जनजोहा भी थे बादशाह इसतौर से एक तरह की सुलह ठहराकर ११ रबीउल अव्वल इतवार (चैतसुदि १२ । १३ मार्च) को बहीरे से कूच करके काबुल को रवाने हुये और कलदाकनार में ठहरे उसदिन भी बहुत ही मेंह बरसा था

इन मुल्कों के हालजानने वालों और खास करके जं जोहा लोगों ने जो गक्खडों के पुराने दुशमन हैं बादशाह से अर्ज़ की हाथी यहां बहुत बुरा आदमी है रस्ते लूटता है लोगों को सताता है ऐसा करना चाहिये कि वह बीच में से उठजावे या पूरी सज़ा पावे बादशाहने सवेरे ही हाथी

गक्खड़ पर धावा किया जो इन्हीं दिनों में तातार को मारकर उसकी विलायत ले बैठा था और उसवक्त पराले में था तीसरे दिन बादशाह वहां पहुंचे रस्ता बहुत विकट और तंग था हाथी बाहर निकलकर लड़ा पहिले तो उसने बादशाही आदमियों को हटादिया मगर पीछे लड़ाई हारकर किले में गया फिर वहां से भी भागा बादशाह पराले में जाकर तातार के घरों में उतरे दूसरे दिन कुछ लोगों को लूटमार के वास्ते भेजकर पश्चिम उत्तर की झोल में होते हुवे जो के खेतों में ठहरे.

१५- जुमेरात (वैसाखबदि १। १७ मार्च) को सोहान नदी के किनारे पर ईसराने में डेरे हुवे ईसराने का किला कदीम से मालिक हस्त के पास चला आता था जब हाथी गक्खड़ ने उसको मारा तो यह उजड़ गया था और अब भी उजाड़ पड़ा था रात को लशकर के आदमी भी जो कालदे कुनार से विदा हुवे थे आकर साथ होगये.

हाथी ने तातार को पकड़ने के पीछे अपने भाई परबत को केजमदार घोड़ा नज़र करने के वास्ते भेजा था मगर वह बादशाह से न मिल सका था उर्दू में पीछे रह गया था सो अब बादशाही खट्ले के साथ आकर उसने सलाम किया और अपनी नज़र दिखाई

लशकरखां को भी जो खट्ले के साथ ही था जे जमींदारों के साथ बहीरे जाने की रुख़सत दीगई फिर बादशाह भी सोहान नदी से उतर कर एक टीले पर ठहरे परबत को ख़िलअत दिया और हाथी की तसल्ली के भी फ़रमान लिखकर मोहम्मदअली जंग

जंग के नौकर के हाथ भेजे

नीलाब हज़ारा और कारलूकों के परगने हुमायूं को दियेगये थे और उसके नौकर हिस्सल और बाबा दोस्त वगैरह जो वहां के दारोगे थे १ घोड़ा पेशकश नजर करने को लाये दिलाज़ाक पठानों का लशकर भी आया.

दूसरे दिन वहां से चलकर २ कोस पर मुक़ाम हुआ बादशाह ने एक ऊंची जगह पर खड़े होकर उर्दू को देखा और फरमाया कि उर्दू के ऊंटों को गिनें ५७०० निकले.

बादशाह ने सेमल के पेड़ की तारीफ़ सुनी थी वह यहां देखने में आया वे लिखते हैं कि इस पहाड़ की तलहटी में तो सेमल के पेड़ थोड़े हैं मगर यहां से आगे हिन्दुस्तान की वादियों में बहुत हैं.

जब नक्कारा बजा तो यहां से कूच होकर पहर दिन चढ़े संग्दरा की घाटी के नीचे पड़ाव पड़ा सोपहर पीछे कूच हुआ घाटी में होकर १ टेकरे पर उतरे आधीरात को वहां से भी चले और बहीरे जाते हुवे जिस घाटी से गुज़रे थे उसको देखने गये.

बादशाह लिखते हैं कि यहां १ (नाव) कीचड़ में फसकर रहगई थी जाले वालों ने बहुत मिहनत की थी मगर सरकी भी नहीं थी उसपर जो बहुतसा नाज लदा था वह हमने अपने साथियों को बांट दिया

शाम होते २ जहां सिंध और काबुल नदी मिलती हैं बादशाह वहां नीलाब से कुछ नीचे उतरकर दोनों

के बीच में १ ऊंची जगह पर ठहरे नीलाब से ५।६ नावें आईं थीं वे दायीं बाईं और बीच की फौजों को बांट दीगईं और वे लोग नदी से उतरने लगे सोमवार को आये थे उसीरात से बुध के दिन तक उतरते रहे जुमेरात को भी कुछ लोग उतरे

हाथी का जमाई परबत जो दस्ताले से मोहम्मद अली जंगजंग के नोकर के साथ बिदा किया गया था हाथी की तर्फ से एक केजमदार घोडा नज़र के लिये लेकर आया- और नीलाब के लोगों ने भी वैसाही १ घोडा भेंटकरके सलाम किया.

मोहम्मद अली जंगजंग को बहीरे में रहने की हवसथी और बहीरा हिन्दूबेग को इनायत होचुका था इसलिये बहीरा और सिंध के बीच के इलाके कारलूक हज़ारा हाथी इनायत बाल और खटजातियों के लोग मोहम्मद अली को जदमें गये और यह हुक्म हुआ कि जो कोई गरदन नीची नहीं करे उसीपर दोड़ कर जावे और बंदगी में लावे इस बख़शिश के पीछे कलमाकी, जीबा काले मखमल का और तोग भी उसको दिया गया.

हाथी के जमाई को बिदा करके हाथी के वास्ते तलवार खिलअत और तसल्ली का फरमान भेजा गया

जुमेरात को सूरज निकलते ही नदी के किनारे से कूच हुआ बादशाह ने माजून खाकर उसके नशे में फुलवारी की खूब बहार देखी ज़मीनपर रंग २ के फूल खि

(१) कलमाक जाति के तुर्कों का सा बकतर.

(२) तमगा-निशान

ले हुये थे कहीं लाल कहीं पीले और कहीं बसंती सी थे बादशाह ने उन्हें के पास एक ऊंची जगह पर बैठकर सबको देखा वे लिखते हैं कि इस उंचाई के ६ तर्फों में मानो चित्राम किया हुवा था जहांतक नज़र पहुँचती थी फूल ही फूल थे पर शावर के आस पास बहार के मौसम में खूब फूल खिलते हैं

तड़के ही उस जगह से कूच हुआ नदी के किनारे पहुंचते ही रस्ते में शेर धाड़ता हुआ निकला घोड़े शेर की गरज सुनते ही भागकर दलदल में जागिरे शेर लौटकर जंगल में फिर चलागया बादशाह ने हुक्म दिया कि भैंसे लाकर जंगल में छोड़ें और शेर को बाहर निकालें शेर फिर चिल्लाकर निकला अब उसपर हर तर्फ़ से तीर बरसने लगे बादशाह ने भी १ तीर मारा बाकूनाम १ पैदल बर्छी मारता था कि शेर ने बर्छे की भाल दांतों में लेकर काटली और फेंकदी फिर वह बहुतसे तीर लगने से १ झाड़ी में घुसकर खड़ाहो गया बाबा यसावल ने पास जाकर शेर के झपटते ही सिर पर तलवार झाड़ी फिर अली सीसतानी ने उसकी कमर में तलवार मारी शेर नदी में जागिरा बादशाह ने निकलवाकर फरमाया कि इसका चमड़ा उतार कर साथ लेलो

दूसरे दिन बादशाह ने बिकराम में जाकर गोर खत्री को देखा वे लिखते है कि अंधेरी कोठड़ियों का १ मंदिर सा है दरवाज़े में जाने और दो एक जीनों से उतर के पीछे लेटे २ जाना पड़ता है बगैर मशाल के नहीं जासकते इसके आसपास माथे और डाड़ी के मूंडे हुवे बहुत

से लाल पड़े थे गोरखत्री के हरतर्फ़ को पाठशाला और सरा य के तौर पर कुछ सी कोठड़ियां हैं पहले जब मैंने काबु ल से आकर खटअन्नू और जंगल में लूट मार की थी बिक राम और तरकान् को देखा था पर गोरखत्री को नहीं देख ने का अफ़सोस किया करता था सो यह जगह उतने अफ़ सोस करने की नहीं थी.

दिलाज़ाक पठानों के पंचों में से जो मलिक तरखा औ र मलिक मूसा के साथ थे ६ जनों को तो सौ सौ मिसका ल चांदी एक एक जामेवर (कपड़ा) एक एक भैंस हिन्दु स्तान की सौग़ातों में से दीगई दूसरों को यथा योग्य चांदी कपड़ा व गायें, और भैंसे इनायत हुईं

जब अली मसजिद में मुक़ाम हुआ तो याकूब खेलका मारूफ़ नाम दिलाज़ाक १० बकरियां २ गोनें चावलों की औ र ८ बड़े बक़रे नज़र करने को लाया

अलीमसजिद से दहेपीर में और वहां से जूयशाहीमें डेरे हुवे जूयशाही से तड़के ही कूच होकर बाग़े वफ़ामें डेरे हुई और तीसरे पहर को वहां से कूच होकर शामको सियाह आब से जो गदमक की नदी है उतरे और जौके खेतों में घोड़ों को चराकर दो एक घड़ी पीछे फिर सवार हुवे और सुरखाब से उतरकर गंडक में सोये दिन निक लने से पहिले चले जहां से करातूर का रस्ता कटता है बादशाह तो ५।६ आदमियों से करातूर के बाग़ को देखने के लिये चलदिये खलीफा शाह हुसेनबेग और दूसरे आदमियों से कहगये कि कारूक समय में

(१) एक मिसकाल ४॥ माशे का होता है।

कर हमारे वास्ते ठहरजावें बादशाह जब कलतूर में पहुंचे तो कंबरमल नाम १ तबाची शाहबेग अर्गू के काहान को लेने और लूटकर लोटजाने की खबर लाया.

बादशाह ने ऐसा हुक्म देदिया था कि कोई पहिले खबर लेकर नहीं जावे इसलिये दोपहर पीछे तक जबकि बादशाह काबुल में पहुंचे किसी को खबर नहीं थी मगर जब कतलक क़दम के पुल पर से उतरे हुमायूं और कामरां खबर पाकर पैदलही नज़दीकी खिदमतगारों के साथ दौड़े आये क्योंकि घोड़ों पर सवार होने की फुरसत नहीं थी शहर और क़िले के दरवाज़े के बीच में बादशाह से मिले फिर तो शहर के क़ाज़ी और क़ासम बेग वग़ैरा नौकरों ने जो काबुल में रहगये थे आकर मुलाज़मत की

१-रबीउलआख़िर शुक्रवार (बैसाख सुदि २। संवत १५७६। १ अप्रैल १५१९) को बादशाह ने शराब की मजलिस रचाई और उनकी यह धुन दिन २ बढ़ती जाती थी सैलसपाटे शराब-शिकार और रंग-राग में अकसर लगे रहते थे.

५-मंगल (बैसाख सुदि ६। ५ अप्रैल) को दोस्त बेग मरगया बादशाह बहुत उदास हुवे बड़ा बहादुर था कई बिषम लड़ाईयों में बादशाह के साथ रहकर लड़ा था और बादशाह की जान बचाई थी जिसका सब हाल बादशाह ने सविस्तर लिखा है उसकी विलायत उसके छोटे भाई मीर नासिर को दी.

१२-मंगलवार-(बैसाख सुदि १२। १२ अप्रैल) को हिरात के बादशाह सुलतान हुसेन मिरज़ा की बड़ी बेटी

सुलतान बेगम जो मिर्ज़ा का राज बिगड़ जाने के पीछे तूरान में चलीगई थी वहां से काबुल में आई बादशाह ने उसके रहने के वास्ते बाग़ खि़लवत ख़ाली करा दिया जब वह वहां आकर उतरगई तो बादशाह मिलने को गये वह बड़ी बहन थी इसलिये उन्होंने उसकी ताज़ीम के वास्ते घुटना टेका उसने भी घुटना टेका फिर दोनो आगे बढ़कर मिले और यह क़ायदा हमेशा के वास्ते जारी होगया.

१९- मंगलवार (जेठबदि ५। १९ अप्रेल) को बादशाह ने रोज़ा (व्रत) रखा और ख़्वाजे सैयारान नाम स्थान के बाग़ों की हवा खाने कोगये यारों ने अचंभा करके कहा कि आप और मंगल के दिन का रोज़ा यहभी अजब बात है शाम को लौटते हुवे क़ाज़ी के घर पर आये और वहां शराब के जलसे की तैयारी होने लगी तो क़ाज़ी ने अर्ज़ की कि मेरे घर में कभी ऐसा नहीं हुआ है बादशाह हाकिम हैं। मजलिस की सब तैयारी होगई थी तो भी बादशाह ने क़ाज़ी को राज़ी रखने के लिये शराब मौक़ूफ़ रखी.

२१- गुरुवार (जेठबदि ७। २१ अप्रेल) को बादशाह अपने बनाये हुये बाग़ में गये जो १ पहाड़ में था जब चिड़ीमारों के घरों के सामने से निकले तो उन्होंने दोंक नाम १ जानवर को पकड़ रखा था लेकर आये बादशाह लिखते हैं कि मैं ने पहिले यह दोंक कभी नहीं देखा था अजब शक्ल का था इसका बयान हिन्दुस्तान के जानवरों में आगे आवेगा.

२५- सोमवार (जेठवदि १। २५ अप्रेल) को हिन्दूबेग काबुल में आगया बादशाह ने इसको सुलह के भरोसे पर बहीरे में छोड़ा था मगर बादशाह के लौटजाने पर पठान भी सुलह से फिरगये थे और चकुल से हिन्दुस्तानी जमा हो कर हिंदूबेग पर चढ़े ज़मींदार पठानों से मिलगये हिन्दूबेग बहीरे में नहीं ठहर सका खुशाब में चला आया वहां से धनकोट में होता हुआ नीलाब में आया नीलाब से काबुल में पहुंचा.

सकतू का बेटा देवाहिंदू और कई दूसरे हिन्दूजो बहीरे से कैद करके लाये गये थे उनको घोड़े और खिलअत देकर बिदाकिया गया.

२९-शुक्रवार (जेठवदि ३०। २९ अप्रेल) को बादशाह को बुखार चढ़ा फ़स्त खुलवाई कभी दो दिन और कभी तीन दिन में बुखार होजाता था और जबतक पसीना नहीं आता बुखार नहीं उतरता दवा में शराब मिलाकर भी एक दो बार पी पर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ.

१५- जमादिउल अव्वल इतवार (जेठसुदि १। १५ मई) को मोहंमद अली खोसत से १ घोड़ा नज़र के वास्ते लेकर आया और कुछ रूपया सदके (दान) के वास्ते भी लाया उसके साथ मोहम्मद शरीफ़ ज्योतिषी और खोसत के मिरज़ा (सरदार) भी हाज़िर आये दूसरे दिन मुल्ला करीम इंदजान से काशग़र होता हुआ काबुल में आया.

२३- सोमवार (जेठसुदि १०। २० मई) को मलिक शाह मनसूर यूसफ़ज़ई पठानों के ५।६ बड़े २ मर्दों को लेकर स्वात से आया.

१-जमादिउल सानी सोमवार (जेठ सुदि २ । ३० मई) को बादशाह ने शाह मनसूर को किमाश का तुकमेदार जामा १ और पठान को किमाश का पलकदार जामा बाक़ी ६ दूसरे आदमियों को किमाश के जामे पहनाकर बिदा किया और यह बात ठहराई कि अलीहे से ऊपर स्वात की विलायत में दख़ल न करें और रैयत को अपने में से निकाल दें दूसरे पठान जो स्वात बाजोड़ में खेती करते हैं वे ६००० गोने शाली (धान) की कचहरी में लाया करें.

३-बुधवार (जेठ सुदि ४ । १ मई) को बादशाह ने जुलाब लिया वे तख़्ते रवां (पालकी) पर बैठकर बाग़ों में जाते मजलिसें करते और दवाईयों की मिली हुई शराब पीते थे

१५-गुरुवार (असाढ बदि ११ । २३ जून) से उन्हों ने मुल्ला महमूद के पास फ़िका (मुसलमानी धर्म शास्त्र) का सबक़ पढ़ना भी शुरू कर दिया था.

११-रज्जब शनिवार (असाढ़ सुदि १२ । ९ जोलाई) को बादशाह कबूतर ख़ाने की छत पर बैठे शराब पी रहे थे कि शाम पड़े पीछे दहे अफ़ग़ानान की तर्फ़ से कई तुर्क शहर की तर्फ़ जाते हुवे नज़र आये ख़बर मंगाई तो मालूम हुआ कि दरवेश मोहम्मद सारबान मिरज़ा ख़ान के पास से एलची होकर आया है बादशाह ने छत पर बुलाकर कहा कि एलची गरी का तोरा और सूका (क़ायदा क़ानून) छोड़ कर सादे तोर से चला आये उसने आकर नज़र की और सुहबत में बैठ गया मगर उन दिनों शराब से बचा रहता था नहीं पीता था बादशाह जहां

तक खूबमस्त (मतवाले) नही होगये शराब पीते रहे.

दूसरे दिन जब दरबार लगा तो दरवेश मोहम्मद सारबान ने दस्तूर और क़ायदे के मुवाफिक़ लाकर मिर्ज़ा खान की भेजी हुई भेंट बादशाह को दिखाई.

पिछले वर्ष बादशाह बड़ी मुशकिलों से बहला फुसला कर तुर्कों और अपने खानदान के लोगों को कूच कराकर काबुल में ले आये थे लेकिन यहां वे लोग जगह की तंगी से अपनी भेड़ बकरियों के एवड़ समेत जाड़े और गर्मी का गुज़ारा अच्छी तरह से नहीं कर सकते थे और न अपना माल छोड़कर रह सकते थे इसलिये क़ासिमबेग के बहुत सा कहने पर उसको हुक्म दिया गया कि उनको लेजाकर कुंदुज़ और बकलान में छोड़ आवे और पौलाद सुलतान को समरकंद में अपना दीवान (कविता का संग्रह) भेजा जिसके नीचे तुर्की बोली में १ क़िता (श्लोक) लिखा जिसका भावार्थ यह है कि "सवेरे की हवा जो तू वहां पहुंचे तो उसको याद दिलाना कि उसने इस ब्रह के मारे बाबर को कभी याद नहीं किया है उमेद है कि खुदा उसके पौलाद जैसे (कठोर) दिल में दया उपजावे." शाहबेग के एलची अबू मुसलिम कोकालताश को भी खिलअत पहिना कर बिदा किया ख्वाजा मोहम्मदअली और तंकरी बरदी को भी उनकी विलायत खोसत और इंद्राब में जानेकी रुखसत दी.

अबदुल रहमान खेल के पठान जो गुर्देज की सरहद में बैठते थे माल और मामला कुछ नहीं देते थे और

आने जाने वालों को सताते थे २९ रज्जब बुधवार (सावन सुदि १। २७ जोलाई) को बादशाह ने उनपर चढ़ाई की आगे कुछ अमीर गये पीछे से बादशाह भी पहुंचे बादशाह के पहुंचने तक हुसेन जो अकेला ४५ पठानो से लड़ने को दौड़ा था मारा गया दूसरे अमीर तो उसकी मदद को नहीं पहुंचे मगर बादशाह खबर पाते ही दौड़े गये मोमन अत्तका अबुलहसन और पायंदा मोहम्मद कोलान ने उन सब पठानों को एक एक करके तीरों और बर्छो से मारडाला खुद भी घायल हुवे बादशाह ने खबीद अर्थात जौ के खेतों में उतर कर उन पठानों के सिरों का मिनारा चुनवाया जब वहां से लोटे तो रस्ते में हुसेन के साथी अमीरों को आता हुआ देखकर बहुत गुस्से हुवे और कहाकि तुम इतने आदमी खड़े देखते रहे और थोड़े से पैदल पठानों से ऐसे जवान को मैदान में पकड़ा आये हो मैं तुमको दर्जे और उहदे से गिराकर तुम्हारी विलायतें और परगने छीनलूंगा तुम्हारी डाढ़ियां मुड़वा कर शहर में फिराऊंगा सो फिर कोई ऐसे जवान को ऐसे ग़नीम से न पकड़ा दे जो ऐसे मैदान में हाथ पांव न हलावे और खड़ा हुआ देखा करें उसकी यह सज़ा है.

लशकर के कुछ आदमी करमास की तर्फ़ गये थे उन में बाबा कशका बेग १ पठान को जो उसके सामने अड़ कर खड़ा होगया था तीर से मारकर चला आया.

दूसरे दिन बादशाह काबुल को लोटे और पहाड़ों में होकर मैदान रुस्तम को देखते आये जिसमें खूब हरयाली थी और पानी के झरने और पेड़ बहुत थे मैदान

रुस्तम के दरख़्तन में एक पहाड़ था बादशाह उसपर च
ढ़े जहां से करमास और बंगश के पहाड़ पांवों के नीचे
दिखलाई देते थे और उधर की वलायतों में बरसात न
होने से पानी बिलकुल नज़र नहीं आता था.

उसदिन बादशाह होती में रहे दूसरे दिन दहे सोहंस
द आक़ा नाम गांव में उतर कर नशे की माजून खाई
और पानी में बेहोशी की दवा डालकर कुछ मछलियां
पकड़ीं.

३- शाबान इतवार (सावन सुदि ५। ३१जौलाई) को
काबुल में पहुंच गये.

५- मंगल (सावन सुदि ७। २ अगस्त) को दरवेश
मोहम्मद और खुसरोशाह के नौकरों से नीलाब लेनेकी
बात पूछी और जिन्होंने कोताही की थी तहक़ीक़ात
करके उनको सज़ा दी.

जुमेरात को ख्वाजे सेयारान के पहाड़ की सैर देख
ने को गये रात को बाबाख़ातून में उतरे जुमे को आ-
सतालीफ़ में माजून खाई सनीचर को शराब की मजलि-
स हुई तड़के ही अस्तालीफ़ से सवार होकर संजद के
घाटे से उतरे ख्वाजा सेयारान के पास पहुंचेही थे कि
१ बड़ा सांप जो आदमी के बराबर लंबा था मारागया उ
समें से १ पतला सांप निकला जो कुछ पहले निगलग
या होगा क्योंकि सब अंग प्रत्यंग दुरुस्त थे और उस
पतले सांप में से १ चूहा निकला वह भी नहीं गला था.

ख्वाजे सेयारान मे फिर शराब की मजलिस हुई औ
र उधर के अमीरों को हुक्म लिखागया कि लशकर चढ़

ताहै मोरचे बैठगये हैं तैयारी करके आओ.

दूसरे दिन सवार होकर माजून खाई जब बरवांन नदी पर पहुंचे तो पहिले दिन के मुवाफ़िक़ बेहोशी की दवा डाल कर बहुत सी मछलियां पकड़ीं मीर शाहबेग ने घोड़ा और खाना नज़र किया.

वहां से चलकर गुलबहार में गये शाम की नमाज़ के पीछे शराब चली इस सुहबत में दरवेश मोहम्मद सारबान भी था वह जवान था और सिपाही था तो भी शराब से बचा हुआ रहता था और कतलक ख़्वाजा कोकलताश को सिपाही गरी छोड़े हुवे बहुत मुद्दत होगई थी और उसकी डाढ़ी भी सफ़ेद होगई थी उमर भी बड़ी थी तो भी हमेशा शराब की सुहबतों में शामिल रहा करता था इसलिये बादशाह ने दरवेश मोहम्मद सारबान से कहाकि तू ख़्वाजा की सफेद डाढ़ी से नहीं लजाता है कि वह ग़रीब बूढ़ा और सफ़ेद डाढ़ी वाला होगया है तोभी हमेशा शराब पीता है और तू सिपाही और जवान है और डाढ़ी भी तेरी काली है पर तू कभी शराब नहीं पीता यह क्या बात है इतना लिखकर बादशाह लिखते हैं कि मेरा ऐसा स्वभाव और बरताव नहीं था कि जो कोई नहीं पीता हो उसे पीने की तकलीफ़ दूं. इसी दिल्लगी में बात आई गई होगई और उसे शराब पीने की तकलीफ़ नहीं होगई.

इस तरह से बादशाह कई दिन सैल सपाटे करते और जगह २ शराब पीते और जाले (घड़नावों) में से नदियों में तिरते पड़ते काबुल में आगये और २५ सोमवार

(भादों बदि १२ । २२ अगस्त) को दरवेश मोहम्मद को खासा खिलअत और ज़ीन समेत घोड़ा इनायत हुआ.

२७- बुध (भादों बदि १४ । २४ अगस्त) को बादशाह ने अपने सर के बाल कतरे जो चार पांच महीने से नहीं कतरे थे. (१)

२९- शुक्रवार (भादों सुदि १ । २६ अगस्त) को मीर खुर्द हिंदाल की अतालीकी पर रखागया उसने १,००० शाहरुखी नज़र की.

१३- रमज़ान जुमेरात (भादों सुदि १४ - ८ सितम्बर) को बादशाह यूसफ़ज़ई पठानों को सज़ादेने के लिये सवार होकर देहे याकूब में ठहरे बाबाखां औरखताची (२) ने घोड़ा अच्छी तरह से नहीं खींचा था इसलिये बादशाह ने चढ़ते वक़्त गुस्से से उसके मुंह पर मुक्का मारा जिससे...... ...उंगली जड़ के पाससे टूट गई उसवक़्त तो कुछ दर्द न हुआ मगर फिर बहुत हुआ और कई दिन तक खत नहीं लिखागया आखिर को सुख गई.

इसी मंज़िलमें दोलतखानम का खत लेकर उसीका

(१) मालूम होता है कि बादशाह अपने सिरपर नाई को हाथ नहीं रखने देते और यह बात मशहूर भी है कि जो मुग़ल बादशाह दिल्ली के तख़्त पर बैठा करते थे उसकी न तो मुसल्मानी होती थी न नाई से हजामत कराई जाती थी दिल्ली के शाहज़ादे कहते हैं कि आखरी बादशाह बहादुरशाह भी कांच आगे रखकर अपनी हजामत आप बनालेते थे.

(२) साईस या घोड़ों का दारोग़ा.

कोकलताश (धायभाई) क़तलक क़दम काशग़र से आया और दिलाज़ाक पठानों के पंच मूसाखां वग़ैरा ने भी आकर नज़र दी.

१९. बुध (आसोज बदि ६। २४ सितम्बर) को नदी के किनारे डेरा हुआ और कूचबेग को काह मर्द और गोरी वग़ैरा में जाने की रुख़सत दीगई क्योंकि उनब क मूल विलायतों से नज़दीक थे और अपने सिर से बंधो मंदील थी उसको इनायत की.

यहां से कूच दर कूच चश्में बादाम और बाग़े व फ़ा में होते हुवे २९ (आसोज बदि ३०। २३ सितम्बर) को जुमे के दिन सुलतान पुर के पास डेरे हुवे मीर शा ह हुसेन अपनी वलायत से आया और मूसाखां दिला ज़ाक वग़ैरे की सलाह से हशतग़र के यूसफ़ज़ई पठा नों पर जाने की ठहरी जहां उन लोगों ने नाज भी ख़ूब बताया था.

दूसरे दिन बादशाह जूय शाही में आकर रहे ३० (आसोज सुदि २। २५ सितम्बर) को वहां से चलकर फ़रीक़ अरीक़ में ईद का चांद देखा देर तूर से शराब भी कई गधों पर आगई थी इसलिये शाम की नमाज़ के पी छे ही शराब की मजलिस हुई बादशाह ने तो छुटपन से यह पन ले रखा था कि जो शराब नहीं पीता हो उसे ज़बरदस्ती नहीं पिलाई जावे दरवेश मोहम्मद हमेशा पास रहता था बादशाह ने कभी उसे शराब पीने की तकलीफ़ नहीं दी थी मगर ख़्वाजा मोहम्मद अली ने अपने तौर पर उसे शराब पिलादी.

दूसरे दिन सोमवार (१ शव्वाल आसोज सुदि ३। २६ सितम्बर) को ईद थी बादशाह ने रस्ते में शराब का खुमार दूर करने के लिये माजून खाई १ माजून बनाने वाला इंदरायन का फल लाया जिसको दरवेश मोहम्मद ने कभी नहीं देखा था बादशाह ने यह कहकर कि यह हिंदुस्तान का तरबूज़ है उसको १ खांप इंदरायन की खिलादी उसने बड़े मज़े से खांत तो खारा मगर रात भर मुंह कड़वा रहा.

तड़के ही वहां से चलकर खैबर के घाटी के नीचे ठहरे सुलतान बायज़ीद ने नीलाब से आकर अर्ज़ की कि अफ़रीदी पठान अपने माल और जोरू बच्चों समेत बाड़े में बैठे हैं उन्होंने अबके साल धान भी बहुत बोया है जोकि पक कर तैयार होगया है मगर बादशाह तो हश्तगर के यूसफ़ज़ई पठानों को लूटने के इरादे में थे इसलिये इस बात की कुछ परवा न करके ख्वाजा मोहम्मद अली की मजलिस में शराब पीने को बैठगये ख्वाजा कलां के बुलाने को फ़रमान बिजोर में भेजा फिर वहां से कूच करके खैबर की घाटी से उतरे और अली मसजिद में ठहरे वहां से भी दो पहर पीछे सवार होकर काबुल नदी पर अलग जा सोये तड़के ही नदी से उतरे किरावल खबर लाया कि पठान खबर पाकर भाग गये हैं बादशाह जाकर पठानों के खलियानों में ही ठहरे जितना कुछ नाज बताया गया था उसका आधा क्या चौथाई भी नहीं मिला जिन दिलाजाक सरदारों ने यह बात कही थी वे बहुत शर्मिंदा हुवे तीसरे पहर को स्वात नदी से उतर कर दूसरे दिन काबुल नदी से अमीरों को बुलाकर सलाह की तो अफ़रीदी पठानों को लूटने की बात

ठहरी जिसके बाबत सुलतान बायज़ीद ने कहा था बादशाह जा-
ले में बैठकर फिर नदी से उतरे और अली मसजिद में आये.

वहां से अबुलहाशिम सुलतान अली ने जो पीछे रह-
गया था आकर कहा कि चांदरात को जूय शाही में एक आ-
दमी के साथ था जो बदख़शां से आता था उसने कहा-
कि सुलतान सईदख़ां बदख़शां पर चढ़ाई करने वाला है मैं
बादशाह को खबर करने जाता हूँ.

बादशाह अमीरों से सलाह करके बदख़शां जाने के
लिये काबुल को लौटे रात को ख़्वाजा अली की मजलिस
में शराब पी.

दूसरे दिन कूच करके ख़ैबर की घाटी से उतरे इस आ-
ने जाने में ख़िज़रखैल पठानों से बहुत तकलीफ़ पहुंची थी औ
लशकर के भूले भटके और पीछे रहे हुवे लोगों के घोड़े की
न लेजाते थे इसलिये उनको सज़ा देना ज़रूर समझकर तड़
के ही घाटे पर से कूच किया देह ग़ुलामान नाम गांव में दुप-
हरी टाली और मोहम्मद अली क़ोरची को काबुल में भेजा
कि वहां जो ख़िज़रखैल हैं उनको पकड़ कर माल असबा-
ब ज़ब्त करलें और बदख़शां की भी जैसी कुछ ख़बर हो
वे पूरी २ लिख भेजे.

बादशाह आधीरात तक चलकर सुलतानपुर के पास
सोये और कुछ देर नींद लेकर फिर सवार होगये ख़िज़र
ख़ैर और मसीह किराग में बैठे थे बादशाह तड़के ही
उनपर जापड़े उनके लड़के वाले माल समेत पकड़े गये
पहाड़ पास ही था जिसमें जाकर वे लोग बचगये दूसरे दि-
न हुमायूं भी जो पीछे रहगया था आकर शामिल होगया

ज़ीरी पठान जो कभी माल खूब नहीं देते थे इस सज़ा से डर कर ३०० बकरियां नज़र करने को लाये.

बादशाह के हाथ में जबसे दर्द हुआ था कुछ नहीं लिखा था अब १४ इतवार (कातिक बदि १ । ५ अकतूबर) को थोड़ा सा लिखा.

दूसरे दिन खोलजी और शमदा पठानों के पंच आये दिलाज़ाक पंचों ने बहुतसी अर्ज़ कराकर इनके गुनाहों की माफ़ी चाही बादशाह ने माफ़ करके क़ैदी भी छोड़ दिये उन्होंने ४,००० बकरियां देने का इक़रार किया बादशाह ने उन सरदारों को खिलअत पहिना कर तहसीलदार उनके साथ करदिये.

बादशाह यह काम करके १९ जुमेरात (कातिक बदि ५ । १३ अकतूबर) को बहार और मसीह किराम में आग ये दूसरे दिन बाग़े वफ़ा में जाउतरे जो खूब हरा भरा था नारंगियों के पेड़ तो बहुत थे मगर नारंगियां अभी पीली नहीं पड़ीं थीं अनार खूब पक गये थे ३ । ४ दिन तक उर्दू के तमाम आदमियों ने खूब खाये बादशाह भी इसबेर इसबाग़ में ठहर कर बहुत खुश हुवे.

सोमवार को बाग़ से कूच हुआ बादशाह ने १ पहर तक खड़े रहकर कुछ नारंगियां तुड़वाईं शाह हुसेन को २ पेड़ बाज़े अमीरों को एक एक और बाज़ों को दो दो पेड़ इनायत किये जाड़े में लमग़ान के दोरा करने का इरादा था इसलिये होज़ के आस पास नारंगी के २० पेड़ रख छोड़ने का हुक्म दिया फिर वहां से चलकर गंडमक में मुक़ाम हुआ रात को शराब की मजलिस जुड़ी इस तर

इस तरह कूच मुकाम करते हुवे आधीरात को काबुल में पहुंच गये.

दूसरे दिन दीवान कुलीबेग जो काशग़र में सुलतान सईद खां के पास गया था उसके वकील को लेकर आया और व हां की कुछ सौगातें भी लाया.

१-ज़ीकाद बुध (कातिक सुदि ३। २६ अकतूबर) को बादशाह बोरकाबिल में अकेले जाकर शराब पीने लगे फिर मजलिस के लोग भी एक एक दो दो करके जा पहुंचे धूप तेज़ होने पर बाग़े बनफ़शा में चलेगये वहां हौज़ पर फिर शराब उड़ी दोपहर को सोगये तीसरे पहर को फिर वहीं शराब का दौर चला तंकरी कुलीबेग मसखरे को बादशाह ने कभी शराब की सुहबत में शराब नहीं दी थी इस दिन उसको भी दी सोने के वक़्त हम्माम में आकर रात भर वहीं रहे.

जुमेरात को बादशाह ने हिन्दुस्तान के सौदागरों को जिनका सरदार याहा नोहानी था सरोपाव देकर बिदा किया.

इतवार को छोटे तसवीरखाने में मजलिस हुई जगह तंग थी तोभी १६ आदमी बैठे थे.

सोमवार को पतझड़ की बहार देखने के लिये अस्तालीफ़ गये.

इसदिन माजून खाई रात को मेंह बहुत बरसा तड़के ही बाग़ में शराब की मजलिस हुई रात तक खूब शराब चली दूसरे दिन फिर बादशाह शराब पीकर नशे में सोगये दो पहर पीछे अस्तालीफ़ से सवार हुवे रस्ते में माजून खाई दिन ढले बहज़ादी में आये पतझड़ खूब होगई थी

घूमते २ यारों ने शराब की बात उठाई माजून खाचुके थे तो भी बादशाह उन पेड़ों के नीचे कि जिनके पत्ते झड़गये थे बैठकर शराब पीने लगे और सोने के समय तक पीते रहे अब्दुल्लाह नशे में होगया था उसने मुल्ला महमूद से दिल्लगी की और फिर उसके नाराज़ होने पर कुछ मीठी२ बातें भी कहीं.

१६ जुमेरात (अगसर बदि ३। १० नवम्बर) को बादशाह ने बाग़ बनफ़शा में माजून खाई और कुछ मुसाहिबों को लेकर नाव में बैठे. हुमायूं और कामरां भी पीछे से आगये थे हुमायूं ने १ मुर्ग़ाबी मारी.

१८-शनीचर (अगसर बदि ५। १२ नवम्बर) को दोपहर के वक़्त चारबाग़ से सवार हुवे और मुल्लाबाबा के पुल से उतर कर देवरतन की नाल में होते हुवे तरदी बेग की कारेज़ (बाड़ी) में गये तरदी बेग खबर पाते ही घबराया हुआ दौड़ा आया.

बादशाह को उसकी कंगाली का हाल मालूम था इस लिये १०० शाहरुखी लेते गये थे वह तरदी बेग को देकर कहा कि शराब ला और तैयारी कर कि हम यहां खिलवतमें (एकांत) सुहबत किया चाहते हैं तरदी बेग तो शराब लेने को बहज़ादी में गया और बादशाह अपना घोड़ा उसके गुलाम के हाथ १ घाटी में भेजकर आप कारेज़ के पीछे १ टीले पर बैठगये १ पहर बीतने पर तरदी बेग १ घड़ा शराब का लाया बादशाह पीने लगे तरदी बेग के शराब लाने को मोहम्मद क़ासिम बरलास और शाहज़ादे जानगये थे इसलिये उसके पीछे वे भी पैदल ही चले

आये बादशाह ने उनको बुलालिया और तरदी बेग के कह
ने से हलवल अत्तका को भी बुलाया जिसे कभी शराब पीते
नहीं देखा था शाम के पीछे तरदी बेग के घर में आगये औ
र वहां बत्ती के उजाले में सोने के वक़्त तक शराब पीते रहे
वे लिखते हैं कि अजब सुहबत बग़ैर किसी गड़बड़ के थी
मैं तकिया लगाकर लेटगया यार लोग दूसरी नमाज़ तक
शराब पिया किये हलवल अत्तका ने नौबत बजने के वक़्त
तक मुझसे बहुतसी बातें कीं मैंने नशेमें बनकर अपना पी
छा छुड़ाया मेरा यह इरादा था कि लोगों को ग़ाफ़िल करके
अकेला सवार होकर अस्तरगज़ को चलाजाऊं मगर ऐसा न
हुआ क्योंकि नौबत बजते ही सवार हुआ तरदी बेग ने शाह
ज़ादों को रुख़सत करदी मैं ३ आदमियों से अस्तरगज़ को ग
या तड़केही अस्तालीफ़ में उतरकर ख़्वाजा हसन में माजून
खाई और पतझड़ की मौज देखी सूरज निकलने पर अस्ता
लीफ़ के बाग़ में ठहर कर अंगूर खाये फिर सवार होकर अ
स्तरगज़ के पास ख़्वाजा शहाब में नींद ली मीर आख़ोर बा
बर पास ही था जागने तक उसने खाना पकवा कर शराब के
१ घड़े समेत हाज़िर करदिया पतझड़ ख़ूब होगई थी मैंने क
ई पियाले पिये और सवार होगया दोपहर के पीछे अस्तर
गज़ के १ अच्छे बाग़ में उतरा मजलिस सजाई सोने के
वक़्त तक शराब पी सुबह खाना खाकर चढ़ा और १ बादशा
ही बाग़ में जो अस्तरगज़ से नीचे को था गया.

१ सेब के पत्ते झड़गये थे मगर ५।६ पत्ते इस ढंगसे रह
गये थे जो चतेरे बहुतसी महनत करके भी उनकी तसवीर
खेंचें तो नहीं खेंच सकते अस्तरगज़ से सवार होकर ख़्वा

जा हसन में खाना खाया शाम को वहज़ादी में आकर ख़्वाजा मोहम्मद अमीन के नौकर के घर शराब पी दूसरे दिन मंगल को काबुल के चार बाग़ में आगया.

१-जिलहिज जुमेरात (मगसर सुदि २।२४ नवम्बर) को ताजुद्दीन महमूद ने कंधार से आकर मुजरा किया

मंगल के दिन लशकर खां जनजोहे ने बहीरे से हाज़िर होकर बंदगी की

२७ मंगल (पोस बदि १३ ।२० दिसम्बर) को अरक (क़िले) में मजलिस हुई और ऐसा हुक्म दियागया कि जब १ आदमी मतवाला होकर जावे तो दूसरे को सुहबत में बुलालें

३०-जुमे (पोस सुदि १।२३ दिसम्बर) को बादशाह लमगान के दौरे को रवाने हुवे.

सन ९२६ (संबत १५७६।७७) १५१९ ई.

१- मोहर्रम शनिवार (पूस सुदि २।२३ दिसम्बर) को बादशाह ने ख़्वाजा सैय्यारान में पहुंचकर १ टीले पर शराब पी तड़के ही सवार होकर रेगरवां नाम स्थान को देखा और सैयद क़ासिम के घर उतर कर मजलिस रचाई सुबह माजून खाकर चले और मलगीर में उतरे रातको शराब नहीं पी तड़केपी और दोपहर पीछे दरनामे में जाकर ठहरे शराब की मजलिस जुड़ी दरनामे के सरदार हक़दाद ने अपना बाग़ भेंट किया.

जुमेरात को सवार होकर अलगार के गांव ताजकान में ठहरे जुमे को शिकार खेला बहुत से हरन मारे जबसे उंगली में चोट लगी थी बादशाह ने अबतक तीर नहीं मारा था

अब १ हरन के मारा शाम को शिकार से लोटकर बखरादमें आगये.

दूसरेदिन बखराद वालोंपर ६० मिसकाल (२२तोला) सोना नज़राने का ठहराया गया.

सोमवार को बादशाह लमगान को चढ़गये हुमायूं को भी साथ रखना चाहते थे मगर हुमायूं ने रहना न चाहा इस लिये उसे कूजे की घाटी से बिदा किया गया बादशाह बखराद में जाकर ठहरे वहां मेह के पानी में से बहुत सी मछलियां पकड़ीं तीसरे पहर को जाले (घड़नाव) में शराब पी और नमाज़ पढ़कर जाले से उतरे और सफ़ेद घर में फ़िर शराब पी.

हैदरअली अलमदार (झंडा उठाने वाला) काफिरों[1] के पास बादशाह की तर्फ़ से गया था उन लोगों के सरदार कई मशकों में शराब लेकर बादनेज़ की घाटी में बादशाह से मिले दूसरे दिन बादशाह जाले में बैठकर बूलाक के नीचे से उर्दू में आये.

जुमे को कूच करके मंदराद की तलहटी में उतरे रात को शराब की सुहबत हुई.

सनीचर को जाले में बैठकर दरतने की घाटी से उतरे और जहांनुमा[2] से ऊपर वफ़ा में जो आदीनापुर के सामने है गये नेकनिहार के हाकिम क्यामशाह ने आकर जाले

(१) काफ़रस्तान काबुल के पूर्वमें १ स्वतन्त्र इलाके का नामहै वहांके रहनेवाले एकप्रकार के पुराने हिंदू हैं और पठाने के कट्टर दुश्मनहैं.

(२) एक पहाड़ की चोटी का नाम.

से उतरते वक़्त मुजराकिया था.

लश्कर खां नियाज़ी कुछ अरसे से नीलाब में था उसने रस्ते में आकर सलाम किया.

बादशाह बाग़ वफ़ा में उतरे नारंगियां ख़ूब पकगई थी इसलिये ५।६ दिन वहां रहे.

बादशाह के दिल में यह खटका लग रहा था कि जब ४० बर्ष का होजाऊंगा तो शराब छोड़ दूंगा ४० वर्ष में १ वर्ष से कुछ कमही रह गया था इसलिये वे बहुत २ शराब पीते थे.

१६ इतवार (माहबादे २। ८जनवरी) तड़के ही शराब पीने के पीछे माजून खाते वक़्त मुल्ला बारीक ने १ गीत नया बनाया हुआ गाया बादशाह को बहुत पसंद आया वे लिखते हैं कि कुछ समय से मैंने इन चीज़ों का शौक़ नहीं किया था अब मुझे भी यह खटक लगी कि मैं भी कोई चीज़ बनाऊं इसलिये मैंने १ रागनी बनाई.

बुध को शराब पीते वक़्त दिल्लगी से कहा गया कि जो कोई ताज़ीकी (फ़ारसी) राग गावे वह १ पियाला शराब का पिये इसपर बहुत आदमियों ने शराब पी फिर बाग़ में १ चिनार[1] के नीचे बैठकर कहा कि जो तुरकी राग गाये वह १ पियाला पीवे यहां भी बहुत लोगों ने पयाले पीये सूरज निकलते वक़्त नारंगियों की छाया में जाकर हौज़ के किनारे पर शराब पी.

दूसरे दिन बादशाह जाने से जूयशाही नदी से उतर कर

[1] एक प्रकार का वृक्ष.

दरे नूर में होते हुये गांव सासून तक घूम आये और लौटकर अ
मले में उतर पड़े.

ख्वाजा कलां ने बिजोर का खूब बंदोबस्त किया था तो-
भी बादशाह ने उसे बुलाकर बिजोर शाह हुसेन को सौंप दि-
या क्योंकि ख्वाजा कलां मुसाहिब था.

२८- शनीचर (माह बदि ८।१४ जनवरी) को शाह हुसेन
बिदा हुआ बादशाह ने उसदिन भी अमले में शराब पी.

दूसरे दिन मेह बरसा बादशाह कल्ले कराम में जहां मलिक
कुली का घर था आगये और उसके मंझले बेटे के घर में जो
नारंगियों के तख़्ते पर था उतरे मगर मेह के मारे नारंगियों
में नहीं गये. वहीं शराब पी.

मेह बहुतही बरसा बादशाह लिखते हैं कि मैं एक तिलि
स्म (टोटका) जानता था वह मुल्ला अली खां को सिखाया
उसने काग़ज़ के ४ पर्चों में लिखकर ४ तर्फ़ लटका दि
या उसीदम मेह थमगया बादल फटने लगे.

दूसरे दिन बादशाह जाले में बैठे दूसरे जाले में दूसरे ज
वान थे सवाद बजोर (स्वात बाजोड़) में १ बोज़ा(1) बनाते हैं
बीम नाम १ चीज़ है जो घास की नाकों और कई दूसरी दवा
ईयों से टिकिया बनाकर सुखा रखते हैं बोज़ा इसी बीम का
बनता है कई कई बोज़ों में अजब तरह का नशा होता है
पर कड़ुवा और बेसवाद बहुत होता है बादशाह ने इसबो
ज़े के खाने का इरादा किया मगर कड़वाट के मारे नहीं खा
सके हुसेन अनकरक वग़ैरा को जो दूसरे जाले में बैठे थे
हुक्म हुवा कि यह बोज़ा खाओ वो खा खा कर मस्त होगये
और उधम मचाने लगे बादशाह ने दिक़ होकर चाहा कि

(1) १ नशीली चीज़.

उनको जाले में से फेंकदें तब दूसरों ने भी वही बात चाही·

नूरकुल में पहुंचने पर एक बूढ़े आदमी ने आकर भीख मांगी जाले वालों में से किसी ने जामा किसी ने पगड़ी किसी ने कमरबंद उसको दिया उसके पास बहुत चीज़ें होगईं·

आधे रस्ते में १ बुरी जगह पर जाले ने ठोकर खाई डूब जाने का डर हुआ जाला तो नहीं डूबा मगर मीर मोहम्मद जालाबान पानी में गिर पड़ा रात को अमर के पास पहुंचे·

सनीचर को मेदर में गये कतलक क़दम और उसके बाप दौलत क़दम ने मजलिस तैयार कर रखी थी जगह सफ़ाई की नहीं थी तो भी बादशाह उनके खातिर से कई पियाले पीकर तीसरे पहर को उर्दू में आगये·

बुध को बादशाह ने जाकर क़दर कज़र चशमे की हवा खाई यह जगह मंदरावर परगने में है इधर खजूरें कहीं नहीं होती हैं यहीं होती हैं यह जगह पहाड़ की घाटी से बहुत उंचाईपर १ बाग़ से लगी हुई है चशमे से ६।७ गज़ नीचे पत्थर चुनकर नहाने के वास्ते आड़ बनाई हुई थी और वह इस ढंग की थी कि जो नहाता उसके सिर पर पानी गिरता पानी भी इस चशमे का ठीक थाजाड़े में जो कोई इसमें नहाता है पहिले तो पानी ठंडा लगता है फिर जितनी देर खड़ा रहता है उतना ही अच्छा लगने लगता है·

जुमेरात को गांव के मुखिया शेरखां ने अपने घर ले जाकर मिजमानी की दोपहर पीछे बादशाह सवार होकर मछली घरों में जो शिकार के वास्ते बनाये हुवे थे गये·

और मछलियां पकड़ीं·

जुमे को ख़्वाजा मीर मीरां के गांव के पास ठहरे शाम को मजलिस हुई

सनीचर को अलीशंक और अलंकार के बीच का पहाड़ घेरागया एक तर्फ़ से अलंकार वाले और दूसरी तर्फ़ से अलीशंक वाले हिरनों को घेर लाये बहुत से हिरन मारे गये शिकार से लौटकर अलंकार में जो मौलिकों का बाग़ था वहां मजलिस लगी·

बादशाह लिखते हैं कि मेरे अगले आधे दांत तो पहिले ही टूट गये थे आधे रहे थे सो भी आज खाना खाते हुवे टूट गये·

दूसरे दिन सवार होकर मछलियों का शिकार किया इस दिन भी अली शंक के बाग़ में जाकर शराब पी·

तड़केही अलीशाह के मलिक हमज़ाखां को जिसने बुरे काम और नाहक़ ख़ून किये थे उसके ख़ूनियों को सोंपकर मरवा दियागया·

मंगल को पायान बूलाग़ के रस्ते से काबुल को लौटे शाम को करातू में आकर घोड़ों को दाना दिया जब खापी चुके तो बादशाह भी हाज़िरी खाकर सवार होगये·

इससे आगे जुमा १ सफर सन ९३२ का हाल लिखा है बीच के बर्षों का हाल सफ़र सन ९२६ से मोहर्रम सन ३२ तक बम्बई की छपी हुई किताब में नहीं है और दूसरी क़लम भी (तुज़ुक बाबरी की) मोजूद नहीं थी इसलिये

(१) सरदारों, रईसों·

बीच का बाक़ी हाल तवारीख़ फ़रिश्ता से लिखा जाता है.

सन ९२६ का बाक़ी हाल सन ९३२ के शुरू तक ९२६ (संवत १५७७)

बादशाह ने तीसरी बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की हर मंज़िल में पठानों को लूट २ कर सज़ा देते आते थे जब स्यालकोट में पहुंचे तो वहां के लोगों ने हाज़िर होकर पनाह मांगी उनकी जान माल और इज़्ज़त बचगई मगर जब सैयदपुर में लशकर पहुंचा तो वहां वाले लड़े और मारे गये शहर ऊजड़ होगया ३० हज़ार लौंडी और गुलाम उर्दू में पकड़े आये दूसरे लूट की भी कुछ गिन्ती नहीं थी सैयदपुर के हिंदुओं का मुखिया जो पठान अमीरों से मेल रखता और बादशाह से नहीं मिलता था पकड़ा और मारा गया.

कंधार की फ़तह

बादशाह वहां से काबुल को लौटगये और कंधार फ़तह करने को चढ़े उस किले को शेर ख़ान मिर्ज़ा के मरने की ख़बर आई बादशाह ने हुमायूं को बदख़शां की हुकूमत पर भेजा

कंधार के हाकिम शाहबेग अरगूं ने ख़ुरासान में अपने आदमी भेजकर शाह इसमाईल के बेटे तुहमास्प सफ़वी से मदद मांगी उसके अतालीक़ मोहम्मदख़ां ने बादशाह से घेरा उठालेने की अर्ज कराई मगर बादशाह ने नहीं मानी

और ३ वर्ष तक पेश नहीं उठाया आख़िर शाहबेग तंग होकर सिंध में भक्कर की तर्फ़ भाग गया और कंधार सन ९२८ (संबत १५७९। सन १५२२) में बादशाह के हाथ आया और कामरां मिरज़ा को इनायत हुआ.

हिन्दुस्तान पर चढ़ाई

दोलतख़ां लोदी ने सन ९३० (संबत १५८१। सन १५२४) में हिन्दुस्तान के बादशाह इब्राहीम लोदी से बदलकर अपने आदमी काबुल में भेजे और बाबर बादशाह को हिन्दुस्तान में बुलाया बादशाह कूच करके गक्खड़ों के मुल्क में होते हुवे लाहोर में ६ कोस तक आपहुंचे बहारख़ां. मुबारकख़ां लोदी और भीकनख़ां लोहानी जो पंजाब के पठान अमीर थे बहुतसी फ़ौज लेकर लड़ने को आये और लड़े भी ख़ूब मगर फिर हार कर भाग गये बादशाह फ़तह पाकर लाहोर में आये और चंगेज़ख़ां की रसम के मुवाफ़िक़ शुकुन के लिये बाज़ारों को जलाकर ३। ४ दिन पीछे देपालपुर के क़िले पर गये उसको भी फ़तह करके वहां वालों का कतल आम किया.

दोलतख़ां लोदी जो अपने बादशाह इब्राहीम से बाग़ी होकर बलोचों में जा रहा था ये ख़बरें सुनकर अपने ३ बेटों अलीख़ां. गाजीख़ां. और दिलावरख़ां समेत देबालपुर में बादशाह के पास हाज़िर हुआ बादशाह ने जलंधर और सुलतानपुर वग़ैरा परगने देकर उसको अपने बड़े अमीरों में रख लिया.

दोलतख़ां ने अर्ज़ की कि यारे में इसमाईल जलवानी [illegible] जलवानी और दूसरे पठान जमा होरहे हैं जो उधर

फौज जाकर उनको बखेरदे तो फ़ायदे की बात है बादशाह फौ
ज भेजने की तैयारी में थे कि दौलतखां के छोटे बेटे दिलावर
खां ने खैरख्वाही से अर्ज़ की कि मेरे बाप और भाई कपट
से चाहते हैं कि लशकर से हज़रत को अलग करदें और फिर
कोई दग़ा करें बादशाह ने तहक़ीक़ात करके दौलतखां और
ग़ाज़ीखां को पकड़ लिया और नौशहर में आकर कुछ दिनों
पीछे छोड़ दिया क़सबा सुलतानपुर जो दौलतखां का वतन औ
र बसाया हुआ था उनकी जागीर में इनायत किया

इसतौर से जब वे दोनो बाप बेटे सुलतानपुर में आये तो
अपने जोरू बच्चों को लेकर पहाड़ में चलेगये बादशाह ने
उनदोनों की जागीर अकेले दिलावरखां को देदी और खा
न खाना का खिताब भी इनायत फ़रमाया·

दौलतखां के फ़ितूर से बादशाह सरहिंद तक जाकर लाहो
र को लौट आये लाहोर मीर अबदुल अज़ीज़ मीर आखोर (तबे
ले के दारोग़ा) को स्यालकोट खुसरो कोकलताश को देपा-
लपुर बाबा क़शक़ा मुग़ल और सुलतान अलाउद्दीन लोदी
को जो उसवक़्त हाज़िर खिदमत होगया था और कलानूर
मोहम्मद अली जंगजंग को सौंपकर काबुल की तर्फ़ कूच कर
गये

पीछे से दौलतखां और ग़ाज़ी खां ने धोका देकर दिला
वरखां खानखाना को पकड़ा और बहुत से लशकर से दे
पालपुर जाकर अलाउद्दीन लोदी और बाबा क़शक़ा से
जंग की और उनको हराकर देपालपुर में अमल करलि-
या·

सुलतान अलाउद्दीन लोदी भागकर काबुल में और बाबा

कशका लाहोर में गया.

फिर दोलतखां ने ५ हज़ार सवार शिरवानी पठानों के स्या लकोट छुड़ालेने के लिये भेजे मीर अबदुल अज़ीज़ और लाहोर के अमीर खुसरो कोकलताश की मदद को गये और पठानों के लशकर को भगाकर फ़तह का निशान उड़ाते हुवे लाहोर में आये.

इतने ही में बादशाह इब्राहीम का लशकर भी जो दोलत खां और ग़ाज़ी खां के ऊपर भेजागया था सरहिंद में आ पहुंचा था इसलिये दोलतखां मुग़ल अमीरों से लड़ने की फ़ुरसत न पाकर अपने बादशाह की फ़ौज से लड़ने को गया और बीजवाड़े में पहुंचकर उस लशकर के अफसर को मिलालिया जिसका भेद पाकर दूसरे अमीर उस अफ़सर को खबर किये बगैर ही आधीरात को कूच करके बादशाह इब्राहीम के पास चले गये.

सुलतान अलाउद्दीन काबुल से बाबर बादशाह का हुकम लाहोर में मुग़ल अमीरों के नाम लाया कि इसके साथजावें और दिल्ली फ़तह करके इसको सौंप आवें.

दोलतखां और ग़ाज़ीखां ने इस हुकम की खबर पाकर बादशाही अमीरों से कहलाया कि सुलतान अलाउद्दीन लोदी हमारा बादशाहज़ादा है और हम सब यह चाहते हैं कि वह हम पठानों का बादशाह रहे उसे हमारे पास भेजदो हम दिल्ली के तख्त पर बैठा देंगे और यह सलतनत सरहिंद तक तुम्हारे बादशाह के तावे रहेगी.

दोलतखां और ग़ाज़ीखां ने क़समें खाकर अहदनामा भी इसबात का लिखदिया क़ाज़ियों और बड़े २ आद-

मियों की मुहरें भी करादीं.

लाहोर के अमीरों ने भी यह बात कबूल करके सुलतान अलाउद्दीन को ग़ाज़ीखां के पास भेज दिया ग़ाज़ीखां ने उसको अपने भाईयों और दूसरे पठान अमीरों के साथ दिल्ली की तर्फ़ भेजा और आप पंजाब में ही रहा अलाउद्दीन बादशाह इब्राहीम से लड़ाई हार कर पंजाब में भाग आया ग़ाज़ीखां अपने बोल से फिर कर कलानूर पर चढ़ गया. मोहम्मद अली जंगजंग लड़ने से जी चुराकर लाहोर में भाग आया गाज़ीखां ने कलानूर से जाकर बीर सरूर में मुक़ाम किया.

बाबर बादशाह ने अलाउद्दीन की हार ग़ाज़ीखां और लोदी पठानों की बे-ईमानी की ख़बर सुनकर पांचवीं बेर सन ९३२ में हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की (१)

सफ़र सन ९३२ से सन ९३६ तक छापे की तुज़ुक बाबरी में जो पूरा हाल है वही आगे लिखा जाता है.

---

(१) तवारीख़ फरिश्ता खंड १ पेज २०१ से २०३ तक

हिन्दुस्तान पर चढ़ाई.

सन ९३२ हि. (सम्वत १५८२) सन १५२५ ई.

१ सफ़र जुमेरात (मगसर सुदि ३ । १७ नवम्बर) को जब कि सूरज धन राशि में था बादशाह हिन्दुस्तान के वास्ते काबुल से कूच करके देहे याकूब नाम गांव के पास १ हरयाली भूमि में ठहरे यहां अबदुल मलिक कोरची जो ७।८ महीने से सुलतान सईदखां के पास गया हुआ था उसके कोकलताश (धाऊ) बाक़ी बेग के साथ खत और तुहफ़े लेकर आया.

लशकर जमा होने के लिये दो दिन वहां डेरा रहा फिर वहां से कूच होकर चशमये बादाम के पास मुक़ाम हुवा.

बुध को "बारीक आब" में डेरे हुए लाहोर के दीवान ख्वाजा हुसैन की भेजी हुई २०,००० शाहरुखी (सोने की अशरफ़ी) और टके नूर बेग के भाईयों के हाथ पहुंचे और उनमें से बहुत सा रुपया मुल्ला अहमद अरबाब[1] बलख के हाथ बलख के कामों के लिये भेजा गया

८ शुक्रवार (मगसर सुदि १० । २४ नवम्बर) को बादशाह गंडमक में आकर उतरे उतरते वक्त बुख़ार आगया था मगर फिर आराम होगया.

शनीचर को बाग़ वफ़ा में ठहरे जो बहुत ही अच्छा और हरा भरा था यहां हुमायूं[2] के मयाद पर न आने से कुछ

(१) सरदार (२) हुमायूं उसवक्त बदख्शां में था.

दिनों तक मुक़ाम रहकर अकसर शराब चलती रही और हुमायूं को खफ़गी के खत लिखे गये·

१७·इतवार (पोस वदि ४। ३ दिसम्बर) को सुबह के वक़्त बादशाह शराब पीरहे थे कि हुमायूं आगया बादशाह ने देर करके आने से उसको भला बुरा कहा इसी दिन ख्वाजा कलां भी ग़ज़नी से आगया·

सोमवार को उस बाग़ में मुकाम हुवा जो सुल्तानपुर और ख्वाजा रुस्तम के बीच में नया बना था

बुध को बादशाह वहां से जाले (घड़नाव) में बैठकर क़ौस गुंबद तक शराब पीते आये और वहां जाले से उतर कर उर्दू में आगये सुबह ही उर्दू का कूच कराकर फिर जाले में बैठे और माजून खाते हुवे क़रीक़ अरीक़ में आये जो जाले से उतरने का स्थान था मगर वहां उर्दू का पता नहीं था और न घोड़े आते हुवे मिले इसलिये यह सोचकर कि गर्म चशमा यहां से नज़दीक ही है और छाया की जगह है शा यद उर्दू वहां उतर पड़ा होगा गर्म-चशमे की तर्फ़ गये वहां पहुं चते २ दिन ढलगया रात को भी फिरते रहे आख़िर १ जग ह जाले को ठहरा कर कुछ नींद ली जब तड़के ही जागे और सूरज चमका तो लशकर के लोग ढूंढने को उधर आने लगे उर्दू दो दिन से क़रीब अरीक़ के पास ठहरा हुवा था बादशाह को नजर नहीं आया.

जाले में शेर कहने वाले (कबिता करने वाले) लोग भी थे जैसे शेख़ अबुल वाहिद, शेखजेन, मुल्ला अलीखां तरुदीबेग और खाकसार वग़ैरा- इसलिये बादशाह ने उनको १ समस्या देकर शेर कहने का हुक्म दिया जब वे लोग क-

हने लगे तो बादशाह ने मुल्ला अलीखां के वास्ते १ अश्लील शेर कहा क्योंकि वे उससे हंसी किया करते थे·

बादशाह लिखते हैं कि मैं पहिले अच्छे बुरे शेर हंसीठठे के कहा करता था मगर जिन दिनों में कि मुबीन (१ ग्रंथ) का उल्था करने लगा तो मैंने अपने दिल में कहा कि जबान जो ऐसे अच्छे वाक्य कह सकती है और दिल जिससे उत्तम उक्ति उपजती है उनको कैसे बुरे बचन कहने और सोचने में लगाना बड़े अफ़सोस की बात है यह सोचकर उसवक़्त से बुरे और भोंडे शेर कहना छोड़दिया गया था मगर इस शेर के कहते वक़्त वह संकल्प याद न रहा एक दो दिन पीछे ही जब मैं बिकराम में उतरा तो तप चढ़ा खांसी होगई खासने में खून आने लगा तो मैंने बिचार किया कि यह सज़ा कहां से हुई और यह तकलीफ़ क्यों है तब मैंने कहा हे! ज़बान मैं तेरा क्या करूं तेरे मारे मेरा दिल खून होगया तू कबतक ऐसे मसखरेपन के शेर कहेगी जो उनमें से १ तो अश्लील होताहै और एक झूंठा फिर मैंने इस गुनाह से तोबह किया और खुदा से पनाह मांगी दिल और ज़बान को ऐसे बुरे काम से रोका क़लम को तोड़ डाला इसतरह अपने अपराधों का लखजाना आदमी के वास्ते बड़ी भलाई की बात है·

वहां से कूच होकर अलीमसजिद में मुक़ाम हुवा वह जगह बहुत तंग थी इसलिये बादशाह तो १ ऊंची टेकरी पर उतरे उर्दू घाटी में ठहरा जिसमें जगह २ आग जलती हुई बादशाह को ऊपर से दीपमालिका की तरह भली लगती थी·

बादशाह जब जब इस घाटी में आये थे तो शराब पि·

या करते थे उसी तरह अब भी शराब पी मगर कूच करते वक़्त दिन निकलने से पहिले माजून खाली और दिन को अलभी रखा बिकराम के पास ठहरे दूसरे दिन मुक़ाम करके गेंडे की शिकार को गये बिकराम के सामने स्याह आब (१ नदी) से

उतर कर हाका (हकवा) कराया १ गेंडा निकल कर भागा हुमायूं और वे लोग जो उन तर्फों (तुर्किस्तान) से आये थे और जिन्होंने गेंडा नहीं देखा था वे उसको अच्छी तरह से देखकर १ कोस तक तीर मारते हुवे उसके पीछे गये मगर गेंडे ने किसी आदमी पर हमला नहीं किया और न घोड़े पर। आख़िर मारा गया.

बादशाह के दिल में हमेशा यह आया करती थी कि जो हाथी को गेंडे के सामने किया जावे तो देखें किसतौर आपस में मोहरा करते हैं इसलिये अब महावत हाथियों को ले आये एक गेंडा सामने आया मगर जब हाथी उसपर चलाया गया तो वह सामने न हुआ और एक तरफ़ को भाग गया.

बादशाह उस दिन बिकराम में रहे कुछ अमीरों पास वालों बख़शियों और दीवानों को बुलाकर उनकी ६।७ सरकारें बनादीं और नीलाब के घाट की नावों पर तईनात करदीं कि तमाम आदमियों के नाम लिखकर लशकर की हाज़री लेलें.

रात्री में बादशाह को जाड़ा देकर बुखार चढ़ा दूसरे दिन कुछ खांसी चली और खांसने में खून गिरने लगा जिसका उनको बहुत वहम होगया था मगर दो तीन दिनपीछे आराम होगया

बिकराम से दो मंज़िल बीच में देकर २८ जुमेरात (पोस बदि १० । २४ दिसम्बर) को सिंध नदी पहुंचे.

१-रबीउल अव्वल शनिवार (पोस सुदि २ । ६ दिसम्बर) को सिंध को छोड़कर कच्छ कोट के घाट से उतरे और दरिया के किनारे ठहरे अमीरों बख़शियों और दीवानों ने लशकर की हाज़री अरज़ की कि कुल छोटे, बड़े, अच्छे, बुरे, नौकर और ग़ैरनौकर १२,००० आदमी लिखे गये हैं.

इस वर्ष मेंह जंगलों में कम पहाड़ों पर ज़ियादा बरसा था इसवास्ते बादशाह नाज और चारे के सुभीते के लिये पहाड़ों की तलहटी का रस्ता लेकर स्याल कोट को रवाने हुवे जब हाथी गक्खड़ की विलायत के पास पहुंचे तो नदी का पानी जगह २ ठहरा हुआ और पाले से जमा हुआ पाया बादशाह लिखते हैं कि इसका दल एक हाथ से ज़ियादा मोटा नहीं था तो भी हिन्दुस्तान में ऐसा "यख़" (पाला) अनोखा ही है यख़ का असर (करीना) नहीं देखा गया इन कई बर्षों में जब हम हिन्दुस्तान में थे बर्फ़ और यख़ (हिम और पाला) का खोज भी नहीं देखा गया.

सिंध से ५ कूच करके छटे कूच में जोद नाम पहाड़ से मिले हुवे बालनाथ जोगी के पहाड़ के नीचे नदी के किनारे बकपाला नाम स्थान में डेरे हुवे दूसरे दिन इसलिये कि लोग नाज लेवें वहीं मुकाम रहा जो लोग नाज लेने को गये थे वे खलियानों में होकर जंगल पहाड़ तंग घाटियों ख़राब और निकम्मी जगहों में गये और कई आदमियों को पकड़ लाये

बादशाह भट नदी को जहलम के नीचे से उतरे बलो-

फरमली जिसका परगना मीर जफरी को दिया गया था हाज़िर आया बादशाह उसपर ख़फ़ा थे क्योंकि वह स्यालकोट में नहीं आया था उसने अर्ज़ की कि मैं परगने में था जब ख़ुसरो कोकलताश स्यालकोट से चला तो मुझे ख़बर नहीं थी यह कहना उसका ठीक था इसलिये बादशाह ने मान लिया और कहा अच्छा जब तू स्यालकोट से लाहौर को गया था तो अमीरों के साथ क्यों नहीं गया मगर फिर उन्होंने उसके क़सूर पर कुछ ख़याल नहीं किया क्योंकि वह वक़्त काम का था.

इसी मंज़िल से उन्होंने सैयद तूफ़ान और सैयद लाचीन को घोड़े की डाक पर दौड़ाकर उन अमीरों के पास भेजा जो लाहौर में थे कहलाया कि वहां मत लड़ो स्यालकोट या परसरोर में हमारे पास आजावो क्योंकि सब लोग यह बातें करते थे कि गाज़ीख़ां ने ३०.००० आदमी जमा कर लिये हैं यह दो तलवारें बांधता है और जम कर लड़ेगा इस लिये बादशाह ने लाहौर से उन लोगों को बुलाया था कि उनको भी अपने साथ रखकर लड़ें तो बहतर है.

फिर बादशाह १ मंज़िल बीच में रहकर चिनाब नदी के किनारे पर ठहरे रस्ते में जाकर बहलोलपुर को भी देख आये थे जो खालसे में था वहां का किला जो चिनाब नदी के ऊपर १ टीले पर था बहुत पसंद आया और उन्हों ने फ़ुरसत के वक़्त स्यालकोट के आदमियों को वहां लाकर बसाने का इरादा किया बहलूलपुर से नाव में उर्दू तक आये मुसाहिब साथ थे किसी ने अरक

(शराब) पिया किसी ने बोज़ा खाया और किसीने माजून उड़ाई रातको नाव से उतर कर डेरे में आये वहां भी कुछ नशा पानी किया गया.

घोड़ों को दम देने के लिये दूसरे दिन भी वहीं रहे.

१४-रबीउल अव्वल शुक्रवार (पोस सुदि १५। २९ दिसम्बर) को स्यालकोट में दाखिल हुवे पहिले जब बादशाह स्यालकोट में आया करते थे और यह मुल्क बाग़ी था यानी ताबेदार नहीं था तो जट और गूजरों की ज़ियादा पकड़ धकड़ नहीं होजाती थी जो गायें भैंसे लेकर झुंड के झुंड जंगल और पहाड़ों से चले आते थे और बहुत जुल्म करते थे अब जो ये सब मुलक ताबेदार होगये थे तो भी उन लोगों ने इसी तौर का मामला करना किया था स्यालकोट में कुछ नंगे भूखे और ग़रीब लोग आये थे उनको लूट लिया बादशाह ने हल्ला सुनकर उन लोगों को तलाश कराया ऐसी बेसिरी (खुद हाकिमी) की था और उनमें २। ३ आदमियों के टुकड़े उड़वा दिये।

इसी मंज़िल में १ सौदागर ने आकर आलमखां का हाल कहा बादशाह ने जब लाहोर फ़तह किया था तब सब उजबक सुलतानों ने आकर बलख को घेर लिया था बादशाह तो यह ख़बर सुनकर बलख को चले गये थे और आलमखां को हिन्दुस्तान में छोड़ गये थे आलमखां ने अमादार भेजकर बादशाही अमीरों से जो हिंदुस्तान में थे कहलाया कि बादशाह ने तुमको मेरी मदद पर छोड़ा है मेरे पास आओ तो गाजीखां को भी साथ लेकर दिल्ली और आ

[illegible] उन्होंने जवाब दिया कि ग़ाज़ीखां को साथ किस भ
रोसे पर करें क्योंकि हुक्म तो यह है कि जब ग़ाज़ीखां अप-
ने छोटे भाई हाजीखां या अपने बेटे को दरगाह में या लाहो
र में ओलगरी के तौर पर भेजे तो तुम उसके साथ जाना नहीं
तो नहीं जाना और वह तुमसे कल लड़ा और हार चुका
है फिर किस भरोसे पर उसके साथ होते हो तुमको उसके सा
थ रहना सलाह नहीं है.

अमीरों ने इसतरह से कहलाया तो भी आलमखां ने
नहीं माना और अपने बेटे शेरखां को भेजकर दौलतखां औ
र ग़ाज़ीखां से बात मिलाई और उनसे जाकर मिला दिलाव
रखां को भी जो लाहोर में कैद रहकर भागा था साथ लिया
मिर्ज़ा मोहम्मदखां ने खानजहां को भी जिसे लाहोर दिया
गया था अपने शामिल किया बेसक और के अमीर भी
जो बादशाह की तर्फ़ से हिंदुस्तान में छोड़े गये थे और इस
माईल जलवानी वगैरा मिलाकर दिल्ली को रवाने हुये अं
दरी में पहुंचने पर सुलेमान शेखज़ादा भी आकर मिलग
या २०।४० हज़ार की भीड़भाड़ होगई जाकर दिल्ली को
तो घेर लिया मगर न लड़सके और न क़िले वालों को तं
ग करसके सुल्तान इब्राहीम ने खबर पाकर इन पर चढ़ा
ई की येभी क़िल्ले का घेरा छोड़ कर उसके सामने गये औ
र यह बात ठहराई कि दिन को तो नहीं लड़ें रात को छा
पा मारें क्योंकि पठान एक दूसरे की शर्मा शर्मी से दिन
में तो नहीं भागते हैं मगर रात को भाग जाते हैं कि कोई
किसी को देखता नहीं है.

छापे के लिये दो दफ़े ६ कोस से दोपहर को चढ़ २ कर

गये और आधीरात तक खड़े रहे न पीछे लौटे न आगे ब
ढ़े न सबका एक मता हुआ तीसरी बेर पिछली रात से छा
पा मारा उनका छापा मारना औ डेरों में आग लगा देना औ
र लौट आना था.

आग लगने और हल्ला होने पर जलालखां जगहट
केगराअमीर भी आकर आलम खां से मिलगये सुलतान इब
राहीम अपने कई खिदमतगारों समेत डेरे में बैठा रहा सुब
ह होने तक वहां से हलाभी नहीं.

आलमखां के साथ जितने आदमी थे वे सब लूट
में पड़गये सुलतान इब्राहीम के लशकरने जब देखा कि वे
लो बहुत थोड़े आदमी हैं तो थोड़ी सी फ़ौज और १ हाथी
से इन पर कूच किया जब वह हाथी पास पहुँचा तो वह ठ
हर न सके भाग निकले

सैफ़खां दरियाखां महमूदखां खानजहां. औरशे
ख जमाल फ़रमली वग़ैरा लड़ाई से पहिले ही भागकरसु
लतान इब्राहीम के पास चलेगये थे.

आलमखां ने पानीपत में जाकर फिर कुछ आद
मी जमा किये और सरहिंद में जाकर बादशाह का आना
सुना दिलावरखां तो बादशाह की तर्फ रवाने हुआ आलमखां
और हाजीखां सुतलज नदी से उतर कर पहाड़ में गये वहां
दून के पास कंकोते के मजबूत क़िले में जा बैठे मगर पठा
नों और हज़ारा लोगों ने आकर घेरलिया आलमखां भाग
कर ग़ाज़ीखां के साथ होगया जो उस पहाड़ में था.

स्यालकोट में ही लाहोर के अमीरों का जवाब आ.
या कि सुबह सब आकर हाज़िर होजावेंगे.

बादशाह दूसरे दिन स्यालकोट से कूच करके पर सरूर में ठहरे यहां मोहम्मद अली जंगजंग ख्वाजा हुसेन और बाज़े दूसरे जवान हाज़िर होगये गनीम का डेरा रावी के किनारे पर लाहोर की तर्फ़ था बादशाह ने कुछ आदमियों को खबर लाने के लिये भेजा ३ पहर रात गये वह लोग यह खबर लाए कि गनीम तो खबर पातेही बिखर कर भाग गया है.

बादशाह ने तड़के ही कड़ी सवारी से धावा किया तीसरे पहर पीछे कलानूर में पहुंचे वहां मोहम्मद सुलतान मिरज़ा और आदिल सुलतान ने आकर सलाम किया.।

कलानूर से दिन निकलते ही कूच हुआ रस्ते में गाज़ीखां और दूसरे भागे हुवें के पासही होने की खबर मिली बादशाह ने मोहम्मदी अहमदी और अकसर अमीरों को जो काबुल से आये ही थे उनके पीछे भेजा और यह भी उनसे कहदिया कि जो उन तक पहुंच सको तो खूब.। नहीं पहुंच सको तो मलोत के क़िले को घेर लेना और खूब ज़ाबता रखना कि कोई वहां वालों में से भाग न सके ख़ास मतलब ग़ाज़ीखां से था

बादशाह इनलोगों को रवाने करके गांव बाहरू के पास नदी से उतरे और दो मंज़िलें करके क़िले मलोत के घाट पर उतरे जो अमीर पहिले पहुंचगये थे उनको और हिन्दुस्तान के अमीरों को हुक्म हुआ कि क़िले को खूब घेरलें दोलतखां के बेटे पोते इसमाईलखां वग़ैरा यहा आकर मिले बादशाह ने क़िले वालों को धमकाने ला-

लच और तसल्ली देने के लिये आदमी भेजा जुमे के दिन उर्दू को आगे कूच कराकर क़िले से आध कोस पर डेरा कि या और क़िले को देखकर दायें बायें मोर्चे लगाये लौट कर उर्दू में आने पर बलीखां ने आदमी भेजकर अरज़ कराई कि ग़ाज़ीखां तो भाग कर पहाड़ में चला गया है अगर हम लोगों के गुनाह बख़्शे जावें तो गुलामी में हाज़िर होकर क़िला सौंप दें,

बादशाह ने ख़्वाजा मीरान को भेजकर उसके दिल का बहम दूर किया अलीख़ां बेटे सहित उसके साथ आया बादशाह ने फ़रमाया कि वही दोनो तलवारें जो ह मसे लड़ने के लिये कमर में बांधता था इसके गले में डालदें। जब इसतरह उसको बादशाह के सामने लाये तो वह घुटना टेकने में आगा पीछा करता था बादशा ह ने फ़रमाया कि इसके पांव खेंचकर घुटना टिकावें घु टना टिकाने के पीछे उसको बैठाकर १ हिन्दुस्तानी से कहा कि जो मैं कहूं वह एक एक करके इसे कहे और यह कहो कि मैंने तुझको बाप कहा है और तेरी इज़्ज़त और ताज़ीम जैसी तू चाहता था उससे भी बढ़कर की औ र तेरे बेटों को सल्लूखां के दरवाज़े की खाक छानने से बचाया तुम्हारे ख़िदमतगारों और तुम्हारी औरतों को इ बराहीम की क़ैद से छुड़ाया तातारखां की ३ करोड़ की बलायत तुझको सौंपी फिर बतला मैंने तेरे हक़ में क्या बुराई की थी कि तूने मुझसे लड़ने को अपनी कमर में दो तलवारें बांधीं और लशकर लेकर मेरे मुल्कों पर चढ़ आया और झगड़ा फ़ितूर किया,

वह बूढ़ा खुर्राट मुंह में ही बात चबाता रहा और कुछ न बोला और इन बातों के जवाब में बोलता भी क्या.

बादशाह ने हुक्म दिया कि इनके खिदमतगार और औरतें इन्हीं को सौंपदो और माल असबाब ज़ब्त करलो और यह ख्वाजा मीरान के साथ रहा करें.

२२- रबीउल अव्वल शनिवार (माह बदि ५ । ६ जनवरी १५२६) को बादशाह इन लोगों के खिदमतगारों और ज़नानों को सही सलामत निकाल देने के लिए १ ऊंची जगह पर आकर बैठगये जो मलोत के दरवाज़े के सामने थी दोपहर पीछे क़िले वालों के नोकर और ज़नाने आने लगे बादशाह ने अब्दुल अज़ीज़ मोहम्मद अली जंग जंग क़तलक़ क़दम मोहम्मदी, अहमदी और कई दूसरे पास रहने वालों को हुकम दिया कि क़िले में जाकर इनके खज़ानो और मालखानो पर कबज़ा करलो.

ग़ाज़ीखां निकलगया था तो भी कई लोगों ने कहा कि हमने उसको क़िले में देखा है इसलिए कई खिदमतगार और चौकीदार दरवाज़े पर रखेगये थे कि जहां जहां अगर हो ढूंढ लें ऐसा नहो कि धोका देकर निकल जावे और उसके जवाहरात और चीज़ों को भी जो कहीं छुपाई हों तो निकाल कर ज़ब्त करलें.

क़िले के दरवाज़े वाले शोर गुल बहुत करते थे बादशाह ने उनको सज़ा देने के लिये कई तीर मारे १ तीर जो पान हुमायूं के जा लगा जो उसी दम मरगया.

बादशाह रात को उसीजगह रहकर सोमवार को क़िले में गये देखते २ ग़ाज़ीखां के किताबखाने में आये कई

उमदा किताबें निकलीं उनमें से कुछ तो हुमायूं को दीगई और कुछ कामरां के वास्ते भेजीं बादशाह लिखते हैं मुल्लाओं की-सी किताबें बहुत थीं जैसी उमदा किताबों की उमेद थी वैसी नहीं निकलीं.

बादशाह रातको क़िलेमें रहकर तड़के ही वहां से लौट-आये बादशाह जानते थे ग़ाज़ीखां क़िले में होगा मगर वह तो अपने बाप छोटेभाई, छोटी बहन, और मांको क़िले में ही छोड़कर थोड़े से आदमियों से पहाड़ को भाग गयाथा.

बुधको बादशाह कूच करके उस पहाड़ की तर्फ़ रवा ने हुवे कि जिसमें ग़ाज़ीखां भागकर गया था मलोत के दर्रे से १ कोस चलकर दूसरे दर्रे में उतरे यहां दिलावरखां ने आकर सलाम किया बादशाह ने दौलतखां, अलीखां, इस माईलखां और दूसरे उनके बड़े आदमियों को क़ैद करके कत्ताबेग के हवाले किया कि भलोनी के क़िले में लेजाक र क़ैद करदे जो वहांरे में है दूसरे लोग जो पकड़े गये थे दि लावरखां की सलाह से एक एक का खूंबहा मुक़र्रर किया गया जिन्होंने खूंबहा की ज़मानत दी वे ज़ामनों को सौंपे ग ये और कई क़ैद करके भी रक्खे गये

कत्ताबेग क़ैदियों को लेकर सुलतानपुर तक पहुंचा था कि दौलतखां उसको मिलगया.

मलोत का क़िला मोहम्मद अली जंगजंग को सौंपा गया था उसने अपने भाई अरग़ून को कुछ जवानों से व-हां छोड़ा दो ढाई सौ पठान और हज़ारा लोग भी क़िले की मदद के वास्ते रक्खे गये.

ख़्वाजा कलां ग़ज़नीन की शराबें कई ऊंटों में लाकर

क़िले से ऊंची जगह पर ठहरा हुआ था बादशाह ने वहां जाकर मजलिस की कई आदमियों ने अफ़ीम खाया और कई ने शराब उड़ाई फिर वहां से कूच हुआ आबकंद और मलूत के छोटे २ पहाड़ों से उतर कर दून में आये

बादशाह लिखते हैं हिन्दुस्तानी बोली में जलगा (हरियाली) को दून कहते हैं हिन्दुस्तान में बहते हुवे पानी के खेत इसी दून में हैं दून के आस पास बहुत से गांव हैं यह दून परगने जसवां का था यहां वाले दिलावरखां के भाई-(मामूं) होते थे यहां धान बोया हुआ था इसमें ३। ४ पनचक्कियों का पानी है जो यों ही गिरा चला जाता था दून की चढ़ाई कहीं १ कोस २ कोस कहीं ३ कोस भी थी उसके पहाड़ छोटे २ टीलों के तौर पर थे कहीं २ इन पहाड़ों में गांव बसते थे गांवों में मोर और बंदर बहुत थे घरेलू मुर्गों जैसे मुर्ग भी थे मगर एक ही रंग के.

जोकि ग़ाज़ी खां की ठीक खबर नहीं थी इसलिये बादशाह ने कुछ लोगों को बिदा किया कि ग़ाज़ीखां जहां हो वहां जाकर उसको पकड़ लें.

दून के आस पास जो छोटे पहाड़ थे उनमें अजब २ मज़बूत क़िले थे जिनमें उत्तर में कोटला नाम एक क़िला ग़ाज़ी खां के मज़बूत किए हुये क़िलों में से था उसपर बादशाही फ़ौजगई दिन को लड़ाई हुई रात को क़िले वाले वैसे मज़बूत क़िले को छोड़कर भाग गए.

दूसरा क़िला नाम कोना था जो मज़बूती में कोटले से कम आलमखां इसी क़िले में रहा था.

सुल्तान इब्राहीमपर चढ़ाई.

ग़ाज़ीख़ां पर फ़ौज भेजकर बादशाह ने ख़ुदा तवक्कल-(राम भरोसे) सुलतान बहलोल लोदी के पोते और सुलतान सिकंदर के बेटे सुलतान इब्राहीम के ऊपर कूच किया जो इन दिनों में दिल्ली के तख़्त पर था और जिसके पास एक-लाख लशकर मौजूद बताया जाता था और १,००० हाथी उसके अमीरों और वज़ीरों के पास

इन कूचों वाक़ी ख़ाकानरू को देपालपुर देकर-बलख़ की मदद को रवाने किया उसके हाथ बलख़ की मसलिहत के लिये बहुतसे रुपये और बहुत सा सामान क़िलेमलूत की फ़तह का अपने भाई बंदों बेटों और बच्चों के लिये भेजा जो काबुल में थे.

वहां से नीचे एक दो कूच करने के पीछे शाह इमाद शीराज़ी ने आरायशख़ां और मुल्ला मज़हब के ख़त लाकर कुछ ख़ैरख़्वाही जताई जिन्होंने इस मुहिम में बड़ी कोशिश की थी बादशाह भी १ पयादे के साथ उनके पास महरबानी के फ़रमान भेजकर आगे रवाने हुवे.

जो लोग किमलोल की किले की मदद को छोड़े गये थे वे उन पहाड़ों में के क़िलों में से हिंदूर और कहलूर के क़िलों को लेकर और वहां के लोगों को लूटकर बादशाह से आमिले बादशाह लिखते हैं कि इन क़िलों की मज़बूती के सबब से मुद्दतों से कोई उधर नहीं गया था.

आलमख़ां भी बुरे हालों से नंगा और पयादा आ

या बादशाह ने अपने अमीरों और पासवालों को उसको पे-शवाई के लिए भेजा और घोड़े भी उसके वास्ते भेजे तब वह सलाम करने को हाज़िर हुआ.

इस तर्फ़ के पहाड़ी घाटे में कुछ लोग लूट मार करने को गये थे दो रात रहकर आये मगर कोई उमदा चीज़ हाथ नहीं आई फिर मीर हुसेन और जान बेग वग़ैरा इसी-काम को गये.

इसमाईल जलवानी वग़ैरा की दो तीन दफ़े अरज़ि-यां आई इधर से भी उनका मनचाहा फ़रमान गया.

दरों से कूच करके बादशाह रोपड़ में आये और रो-पड़ से सरहिंद के पास १ तालाब पर उतरे यहां १ हिन्दुस्ता-नी सुलतान इब्राहीम के नाम से आया उसके पास कोई काग़ज़ पत्तर तो नहीं था उसने १ आदमी वकील के तौर पर मांगा बादशाह ने उसी के मुकाबिले के १ सवार को-साथ करदिया मगर इब्राहीम ने इन ग़रीबों को पहुंचते ही क़ैद करलिया और मारने का हुक्म दिया. (१)

वहांसे बादशाह १ मंज़िल बीच में देकर १ नाले के कि-नारे पर उतरे वे लिखते हैं कि हिन्दुस्तान में नदियों से अ-लग यही १ बहता हुआ पानी है इसको कागर कहते हैं छत्ता भी इसके किनारे पर है हम इससे ऊपर को सैर कर-ने गये यह पानी छत के ३। ४ कोस ऊपर दरे से उतरता है वह दरा कुछ खुला हुवा है जिसमें ४। ५ पन चक्कियों के

(१) मगर ये मारे नहीं गये जब बादशाह ने इब्राहीम पर फ़तह पाई तो उसीवक्त छूटगये.

बराबर पानी आता है बहुत अच्छी और मज़ेदार जगह यहीं देखी गई और इस जगह हमने चार बाग़ बनाया यह पानी जंगल में एक दो कोस बहकर नदी में मिलगया है कगर से निकलने की जगह यही दरा है जहां यह पानी निकलता है वहां से ३। ४ कोस नीचे यह नदी है बरसात में बहुत सा पानी आकर कगर में मिलजाता है यह नदी सामाने और सनौम[1] में जाती है.

इसी मंज़िल में ख़बर आई कि सुलतान इबराहीम ने जो दिल्ली से इस तर्फ़ को था १ कोस और आगे कूच किया है और हमीदख़ां ख़ास ख़ैल हिसार फ़ीरोज़े का शिकदार-(कोटवाल) हिसार फ़ीरोज़ा और उस तर्फ़ का लशकर लिये हुवे हिसार से १०। १५ कोस इधर आगया है। बादशाह ने कत्ता बेग को इब्राहीम के और मोमन अत्तका को हिसार के लशकर के ख़बर लाने के लिये भेजा

२९[2]-रबीउलसानी (फागुन बदि ६। ४ फरवरी) इतवार को बादशाह अंबाले से कूच करके १ बडे तालाब पर ठहरे थे कि मोमन और कत्ता बेग आये बादशाह ने (उनकी ख़बरें) सुनकर हुमायूं को दहने हाथ की तमाम फ़ौज ख़्वाजा कलां सुलतान मोहम्मद दोलदी वलीख़ां जिन (ख़ज़ानची) ख़ुसरो बेग वग़ैरे के साथ हमीदख़ां के ऊपर भेजा.

अमीन भी इसी मंज़िल में आया वह बहुत सादा और दे लमक पठान था दिलावर ख़ां उससे नौकरी और दरजे में बड़ा था और दरबार में नहीं बैठता था और आलम ख़ां भी-

(१) सरहिंद से लेकर यहां तक ये सब स्थान अब पटिले के राज्य में हैं।

(२) छापे की किताब में २३ जमादिउल अव्वल ग़लती से लिखी है।

जो - दशाहज़ादों में से था खड़ा रहता था तोभी इसने बैठने का सवाल किया.

१४-जमादिउल-अव्वल (चैतबदि १। २६फरवरी) सोमवार के तड़के ही हुमायूं हमीदखां के सिर पर पहुंचा उसने हिले से सौ सौ और पचास पचास अच्छे जवानों को लगातार भेजदिया था वे जाकर हमीदखां के लशकर से भिड़े ही थे और मुठभेड़ हुई थी कि पीछे से हुमायूं की सवारी पहुंची जिसे देखते ही दुशमन भाग गया हुमायूं ने सौ २ आदमियों को गिराकर आधे के सिर काट लिये और आधों को जिंदा ७। ८ हाथियों समेत पकड़ लिया.

हुमायूं की इस फ़तह की खबर उसी मंज़िल में १८ शुक्रवार (चैतबदि ५। २मार्च) को ऐक मीरक मुग़ल बादशाह के पास लाया बादशाह ने उसको खासा खिलअत और एक घोड़ा खासा तवेले से दिया और जागीर देने का वादा भी किया.

२१-सोमवार (चैतबदि ८। ५मार्च) को हुमायूं के खबर भेजने पर अलीकुली और बंदूकचियों को हुक्म दिया गया कि सज़ा के वास्ते उन सब (कैदियों)'को बंदूक मारकर मार डालें.

दूसरी दिन हुमायूं ने १०० कैदियों और ७। ८ हाथियों समेत आकर मुजरा किया यह उसकी पहली चढ़ाई थी अच्छा शकुन समझा गया - भागने वालों का पीछा करके कुछ सिपाही गये थे जो हिसार फ़ीरोज़ा को लूटकर आगये हिसार फ़ीरोज़ा परगनों समेत और १ करोड़ नक़द रुपया हुमायूं को दिया गया.

फिर बादशाह वहां से कूच करके शाहाबाद में आये ख-

बर लाने के लिये कुछ लोग सुलतान इबराहीम के उर्दू में भेजे गये वहां कई दिन मुक़ाम रहा और रहमत प्यादे को फ़तह के कागज़ देकर काबुल में भेजा गया.

इसी मंज़िल में इसी दिन हुमायूंने अपने चिहरे पर उस्तरा फिराया बादशाह लिखते हैं उस दिन हुमायूं १८ बर्ष का था और मैं ४६ बर्ष का.

यहीं २८ जमादि उल अव्वल सोमवार (चैत बदि ३०। १२ मार्च) को सूरज मेषराशि पर आया इबराहीम के उर्दू से बराबर ख़बरें आने लगीं कि एक एक दो दो कोस का कूच करके एक एक मंज़िल में दो दो और तीन तीन मुक़ाम करता हुआ आता है

बादशाह भी शाहाबाद से कूच करके दूसरी मंज़िल में जमना के क़िनारे सरसावे[1] के सामने आ उतरे ख्वाजा कलां के नौकर हैदर कुली को ख़बर ल के वास्ते भेजा गया बादशाह जमना के घा पर से उतरकर सरसावा देखने को गये उसदिन उन्होंने मजून खाई हुई थी सरसावे में पानी का चशमा भी था और जगह भी अच्छी थी.

बादशाह इस तरह सेर करते हुवे आते थे कभी नाव में भी बैठजाते थे.

वहां से जमना के किनारे २ नीचे को रवाने हुवे हैदर कुलीयह ख़बर लाया कि दाऊद खां और हेतम खां ६। ७ हज़ार सवारों के साथ इबराहीम के डेरे से ३। ४ कोस इधर कोढ़ावनी डाले हुवे बैठे हैं.

(१) शायद सरसा.।

१८ जमादिउलसानी (बैसाख बदि ५। १ अप्रेल) इतवार को बादशाह ने चीन तैमूर सुलतान महदीखां मोहम्मद सुलतान मिरज़ा आदिल सुलतान को तमाम बाईं फ़ौज के आदमियों सुलतान जुनैद बग़ैरा के साथ उनके ऊपर भेजा और बीच की फ़ौज में से यूनस अली अहमदी और कत्ताबेग बग़ैरा को। ये लोग दो पहर पीछे नदी से उतर कर तीसरे पहर को रवाने हुवे और पठानों के लशकर के पास जा पहुंचे वे लोग वहां से निकल कर इबराहीम के डेरों की तर्फ़ चले गये ये दाऊदखां के बड़े भाई हैतमखां और ७०। ८० दूसरे क़ैदियों ६। ७ हाथियों को लेकर आगये क़ैदियों में से कुछ लोग सज़ा के तौर पर मारे गये.

फिर बादशाह वहां से दाहनी बाईं बीच की और आगे की फ़ौजें सजाकर रवाने हुवे वे लिखते हैं कि लशकर के आदमियों को सवार कराकर कमान या चाबुक हाथ में लेकर जैसा कि दस्तूर है लशकर का तख़मीना करते हैं और उसके मुवाफ़िक़ कहते हैं कि इस क़दर लशकर होगा मगर जितना कुछ अटकल से जानते थे उतना नज़र नहीं आया.

बादशाह ने इस मंज़िल में ठहर कर तैयारी करने का हुक्म दिया. अराबे (तोपें) ७०० हुईं बादशाह ने अली कुली उस्ता को हुक्म दिया कि रूम के दस्तूर पर अराबों के बीच में सांकलों की जगह गाय के कच्चे चमड़े के रस्से बटकर बांध देवें २ अराबों के बीच में ६। ७ तोड़े रहें जिनके पीछे बंदूक़ची खड़े होकर बंदूकें चलावें.

इस तैयारी के होने तक ५। ६ दिन मुक़ाम रहा जबसब

सामान तैयार होगये तो बादशाह ने तमाम अमीरों और खानों को जो बात करसकते थे बुलाकर सलाह की जिसमें यह बात ठहरी कि पानीपत ऐसा शहर है जिसमें महल और घर बहुत हैं उनसे १ तर्फ़ को अराबे और तोड़े जमा कर उनके पीछे बंदूकचियों को खड़े कर सकते हैं.

इसपर कूच होकर १ मंज़िल तो बीच में हुई और दूसरे दिन २९ जमादिउलसानी (वैसाख सुदि १। १२ अप्रैल) गुरुवार को। पानी पत के पास पहुंचे शहर और महलों के दहने हाथ को तोपें और तोड़े लगाये गये और बायें हाथ को खाईयां खुदाई गईं और उनके बीच में तीरंदाज़ी के लिये इतनी जगह छोड़ी गई कि जिसमें सौ सौ डेढ़ २ सौ आदमी आजावें.

बादशाह लिखते हैं कि "बहुत आदमी वहम और फिकर में पड़े हुए थे मगर वहम और फिकर करना बेजा है जो कुछ खुदाने पहिले से तक़दीर में लिख दिया है उससे और तरह नहीं होता है और उनको भी बुरा नहीं कहसकते क्योंकि वतन से दो तीन महीने की रस्तेपर आये हुए थे और १ अजनबी कौम से काम पड़ा था जिनकी ज़बान न हम जानते थे और न वे हमारी ज़बान को समझते थे। ग़नीम के हाज़िर लशकर का तख़मीना १ लाख के लगभग बताते थे उसके और उसके अमीरों के हाथी एक हज़ार के क़रीब कहे जाते थे जो उस-(इब्राहीम) के और उसके बाप के थे और नकद खजाना उसके हाथ में था और हिन्दुस्तान में १ दस्तूर है कि ऐसे वक्त में काम पड़ने पर रुपया देकर मयादी नौकर रख लेते हैं जिन को सिबंदी" कहते हैं जो वह ऐसा खयाल करता तो १ लाख

औरभी रख सकता था और खुदा उसका काम सुधारता मगर न वह अपने जवानों को राजी कर सका और न अपने खजाने को बांट सका और वह कैसे अपने जवानों को राजी कर सकता था जब कि कंजूसी उसके दिल पर बहुत छाई हुई थी और रुपया जोड़ने का बड़ा शौकीन था बेढंगा जवान था न उसका आना ढंग से था न जाना न खड़ा होना और न लड़ना "

बादशाह पानीपत में रहकर अपने लशकर के किनोरोंको अराबों तोड़ों और खंदक से मज़बूत करते रहे दरवेश मोहम्मद सारबान ने अर्ज़ की कि इतना जो ज़ाबता होगया है तो उस की क्या मज़ाल है कि जो यहां आवे बादशाह ने कहा कि क्या तू इनको उजबक के खानों कासा जानता है हम जिस बर्ष समरकंद से चलकर हिसार में आये थे तो उजबकों के सब खान और सुलतान जमा होकर हमपर आने की हिम्मत करके दरबंद के घाटे से उतरे थे तो हमने ज़नानों, मालसिपाहियों और ३० हज़ार मुग़लों को मुहल्लों में लाकर उन मुहल्लों को मज़बूत कर लिया था तब खान और सुलतान तो चलने और खड़े होने का कायदा और हिसाब जानते थे यह देखकर कि हमने हिसार में क्या मुर्दों और क्या जिंदों का ज़ाबता करके हिसार को मजबूत कर लिया है हमपर आने का हिसाब न लगासके और रस्ते ही से लौटगये तू इन लोगों को वैसा मत समझ ये हिसाब और कायदा कहां जानते हैं खुदा ने ऐसा ही किया जैसा कि मैंने कहा था. "

७।८ दिनजब तक कि बादशाह पानी पत में रहे उनके थोड़े थोड़े आदमी जाकर इब्राहीम के डेरोंपर उसके बहुत से आदमियों को दिखाई देआते थे मगर वे तो अपनी जगह से हलते

भी नहीं थे आखिर बादशाह ने हिन्दुस्तान के कई खैरख्वाह अ मीरों का कहना मानकर महदी ख्वाजा मोहम्मद सुलतान मिरजा आदिल सुलतान खुसरोशाह, मीर हुसेन सुलतान जुनेद बरलास अबदुल अजीज़ मीरआखोर मोहम्मद अली जंगजंग क़तलक कदम वलीखांजन मोहब अली खलीफा, मोहम्मद बख्शी, जानबेग और कराकूय को ४।५ हज़ार आदमियों से छापामारने के लिये भेजा मगर ये कुछ काम न करसके दिन निकलने के पीछे ग़नीम के डेरों तक पहुंचे गनीम के आदमी भी नक्कारे बजाकर और हाथियों को आगे करके निकले मगर वे भी कुछ न करसके और ये उतने बहुत आदमियों से उलझ कर सही सलामत चले आये किसी को पकड़ा या भी नहीं मोहम्मद अली जंगजंग के पांव में तीर लगा जो घातिक तो नहीं था मगर लड़ाई के दिन वह कुछ काम न देसका.

बादशाह ने यह खबर पाकर हुमायूं को उसके लशकर स हित उन लोगों को सहने १॥ कोस तक भेजा पीछेसे आपभी सवार हुवे मगर वे लोग जो छापा मारने गये थे हुमायूं के साथ आगये और दुशमन भी आगे नहीं बढ़ा था इसलिये बादशाह भी लौट आये.

रात को ग़लती से बड़ा हल्ला उठा और बादशाही लशकर में घड़ी भरतक सूरन (सिंहनाद) होता रहा जिनलोगों ने उसको नहीं देखा था वे बहुत वहम और फ़िकर करते रहे जब हल्ला बैठगया तो करावलों (हलकारों) की भेजी हुईखबर आई कि दुशमन चढ़ा चला आता है बादशाह भी ज़िरे बकतर पहिन कर और हथियार बांधकर सवार हुवे दहने-हुमायूं, ख्वाजाकलां, सुलतान मोहम्मद दोलदी हिंदूबेग-

खलीफा जिन बंकली सीस्तानी थे। बायें हाथ को दोलदी मिर्ज़ा आदिल सुलतान, हमीर हुसेन सुलतान जुनेद, कतलक कदम, जानबेग मोहम्मद बख्शी शाह हुसेन बारीकी और मुग़ल गाज़ी थे बीचकी फ़ौज के दहिनी तर्फ़ चीन तैमूर सुलतान, सुलेमान मोहम्मदी कोकलताश, शाह मनसूर बरलास यूनस अली दरवेश मोहम्मद सारबान और अबदुल्लाह किताबदार थे

कोल (बीचकी फ़ौज) के बायें हाथ को खलीफ़ा ख्वाजा मीरमीरान, अहमदी परवानची, तरुदी बेग, कोच बेग, मुहब्बअली खलीफा और मिर्ज़ा बेग तरखां थे

हिरावल (आगेको) खुसरो कोकलताश, मोहम्मद अली जंगजंग थे.

अबदुल अज़ीज़ मीर आखोर "तरह" (मददगार) था.

दहनी फ़ौज के ऊपर वली क़ज़ल मलिक क़ासिम और बाबा कशका उनके मुग़लों के साथ तोलग़मा (नगहबान) रक्खे गये थे और बाईं फ़ौज पर क़रा चूज़ी, अबुल मोहम्मद नेज़ाबाज, शेख जमाल हिंदी और तिंकरी कुली मुग़ल तोलग़मा थे इन को यह हुक्म था कि ग़नीम के नजदीक आ पहुँचने पर उस के पीछे जाकर घूमें.

लड़ाई में इब्राहीम का मारा जाना

ज्योंही ग़नीम के आने की गर्द उठी तो उसका झुकाव दहनी फ़ौज पर बहुत था इसलिये बादशाह ने अबदुल अज़ीज़ को उसकी मदद पर भेजा.

सुलतान इब्राहीम के सिपाही जो दूर से दिखाई दिये थे कि

सी जगह ठहरे बिनाही दौड़े चले आते थे पर जब उन्हों ने बादशाही लशकर की तरतीब और लामबंदी देखी तो ठहर कर कहने लगे कि खड़े रहें आवें या न आवें "

अब वे न तो खड़े रह सकते थे न पहिले की तरह दौड़े हुवे आसकते थे.

बादशाह ने हुक्म दिया कि जो लोग "तोलगमा" हुवे हैं वे ग़नीम के दहने और बायें हाथ के पीछे फिर कर तीर मारें और लड़ाई शुरू करें। और दाहने हाथ का लशकर भी जाकर पहुँचे तो लगमे वाले गनीम के पीछे से फिर कर तीर मारने लगे बायें हाथ से महदी ख्वाजा पहिले पहुँचा महदी ख्वाजा के सामने एक फ़ौज १ हाथी से आये मगर इन लोगों ने तीर मार कर उसको हटा दिया बादशाह ने जुवानग़ार (बायें हाथ की फ़ौज) की मदद पर अहमदी परवानची, तरुदी बेग, कूच बेग, और मोहम्मद अली, खुवाजा को बीच की फ़ौज में से भेजा. फिर बरूनगार (दहनी फ़ौज) में ही लड़ाई कायम हुई उसकी मदद के वास्ते मोहम्मदी कोकलताश, शाह मनसूर बरलास, यूनस अली, और सदरुल्लाह को जाने का हुक्म हुआ और ये बीच की फौज के आगे से जाकर लड़ने लगे उस्ताद अली कुली ने भी कौल (बीच के लशकर के आगे बादशाह के लशकर के सामने से जाकर तोपें मारीं मुस्तफ़ा तोपची ने भी बायें हाथ को खूब ज़रबज़न (बाण) फेंके तोलगमे वालों ने ग़नीम को पीछे से घेरकर तीरों पर रख लिया और बड़े ज़ोर शोर से लड़ना शुरू किया बरूनग़ार और कौल ने भी एक दो बार औछे २ हमले किए और मारे तीरों के दुशमनों को हटाकर फिर उसकी बीच की फ़ौज में कर दिया फिर तो दायें बायें और बीच की फौजें सब एक जगह जमा होग-

ई और धूल इतनी उड़ी कि ग़नीम न आगे बढ़ सका और न भाग सका लड़ाई पहर दिन चढ़े से शुरू हुई थी और दोपहर तक खूब होती रही।

बादशाह लिखते हैं कि जब दोपहर हुवे तो दुश्मन हारे और दोस्त खुश हुवे खुदा के फ़ज़्ल से ऐसा मुश्किल काम हमारे वास्ते आसान होगया और इतना बड़ा लश्कर आधे दिन में ही मिट्टी में मिलगया ५।६ हज़ार आदमी इब्राहीमके पास १ जगह मारेगये और जगह २ भी मुरदे पड़े थे हमने १५।१६ हज़ार का तख़मीना किया आगरे में आने पर हिंदुस्तानी लोगों के कहने से मालूम हुआ कि ४०।५० हज़ार आदमी इस लड़ाई में मरे थे बाक़ी को ज़ेर करके और गिरा कर हम रवाने हुवे अरदली के अमीर पठानों को गिरा २ कर लाने लगे महावतों ने झुंड के झुंड हाथी लाकर नज़र किये।

बादशाह कुछ लोगों को आगरे के बंदोबस्त पर रवाने करके इबराहीम के लश्कर में उसके डेरे और तंबुओं को देखते हुवे संदाये(१) के किनारे पर उतरे तीसरे पहर को खलीफ़ा के छोटे भाई ताहिर तबरेज़ी मुर्दों में से ढूंढ कर इबराहीमका सिर काट लाया।

फिर बादशाह ने हुमायूं मिरज़ा, ख्वाजा कलां मोहम्मदी, शाह-मनसूर बरलास, यूनस अली अबदुल्लाह, और वली ख्वाजिन (खज़ानची) को हुक्म दिया कि कुडी सवारी से जाकर आगरे में अमल करें और वहां के खजानों को जब्त

(१) नदी

करले

महदी ख्वाजा मोहम्मद, सुलतान मिरज़ा, आदिल सुलतान जुनेद बरलास और कतलक क़दम को हुक्म हुवा कि धावा करके दिल्ली के क़िले में जावें और खजानों का ज़ाबता रखें.

दूसरे दिन १ कोस चलकर घोड़ों को आराम देने के लिये जमना के किनारे पर मुकाम हुवा फिर २ मंजिल चलकर मंगल को दिल्ली पहुंचे और शेख निजामुद्दीन औलिया की ज़ियारत की और शहर के सामने जमना के किनारे पर मुकाम किया रात को जाकर किला देखा और वहीं रहे

तड़केही किले में जाकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन की क़बर की परिक्रमा दी सुलतान गयासुद्दीन बलबन, सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के मकबरे, मीनारे, होज़ शमशी, होज़ खास, सुलतान बहलोल और सुलतान सिकंदर के मकबरे और बाग़ देखे फिर उर्दू में आकर नाव में बैठे और अरक़ पिया.

दिल्ली की शिकदारी (कोटवाली) वलीबेग फ़रमली को इनायत की दोस्त बेग को दिल्ली का दीवान किया और खजाने मोहर लगाकर उसको सौंपे.

जुमेरात को दिल्ली से कूच होकर तुग़लकाबाद के बराबर जमना पर डेरे हुवे जुमे को वहीं पड़ाव रहा मौलाना महमूद और शेख जैन वगैरा ने जाकर दिल्ली की जुमा मसजिद में बादशाह के नाम का खुतबा पढ़ा. बादशाह फकीरों और ग़रीबों को कुछ रुपया बांटकर उर्दू में आगये

मंगल को आगरे की तर्फ़ कूच हुवा बादशाह तुग़लकाबाद को देखकर उर्दू में आगये

जुमा २२ रज्जब (जेठ बदि ८। ४ मई) को बादशाह आग

गरे पहुंचकर सुलैमान फ़रमली के डेरे में उतरे मगर यह जगह दूर थी इसलिये दूसरे दिन वहांसे जलालखां जगहट के मकानों में आ गये.

हुमायूं जो पहिले से पहुंचगया था उससे क़िले वाले हीले बहाने कर रहे थे और वह इन लोगों को बेसिरा देखकर ख़ज़ाना बचाने के लिये रस्ता रोके बैठा था। गवालियार के राजा बिक्रमाजीत के बेटे और ज़नाने जो आगरे में थे हुमायूं के आनेसे भागने की फ़िक्र में थे और हुमायूं के आदमी उनको घेरे हुवे थे और लूटना चाहते थे मगर हुमायूं नहीं लूटने देता था इससे राज़ी होकर उन्होंने बहुत से जवाहर हुमायूं के नज़र किये उनमें १ हीरे के बाबत ऐसा मशहूर है कि सुलतान अलाउद्दीन कालाया हुआ है और उसका मोल तमाम दुनिया के आधे दिन का ख़र्च बताया गया था वह तौल में ८ मिसक़ाल (३६ माशा) का होगा जब बादशाह आये तो हुमायूं ने उनके नज़र किया मगर उन्होंने हुमायूं को ही बख़्श दिया.

बिक्रमाजीत के बापदादे १००. साल पहिले से ग्वालियर में राज करते थे सुलतान सिकंदर ग्वालियर के वास्ते कई साल तक आगरे में बैठा रहा था इब्राहीम के ज़माने में आज़म हुमायूं शिरवानी बहुत अरसे तक क़िले गवालियर से चिपटा रहा आख़िर सुलह करके लेलिया और शमशाबाद राजा बिक्रमाजीत को दिया बिक्रमाजीतभी इब्राहीम के साथ काम आगया.

क़िलेके सिपाहियों में मलिकदाद करांणी, मलेसूर, और फ़ीरोज़खां मेवानी कुछ समझदार थे बादशाह ने उनकी अर्ज़ के मुवाफ़िक़ मेहरबानी करके कसूर माफ़ करादिये सुलतान

इब्राहीम की मांको ७ लाख रुपये नक़द इनायत किये और आगरे से १ कोस पर जमना के नीचे रहने को मकान दिया सुलतान इब्राहीम के एक एक अमीर को परगने दिये.

२७ रज्जब शनिवार (जेठ बदि १४। १० अप्रैल) को बादशाह आगरे में जाकर इब्राहीम के महल में उतरे

बादशाह की पिछली कोशिश हिन्दुस्तानके वास्ते

बादशाह लिखते हैं कि "जबसे कि सन ९१० (संबत १५६१। ६२ सन १५०४। १५०५) में काबुल लिया गया था आजतक हमेशा हिन्दुस्तान लेने की हवस रहती थी कभी अमीरों की सुस्ती से और कभी भाईयों की दावेदारी से हिन्दुस्थान पर चढ़ाई न होसकी आखिर जब ऐसी कोई रुकावट न रही और छोटे बड़े अमीरों में कोई हमारे मतलब के खिलाफ़ बात नहीं कर सका तो सन ९२५ (संबत १५७५। ७६) में मैंने चढ़ाई करके बिजौर का किला २। ३ घड़ी में ज़ोर से लेलिया. और वहां के आदमियों को कतल करके बहीरे में गया मगर वहां लूट मार नहीं की और वहा वालों को अमन देकर नक़द और जिन्स करके ४ लाख शाह रुखी ली और ७। ९ के हिसाब से फौज वालों को बांटकर काबुल में लौट आया."

"उसदिन से सन ९३२ तक ७। ८ बर्ष में ५ बेर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की पांचवी बेर में खुदा ने अपने फ़ज़ल और करम से सुलतान इब्राहीम जैसे ग़नीम को बरबाद किया और हिन्दुस्तान जैसी वलायत हमको फ़तह करादी."

"पैग़म्बर साहिब के ज़माने से लेकर इसवक्त तक उधर के ३

आदमियों ने हिंदुस्तान फ़तह करके बादशाहत की है :—

(१) सुलतान महमूद और उसके बेटे पोते बहुत बर्षों तक हिंदुस्तान के तख़्त पर बैठे हैं.

(२) शहाबुद्दीन ग़ोरी उसके गुलाम और नौकर बहुत मुद्दत तक इन मुलकों में बादशाही करगये हैं.

(३) तीसरा मैं हूं मगर मेरा हाल उन बादशाहों के हाल से मिलताहुआ नहीं था क्योंकि सुलतान महमूद ने जब हिंदुस्तान फ़तह किया तो ख़ुरासान का तख़्त उसके कबज़े में था-ख़्वारज़म और तूरान के बादशाह उसके ताबेदार थे और समरकंद का बादशाह भी उसके हाथ के नीचे था लशकर भी उसका जो २ लाख नहीं, तो १ लाख में तो क्या शक था फिर तमाम हिन्दुस्तान का एक बादशाह नहीं था हर मुल्क में १ राजा अपने मते से राज करता था.

दूसरे सुलतान शहाबुद्दीन जो ख़ुरासान का बादशाह न था-तो उसका भाई ग़यासुद्दीन बादशाह था तबक़ाते[१] नासिरी में लिखा है कि एक दफ़ै उसने १ लाख ८०० हज़ार बकतर पाखर वालों सवारों के साथ हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की थी-उस के दुशमन भी कई राजा और राय थे तमाम हिन्दुस्तान में एक ही आदमी मालिक नहीं था.

मैं जब बहीरे में आया तो ज़ियादा से ज़ियादा १५०० या २००० आदमी होंगे पांचवी बेर जबकि आकर सुलतान इब्राहीम को ज़ेर और हिन्दुस्तान को फ़तह किया तो कभी हिन्दुस्तान में इतने आदमी नहीं लायेगये थे. नौकर सौदागर जागीरदार, और सब

(१) एक तवारीख

आदमी जो लशकर के साथ थे १२००० लिखे गये थे और जो मुल्क मेरे ताबे थे वे बदख़शान, कंधार, काबुल और कुंदुज़ थे मगर इन मुल्कों से पूरा फ़ायदा नहीं था बल्कि बाज़ी विलायतें जो गनीम (उजबक) के नज़दीक थी वे ऐसी थीं कि जिन को बड़ी मदद करनी पड़ती थी तूरान (बापोती) की दूसरी सब विलायतें उजबक सुलतानों और खानों के क़ब्ज़े में थीं जो पुराने दुश्मन थे और जिनके लशकर का तख़मीना १ लाख के क़रीब कियाजाता था फिर हिन्दुस्तान की बादशाही बहीरे से बिहार तक पठानों के नीचे थी जिनका बादशाह सुलतान इब्राहीम था जिसका लशकर हिसाब से तो ५ लाख होना चाहिए था लेकिन उसवक़्त पूर्ब के बाज़े अमीर बागी थे जिससे उसके हाजिर लशकर का तख़मीना १ लाख कहा जाता था उसके और उसके अमीरों के पास हाथी कहते हैं कि १००० के क़रीब थे. तोभी मैं इतने से मुल्क और लशकर के साथ उज़बक जैसे १ लाख बाग़ियों को पीठ के पीछे छोड़कर सुलतान इब्राहीम जैसे बहुत से लशकर और बहुत से मुल्कों के मालिक के सामने हुआ ख़ुदाने मेरी महनत अकारथ नहीं जानेदी और ऐसे ग़नीम को मेरे आगे तबाह[1] किया और हिन्दुस्तान जैसी लम्बी चौड़ी बादशाही मुझे फ़तह करादी इस फ़तह को मैं अपने ज़ोर और क़ुव्वत से नहीं देखता हूं और न इस दौलत को अपनी हिम्मत और कोशिश से जानता हूं बल्कि ख़ुदा के करम और फ़ज़ल से मानता हूं."

---

(१) नष्ट

हिन्दुस्तान के राजा और बादशाह.

बादशाह लिखते हैं कि "हिन्दुस्तान के मुल्क लंबे चौड़े आबादियों और पैदावार से भरे पड़े हैं पूर्व दक्षिण बल्कि पश्चिम में भी समरकंद तक जाकर खतम होते हैं उत्तर में १ पहाड़ है जो हिन्दूकुश पहाड़ काफ़िरस्तान और कशमीर के पहाड़ों से मिला हुआ है और जिसके पश्चिम और उत्तर में काबुल, ग़ज़नीन, और कंधार हैं तमाम हिन्दुस्तान का तख़्त दिल्ली में रहा है सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पीछे से सुलतान फ़ीरोज़शाह के आख़ीर ज़माने तक हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा हिस्सा दिल्ली के सुलतानों के नीचे रहा था इसदिनों जबकि मैंने हिन्दुस्तान को फ़तह किया है ५ बादशाह मुसलमान और दो हिन्दू हिन्दुस्तान में बादशाही करते थे छोटे २ राजा और राय और भी पहाड़ों और जंगलों में बहुत से थे मगर बड़े और जमे हुवे तो यही (७) थे. १ तो पठान थे कि जिनके पास दिल्ली का तख़्त था बहीरे से बिहार तक कब्ज़ा किये हुवे थे पठानों से पहिले जोनपुर सुलतान हुसेन शर्क़ी के पास था इन लोगों को पूर्वी कहते हैं इनके दादे पर दादे सुलतान फ़ीरोज़शाह के सक्के (पानी रखनेवाले) थे मगर फ़ीरोज़शाह के बाद जोनपुर का मुल्क दबा बैठे उसवक़्त दिल्ली सुलतान अलाउद्दीन के हाथ में थी ये लोग सैयद थे जब तेमूरबेग (अमीर तेमूर) ने दिल्ली लीथी तो उसकी हुकूमत इनको दी थी. फिर सुलतान बहलोल लोदी और उसके बेटे सिकंदर ने दिल्ली से जोनपुर तक अमल करलिया और दोनो तख़्त पर एकही बादशाह बैठने लगा.

२ गुजरात में सुलतान मुज़फ़्फ़र था वह इब्राहीम के मारने से थोडे दिन पहिले ही मरगया था बड़ा मज़हबी बादशाह था इल्म काभी शौकीन था "हदीस" पढ़ा करता था और हमेशा कुरान लिखता रहता था इन लोगों को नानेक (१) (टांक) कहते हैं इनके बाप दादा भी सुलतान फ़ीरोज़ शाह वग़ैरा बादशाहों के शराब- दार थे और फ़ीरोज़ शाह के पीछे गुजरात के मालिक होगये.

३- दक्षिण में बहमनी हैं मगर इसवक़्त इन बहमनी बादशाहों का ज़ोर और अख़्तियार नहीं रहाहै इनकी तमाम विलायतें बड़े २ अमीर दबा बैठे हैं इनको जिस चीज़ की ज़रूरत होती है अपने अमीरों से मांगते हैं.

४- मालवे में जिसे मंडूभी कहते हैं सुलतान महमूद था इनलोगों को खिलजी कहते हैं मगर इसको राना सांगा ने ज़ेर करके अकसर विलायतें इनकी छीन ली हैं यहभी कमज़ोर होगया है इसके बापदादे भी सुलतान फ़ीरोज़ शाह के पाले हुवे थे और उसके पीछे मालवे को दबा बैठे.

५- बंगाले में नुसरत शाह था इसका बाप बंगाले का बादशाह हुआ था सैयद था सुलतान अलाउद्दीन कहलाता था यह सल्तनत उसको मीरास (बापोती) में मिली थी अजब बात

(१) फ़ारसी लिपि में नुकतों की गलती होजाने से हर्फ़ कुछ के कुछ पढ़े जाते हैं जैसे गुजरात के बादशाहों की जाति टांक थी परन्तु नुक़तों की गलती से पिछले लोगों ने टांक को नानक पढ़ा और लिखा और वही फ़ारसी तवारीखों में चल पड़ा - गुजरात के बादशाह असल में टांक जाति के कलाल थे और फ़ीरोज़ शाह के राज में उनमें से २ भाई मुसलमान होकर सुलतान फीरोज़ शाह को शराब पिलाया करते थे.

है कि बंगालेमें भीरसम कम होती है मुख्य बादशाह तख्त है वज़ीरों और मन्सबदारों के लिये भी जगह मुकर्रर है बंगालियों के नज़दीक वह तख्त और वह हरेक जगह पुख्ता है हरजगह के वास्ते हाकिम और मातहत नौकरों चाकरों में से मुकर्रर हैं जिसको बादशाह चाहताहै उस जगहसे दूर करके दूसरे को बैठा देताहै फिर वहांके सब नौकर चाकर और अमले के लोग उसी के होजातेहैं बल्कि बादशाह के तख्त की भी यही हालतहै कि जो कोई बादशाह को मारकर उस तख्त पर बैठने तक की फुरसत पालेताहै वही बादशाह होजाताहै और वज़ीर सिपाही और रैयत सब उसके हुक्म में होजातेहैं अगले बादशाह की तरह उसे बादशाह मान लेतेहैं बंगालियों का कहना यहीहै कि हम तो तख्त के हलाल खोरहैं जो कोई तख्त पर हो उसी के ताबेदारहैं"

"नुसरत शाह के बाप अल्लाउद्दीन के पहले १ हबशी अगले बादशाह को मारकर तख्त पर बैठगया और मुद्दत तक बादशाही करताहा उस हबशी को सुलतान इब्राहीम मारकर अचानक तख्त पर जाबैठा और बादशाह होगया सुलतान अल्लावद्दीन के पीछे अबउसका बेटा मीरासी[1] के तौरपर बादशाह हुआहै"

"बंगाले में यह भी दस्तूर है कि जो बादशाह हो उसको चाहिये कि नया खज़ाना जमाकरे खज़ाना जमा करना इनलोगों में बड़ी बड़ाई की बात है एक दूसरी रसम यह भी है कि खज़ानों बल्कि बादशाहों के सब कारखानों के वास्ते क़दीम से मुक़र्रर की हुई जमा परगनों की लगी हुई है जो हरगिज दूसरी जगह खर्च नहीं होती बड़े आदमी हिन्दू

(१) बापकी जगह पानेवाला.

मुसलमान और साहिब लश्कर बहुत हैं।"

"यह बात तो ५ बादशाहों की हुई हिंदुओं में से बहुत बड़ा राजा बड़े मुल्क और बड़े लश्कर वाला बीजानगर का है दूसरा राना सांगा है जो इन्हीं दिनों में अपनी बहादुरी और तलवार से इतना बड़ा होगया है उसकी असली वलायत तो चीतोड़ है मगर मंडू के बादशाहों की बादशाही में खलल पड़ने से बहुत सी वलायतें जो मंडू से इलाका रखती थीं दबा बैठा है जैसे रणथंभोर, सारंगपुर, भेलसा, चंदेरी। मगर चंदेरी कई बर्ष से दारुलहरब (हिंदुओं का घर) हो रही थी और राना सांगा के बड़े आदमियों में से मेदनी राय वहां रहता था मैंने सन ९३४ (संबत १५८०) में २ घड़ी में ही उसको अपने ज़ोर से ले लिया और हिंदुओं का क़तल आम करके मुसलमानों का घर बना दिया इस का बयान आगे लिखा जावेगा।"

"हिन्दुस्तान के किनारों में और भी बहुत से राव और राजा हैं कुछ तो मुसलमानों के ताबेदार हैं और कुछ रस्ते की दूरी और जगह की मज़बूती से मुसलमान बादशाहों की बंदगी नहीं करते हैं"

ख़ज़ाना बांटना और दूसरे काम

३०[1] रज्जब शनिवार (जेठ सुदि २। १२ मई) से ख़ज़ाना देखना और बांटना शुरू हुआ हुमायूं को ७० लाख रुपये खज़ाने से दिये गये १ ख़ज़ाना बिना जांच किया हुआ

(१) मूल में २९ शनिवार है परन्तु हिसाब से ३० शनिवार चाहिये॰

और दूसरा भी वैसाही हुमायूं को इनायत हुआ बाज़े अमीरों को १०।१० और बाज़ों को ८।८।७।७ और ६।६ लाख दिये गये अफ़ग़ान, हज़ारा अरब, बलोच और हर क़ौम के लोग जो लशकर में थे उनको उनकी हालत के मुवाफ़िक़ खजाना से नक़द इनाम मिला हर सौदागर, तालिब इल्म (विद्यार्थी) बल्कि जो कोई लशकर में था सबने इनाम और बख़शिश से पूरा २ अपना हिस्सा पाया जो लोग लशकर में नहीं थे उनके वास्ते भी इस ख़ज़ाने से बहुत से इनाम और बख़शिशें भेजी गईं कामरां को १७ मोहम्मद ज़मान मिरज़ा को १५ इतने ही असकरी और हिंदाल बल्कि सब छोटे बड़े सगे सम्बंधियों को भी बहुत से रुपये अशरफ़ी जवाहर और लौंडी ग़ुलाम सौग़ात में भेजे गये उधर के अमीरों और उनके सिपाहियों के लिये भी बड़ी बड़ी रक़में गईं समरकंद, ख़ुरासान, काशग़र और इराक़ में जो भाई बंद और रिश्तेदार थे उनके वास्ते भी सौग़ातें भेजी गईं जो मोलवी मुल्ला ख़ुरासान और समरकंद में थे उनके वास्ते भी भेंटे भेजी मक्के और मदीने को भी थैलियां गईं काबुल की विलायत में जितने मर्द औरत और बच्चे थे सबको एक एक शाहरुख़ी इनाम में मिली

लोगों का दूर भागना.

बादशाह लिखते हैं कि "हमारे पहिले पहल आगरे में आने पर हमारे आदमियों और यहां के अनोखे लोगों में अजब नफ़रत और ग़ैरत थी रैयत और सिपाही हमारे आद-

मियों की आवाज़ से दूर २ भाग जाते थे कुछ अरसे से दिल्ली-आगरे वालों और तमाम उन लोगों ने जिनके पास क़िले थे अपने किलों को मजबूत करके बंदगी और तावेदारी नहीं की संभल में क़ासिम संभली था बयाने में निज़ामखां था मेवात में हसनखां मेवाती था येही बेईमान आदमी झगड़ों और बखेड़ों का चलाने वाला था धोलपुर में मोहम्मद ऐबून था गवालियर में तातारखां सारंगखानी था राहेरी में हसन खां लोहानी था इटावे में कुतुबखां था कालपी में आलम खां था कन्नौज में और गंगा के पार तो साराही मुल्क बाग़ी पठान नसीरखां लोहानी मारूफ़ फ़रमली और दूसरे अमीरों के पास था जो सुलतान इबराहीम के मरने से तीन बर्ष पहिले ही बाग़ी होगये थे और जिन दिनों में कि मैंने इबराहीम को हराया था क़न्नौज और उधर की वलायतों पर क़बज़ा करके क़न्नौज से दो तीन कूच इधर आकर बैठे हुये थे और दरियाखां के बेटे बहादुरखां को बादशाह बनाकर सुलतान मोहम्मद नाम रख छोड़ा था."

"महाबन में मरग़ूब नाम एक गुलाम था जो इतना पास होने पर भी कुछ अरसे तक नहीं आए"

जब हम आगरे में आये तो गरमी के दिन थे सब लोग मारे वहम के भाग गये थे घोड़ों के वास्ते दाना और चारा नहीं मिलता था रैयत नफ़रत और ग़ैरियत से बाग़ी होकर चोरी करने लगी थी रस्ते जारी नहीं हुवे थे हमें इतनी फ़ुरसत नहीं हुई थी कि खजानों को बांट कर हर परगने और हर जगह में मज़बूत आदमी भेजें दूसरे उस बरस गरमी ज़ियादा पड़ने और लू चलने से आदमी गिर २ कर मरने लगे

थे इससे अकसर अच्छे जवानों और अमीरों ने दिल छो
ड़ दिया था वे हिंदुस्तान में रहने पर राज़ी नहीं थे
बल्कि जाने लगे थे अगर बड़ी उमर के और तजरुबे
के अमीर ऐसी बातें कहें तो कोई बुराई की बात न हो म
गर जो ऐसी बातें कहते थे उनमें तो इतनी अकल औ
र समझ नहीं थी जो कहने के पीछे उसके भले बुरे को
पहुंचे या उसमें फर्क करें मैंने जो काम अपने ऊपर उठा
या और जिसका पक्का इरादा कर लिया था तो उससे
दूसरी तरह की बातें बार बार कहने में क्या मज़ा था छो
टे छोटे आदमियों से ऐसी रूखी फीकी सलाह देना क्या
बात है बात यही है कि इस बार जबकि मैंने काबुल से सवा
री की तो छोटे और नाचीज़ लोगों में से कितने एक को नई
अमीरी दी थी और इनसे यह उम्मेद थी कि जो मैं आग और
पानी में होकर निकलूंगा तो ये भी बेधड़क मेरे साथ आवें
गे और साथही निकलेंगे और जिधर मैं जाऊंगा उधर ही
यह भी मेरी तर्फ़ होजावेंगे न कि मेरे मतलब से उलटी बा
त करें और मैंने सबकी सलाह और एकसे जिस काम
के करने का पक्का इरादा किया है उसके होने से पहले
पलट जावें यह निकले सो निकले मगर अहमदी पर
वानची और वली खां जिन तो इनमें से भी बुरे निकले
काबुल से आकर इब्राहीम को ज़ेर करने और आगरा ले
ने के कई दिन पीछे ही उनको सब बातें बदल गईं
लौट चलने पर जिद करने वाला जो कोई था वह
यही ख्वाजा कलां था लोगों की बेदिली देखकर तमाम
अमीर बुलाये गये और सलाह पूछी गई मैंने कहा

बादशाहत और मुल्कगीरी बगैर सामान और हथियारों के नहीं होती है बादशाही और अमीरी बगैर नौकर और विलायत के नहीं होसकती है जबकि हम कई बर्ष खपकर बड़ा लंबा रस्ता काटकर अपने और अपने लशकरकेलड़ाईयों की जोखम में डालें और खुदा की इनायत से इतने बहुत बागियों को चूर कर इतनी बड़ी सलतनतों और विलायतो को लेलें तो अब क्या ज़ोर आकर पड़ा है और क्योंज़रूर हुवा है कि जो तोड़ कर ली हुई ऐसी विलायतों को यों ही छोड़ कर फिर काबुल में जावें और फिर तंगी और तकलीफ़ की बला में फसें अब जो कोई कि खैरख्वाह हैं वह फिर ऐसी बातें न कहें जब न रह सकें और जाना ही चाहें तो जाने से न चूकें। ऐसी ठीक बातें और दलीलें लोगों के दिलों में बैठाकर उनको फिकरों से छुड़ाया मगर ख्वाजाकलां का दिल रहने को नहीं चाहा इसलिये ऐसा ठहराया गया कि ख्वाजा कलां के पास नौकर बहुत हैं वही सौगातों को लेकर जावे काबुल और गजनी में भी १ ही आदमी है उनका भी वही ज़ाबता रखे (इसपर) मैंने गज़नी गुरदेज़ और सुलतान मसऊदी का हजारा ख्वाजा कलां को दिया और हिन्दुस्तान में भी कहराम का परगना जो ३। ४ लाख की जमा का था इनायत किया ख्वाजा मीर मीरकामी काबुल जाना ठहरा और सौगातें उसके जिम्मे लगाई गईं मुल्ला हसन सर्राफ और २ हिन्दू नौकर उसके पासतईनात किये गये।"

ख्वाजा कलां जो हिन्दुस्तान से नफ़रत करता था जाते हुवे दिल्ली के मकानों की दीवारों पर यह लिखता गया कि जो खैरियत और सलामती से सिंध से उतर जाऊं औ-

र फिर हिंदुस्तान का इरादा करूं तो मेरा काला मुंह हो॰

जबकि हम हिंदुस्तान में रहते हैं फिर ऐसी मसखरी की बात कहने और लिखने का क्या काम था उसके जानेमे १ नाराजी थी तो इस तौर की मसखरी करने से २ हो गई मैंने भी १ रुबाई (चौपाई) कही (१)

बादशाह का बंदोबस्त

बादशाह ने मुल्ला अपाक को जिसने अपने भाई बंदों को जमा करके २।३ बर्ष पहिले से अच्छी जमइत कर ली थी कोल में भेजा और बरकजई और सिंधु नदी के किनारे के कुछ पठानों को भी उसके साथ किया उधर सिपाहियों और तरकसबंदों के पास भी खातिर तसल्ली के फरमान भेजे॰

शेख गोरन ने बड़ी भाव भक्ति से आकर बंदगी की और अंतरवेद के तरकश बंदों में से भी २।३ हज़ार को लाकर नौकर कराया॰

अलीखां फरमली का बेटा और उसके भाई बंद जो दिल्ली और आगरे में थे यूनसअली से जबकि वह हुमायूं से बिछड़ गया था कुछ लड़का भाग गए थे और यूनसअली उसके बेटों को पकड़ लाया था बादशाह ने उनमें से १ लड़के को महरबानी के फ़रमान के साथ अलीखां के पास भेजा जो मेवात के बखेड़े से चला गया था और २५ लाख की जागीर भी उधर के परगनों

(१) मूल ग्रंथ में यह नहीं लिखी है लिखी होती तो इसका भी अर्थ लिखा जाता

मेंसे उसको दी॰

सुलतान इब्राहीम ने मुस्तफा फरमली और फ़ीरोज़ खां सा
रंग खानों को कई अमीरों के साथ पूरबके बागी अमीरों पर भेजा
था मुस्तफा ने उन बागी अमीरों से कई बार खूब२ लड़ाइयां की॰
और उनको हराया मगर फिर मुस्तफा मरगया उसवक्त सुलतान इ
ब्राहीम लड़ाई की तैयारी कर रहाथा मुस्तफा के छोटे भाई शे-
ख बायज़ीद ने अपने भाई के आदमियों को संभाल लिया
अब वह भी फ़ीरोज़ खां॰ महमूद खां फ़रहानी॰ और क़ाजी ज़िया
के साथ बादशाह के पास आया बादशाह ने सबकी खातिर औ
र रिआयत उनकी इच्छा से बढ़कर की फीरोज खां को जौनपुरसे
१ करोड़ ३ लाख बायज़ीद को १ करोड़ ३ लाख महमूद खां को गा
ज़ीपुर से ३५ लाख और क़ाजी ज़िया को भी जौनपुर से २० लाख
की जागीर दी॰

दरबार.

ईद शव्वाल (सावनसुदि ३। १२ जौलाई) के कई दिन पी
छे सुलतान इब्राहीम के जनाने महल में पत्थर के थंभो वाले
दालान के गुंबद के नीचे बड़ा दरबार हुआ जिसमें हुमायूं को
चार कुब्ब कमर शमशेर तपचाक (घोड़ा) सोने की जीन का
मिला हसन तैमूर सुलतान महदी ख्वाजा और मोहम्मद सुलतान
को भी चार कुब्ब कमर शमशेर और कमर खंजर का इनाम
हुवा ऐसे ही इनाम दूसरे अमीरों को और जवानों को भी द
रजे वार मिले जिनके नाम नलिखकर बादशाह ने यह अंक
ड़े इनाम का लिख दिया है

(१) तपचाक (घोड़ा) सुनहरी जीनका १

(२) कमरशमशेर २

(३) जड़ाऊ खंजर २५

(४) जड़ाऊ कटार १६

(५) जड़ाऊ जमधर २

(६) चार कुल्बक्ष मोज (जोड़े)

(७) चकमन (चपकन) बानातके २८ जोड़े

इस बार के दिन पानी बहुत बरसा १३ बार बरसा बाज़े आदमी जो बाहर से आये थे सब भीग गये

संभल में अमल.

मोहम्मदी बेग को सामाने की विलायत देकर हिन्दू बेग कत्ताबेग, मलिक कासिम, बाबा क़शक़ा, को भाई बंदों और मुल्ला अपाक़ को अंतर बेद के तरकश बंदों के साथ संभल पर दौड़ाया गया था क़ासिम संभली ने ३।४ बार आदमी भेजकर कहलाया था कि बब्बन हरामखोर ने संभल को घेर कर तंग कर रखा है दौड़ कर आओ तो अच्छा है.

बब्बन ने भागकर पहाड़ की आड़ पकड़ी थी और भागे बिछड़े पठानों को जमा करके और इस बादशाह गर्दी में जगह खाली पाकर संभल को जा घेरा था हिन्दूबेग और कत्ता बेग वग़ैरा जो दौड़कर गये थे अहार के घाट से नदी को उतरने लगे मलिक कासिम ने बाबा क़शका को उसके भाईयों सहित पहिले से ही अलग कर दिया था वह नदी से उतरकर अपने १००।१५० भाईयों से धावा करके दोपहर

छे ही संभल में जा पहुँचा बब्बन भी तैयार होकर अपने उर्दू में निकला दोनों क़िले को पीठ के पीछे छोड़ कर लड़े बब्बन ठहर नहीं सका भाग निकला मलिक क़ासिम ने उसके बहुत से आदमियों के सिर काट लिये कई हाथी और बहुतसे घोड़े लूटे दूसरे दिन बाक़ी अमीर भी पहुँचे क़ासिम संभली आकर मिला मगर क़िला सौंपने में टालटूल करने लगा आख़िर १ दिन शेख़ गोरन हिन्दू बेग वग़ैरा से बात मिलाकर कासम संभली को १ बहाने से इनके पास लाया उधर बादशाही नोकरों ने क़िले में घुसकर क़ासिम की औरत और उसके इलाक़ेदारों को सही सलामत निकाल कर बाहर भेज दिया.

बयाना.

बादशाह ने बयाने के निज़ाम ख़ां को भी नर्म गर्म फ़रमान भेजे और उनमें अपना कहा हुआ एक क़िताआ (पद) भी लिखा जिसका मतलब यह था कि-

"अय मीर बियाना तुर्क के साथ झगड़ा मतकर
तुर्क की चालाकी और मर्दानगी ज़ाहिर है
जो तू जल्दी नहीं आता है और नसीहत नहीं सुनता है,
तो जो ज़ाहिर है उसके बयान करने की क्या हाजत है."

बयाने का क़िला हिन्दुस्तान के मशहूर क़िलों में से है उस बेवक़ूफ़ आदमी ने उसकी मज़बूती का भरोसा करके अपने होसले से जियादा चीज़ें मांगी बादशाह उसको ठीक जवाब न देकर क़िला तोड़ने का सामान करने लगे.

धोलपुर.

मोहम्मद जेतून के पास भी वैसे ही फ़रमान लिखकर बाबा कुली बेग के हाथ भेजे थे इसने भी टाल बताकर राना सांगा की चढ़ाई का बहाना किया.

राना सांगा और खंडार.

बादशाह लिखते हैं कि "जब हम काबुल में थे तो राना ने खैरख्वाही से एलची भेजकर यह बात ठहराई थी कि जब बादशाह उधर से दिल्ली तक आजावेंगे तो मैं आगरे की तर्फ़ कूच करूंगा मैंने इब्राहीम को ज़ेर करके दिल्ली और आगरा ले लिया वहां तक भी इस हिन्दू की तर्फ़ से कुछ हरकत ज़ाहिर न हुई मगर इसने कई मंज़िल बढ़कर खंडार का किला जो मुकन के बेटे हुसेन के कब्ज़े में था घेर लिया हसन के आदमी कई दफ़े आये पर मुकन अब तक नहीं आकर मिला था और आस पास के किले इटावा, धोलपुर, गवालियर, और बयाना ही हाथ नहीं आये थे और पठान जो पूर्व में दुश्मन और सरकश हो रहे थे कनौज से २।३ कूच आगरे की तर्फ़ आकर छावनी डाले बैठे थे पास ही के कोनों कुचालों से अभी दिलजमई नहीं हुई थी इसलिये मैं उसकी मदद के वास्ते आदमियों को अपने पास से अलग न करसका ३ महीने के पीछे हसन ने लाचार होकर उससे सुलह करली और खंडार का क़िला सौंप दिया.

राहरी.

हुसेनखां जो राहरी में था वहम से क़िला छोड़कर निकल आया बादशाह ने मोहम्मद अली जंग जंग को राहरी देदी.

इटावा

कुतुबखां जो इटावे में था उसके पास भी बादशाह ने कई बार फुसलाने और धमकाने के फ़रमान भेजे थे और लिखा था कि आकर हमसे मिले मगर वह भी क़िला छोड़कर नहीं आया तब बादशाह ने इटावा महदी ख़्वाजा को इनायत करके मोहम्मद सुलतान मिरज़ा सुलतान मोहम्मद दोलदी, मोहम्मद अली जंग जंग अबुल अज़ीज़ मीर आखोर, को कुछ दूसरे अमीरों और पास रहने वालों के साथ बहुत से आदमियों से उसकी मदद के लिये इटावे पर भेजा.

क़न्नौज.

क़न्नौज सुलतान मोहम्मद दोलदी को दीगई फ़ीरोज़खां महमूदखां, शेख़ बायज़ीद कीज़ी ज़िया भी जिनको बड़ी रआयत करके पूरब में परगने दियेगये थे इटावे पर तइनात हुवे

धोलपुर

मोहम्मद जेतून धोल पुर में बैठा हुआ बहाने करता

था और हाजिर नहीं होता था इसलिये धोलपुर सुलतान जुनैद बरलास को इनायत होकर आदिल सुलतान, मोहम्मदी कोकलताश शाह मनसूर बरलास कतलक़ क़दम वलीखां ज़नबेग, अबदुल्लाह पीरकुली, शाह हुसेन वग़ैरा की नौकरी बोली गई कि ज़ोर डालकर धोलपुर को लेलेवें और सुलतान जुनैद बरलास को सौंप कर बयाने पर ले जावें.

हुमायूं की पूर्व पर चढ़ाई.

इनलशकरों के तईनात करने के पीछे बादशाह ने तुर्क और हिंदी अमीरों को सलाह के वास्ते बुलाकर यह बात उठाई कि पूर्व के बाग़ी अमीर नसीरखां लोहानी और मारूफ फ़रमली वग़ैरा ४०।५० हज़ार आदमी गंगा से उतर आये और कन्नौज को लेकर २।३ कूच इधर आ बैठे हैं उधर राना सांगा खंडार को लेकर फ़साद करने की फ़िकर में है और बरसात भी अख़ीर होने वाली है सो अब बाग़ियों पर चलना चाहिए या राना पर। और आस पास के इन क़िलों का लेना तो कोई बड़ा काम नहीं इन ग़नीमों को जीत लेने के पीछे ये क़िले कहां चले जावेंगे और राना को इतना बड़ा ख़ियाल भी नहीं किया जाता था इस लिए सबने एक ज़बान होकर अर्ज़ की कि राना सांगा तो दूर है मालूम नहीं कि वह पास भी आसकेगा और ये बाग़ी तो पास ही आगये हैं इसलिए इनका हटाना ज़रूर है.

बादशाह बाग़ी पठानों पर सवार हुआ ही चाहते थे

कि हुमायूं ने अर्ज़ की कि बादशाह की सवारी करने की क्या ज़रूरत है यह बंदगी तो मैं करूंगा यह बात हिंदू तुर्क अमीरों और सब लोगों को पसंद आई बादशाह ने हुमायूं को पूर्व में तईनात करके अहमद कासिम काबुली को दौड़ाया कि धोलपुर पर जो लशकर गये हैं उनसे कहदो कि चंदवार में आकर हुमायूं के साथ होजावें और यही हुक्म महदी ख्वाजा मोहम्मद सुलतान मिरज़ा और उन लशकरों के नाम लिखा गया जो इटावे पर तईनात हुवे थे.

१३- ज़ीक़ाद जुमेरात (भादों सुदि १५ । २३ अगस्त) को हुमायूं कूच करके जलेसर नाम १ छोटे से गांव में जो आगरे से ३ कोस पर था उतरा और वहां १ दिन ठहर कर कूच दर कूच आगे को रवाना हुआ.

२०- जुमेरात (आसोज बदि ७ । ३० अगस्त) को ख्वाजे कलां को भी काबुल जाने की रुखसत हुई.

बादशाह के बाग़ और हम्माम.

बादशाह लिखते हैं कि "हिन्दुस्तान में बड़ा ऐब (दोष) यह है कि बहते हुवे पानी नहीं हैं (इसलिये यह ज़रूर हुआ) कि जो जगह रहने के लायक़ हो वहां अरहट लगा कर पानी जारी करके तरहदार और सुडौल मकान बनाये जायें आगरे में आने के कई दिन पीछे हमने इसी मतलब से जमना से उतर कर बाग़ लगाने के वास्ते जगहे देखीं वे सब ऐसी खराब और बग़ैर सफाई की थीं कि बहुत घिन और नाराज़गी से लौटना पड़ा और इन्ही जगहों की

नाराज़ी से चार बाग़ का ख़याल दिल में हुआ कि इसके सिवाय आगरे के पास ऐसी जगह न थी इसी को दुरुस्त कराना ज़रूर हुआ पहिले १ बड़ा कुंवा खुदाया गया कि जिसका पानी हम्माम में आता है फिर इस ज़मीन का वह टुकड़ा साफ़ हुआ जिसमें कि इमली के पेड़ और अठ पहलू हौज़ हैं फिर बड़ा हौज़ और उसका मैदान बना फिर वह हौज़ तैयार हुआ जो संगीन इमारत के आगे है फिर खिलवत ख़ाने का बग़ीचा और उसके मकान बने उसके पीछे हम्माम हुआ इस तौर से बेसफ़ा और बेढंगी ज़मीन से ऐसे सुथरे हुवे और सुडौल बग़ीचे बने जिनके कोनों में अच्छे २ क्यारे हैं और हर क्यारे में गुलाब और नसरदन (पीली चमेली) लग रहे हैं मैं हिन्दुस्तान की ३ चीज़ों यानी गर्मी आंधी और गर्द से नफ़रत करता था सो ये तीनों हम्माम से दूर होगईं फिर हम्माम में और क्या चाहिये वह गर्म हवाओं (लू) में ऐसा ठंडा होजाता है कि ठंड से तंग आजाना पड़ता है हम्माम का १ कोठा और हौज़ सारा पत्थर का बना हुआ है इज़ारा तो सफ़ेद पत्थर का है छत और फ़र्श में सब लाल पत्थर बयाने का लगा है ख़लीफ़ा शेख़ जैन और यूनस अली वग़ैरा ने भी नदी के किनारे जो वहां तक पहुंची हुई है अच्छे ढंग के और सुडौल बग़ीचे और हौज़ बनाये हैं लाहौर और देपालपुर के तौर पर अरहट लगा कर बहते पानी निकाले हैं हिन्दुस्तान के आदमियों ने इस तरह की और ढंग की जगहें कभी नहीं देखी

थीं इसलिये जमुना के उस तरफ़ का नाम कि जिधर ये इमारतें बनी हैं काबुल रखदिया है.

"क़िले पर इब्राहीम की इमारतों के और कोट के बीचमें १ खाली जगह थी वहां मैंने १ बड़ा महल १० गज चौड़ा और १० गज़ लम्बा बनाया हिंदुस्तान में बड़े कुते जीनेंदार को दाय कहते हैं यह दाय चार बाग से पहले शुरू कर दिया गया था भी बरसात से नीवें खोदें जातीथीं कई दफ़े गिरा और मजूरों को गिराया गाना सामा को सज़ा देने के पीछे पूरा हुवा उसपर तारीख़ लिखी हुई है उसमें भी यही बात पाई जाती है इस दाय में ३ खंड हैं सब के नीचे खंड में ३ दालान हैं उसका एक रस्ता कुवें में उतरता है और १ दालान को जाता है तीनों का १ रास्ता हैं १खंडदूसरे से तिगुना ऊंचा है नीचे के खंड से पानी खेंचने में पानी १ दम से नीचा चला जाता है. बरसात में जब पानी बढ़ता है तो ऊपर के खंड में आजाता है बीच के खंड में १ दालान कंदाकारी (कोरनी) का है इसके पास ही १ गुंबद है जिस घामें अरहट फिरता है वह इसी गुंबद में है और उसपर १ महल है बाहर की चौक से कुवें पर ५। ६ जीने उस जीने के नीचे है जिसके दोनों तर्फ़ से महल में रास्ता जाता है दहनी तर्फ़ के रस्ते के सामनें पत्थर पर तारीख़ खुदी है इस कुवें के बगल में १ कुवां और उठाया गया है जिसका तला उससे १ गज़ ऊंचा है और गुंबद में जिस का ज़िक्र ऊपर हो चुका है बैल अरहट को खेंचते हैं और उस कुवें का पानी इस कुवेमें आता है और इस कुवें पर फिर १ अरहट

लगाया गया है जिसका पानी कोट पर आकर ऊपर के बगी
चे में गिरता है कुवे से जीना निकलने की जगह भी १ इ
मारत पत्थर की बनाई गई है और कुवे के हाते के बाह
र १ संगीन मसजिद बनाई गई है मगर बनाने वालों ने अ
च्छी नहीं बनाई है हिंदुस्तान के ढंग की बनाई है."

हुमायूं की चढ़ाई.

हुमायूं के सवार होते वक्त नसीर खां लोहानी मारू
फ़ फ़रमली वग़ैरह बाग़ी अमीर जाजमऊ में जमे बैठे थे
हुमायूं नें १५ कोस के रस्ते से मोमन अतका को खबर ला
ने के वास्ते भेजा वह गया तो सही पर खबर खूब ना ला
सका बाग़ी मोमन के जाने की खबर सुन कर न ठहर स
के भाग गये मोमन के पीछे कासमाई और बाबा च
हरा खबर पर भेजे गये थे ग़नीम के बिखर जाने की
खबर लाये हुमायूं ने जाकर जाजमऊ लेलिया। "दलू"
के आस पास फ़तह खां शिरवानी आकर मिला हुमा
यूं ने उसको महदी ख्वाजा और सुलतान मोहम्मद मिर
जा के साथ करके बादशाह के पास भेज दिया -

तूरान.

इसी साल उबेदखां बुखारा से चढ़कर मर्व पर आया
मर्व के क़िले में १०।१५ आदमी रैयत के थे उनको मार कर
४०।५० दिन में सरखस पर गया सरखस में ३०।४० कज़
लबाश थे उन्होंने दरवाजा खोल दिया उज़बकों ने अंदर जा

कर उज़बक वालों को भी मारडाला ख़ुरासान को लेकर उज़बक तूस और मशहद पर गये मशहद के आदमी लाचार होकर तूस में आगये तूस को ८ महीने तक घेरा रखकर सुलह से लिया और फिर अपने क़ौल पर क़ायम न रहकर तमाम मर्दों को मारडाला और औरतों को पकड़ लिया.

गुजरात.

बादशाह लिखते हैं कि इसी साल में सुलतान मुज़फ़्फ़र गुजराती का बेटा बहादुरखां जो अब बादशाह गुजरात का हुआ है अपने बाप से रूठकर सुलतान इब्राहीम के पास आया था सुलतान इबराहीम ने मिलने में उसकी कुछ इज़्ज़त न की और जब हम पानी पत में थे तो उसकी अर्ज़ियां आईं मैं ने भी महरबानी के फ़रमान भेजकर बुलाया वह आने की फ़िकर में था मगर फिर उसकी मत बदलगई और इबराहीम के लशकर से निकलकर गुजरात को रवाने होगया इसी अरसे में उसका बाप मरगया बड़ाभाई सिकंदर शाह बाप की जगह बैठा उसकी बद सुलूकी से इमादुल्मुल्क नाम गुलाम ने उसको फांसी देकर मारडाला और बहादुरखां को जो अभी रस्ते में था बुलाकर बहादुर शाह के नाम से तख़्त पर बैठादिया इसने भी ख़ूब किया कि इमादुल्मुल्क को जिससे ऐसी नमक हरामी हुई थी मौत की सज़ा दी और बाप के अमीरों मेंसे भी कई को मार डाला उसको बहुत ज़ालिम और निडर जवान बताते हैं।

सन ९३३ हि. (संवत १५८३। १५२६ ई.)

मोहर्रम में फ़ारूक़ के पैदा होने की फिर खबर आई जो २३ शव्वाल सन ९३२ (भादों बदि १०। ३ अगस्त) शुक्र वार की रात को जन्मा था.

तोप.

२२[१] मोहर्रम सोमवार (मगसर बदि ९। २९ अकतूबर) को बादशाह १ बड़ी देग (तोप) को देखने को गये जो उस्ताद अली कुली ढालता था उसने ८ भट्टियां बनाई थीं जिनमें तांबा मसाले से पिगल २ कर सांचे में आता था मगर उसवक्त कुछ कसर रहजाने से तोप पूरी नहीं ढली और अली कुली मारे शर्म के भट्टी में गिर कर मरने लगा बादशाह उसको तसल्ली करके और खिलअत देकर आगये.

फ़तहखां का आना और अमीरों के दर्जे.

महदी ख्वाजा हुमायूं के पास से फ़तहखां सिरवानी को लेकर आया बादशाह ने महरबानी करके उसके बाप

(१) असल में २५ मोहर्रम सोमवार गलती से लिखी गई है क्योंकि आगे २४ मोहर्रम बुधवार सही लिखी है।

आज़म हुमायूं की जगह व १ करोड़ ६० लाख की जागीर उ-स को दी॰

बादशाह लिखते हैं कि हिंदुस्तान में बड़े २ अमीरों के जिनपर बहुत महरबानी होती है खिताब मुक़र्रर हैं उन खिताबों में से १ आज़म हुमायूं का खिताब है १ खान-जहां का है इस (फ़तहखां) के बाप का खिताब आज़म हुमायूं था मगर हुमायूं के होते हुवे दूसरों को ऐसा-खिताब देना ज़रूर न था इस लिये मैंने यह खिताब मौकूफ़ किया और फतहखां शिरवानी को खान जहां का खिताब दिया॰

८-सफ़र बुधवार (मगसर सुदि ११। १४ नवम्बर) को बादशाह ने हौज़ के ऊपर डेरे खड़े कराकर शराब की मजलिस की फ़तहखां शिरवानी को बुलाकर शराब पिलाई और अपने पहिने हुवे कपड़े पहिनाकर उसको वलायत (जागीर) में जाने की रुखसत दी उसके बेटे महमूदखां का हमेशा खिदमत में हाज़िर रहना ठहरा॰

बयाने में अमल

२४-मोहर्रम बुधवार (मगसर बदि ११। ३१ अक्तूबर) को बादशाह ने मोहम्मद अली हैदर को हुमायूं के पास भेजकर कहलाया कि बाग़ियों का लशकर भाग कर जोनपुर गया है इस आदमी के पहुंचते ही तू जोनपुर में जाकर कुछ अमीरों को तो वहां रखदे और लशकर को लेकर जलदी हमारे पास आ क्योंकि राना

सगा "काफ़र" पास और क़ाबू में आगया है सो उसकी पूरी २ फ़िकर करें.

बादशाह ने पूर्व की तर्फ़ लशकरों को जाने के पीछे तरुदी बेग और कूचबेग वग़ैरा को वली शिरवानी और दूसरे हिन्दुस्तानियों के साथ बयाने की तलहटी लूटने के लिये भेजा था और यह भी कह दिया था कि जो अंदर वाले तसल्ली या किसी इक़रार पर क़िला सोंपें तो लेलें नहीं तो लूट मार करके दुशमन को तंग करें.

बयाने के निज़ाम खां का भाई आलमखां थंगगढ़[१] में था उसके आदमी बादशाह के पास आकर उसकी बंदगी और ख़ैरख़्वाही के संदेसे कहगये थे और आलमखां ने यह भी ज़िम्मा किया था कि जो बादशाह कुछ फ़ौज भेजें गे तो बयाने के सब तर्फ़ि शबंदों (सिपाहियों) को इक़रार और तसल्ली देकर क़िला ख़ाली करा दूंगा इस लिये बादशाह ने तरुदी बेग के साथी जवानों से कि जब आलमखां जो १ ज़मींदार आदमी है और इस तरह की ख़िदमत करना चाहता है तो बयाने के कामों में उसकी सलाहों पर चलें

बादशाह लिखते हैं कि "हिन्दुस्तान के कुछ आदमी तलवार तो मारते हैं लेकिन सिपाहगरी की चाल ढाल खड़े होना, मारना और सरदारी करना नहीं जानते यह आलमखां हमारी फ़ौज के साथ होजाता है और किसी का कहना न मानकर और न अच्छा बुरा देखकर

(१) थनगढ़ बयाने के पुराने क़िले का नाम है और वह अब भी मौजूद है.

उसको बयाने के पास लेजाता है"

"इस दौड़ में २५० या ३०० तुर्क हमारे लशकर से थे और हिन्दुस्तानी २००० से कुछ ऊपर थे निज़ामखां और बयाने के सिपाही तथा पठान ४००० सवार और २००० पैदल से ज़ियादा थे इन्होंने १ दम से हल्ला करके उन लोगों को भगादिया आलमखां। और ५ तथा ६ और आदमी को पकड़ लिया ऐसी हरकत करने पर भी तसल्ली देकर उसके अगले और पिछले कसूर बख्श दिये गये और फ़रमान भेजे गये। राना सांगा की खबर तेज़ होने ही निज़ामखां कुछ उपाय न करसका और सैयद रफ़ी-अ को बुलाकर उसकी मारफ़त क़िला हमारे आदमियों को सौंप दिया और उसके साथ खिदमत में आया मैं-ने २० लाख के परगने मयान दुआब (अंतरवेद) में उसको इनायत किये दोस्त एशक आक़ा को बियाने में भेजा कुछ दिनों पीछे बयाना और ७० लाख की जागी-र महदी ख्वाजा को देकर बयाने जाने की रुखसत दी।

गवालियर में अमल.

तातारखां सारंग खानी गवालियर में था और उ-सेशा आदमी भेजकर खैर-ख्वाही जताया करता था मग-गर जब राना खंडार का किला लेकर बयाने के पास पहुंचा और गवालियर के राजों में से धरमंगद और खान जहां गवालियर के पास आकर किला लेने के वास्ते फ़साद करने लगे तो तातारखां ने तंग होकर

गवालियर उनको देना चाहा बादशाह ने बहीरे और-लाहौर के आदमी तथा मस्ती ज़ीनत क़वार को भाईयों समेत गवालियर के परगने में रखछोड़ा था और रहमदाद को गवालियर में बैठा आने के लिये शेख़ गोरन को भेजा था जब ये लोग गवालियर के पास पहुंचे तो तातार ख़ां की नियत बदल गई थी और वह उनको क़िले में नहीं बुलाता था आख़िर शेख़ मोहम्मद गौस दरवेश ने जिसके बहुत से चेले थे क़िले में से रहीम दाद को कहलाया कि जिस तरह होसके अंदर आजावो क्योंकि इस आदमी की नियत बदली हुई है रहीम दाद ने तातार ख़ां से कहलाया कि बाहर तो राना की तर्फ़ का डर है मैं कई आदमियों से क़िले में आजाऊंगा दूसरे लोग बाहर रहेंगे वह बड़ी मुशकिल से राज़ी हुआ ज्योंही रहीमदाद थोड़े से आदमियों से अंदर गया तो तातारख़ां ने कहा कि दरवाज़े में हमारा आदमी रहेगा और हथिया पोल में अपना आदमी रख दिया मगर रहीम दाद उसी रात उसी दरवाज़े से अपने सब आदमियों को अंदर ले आया दिन निकलते ही तातार ख़ां ने भी लाचार होकर क़िला सौंप दिया और आगरे में जाकर बादशाह को सलाम किया बादशाह ने परगना बयाना २० लाख का उसको दिया.

धौलपुर में अमल

मोहम्मद जेतून धौलपुर में था वह भी कुछ उपाय

न कर सका और धौलपुर सौंपकर बादशाह के पास आ गया बादशाह ने कई लाख के परगने उसको भी दिये और धौलपुर को खालसा करके अबुल-फ़तह तुर्कमान को वहां की हुकूमत पर भेजा.

हिसार फ़िरोज़ा

हिसार फ़िरोज़े में हमीदखां सारंगखानी ३।४ हज़ार पठानो से फ़साद कर रहा था बादशाह ने १५ सफ़र बुधवार (पोस बदि ३।२१ नवम्बर) को चीन तैमूर सुलतान अहमदी परवानची अबुलफ़तह तुर्कमान मलिक दाद करानी और महामदखां सुलतानी को उधर भेजा इन्होंने जाकर उन पठानों को खूब दबाया और उनके आदमियों को मारकर बहुत से सिर बादशाह के पास भेजे.

ईरान का एलची.

सफ़र महीने के अखीर में ख्वाजगी असद जो एलची होकर ईरान में शाह तुहमास्प सफ़वी के पास गया था सुलेमान नाम तुर्कमान के साथ वापस आया और सौगातें भी लाया जिनमें चरकस जाति की दो लड़कियां भी थीं.

बादशाह को ज़हर दियाजाना

बादशाह ने हिन्दुस्तानी खाने नहीं खाये थे इसलिये ३। १४ महीने पहिले सुलतान इब्राहीम के ५०। ६० बबरचियों में से ४ को छांटकर रखलिया था इब्राहीम की मांने जब यह सुना कि बादशाह हिन्दुस्तानियों के हाथ का भी कुछ खा लेते हैं तो १ तोला ज़हर एक लोंडी के हाथ भेजा उसने हिन्दुस्तानी बबर्ची अहमद को ४ परगने देना करके वह ज़हर सोंपदिया और फिर दूसरी लोंडी यह देखने को आई कि जहर दियागया है या नहीं.

१६-रबीउल अव्वल शुक्रवार (माह वदि ३। २१ दिसम्बर) को उनलोगों ने बादशाही बबरचियों को ग़ाफ़िल देखकर वह ज़हर खानों में डाल-दिया जुमे की नमाज़ के पीछे बादशाह खाने पर बैठे थोड़ा २ हरएक में से खाया था कि जी मतलाया और कै होने लगी तो खाने पर से उठकर जलखाने में गये वहां बहुत सी उलटी हुई। खाने के पीछे तो क्या शराब पीने के पीछे भी कभी उलटी नहीं होती थी इससे उनके दिलमें शुबह हुआ और बबरचियों को पकड़ा कर खाना कुत्ते को डलवाया कुत्ते का पेट फूलगया दो एक चहरों (खिदमत गारों) ने भी वह खाना खाया था उनको भी तड़के ही उलटियां हुईं बादशाह ने सुलतान मोहम्मद बख्शी को बबरचियों से पूछ ताछ करने का हुकम दिया तो हाल खुलगया सोमवार को बादशाह ने

दरबार करके सब अमीरों वज़ीरों और शहर के भले आदमियों को बुलाया उनके सामने १ बबरची १ चाशनीगीर (चखने वाला) और उन दोनों लौंडियों से हाल पूछा और उन्होंने जैसा था वैसा कहदिया तो चाशनीगीर के टुकड़े २ कराये बबरची की खाल खिचवाई. १ लौंडी हाथी के पैर से कुचल गई दूसरी को बंदूक से मारी और कई दिन दवाईयां खाकर अपनी तबअत दुरुस्त की

बादशाह लिखते हैं कि "जान कैसी पियारी होती है यह मैं नहीं जानता था जो मरने लगता है वही जान की क़द्र जानता है।

इस अपराध में बदबख्त बूआ (इबराहीम की मां) पकड़ाई गई उससे धन, माल, लौंडी, गुलाम सब छीन लिये गये इबराहीम के पोते और नवासे इज़्ज़त से रखे जाते थे उनका भी भरोसा न रहा इबराहीम का बेटा २९ रबीउल अव्वल गुरुवार (माह सुदि १।२। ३ जनवरी सन १५२७ ईस्वी) को काबुल में कामरां के पास भेजा गया.

हुमायूं का जौनपुर और कालपी फ़तह करके आना.

हुमायूं जो पूरब के बागियों पर भेजा गया था जौनपुर फ़तह करके ग़ाज़ीपुर में नसीर-खां के ऊपर गया वह वहां के पठानों समेत सरू नदी को उतर गया हुमायूं उसके डेरों को लूटकर लौट आया शाहमीर हुसैन और

सुलतान जुनेद बरलास को जोनपुर में छोड़कर मानकपुर के घाटे से गंगा को उतरा और कालपी को गया कालपी में आलमखां था वह भी बादशाह को अर्ज़ियां भेजा करता था जब हुमायूं वहां पहुँचा तो आदमी भेजकर आलमखां की तसल्ली की और उसको साथ लेकर ३ रबीउलसानी रविवार (माह सुदि ५। ६जनवरी) को हश्त बहिश्त बाग़ में बादशाह के पास आगया.

राना सांगा.

इनदिनों में महदी ख्वाजा के आदमी लगातार-आने लगे जिनसे राना के आने की ख़बर पक्की होगई और यह मालूम हुआ कि हसनखां मेवाती भी आकर शामिल होगा इसपर बादशाह ने मोहम्मद सुलतान मिरज़ा, यूनसअली, और शाह-मनसूर बग़ैरा को बयाने में महदी-ख्वाजा की मदद के लिये भेजदिया.

हसनखां मेवाती.

हसनखां मेवाती का बेटा नाहरखां सुलतान इब्राहीम की लड़ाई में पकड़ा गया था और बादशाह ने उस को ओल में रख छोड़ा था हसनखां उसके छुड़ाने के लिये बादशाह के पास आया जाया करता था और अपने बेटे को मांगता था कुछ लोगों ने कहा कि बेटे के छोड़ देने से हसनखां राज़ी होजायगा और कुछ बंदगी

भी करेगा बादशाह ने नाहरखां को खिलअत पहिना कर विदा करदिया और उसके बाप से कुछ करार मदार किया।

हसनखां यह खबर पाते ही बेटे के पहुंचने से पहिले अलवर से निकला और राना के साथ होगया.

मेह और हुमायूं को शराब.

उनदिनों मेंह बहुत बरसा बादशाह ने शराब की खूब २ मजलिसें रचाईं जिनमें हुमायूं को भी शामिल रक्खा वह शराब से नफ़रत करता था तोभी उसको पीनी ही पड़ी.

शेखबाबा का सिर १ सेर सोने में

हुमायूं जब क़िले ज़फ़र से हिन्दुस्तान को आता था तो मुल्लाबाबा और बाबा शेख दोनो भाई उसके पास से भागकर बलख में उजबकों के पास चले गये थे बादशाह ने कहा था कि जोकोई उनके सिर लायेगा उसको सेर सेर भर सोना दियाजायगा रहीमदाद कुंदुज से शेख-बाबा का सिर काटलाया बादशाह ने बहुत सी महरबानी करके उसको १ सेर सोना भी दिया

राना के ७०।८० सिपाहियों का पकड़जाना

जोफ़ौज बयाने को गई थी उसमें से किसमी सागर राना के सिपाहियों को हराने और ७०।८० आदमियों के

पकड़ लेने की खबर लाया जो गिरदावरी के लिये आये थे और उसने यह भी कहा कि हसनखां मेवाती राना के साथ होगया है.

तोप.

(१) ८-जमादिउल अव्वल रविवार (फागुन सुदि ९।१० फरवरी) को बादशाह फिर उसी तोप को देखने गये जो खराब होगई थी और अब फिर उस्ताद अली कुली ने उसका बारूखाना (भटियां) दुरुस्त करके सांचा भर लिया था. वह बादशाह के सामने छोड़ीगई और उसका पत्थर (गोला) ६०० क़दम पर जाकर गिरा बादशाह ने उस्ताद को घोड़ा और खिलअत दिया.

लड़ाई के लिये कूच

९-जमादिउल अव्वल सोमवार (फागुन सुदि १०।११ फ़रवरी) को बादशाह महलों से निकलकर मैदान में उतरे और ३।४ दिन लश्कर जमा करने और पर बांध ने के लिए ठहरे उनको हिन्दुस्तान के आदमियों का भरोसा नहीं था इसलिये हिन्दुस्तानी अमीरों को जगह २ नौकरी बोलदी आलमखां को रहीमदाद की मदद पर ग्वालियर जाने का हुक्म लिखा मुकन क़ासिम संभली हामिद और मोहम्मद जेतून को संभल में भेजदिया.

---

(१) असल किताब में २० रविवार ग़लती से लिखागया है.

इतनेही में राना सांगा के अपने तमाम लशकर सहित बयाने के पास तक पहुंचने और जो लोग वहां गये थे उनके हारने ज़खमी होने और मारेजाने की खबर आई कुछ लोग उनमें के बादशाह के पास भी आगये बादशाह लिखते हैं कि "इनका आना न जाने तो डर से था या लोगों के डराने के लिये था क्योंकि उन्होंने काफ़िर के लशकर की बहुत तारीफ़ें की थीं."

बादशाह ने क़ासिम मीर आखोर को बेलदारों के साथ परगने मनढार में जहां छावनी पड़ने वाली थी लशकर के लिये कुवें खुदारखने के लिये भेजा.

१५-जमादिउलअव्वल शनिवार (फागुन सुदि १५।१६ फ़रवरी) को बादशाह भी आगरे के पास से कूच करके जहां कुवें खोदेगये थे वहां ठहरे सुबह वहां से कूच हुआ बादशाह ने खयाल किया कि ऐसी जगह तो कि जहां लशकर के लिये बहुत सा पानी मिले सीकरी है और उस पानी पर राना के क़ब्ज़ा करलेने का भी भरम था इस लिये बादशाह दायें. बायें. बीचकी. और आगेकी. फ़ौजें सजाकर रवाने हुवे और दरवेश मोहम्मद सारबान को जो बयाने गया हुआ और उन तर्फ़ों को देखा हुआ था सीकरी के तालाब पर डेरे करने के लिये पहिलेसे भेजदिया और महदी ख्वाजा को बयाने से शामिल होने के लिये बुलाया जो दूसरे दिन सुलतान मिर्ज़ा वग़ैरके साथ आगया.

हुमायूं का नौकर "बेगमीरक मुग़ल" जो राना की खबर लाने के लिये रात को भेजा गया था लड़केही यह खबर

लाया कि ग़नीम के आदमी फुसावर से १ कोस आगे आ
कर उतरे हैं बादशाह ने अमीरों को बारी बारी से किराव-
लों करने पर तईनात किया.

राना के आदमियों से लड़ाई

अब्दुल अज़ीज़ अपनी बारी में आगा पीछा न दे
खकर खानवे गांव में चलागया जो सीकरी से ५ कोस
पर था राना ने आगे को कूच कर दिया था उसके चार
पांच हज़ार आदमी अब्दुल अज़ीज़ का आना सुनकर
आगे बढ़े ये लोग ५०० ही थे तोभी लड़ने लगे थे इनमेंसे
बहुत सों को पकड़ लेगये बादशाह ने जब यह खबर सुनी
तो मोहब अली खलीफ़ा को भेजा फिर मुल्ला हुसैन और
दूसरे लोग लगातार मदद को भेजे गये अखीर में मोहम्म
द अली जंग जंग आ गया मोहब अली वगैरा के पहुंचने
तक राना के आदमियों ने अब्दुल अज़ीज़ वगैरा को
तो पकड़ लिया और मुल्ला न्यामत, मुल्ला दाऊद, मुल्ला
अयाक़ के छोटे भाई और कई दूसरों को मार डाला था
मोहब अली के पहुंचते ही उसका मामूं ताहर परी ग़नीम
पर दौड़कर गया मगर मदद न पहुंचने से उसी जगह पक
ड़ागया मोहम्मद अली लड़ाई में गिरा बालत उसको उठा
लाया ये लोग १ कोस तक इन लोगों के पीछे आये जंग
जंग गर्द उठती देखकर ठहर गया बादशाह के पास लगा
तार समाचार आने लगा कि ग़नीम के आदमी नज़दीक
आगये हैं बादशाह बकतर पहिनकर और घोड़ों पर पा

खेरें डालकर सवार हुवे और फ़रमाया कि अराबों (तोपों) को खेंच लावें जब १ कोस पर पहुंचे तो ग़नीम के आद मी लौटगये थे बादशाह वहां पास ही १ बड़ा तालाब दे खकर पानी के सहारे से ठहर गये अराबे आगे रखकर ज़ंजीरों से जकड़ दिये दो अराबों के बीच में सात आठ गज़ की छेटी थी मुस्तफ़ा रूमी ने रूम के क़ायदे से अराबों को ख़ूब मज़बूत किया था उससे उस्ताद अ- ली क़ुली को लाग थी इसलिये बादशाह ने मुस्तफ़ाको दहनी अनी में हुमायूं के पास तइनात कर दिया और जहां जहां अराबे नहीं पहुंचे थे वहां ख़ुरासानी और हिन्दुस्तानी बेलदारों ने खाई खोद दी थी.

बादशाही लशकर में घबराहट

राना के फ़ुरती से आने, बयाने की लड़ाई, और उ न तारीफ़ों से जो शाह मनसूर वग़ैरा बयाने से आने वाले करते थे बादशाह के लशकर में घबराहट फैलगई थी अबदुल-अज़ीज़ का हारजाना और उसपर तुर्रा होग- या इससे बादशाह ने अपने आदमियों की तसल्ली के लिये जहां अराबें नहीं पहुंचे थे वहां काठ के तिपाये गड़वाये और उनके बीच बीच में सात सात और आ ठ आठ गज़ चमड़े के रस्से खिंचवाकर मज़बूत कर दि ये इस तैयारी में २५ दिन लगगये.

इन्हीं दिनों में काबुल से सुलतान हुसेन मिरज़ा के नवासे क़ासिम हुसेन सुलतान और अहमद यूसफ़

वग़ैरा जो ५०० आदमी थे आये उनके साथ मोहम्मद शरीफ़ निजूमी (ज्योतिषी) भी आया और शराब के भरे हुये ३ ऊंट भी आये यहां लशकर में पिछली बातों से गड़बड़ तो पहिले से ही मची हुई थी और अब मोहम्मद शरीफ़ भी जो मिलता था उसी से कहता था कि मंगल पच्छिम में है इसलिये जो कोई इधर से लड़ता है हारजाता है यह सुन २ कर लशकर वालों के दिल और भी टूटने लगे थे मगर बादशाह कुछ परवाह न करके जो करने के काम थे उनको पूरा करने लगे और लड़ने की तैयारी करके २१ शनिवार (चैत बदि ७। २३ फ़रवरी) को शेख़ जमाली को यह कहकर विदा किया कि मियान दुआब और दिल्ली में जितने लशकरबंद (सिपाही) जमा होसकें करें और मेवात को लूटने में कसर न रखें कि जिससे उन लोगों (दुशमनों) को उधर का खटका होजावे मुल्ला तुर्क अली काबुल से आता था उसको भी शेख़ जमाली के साथ होकर मेवात लूटने का हुकम पहुंचा और दीवान मग़फ़ूर को भी हुक्म हुआ कि आस पास के गांवों को लूटें और लोगों को क़ैद करें अबतक ऐसा न होने से ग़नीमों को कुछ खटका नहीं हुआ था.

शराब छोड़ना

२३ - जमादिउल अव्वल सोमवार (चैत बदि ६। २५ फ़रवरी को बादशाह सवार होकर सैर को निकले सैर-

स्ते में उनको यह ख़याल हुआ कि मैं हमेशा धर्म वि रुद्ध बातों के छोड़ने का इरादा करता रहा हूं अब मरने का वक्त आगया है और अभीतक कुछ न हीं किया है यह सोचकर उन्होंने उसी दम शराब पी ने की तोबह (शपत) करली और सोने चांदी की सुराहियां पियाले और मजलिस सजाने के सब सामा न सामने मंगाकर तोड़ा डाले और ग़रीबों को बांट दि ये इस तोबह करने और दाढ़ी मुड़ाना छोड़ने में सब से पहिले कोटवाल बादशाह का साथी हुआ फिर उस रात को और दूसरे दिन ३०० अमीरों सिपाहियों और दू सरे लोगों ने भी शराब छोड़दी जो शराब मौजूद थी व ह सब बादशाह ने फिकवादी और जो काबुल से आ ई थी उसमें नमक डलवाकर सिरका बना लिया औ र यह हुकम दिया कि जहां शराब ढोली गई है वहां पत्थर का चबूतरा बनवादें.

बादशाह ने पहिले यह भी कहा था कि जो राना सं गा पर फतह पाऊंगा तो मुसलमानों को तमग़ा (सा यर का महसूल) बख़्श दूंगा शेख़ मोहम्मद सारबान और शेख़ जैन ने अब जो उसका भी ज़िक्र किया तो बा दशाह ने फ़रमाया कि तुमने ख़ूब याद दिलाई मेरे हा थ में जितनी वलायतें हैं उन सबमें मैंने मुसलमानोंको तमग़ा बख़्शा और २४ जमादिउल अव्वल (चैत ब दि १०। २६ फ़रवरी) को मुनशियों से इन दोनों बातों के फ़रमान लिखाकर सब अमलदारी में भेज दिये.

लश्करको तसल्ली देना

बादशाह लिखते हैं कि यह पहिले लिखा जा चुका है कि छोटे बड़े सब डरे हुवे थे और किसी के मुंहसे भी मर्दानगी की बात और बहादुरी की सलाह नहीं सुनी जाती थी वज़ीर जो बात कह सकते थे और अमीर जो जागीरें खाते थे उनकी बातें नतो मर्दों कीसी थीं और न सलाहें और तक़रीरें हिम्मत वालों कीसी थीं इस चढ़ाई में खलीफ़ा खूब रहा था उसने मज़बूती और कोशिश में कसूर नहीं रखी थी लोगों की ऐसी बेदिली जानकर और सुस्ती देखकर मेरे दिलमें १ तदबीर आई और मैंने सब अमीरों और जवानों को बुलाकर कहा कि ऐ! अमीरो और जवानो जो कोई दुनिया में आया है वह (१ दिन) मरेगा और जो हमेशा बना रहेगा वह खुदा होगा मगर नेकनामी से मरना बदनाम होकर जीने से अच्छा है जो हम नेक नामी से मरजायें तो अच्छा है हमको नामही चाहिये शरीर तो मौत के वास्ते ही है। खुदा ने हमको ऐसी नेक बख्ती के पास पहुंचाया है कि मरें तो शहीद और मारें तो ग़ाज़ी होते हैं। सब को कुरान की क़सम खाना चाहिए कि कोई इस लड़ाई में मुंह फेरने का खयाल न करे और जबतक जान बदन से न निकले इस लड़ाई से अलग न हो। सर्दार नौकर छोटे और बड़े सबने खुशी से कुरान हाथ में लेकर

इसी मज़मून का ज़हर किया वह इसतौर की तदबीर थी कि दूर और पासके देखने और सुनने वालों दोस्तो और दुशमनों में अच्छी रही·

मुल्क में गड़बड़

उनदिनों हरतर्फ़ मुल्क में भी ग़दर होगया था हुसैन खां ने आकर रेरी को घेरा कुतुबखां के आदमियों ने चंदवार को लेलिया रुस्तमखां नाम एक छोटे आदमी ने मियान दुआब के सर्कश बंदों को इकट्ठा करके कोल में क़ब्ज़ा करलिया और गनज़क अली को पकड़लिया संभल को ज़ाहिद और क़न्नौज को सुलतान मोहम्मद छोड़ आया· ग्वालियर को हिन्दुओं ने आकर घेर लिया बादशाह ने आलमखां को ग्वालियर भेजा था वह वहां से लौटकर अपनी वलायत को चलागया बादशाह को हर तर्फ़ से नितनए अशुभ समाचार लगता था लशकरसे हिन्दुस्तानियों ने भागना शुरू किया हैबतखां भागकर संभल में चलागया हसनखां बाड़ी वाल भी भागकर राना से जामिला मगर बादशाह ने इन बातों की परवाह न करके तोपों. पहियेदार-तिपायों और दूसरे सामानों के तैयार होनेपर ९ जमादिउल सानी मंगलवार (चैतसुदि ११ । १२मार्च) के नौरोज़[१] के दिन कूच किया अराबे और पहियेदार ति-

(१) मेखे भानुको ईरानी लोग नौरोज़ कहते हैं क्योंकि उनका सौर बर्ष उस दिन से लगता है।

पाये आगे किये उनके पीछे उस्ताद अलीकुली को सब बंदूकचियों के साथ तईनात करके कहा कि पैदल लोग अराबों से अलग नहों और यासाल बाधे (श्रेणीबद्ध) चलते रहैं इसतरह से क़ोल (बीचकीफ़ौज) और बरूनग़ार (दहने हाथ की अनी) के अमीरों और जवानों को भी समझा दिया कि कहां ठहरना किसतरह लौटना और किस तौर लड़ना चाहिये बादशाह इस रंग ढंग से पैर जमाये हुवे १ कोस चलकर उतर पड़े राना के आदमी भी खबर पाकर अगला दल इसी तरह से तैयार करके निकले बादशाह ने उतरने के पीछे अपने उर्दू (केम्प) को अराबों और खाईयों से मज़बूत करलिया था उस दिन लड़ने का इरादा नहीं था तो भी थोड़े से आदमियों ने आगे आकर ग़नीम को अपने हाथ दिखाये और शुकुनके लिये कई हिन्दुओं के सिरकाट लाये मलिक क़ासिमभी कई सिर लाया बादशाह लिखते हैं कि "मलिक क़ासिम ने खूब किया इतने से मेंही लशकर वालों का दिल मज़बूत होगया."।

सुबह ही वहां से कूच हुआ बादशाह को लड़ाई का खयाल था मगर खलीफ़ा और कुछ खैरख्वाहों ने अरज़ किया कि जो जगह लड़ाई के लिये मुक़र्रर हो चुकी है वह पास ही है जो उसको मज़बूत करके और खाई खुदाकर कूचकिया जावे तो ठीक है यह सलाह पसंद हुई खलीफ़ा सवार होकर गया और खाई के स्थानों पर बेलदारों और काम कराने वालों को छोड़कर चला आया.।

लड़ाई.

१३-जमादिउलसानी शनिवार (चैतसुदि १५। १६मार्च) को बादशाह अराबों को आगे खिंचवाते हुए बरूनग़ार, जुरनग़ार, क़ौल, और यसाल (चारों सजी हुई फ़ौजों) से १ कोस चलकर उस निश्चत किये हुवे स्थान में आउतरे डेरे कुछतो खड़े होगये थे और कुछ खड़े होने को थे कि ग़नीम के यसाल (अगले दल) के दिखाई देने की ख़बर आई बादशाह फ़ौरन सवार हुवे और कहा कि बरूनगार और जरूनगार में जिसकी जहां जगह है वहां जाकर अराबों और मोरचों को मज़बूत करें.

बादशाह ने यहांतक अपनी क़लम से लिखकर आगे इस लड़ाई का फ़तहनामा जो उनके मुनशी शेखजेन ने बड़े शब्दाडम्बर से लिखा था नक़ल कर दियाहै जिसका सारांश यह है.

फ़तहनामा का आशय

का गाल

ज़हीरुद्दीन मोहम्मद बाबर नीचे लशकर के डेरे हुवे
रसूल का शुकर करके मुसलमानों पैदलों और हाथियों से
कि इनदिनों में हमने खुदा चढ़कर आये इधर से भी प
बहुत बड़ी फ़तह पाई है ज बंदूकचियों और बर्कंदाज़ों के
के तेज और प्रकाश से
फैली जिसका बयान

के बचाव के लिये जो फौज के आगे थे रूम की लड़ाइयों के
क़ायदे से १ सफ़ अराबों (तोपों) की जमाई गई और उन्हें
ज़ंजीरों से जकड़ दीगईं मुसलमानी लश्कर की ऐसी म
ज़बूती कीगई थी कि बूढ़े आसमान ने भी शाबाशी दी
और यह सब ऐसा अच्छा बंदोबस्त मुसाहब निज़ामुद्दीन
अली खलीफ़ा की तदबीर और कोशिश से हुआ था
बादशाह की जगह बीचकी फौजमें मुक़र्रर हुई दाहिने
हाथ को लाइक़ भाई चीनतीमूर सुलतान प्यारा ल
ड़का सुलेमान शाह ख्वाजा दोस्त ख्वावंद यूनस अली
और शाहमनसूर बरलास दरवेश मोहम्मद सारबान अ
ब्दुल्लाह किताबदार और दोस्त एशक आक़ा मुक़र्रर
किये गये बायें हाथको सुलतान अलाउद्दीन आलमखां सु
लतान बहलोल लोदी का बेटा, बड़ा वज़ीर शेख जैन
ख़ाफ़ी उसका बेटा मोहब अली, कूचबेग, का भाई त
रदी बेग, कूचबेग का बेटा शेरअफ़ग़ान, बड़ा खान-
आरायशखां, और बड़ा वज़ीर ख्वाजा हुसैन और दूस
रे लोग अपनी २ जगह खड़े हुए। उसके दाहिने हाथको
वली अहद शाहज़ादा मोहम्मद हुमायूं बहादुर को र
खा गया उसके दाहिने हाथ पर क़ासम हुसैन सुलतान,
अहमद यूसुफ़ ओगलाकची, हिंदूबेग क़ोचीन, खुसरो
कोकल ताश, क़िवाम बेग, वली खज़ानची, पीर कुली
सीस्तानी ख्वाजा पहलवान बदख्शानी, अबदुल शकू
र, सुलेमान एलची, उबाका सीस्तानी थे और बायें
हाथ को मख़दूम मीरहमा, मोहम्मदी कोकल ताश, ख्वा
जगी असद जामदार थे और बायें हाथ को हिंदुस्तान

के अमीरों में से खानखाना दिलावरखां, मलिक दाऊद करानी शेख गौरन, अपनी २ बताई हुई जगह पर खड़े हुये-

बायें हाथ की फ़ौज में सय्यद महदी, माई मोहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा आदिल सुलतान महदी सुलतान का बेटा, अब्दुल अज़ीज़, मीर आख़ोर, मोहम्मद अली जंगजंग, कतलक क़दम क़रावल, शाह हुसैन बारगी, मुगलखानची, और जानबेग अतका, तईनात हुये इस तर्फ़ की हिंदुस्तानी अमीरों में से जलालखां और कमालखां सुलतान अलाउद्दीन के बेटे, और निज़ामखां बयाना, मुकर्रर हुये तोलगमें ([illegible]) के वास्ते तरूदी बेग और मलिक क़ासिम बाबा कशका का भाई बहुत से मुगलों से दाहनी तर्फ़, मोमन अतका, और रुस्तम तुर्कमान कुछ खास लोगोंसे बांयें तर्फ़ रखेगये -

मुसाहिब खास सुलतान मोहम्मद बख़्शी मुसलमानी लश्कर के सब सर्दारों और ओहदेदारों को उनकी ठहराई हुई जगहों पर छोड़कर हमारे हुक्म सुनने के वास्ते तैयार था तवाचियों और यसावलों को इधर उधर भेजकर फ़ौजों की दुरुस्ती और मज़बूती के हुक्म अफ़सरों के पास पहुंचाता था-

जब सब लश्कर तैयार होगया और हरएक अपनी जगह पर जाखड़ा हुआ तो हुक्म दिया गया कि कोई बग़ैर हुक्म के अपनी जगह से न हिले और बग़ैर इजाज़त के लड़ने को हाथ न उठाये १ पहर २ घड़ी दिन चढ़ा होगा कि दोनों लश्कर अंधेरे उजाले

की तरह एक दूसरे के सामने खड़े हुवे और लड़ाई होने ल
गी दाईं बाईं फ़ौजों में ऐसी कटा छनी हुई कि ज़मीन औ
र आसमान हलगये हिंदुओं का जवानगार बादशाही ब
रुनगार की — तरफ़दौड़कर ख़ुसरो कोकलताश मलिक का
सिम और बाबा कशक़ा के ऊपर आया भाई चीन तै
मूर हुक्म से उनकी मदद पर जाकर लड़ा और हिन्दुओं
को हटाकर उनके क़लब (बीच के लशकर) में लेग
या इसका इनाम उस प्यारे भाई के नाम लिखागया मुस
तफ़ाक़ली ने प्यारे लड़के मोहम्मद हुमायूं बहादुर के ल
शकर में से अराबों को बढ़ाकर मार गोलों के हिंदुओं
के दिल तोड़दिये लड़ाई की ऐन गर्मा गर्मी में कासिम
हुसैन सुलतान अहमद यूसुफ़ और क़िवामबेग हुक्म पा
कर उसकी मदद पर दौड़गये हिन्दुओं की फ़ौज पराब
में लगातार अपने आदमियों की मदद को आती थी
इसलिये हमने भी हिन्दूबेग कोचीन को और उसके
पीछे मोहम्मदी कोकलताश, ख़्वाजगी असद को फिर
यूनस अली. शाह मनसूर बरलास और अबदुल्लाह किता
बदार को, और इनके पीछे दोस्त एशक आक़ा, मोह
म्मद ख़लील अख़ताबेगी को मदद के लिये भेजा.

हिन्दुओं के बरुनगार ने मुसलमानों के जवनगार
पर लगातार हमले किये और वहां के अफ़सरों ने कु
छ को तो तीरों से मारा और कुछ को सामने से हटाया मो
मन अतका और रुस्तम तुर्कमान दुशमनों की फ़ौज के
पीछे गये हमने निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा के नोकरों
मुल्ला महमूद और अली अतका बासलीक. को उनकी

मदद पर भेजा.

फिर भाई मोहम्मद सुलतान मिरज़ा, आदिल सुलतान, अबदुल अज़ीज़ मीर आखोर, कतलक क़दम किराबल, मोहम्मद अली जंगजंग, और शाह हुसेन मुग़ल लड़े और बादशाह ने ख्वाजा हुसेन वज़ीर को दरबारियों के साथ उनकी मदद पर भेजा. सब बहादुरों ने खूब लड़ाई की और मरने मारने में कसर नहीं रखी.

जब लड़ते २ बहुत देर होगई तो बादशाह ने हुकम दिया कि बादशाही खास सिपाही और जंगी जवान जो अराबों के पीछे शेरों की तरह, जंजीरों में बंधे हुवे थे क़ौल (बीचकी फ़ौज) के दायें बायें होकर बाहर निकले बंदूक़चियों की जगह को बीच में छोड़कर दोनों तर्फ़ से हमला करें इसपर वे अराबों के पीछे से दौड़कर दुशमनों को मारने लगे उस्ताद अलीकुली अपने तईनातियों के साथ क़ौल के आगे खड़ा था उसने भी बहादुरी करके बड़े २ पत्थर हिन्दुओं के मज़बूत क़िले पर फेंके और बहुत से आदमियों को मारा फिर बादशाही बंदूक़चियों के नाम हुक्म पहुँचा वे पैदलही आराबों के पीछे से दौड़े और जान जोखों की जगह में पहुँचकर उन्होंने हिन्दुओं को मौत का ज़हर चखाया और बहादुरों में अपनी बहादुरी का नाम रोशन किया इसके साथ ही बादशाही हुक्म क़ौल के अराबों के बढ़ाने का जारी हुआ पीछे से बादशाह की सवारी भी दुशमनों पर बढ़ी दायें और बायें लशकरों ने जो यह हाल देखा तो वे सब भी समंदरों की तरह से उमड़कर लड़ाई के मैदानमें

पहुँचकर तीरों का मेह बरसाने और तलवारों की बिजलि यां चमकाने लगे जिसकी चकाचौंद में सूरज भी उलटे दर्पन की तरह से काला दिखाई देने लगा मारने मरने वाले हारे और जीते हुवे आपस में ऐसे गुथ गये थे कि कि सी की कुछ पहिचान नहीं रही थी दोनों नमाज़ों के बीच में पिछले दिन से वो लड़ाई की ऐसी गर्मा गर्मी होगई कि मुसलमानों के दहने बायें और हिंदुओं के बायें और द हने दल एक जगह होगये जब मुसलमानी फौजें और पच ड़ने लगीं तो हिन्दू कुछ देरतक हैरान रहकर आखिरको गोल (बीच के दल) की दहनी और बाईं भुजा पर दौड़े बाईं तर्फ़ तो बहुत ही धीड़करके पास आपहुंचे मगर हमा रे बहादुरों ने मारे तीरों के उनका मुंह फेरदिया फिरतो ह मारी फ़तह होगई हिन्दू अपना काम बनना मुशकिल देखकर भाग निकले बहुत से मारेजाकर चीलों और क वों के शिकार हुवे उनकी लाशों के टीले और सिरों के मिनारे बनाये गये हसनखां मेवाती बंदूक की गोली से मरकर मुरदों में मिला ऐसेही बहुत से सरकशों की जिंद गी जो अपनी २ क़ौम के सरदार थे तीरों और गोलि यों से खतम होगई जिनमें से १ उदयसिंह डूंगरपुर का मालिक था जिसके पास १२ हज़ार सवार थे - २ रायचंद्र भान चौहान ये ४ हज़ार सवारों का धनी था - ३ मानक चंद चौहान, और ४ दलीपराव ४ हज़ार सवारों के मा लिक, गंगू करमसिंह और डूंगरसिंह जो ३० हज़ार सवा र अपने पास रखते थे और भी बहुत से बड़े २ अफ़सर और सरदार दोज़ख में गये लड़ाई के मैदान का रस्ता

ज़खमियों और मुरदों से पटगया मुसलमानी लशकर जिधर जाता क़त्ल २ पर हिन्दुओं को पड़ापाता था ख़ुदाका शुक्र है कि बड़ी फ़तह हुई जमादिउलसानी के महीने सन ९३३ में लिखागया.

गाज़ीका खिताब

इस फ़तह के पीछे बादशाह ने फ़तहनामे में अपने को गाज़ी (धर्मवीर) लिखा है और ख़ुदा का शुक्र किया है कि मैं ग़ाज़ी होगया.

राना के लशकर में जाना.

फ़तह के पीछे बादशाह आगे बढ़े राना काडेरा बादशाही उर्दू से दो कोस पर था वहां पहुंचे मोहम्मदी, अबदुल अज़ीज़ और अलीखां वग़ैरा को राना के पीछे भेजा वे लिखते हैं कि "कुछ सुस्ती हुई दूसरों का भरोसा छोड़कर मुझे खुद जाना चाहिये था उसके डेरे से आगे १ कोस तक गया भी मगर बेवक़ होजाने से सोने की नमाज़ के क़रीब (पहर रातगये) अपने उर्दू में आगया मोहम्मद शरीफ़ ज्योतिषी जिसने कैसे २ कुछ बुरे फल बताये थे फतह की मुबारकबाद देने आया मैंने उसको बहुत सी गालियां देकर अपने दिलको हलका किया वह भी काफ़िरों जैसा बद दिल घमंडी और बहुत सरकश था परंतु पुराना नौकर था इसलिये १ लाख इनाम देकर बिदा किया (और कहा कि) मेरी अमलदारी में खड़ा न रहे."

अलियास पर फ़ौज.

दूसरे दिन वहीं मुकाम रहा मोहम्मद अली जंग जंग शेख गोरन और अबदुल मलूक कोरची बहुत सी फ़ौजसे अलीयासखां पर भेजेगये जिसने मयान दुआब में कोल(१) को लेकर कज़ाक-अली को क़ैद करलिया था वह इन से लड़ न सका और भागकर इधर उधर छुपता फिरा जब बादशाह आगरे में गये तो पकड़ा आया और उनके हुक्म से जीते की खाल उधेड़ी गई.

सिरों का मीनार (कल्ला कोट)

फिर बादशाह ने उस पहाड़ के ऊपर जिसके नीचे यह लड़ाई हुई थी हिंदुओं के सिरों का मीनार उठवाया और उस जगह से चलकर २ कूच में बयाने पहुंचे बयाना-क्या अलवर और मेवात तक हिन्दू और मुसलमान बहुत से रस्ते में मरे हुवे पड़े थे.

मेवाड़ पर चढ़ाई मौक़ूफ़

बादशाह ने जाकर बयाने को देखा और उर्दू में आ-कर हिन्दुस्तान के अमीरों को बुलाया उनसे राना की

(१) कोल वो अब अलीगढ़ कहते हैं

वलायत (मेवाड़) पर चढ़ाई करने की सलाह की जो रस्ते में पानी की तंगी और गर्मी बहुत होने से मौक़ूफ़ रही.

मेवात पर चढ़ाई.

मेवात दिल्ली के पास है बादशाह ने इसकी जमा तीन चार करोड़ लिखी है हसनखां के बापदादे जो करीब २०० बर्ष से मेवात में हुकूमत करते चले आये थे दिल्ली के बादशाहों की आधी परदी तावेदारी करते थे और वे बादशाह भी अपने पास बड़ी वलायतें होने या फ़ुरसत की तंगी या मेवात के पहाड़ों के सबब से इस वलायत के पीछे न पड़े और उतनी सीही बंदगी पर उनकेपास रखते रहेथे बादशाह भी हिन्दुस्तान फ़तह करने के पीछे अगले बादशाहों के दस्तूर पर हसनखां की रियायत रखते थे तोभी वह राना के शामिल होगया था इसलिये जब मेवाड़ की चढ़ाई मौक़ूफ़ रही तो बादशाह मेवात फ़तह करने को रवाने हुवे और ४ मुकाम करके वहां के सदर मुकाम अलवर से ६ कोस बांसमती नदीपर उतरे हसनखां से पहिले उसके बापदादे तिजारे में बैठा करते थे मगर जिस बर्ष बादशाह ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करके लाहोर और देपालपुर को बहारखां से लियाथा तो हसनखां ने उनके डर और दूरअंदेशी से इस किले की मरंमत शुरू करदी थी.

हसनखां के वकील करमचंद ने जो पहिले भी बादशाह के पास आया था (जबकि उसका बेटा आगरेमेंथा)

उसके बेटे की तर्फ से आकर पनाह मांगी बादशाह ने अब दुलरहीम सगावल को तसल्ली का फ़रमान देकर उसके पास भेजा वह हसनखां के बेटे ताहरखां को लेआया बादशाह ने महरबान होकर कई लाख के परगने उसको दिये उसने लड़ाई में थोड़ा सा काम किया था बादशाह ने उसको बहुत समझकर ५० लाख की जागीर से अलवर देने कहाथा पर उसने कम नसीबी से इनकार नहीं लिया.

हुसेन तैमूर ने लड़ाई में अच्छा कामकिया था इस लिए शहर तिजारा जो मेवात का पाय तख़्त था ५०ला ख की जागीर से उसको दियागया.

तरुद्दी बेग को जो दहने हाथ की फ़ौज का तौल गमा (मददगार) था और दूसरों से अच्छा रहाथा १५ लाख की जागीर और अलवर का क़िला इनायतहुआ.

अलवर का खजाना और जो कुछ उसमें था हुमायूं को इनायत हुआ

१-रज्जब बुधवार (बैशाखसुदि ३। ३ अप्रैल) को बादशाह उस मंज़िल से कूच करके अलवर से २ कोस पर आगये और जाकर क़िले की सैरकी रात को वहींरहे सवेरे उर्दू में लोट आये.

हुमायूंको काबुलभेजना

बादशाह ने लड़ाई से पहिले जब सब छोटे बड़े को कसम खिलाई थी तो यह भी कहदिया था कि इसल ड़ाई के पीछे कुछ कैद नहीं है जो जाना चाहेगा उसको

रुखसत देदी जायगी.

हुमायूं के नौकर अकसर बदख्शां और उसतर्फ के रहने वाले थे और कभी उन्होंने १ महीने या २ महीने के रस्ते की चढ़ाई नहीं की थी और लड़ाई के पहिले से ही घबरा रहे थे फिर ऐसा इक़रार भी होचुका था और काबुल भी खाली था इसलिये हुमायूं को काबुल भेजने की सलाह ठहरी

९-रज्जब जुमेरात (बैसाख सुदि ११। ११ अप्रेल) को बादशाह अलवर से कूच करके चार पांच कोस पर बांसमती के किनारे में आठहरे महदी ख्वाजा को भी चैन नहीं पड़ता था इसलिये उसको भी काबुल जाने की रज़ा होगई और बयाने की शिकदारी (कोटवाली) दोस्त एशक आक़ा को इनायत हुई.

पहिले "इटावा" महदी ख्वाजा के नामपर बोला गया था और क़ुतुबुद्दीन इटावे को छोड़ आया था इसवास्ते वह अब महदी ख्वाजा के बदले उसके बेटे जाफिरख्वाजा को दियागया.

बादशाह हुमायूं को बिदा करने के लिये तीन चार दिन उसी मंजिल में रहे और वहीं से मोमिन अली तवाची फ़तह नामे के साथ काबुल भेजागया.

बारदपुर और कोटला

(१)
बादशाह ने बारदपुर के चश्मे और कोटले के बड़े
हौज़ (तालाब) की बहुत तारीफ़ सुनी थी इसलिये उस
के देखने और हुमायूं को पहुंचाने के लिये इतवार के
दिन सवार हुवे और उर्दू को वहीं छोड़ गये.

उसदिन बारदपुर और उसके चश्मे की सैर कीओ
र वहीं माजून खाई इस चश्मे का पानी जिस दरे (घाटी)
से आता था वहां कनेर के फूल खूब खिले हुवे थे.

इसी दरे में जहां कि पानी फैला हुआ था वहां बाद
शाह ने १० गज़ लंबे और १० गज़ चौड़े संगीन हौज़ ब
नाने का हुक्म दिया उसरात को वे उसी जगह रहे और
सवेरे जाकर कोटले का क़ोल (बंद) देखा उसका एक
सिरा पहाड़ से मिला हुवा था उसमें बाणगंगा का पानी
गिरता था छोटी २ नावें भी पड़ी हुई थीं हल्ला होने परलो
ग उनमें बैठकर अपना पीछा छुड़ाते थे बादशाह के पहुं
चने परभी कुछ लोग नावों में बैठकर तालाब में चलेगये
थे बादशाह उसको देखकर उर्दू में आगये आराम करके
खानाखाया मिर्ज़ाओं और अमीरों को खिलअत प
हिनाये सोने के नमाज़ के वक़्त हुमायूं को बिदा करके
सवार हुवे रस्ते में १ जगह नींद लेकर फिर चले और
सुबह के वक़्त परगने खेरी से गुज़रकर फिर सोगये और

(१) शायद भरतपुर हो।

वहां से उर्दू में पहुंचे जो दोड़े में उतरा हुआ था.

दोड़े से कूच होकर सोभगढ़ में उतरते वक्त हसनखांका बेटा ताहरखां जो अबदुल रहीम को सोंपा हुआ था भाग गया.

वहां से १ मंज़िल बीच में करके एक चश्मे के ऊपर उतर पड़े जो भुसावर और जोसे के बीच में पहाड़ के सिरे पर था और वहां शामियाने खड़े करके माजून खाई.

इस चश्में की तारीफ़ चलती हुई सवारी में तरदी बेग ने की थी बादशाह ने खड़े २ घोड़े पर से देख लिया यह पहाड़ में से निकलकर आता था उसके किनारे कुछ सुहाने भी थे इसलिये बादशाह ने हुक्म दिया कि उस के ऊपर अठपहलू होज़ पत्थरों का बनादें- वे लिखते हैं "कि जब हिन्दुस्तान में बहता हुआ पानी ही नहीं होता है तो फिर चश्मा वहां क्या मांगता है जो कोई चश्मा भी है तो ज़मीन से रिस २ कर पानी निकलता है उबलकर नहीं निकलता. इस चश्में का पानी आधी पनचक्की के करीब है जो पहाड़ की तलहटी में से उबल कर आता है.

बादशाह आगरेमें

बादशाह वहां से फिर बयाने की सैर करते हुवे सीकरी को गये और बाग़ के पास उतरे जहां पहिले उतरे थे और उस बाग़ का बंदोबस्त करके २३ रज्जब

जुमेरात (जेठ बदि १० । २५ अप्रैल) को तड़के ही आगरे में पहुंचे मोहम्मद अली जंगजंग, तरद्दी बेग, कूचबेग, अबदु लमलूक कोरची, और हुसेनखां को दरियाखानियों के साथ चंदवार और राहरी पर भेजा, इनके चंदवार में पहुंचते ही कुतुबखां के आदमी जो अंदर थे भाग गये और वह चंद- वार लेकर राहरी पर गये हुसेनखां लोहानी के आदमी भी कुछ लड़कर भाग छूटे हुसेनखां हाथी पर चढ़कर कई आ दमियों से निकला था सो नदी में डूबगया यह सुनकर कु तुबखां भी इटावे से भाग गया इटावा पहिले महदी ख्वाजा को दिया जाचुका था इसलिये उसका बेटा जाफ़र ख्वा- जा उसकी जगह इटावे में भेजा गया.

राना सांगा के चढ़ आने से जब अकसर हिन्दुस्तानी और पठान फिरगये थे तब सुलतान मोहम्मद दोलदी ड र कर क़न्नौज छोड़ भागा था और अब सारे शर्म के उ सने फिर वहां जाना क़बूल न करके ३० लाख के क़न्नौ ज को १५ लाख के सरहिंद से बदल लिया और क़न्नौज मोहम्मद सुलतान मिरज़ा को ३० लाख की जागीर से दि यागया और क़ासिमहुसेन सुलतान को बदायूं देकर मो हम्मद सुलतान मिरज़ा के साथ बिदा किया तुर्की अमीरों में से मलिक क़ासिम बाबा क़शक़ा, अबूमोहम्मद नेजे बाज मुवैद, सुलतान मोहम्मद दोलदी और हुसेनखां को दरियाखानियों समेत और हिन्दुस्तानी अमीरों में से अलीखां फरमली मलिकदाद करांनी शेख़ मोहम्मद शेख़ भिखारी, तातारखां और खानजहां को मोहम्मद सु लतान मिरज़ा के साथ करके बब्बन (पठान) के ऊपर

भेजा जिसने राना सांगा की गड़बड़ में लखनऊ को घेरकर लेलिया था मगर वह इस फ़ौज के गंगा से उतरने की खबर सुनते ही अपना असबाब छोड़कर भागगया ये लोग कुछ दिनों वहां रहकर लौट आये.

बादशाह ने खज़ाना तो बांट दिया था मगर राना की चढ़ाई से परगनों के बांटने की फ़ुरसत नहीं हुई थी सो अब बांट दियेगये और बरसात आजाने से यह बात ठहरी कि हरएक अपने २ परगने में जाकर सामान तैयार करे और बरसात के पीछे हाज़िर होजावे.

हुमायूं ने दिल्ली में जाकर वहां के खज़ानों में से कई कोठे खोले और बग़ैर हुक्म के उनपर कब्ज़ा करलिया बादशाह ने यह खबर सुनकर नाराज़ी से उसको बहुत बुरा भला लिख भेजा

ख्वाजगी असद को जो पहिले एलची होकर ईरान में गया था और वहां से सुलेमान तुर्कमान को साथ लेआया था बादशाह ने अब फिर उसी को एलची करके १५ शाबान गुरुवार (असाढ़ बदि १। १६ मई) को सुलेमान के साथ भेजा और उसके साथ शाह तुहमास्प के लिये कुछ सोगातें भेजीं.

कामरां के लिये ३ लाख का खज़ाना नरदी बेग के हाथ भेजागया.

बादशाह रमज़ान भर आगरे के हश्त बहिश्त बाग़ में रहे वे लिखते हैं कि "११ वर्ष की उमर से रमज़ान की २ ईदें मैंने कभी साल में १ जगह पर नहीं कीं पिछली ईद आगरे में हुई थी इस कायदे में खलल न

हीं आने के लिये चांदरात (द्वतीक असाढ़ सुदि २। ३० जून) रविवार को ईद करने के लिये सीकरी में चलागया व हां फ़तह बाग़ के उत्तर में पत्थरों का चबूतरा तैयार हुआ था उसपर सफ़ेद डेरे खड़े कराकर ईद मनाई."

आगरे से चलते वक्त बादशाह ने मीरअली कौरची को बट्टे में शाह हुसेन के पास गंजफ़ा देकर भेजा उसको गंजफ़े का बहुत शौक़ था बादशाह से मंगवाया था.

बादशाहकादौरा

५-ज़ीकाद इतवार (सावन सुदि ७। ४ अगस्त) को बादशाह धोलपुर देखने गये रात को आधे रस्ते में १ जगह नींद लेकर सुबह ही सुलतान सिकंदर के बंद पर उतरे वहां पहाड़ में लाल पत्थर के मकान बने हुये थे और १ बड़ा पत्थर पड़ा था बादशाह उस्ताद शाह मोहम्मद सगतराश को बुला लेगये थे उसको हुक्म दिया कि जो इस पत्थर को काटकर घर बना सके तो घर बनावे और जो ओछा होतो हौज़ बनावे.

धोलपुर की सैर करके बाड़ी में गये और बाड़ी से पहाड़ में होकर जो बाड़ी और चंबल नदी के बीच में है चम्बल देखने पधारे लौटते वक्त उन्होंने चंबल और बाड़ी के बीच में ही आबनूस का पेड़ देखा जिसके फल को तेंदू कहते हैं वहां सफ़ेद आबनूस के भी पेड़थे,

बाड़ी से सीकरी की सैर करके २९ बुधवार (भादों सुदि १। २८ अगस्त) को आगरे में आगये इन्हीं दिनों

में शेख बायजीद के तरफ़ की खराब २ खबर सुनने से सुलतान कुली तुर्क को २० दिन की मयाद पर शेख बायजीद के पास भेजकर २ ज़िलहिज्ज शुक्रवार (भादों सुदि ३। ३० अगस्त) से दरूद (जप) पढ़ने लगे जो ४१ बेर पढ़ी जाती थी फिर २६ जिलहिज्ज गुरुवार[1] (आसोज बदि १। २६ सितम्बर) को कोल और संबल के दौरे को रवाने हुवे.

सन ९३४ हि॰

बादशाह का दौरा

१ मोहर्रम शनिवार (आसोज सुदि ३ संवत १५८४। २८ सितंबर सन १५२७) को बादशाह कोल में उतरे हुमायूं ने दरवेश और अलीयूसफ़ को संभल में छोड़ा था उन्होंने नदी से उतरकर कुतुब शिरवानी और कई राजाओं को हराया था बहुत आदमियों को मारा था कुछ सिर और कई हाथी बादशाह के पास भेजे थे जो कोल में पहुंचे शेख गोरन की अर्ज़ से बादशाह उसके घर गये उसने ज़ियाफ़त और भेंट की.

बादशाह वहां से सवार होकर अतरौली में उतरे बुध को गंगापार होकर गुरुवार को संभल में गये २ दिन संभल की सैर करते रहे शनीचर को तड़के ही लौटे इतवार को सिकंदरे में दाऊद शिरवानी के घर उतरे उसने ज़ियाफ़त दी और खूब खिदमत की वहां से सवेरे सवा

(१) मूल में ग़लती से गुरुवार की जगह शनीवार लिखा गया है।

र हुवे रस्ते में १ बहाना करके लोगों से अलग होगये और घोड़ा दोड़ाकर आगरे से १ कोस तक अकेले चले आये फिर पीछे आने वालों के साथ होकर दोपहर ढलते आगरे में दाखिल हुवे.

बादशाह का बीमार होना.

२६ मोहर्रम इतवार (कातिक बदि ३। १३ अकतूबर) को बादशाह बीमार हुवे २५।२६ दिन तक बुखार जाड़े से आतारहा रात को नींद नहीं आती थी तबीअत बेचैन रहती थी.

२८ सफ़र शनिवार (मगसर बदि १४। २३ नवम्बर) को फ़खरजहां और खदेजा बेगम वग़ैरा सब बेगमें आईं बादशाह सिकंदराबाद के ऊपर तक नाव में जाकर मिले

इतवार को उस्ताद अलीकुली ने १ बड़ी देग से पत्थर चलाया पत्थर दूर जाकर तो पड़ा मगर देग फ़टकर टुकड़े २ होगई हरएक टुकड़े ने लोगों की १ टुकड़ी को ज़ख्मी किया जिनमें से ८ आदमी मरगये

७ रबीउल अव्वल (मगसर बदि ८। २ दिसंबर) सोमवार को बादशाह सीकरी की सैर को गये, तालाब में जो अठमहल चबूतरा बनाया नाव में बैठकर उसपर उतरे शामयाना खड़ा करा कर वहां माजून खाई और लोट आये.

चंदेरी पर चढ़ाई

१४ रबीउल अव्वल (मगसर बदि ३०। ६ दिसम्बर) सोमवार की रात को बादशाह ने चंदेरी पर चढ़ाई करने के इरादे से सफ़र किया ३ कोस चलकर जलेसर में उतरे लशक र का सामान करने के वास्ते २ दिन वहां रहे जुमेरात को कूच करके अलूरद में ठहरे वहां से नाव में बैठकर चंदवार में निकले चंदवार से कूच दर कूच २८ सोमवार (पोस बदि ३० २३ दिसम्बर) को कनार के घाट पर पहुंचे २ रबीउलसानी जुमेरात (पोस सुदि २। २६ दिसम्बर) को उस नदी से उतर कर ४। ५ दिन लशकर उतर जाने के लिये कनार के उस किनारे पर रहे रोज़ नाव में बैठकर माजून खाते थे.

चम्बल नदी एक दो कोस की ऊंचाई पर कनार में मिलती थी बादशाह शुक्रवार को नाव में बैठकर चंब ल में गये और उसके मिलने की जगह(१) से गुज़र कर उर्दू में आये.

शेख़ बायज़ीद ज़ाहिर में तो बाग़ी नहीं हुआ था मगर उसके बरताव से ऐसा जाना जाता था कि बाग़ी हुआ चाह ता है इसलिये बादशाह ने मोहम्मद अली जंग जंग को ल शकर से अलग करके भेजा कि क़न्नौज से मोहम्मद सुल तान मिरज़ा और उसतर्फ़ के सुलतान और अमीर अर्था त कासिम हुसेन, सुलतान तैमूर सुलतान मालिक क़ासिम कू

(१) संगम।

को आदिलमोहम्मद नेज़ेबाज़ मनूचिहरखां और दरिया खानी लोग जमाहोकर बाग़ी पठानों पर जावें और शेखबा यजीद को भी बुलावें जो वह सच्चे भाव से आकर मिलजावे तो सब मिलकर जावें और जो नहीं आवे तो पहिले उसी का पाप काटें मोहम्मद अली के मांगने पर १० हाथी उसको दियेगये और बाबा चहरे को भी इनलोगों के साथ रहने का हुक्म दिया.

बादशाह कनार नदी से १ कूच नाव में करके ८ रबी उलसानी बुधवार (पोस सुदि ९।१ जनवरी) को कालपी से १ कोस पर उतरे यहां काशग़र के खान सुलतान सईद का भाई बाबा सुलतान आकर मिला. दूसरे दिन आलमखां के घर ठहरे उसने हिन्दुस्तानीयों के तरीक़े से खाने खिलाये और नज़रें दीं.

१३-सोमवार (पोससुदि १४।६जनवरी) को कालपी से कूचकरके जुमे को एरच में पहुंचे सोमवार[(१)] को नानदेर में ठहरे १४ मंगलवार (पोससुदि १५।७जनवरी) को बादशाह ने ६।७ हज़ार आदमी चीन तैमूर सुलतान के साथ करके चंदेरी पर भेजे जो बड़ी तेज़ी से रवाने हुवे इनमें बाक़ी मलंग बेगी तरदी बेग, कूचबेग, आशिक़ बकावल, मुल्ला अबाक मोहम्मद दोलदी के सिवाय हिन्दुस्तानी अमीरों में से शेख़ गोरन था.

२४-शुक्रवार (माहबदि १०।१७जनवरी) को खजवे में डेरे हुवे बादशाह ने खजवे के आदमियों की तसल्ली

(१) मूलग्रंथमें रविवार भूल से लिखा है।

देकर खजवा बदरुद्दीन के बेटे को देदिया.

खजवा १ तौर से अच्छी जगह थी उसके आस पास छोटी २ पहाड़ियां थीं पूर्ब और उत्तर के तर्फ़ में पानी का बंद ५।६ कोस के गिरदाव का था जिसने खजवे को ३ तर्फ़ से घेर रक्खा था उत्तर और पच्छिम के कोने में कुछ सूखी ज़मीन थी और उधर ही उसका दरवाज़ा था. इस बंद में छोटी २ नावें पड़ी थीं १ नाव में ३।४ आदमी से ज़ियादा नहीं बैठ सकते थे जब भागना होता था तो वहां वाले उन नावों में बैठ कर पानी में चले जाते थे खजवे के रस्ते में भी दो जगह पहाड़ों में ऐसे ही बंद मिले थे जो ख़जवे के बंद से कुछ छोटे थे.

बादशाह ने खजवे में १ दिन ठहर कर बहुत से बेलदारों और जल्द काम कराने वालों को आगे भेजकर हुक्म दिया कि रस्ते की उंचाई निचाई बराबर करके जंगलों को काटदें जिस्से अराबे और तोपें बेखटके निकलजावें क्योंकि खजवे और चंदेरी के बीच में जंगल की सी ज़मीन थी.

बादशाह खजवे से १ मंज़िल बीच में करके चंदेरी से ३ कोस बुरहानपुर की नदी पर ठहरे चंदेरी का क़िला पहाड़ पर शहर से बाहर था शहर पहाड़ में बसता था अराबों का सीधा रस्ता क़िले के नीचे होकर था इसलिये बादशाह बुरहानपुर से १ मंज़िल घूमकर २८ मंगल (माहबदि १४। २१ जनवरी) को बहजतखां के हौज़ (तालाब) पर आ उतरे जो बंद के सिरे पर था तड़के ही सवार होकर क़िले के आसपास फ़ौज के मोरचे बांधदिये उस्ताद अली कुली ने पत्थर फेंकने के लिये १ जगह पसंद की वहां बेलद

और सिपाही तईनात कियेगये कि देग रखने के लिये द-
मदमा उठावें और फ़ौज वालों को " तोराशातू " तैयार क-
रने का हुक्म दियागया जो क़िला तोड़ने का सामान
था.

बादशाह लिखते हैं कि " चंदेरी पहिले मंडू के बाद
शाहों के पास थी सुलतान नासिरुद्दीन के मरने पर उस
के १ बेटे सुलतान महमूद ने जो अब मंडू में है मंडू और
उसतर्फ़ के मुल्क पर क़बजा किया और दूसरा बेटा मो-
हम्मद शाह चंदेरी को अपने हाथ में लेकर सुलतान सि
कन्दर (दिल्ली का बादशाह) से मदद मांगा करता था
और सुलतान सिकंदर भी उसके वास्ते लशकर भेजा
करता था . सुलतान सिकंदर के पीछे सुलतान इब्राहीम
के ज़माने में मोहम्मद शाह मरगया उसका बेटा अहमद
शाह छोटा ही था कि सुलतान इबराहीम ने उसको नि
कालकर अपने आदमी चंदेरी में रखदिये तब रानासां
गा सुल्तान इबराहीम पर चढ़ाई करके धौलपुर तक आ
या सुलतान के अमीर बदलगये राना ने चंदेरी लेकर
मेदनीराय नाम १ बड़े हिन्दू को देदी इनदिनों में वही
मेदनीराय ४।५ हज़ार हिन्दुओं से चंदेरी के क़िले में
था उसकी जान पहिचान आरायश खां से थी इस लि
ये आरायशखां को शेख़ गोरन के साथ भेजकर इनायत
और महरबानी की बातें कहलाई गईं और चंदेरी के
बदले में शमसाबाद देने का इक़रार कियागया उसके
दो एक एतबारी आदमी भी आये मैं नहीं जानता कि
उसने भरोसा नहीं किया या अपने क़िले का घमंड कर

के सुलह नही चाही"

चंदेरी पर हमला और फ़तह

६-जमादिउल अव्वल मंगलवार (माह सुदि ७। २८-जनवरी) को बादशाह ने बहजतखां के होज़ से कूच करके किले के पास बीच के होज़ पर डेरा किया उसी वक्त खलीफा एक दो खत लेकर आया जिनमें यह लिखा था कि जो लशकर पूरब की तर्फ़ गया था बेफायदा लड़ाई करके हारा और लखनऊ से हटकर कन्नौज में चला आया है इसबात से खलीफ़ा बहुत फ़िकर में था बादशाह ने कहा कि फ़िकर करना बेफ़ायदा है जो कुछ खुदा का इरादा है उसके खिलाफ़ नहीं होता है अभी तो यह काम दरपेश है तुम उसबात का नाम न लो सुबह ही क़िले पर ज़ोर देंगे फिर जो होगा देखलेंगे.

उधर अंदर का किला तो मज़बूत किया हुआथा बाहर के क़िले में एक एक दो दो आदमी मसलहतके लिये खड़े हुवे थे जब रात को बादशाही फ़ौज का हमला हर तर्फ़ से बाहर के क़िले पर हुआ तो कुछ लड़ाई न हुई और वे लोग भाग कर ऊपर के किले पर चढ़ गये

७-जमादिउल अव्वल बुधवार (माह सुदि ८। २९ जनवरी) को मोरचों मेंसे लड़ाई शुरू हुई और बादशाह बाजे और झंडे साथ लेजाना मोकूफ़ करके उस्ताद अली कुली के पत्थर फेंकने का तमाशा देखने गये

उसने तीन चार पत्थर मारे मगर क़िले की दीवार बहुत मज़बूत थी और तोपखाने की दीवार भी नीची थी इस लिये उसपर पत्थरों का कुछ असर न हुआ

चंदेरी का क़िला पहाड़ पर था उसमें एक तर्फ़ पानी के लिये दुहरी दीवार पहाड़ से कुछ नीची थी और यही जगह ज़ोर डालने की थी दायें बायें और बीच के मोरचे भी इसी जगह आपहुँचे थे इसलिये हर तर्फ लड़ाई शुरू करके यहां पर ज़ियादा ज़ोर दिया गया ऊपर से हिन्दुओं ने बहुत पत्थर फेंके और आग जला जलाकर भी गिराई मगर बादशाही जवान नहीं हटे आखिर जहां बाहर के-किले की फ़सील दुहरी दीवार से मिली थी वहां शाहमहमूद बेगी चढ़गया दूसरे जवान भी दूसरी जगह से चढ़े जो लोग दुहरी दीवार में रहगये थे वे वहां से भाग गये और वह जगह लेली गई ऊपर के किले वालों ने भी कुछ लड़ाई नहीं की जल्दी ही भाग निकले फिर तो बादशाही लश्कर के बहुत से आदमी क़िले पर चढ़गये कुछ देर पीछे सब क़िले वाले नंगे होकर लड़ने लगे और अक्सर आदमियों को तलवारों से मारगये.

पहिले कोट पर से उनका चलाजाना इस सबब से था कि उन्होंने अपने पकड़ेजाने का यक़ीन कर लिया था इसलिये वह अपने तमाम जोरू बच्चों को मारकर मरने के इरादे से नंगे होकर लड़ने के वास्ते आये थे फिर हरएक आदमी ने हर तर्फ़ से ज़ोर डालकर उनको कोट में भगादिया उनमें से २३० मेदनी राय की हवेली में घुसगये जहां अक्सर एक दूसरे के हाथ से इसतौ

र पर मरगये कि एक आदमी तो उनमें से तलवार लेकर खड़ा होगया और दूसरे ने एक एक करके राज़ी २ अपनी गरदनें उसके आगे लम्बी करदी.

बादशाह लिखते हैं कि "ऐसा नामी क़िला झंडा नक्कारा लाये और खबिल् जंग किये बग़ैरही खुदा की महरबानी से दो तीन घड़ी में फ़तह होगया पहाड़ पर उत्तर पच्छिम को हिन्दुओं के सिरों का मीनार चुनवाया गया."

"चंदेरी बतौर १ वलायत के है उसके आस पास कुछ बहते हुवे पानी हैं उसका क़िला पहाड़ पर है वहां दुहरे कोट में १ बड़ा तालाब पत्थरों को काटकर बनाया गया है और वहीं पर ज़ोर डालकर क़िला लिया गया। तमाम छोटे बड़े आदमियों के मकान छिले हुवे पत्थरों के हैं उनपर खपरों की जगह पत्थरों के तख़्ते पड़े हैं क़िले के आगे ३ बड़े कुंड हैं और उसके आस पास भी वहां के हाकिमों ने बंध बांधे और हौज़ बनाये हैं (चंदेरी) ऊंची जगह पर है उससे ३ कोस पर बेतोय नाम १ छोटी नदी है जिसका पानी मज़ेदारी में मशहूर है इसके बीच में १ ऊंची जगह इमारत बनाने के लायक है चंदेरी आगरे से दक्खन को ९० कोस पर है उसकी उंचाई ज्योतिष के क़ायदे से २५ अंश की है."

चंदेरी से कूच

जुमेरात को बादशाह चंदेरी के पास से कूच करके मल्लूखां के हौज़ पर उतरे वे आये तो इस निय्यत से

थे कि चंदेरी फ़तह करके रायसेन भेलसा और सारंगपुर पर जो हिन्दुओं की वलाअत थी और सलहदी के पास थी जावें और उसको लेकर चीतोड़ में राना सांगा के ऊपर कूच करें मगर पूरब में लशकर की खराबी की खबर आजाने से उन्होंने अमीरों को बुलाकर सलाह की तो पठानों के ऊपर जाने की बात ठहरी इसलिये चंदेरी उसी अहमदशाह को दीगई जो सुलतान नासिरुद्दीन का पोता था मगर उसमें से ५० लाख का मुल्क खालिसा करके मुल्ला आफ़ाक़ को दो तीन हज़ार तुर्कों और हिन्दुस्तानियों से उसकी सिकदारी (कोटवाली) और अहमद शाह की मदद पर छोड़ा गया

पठानों पर कूच

११-जमादिउल अव्वल इतवार (माह सुदि १२। २ फरवरी) को बादशाह मल्लूखां के होज़ से कूच करके बुरहानपुर की नदी पर उतरे और नांदेर से आदमी भेजकर कालपी की नावें कनार के घाट पर मंगाईं.

२४-शनिवार (फागुन बदि १०। १५ फरवरी) को कनार से लशकर उतरने लगा यहां यह खबर आई कि बादशाही लशकर कन्नौज से भी हटकर राहरी में आगया है और मोहम्मद नेज़ेबाज़ ने शमशाबाद का क़िला सजा रक्खा था बहुत से आदमियों ने आकर वह भी छीन लिया है। बादशाह कन्नौज को रवाने हुवे और लुटेरे जवानों को दुश्मनों की खबर लाने के वास्ते पहले

भेजदिया जब कन्नौज दो तीन कूच रहगई थी तो खबर आई कि इन लुटेरे जवानों की गर्द उड़ती हुई देखकर मारूफ़ का बेटा तो कन्नौज से भागगया है बब्बन, बायज़ीद, और मारूफ़ हमारी खबर पाते ही गंगा से उतर कर दूसरे घाटपर मोरचे बांधने लगे हैं।"

६ जमादिउलसानी जुमेरात (फागुन सुदि ७। २७ फरवरी) को बादशाह कन्नौज से आगे बढ़कर गंगा के पश्चिम तट पर पहुंचे और उनके सिपाही जाकर पठानों की छोटी बड़ी ३०।४० नावें छीन लाये मीर मोहम्मद जालेबान को लश्कर के वास्ते पुल बांधने का हुक्म हुआ उसने एक जगह पसंद करके पुल बांधना शुरू किया वहीं उस्ताद अलीकुली ने भी अच्छी जगह देखकर तोप लगादी और पत्थर मार ने लगा बाबा सुलतान वग़ैरा बादशाही सिपाही नावों में बैठकर पठानो से लड़ने जाते थे कुछ अराबे भी उतरा दियेगये थे जिनसे गोले चलते थे- पुलसे ऊंचा १ दमदमा भी उठाया गया था जिसपर से खूब खूब बंदूकें मारी जाती थीं मलिक क़ासिम जाकर पठानों को अपने पीछे लगा लाया उनके साथ १ हाथी भी था जब मलिक नाव में बैठकर आने लगा तो हाथी ने दौड़ कर नाव उलट दी और क़ासिम डूबगया.

पुल बांधे जाने तक उस्ताद अलीकुली ने खूब पत्थर मारे पहिले दिन ८ और दूसरे दिन १६ मारे इसी तरह तीन चार दिन तक मारता रहा और ये पत्थर ग़ाज़ी नाम तोप से मारे जाते थे यह वही तोप

थी कि जिससे राना सांगा की लड़ाई में पत्थर मारेगये थे और इसलिये इसका भी नाम ग़ाज़ी रखा गया था इससे बड़ी १ और देग थी मगर वह १ पत्थर फेंक करही रह गई थी बंदूकचियों ने भी बहुत बंदूकें चलाई थीं बहुत से घोड़ों और आदमियों को गिराया था.

जब पुल तैयार होने पर आया तो बादशाह १९ जमादिउल आख़िर बुधवार (चैत बदि ५। ११ मार्च) को पुल के ऊपर आये पठान पुल बंधने का यक़ीन न कर के हंसी करते थे.

जुमेरात को पुल पूरा होगया और लाहोरी पयादों ने उस परसे उतर कर कुछ लड़ाई की.

जुमे को दहनी बाईं और बीच की फ़ौजों के जवान और बंदूकची पुल से उतरे पठान भी सब हथियारबंधकर और हाथियों को आगे करके लड़ने आये उन्हों ने एकदफ़े तो बायें हाथ की फ़ौज को हटा दिया था मगर फिर बीच की और दहने हाथ की फ़ौज से हारकर हटगये लड़ाई पिछले दिनतक होती रही रात को बादशाह ने अपने सब आदमियों को जो पुलपर से उतर गयेथे वापस बुलवा लिया इसका सबब वे यह लिखते हैं "कि पिछली साल शनिवार को तो नौरोज़ के दिन हमने राना सांगा से लड़ने के लिये सीकरी से कूच करके उसे ज़ेर किया था और इसबर्ष बुधवार को नौरोज़ था उसदिन हमने इन दुशमनों से लड़ने के लिये कूच किया था अब जो इतवार के दिन फ़तह हो तो बहुत अजीब बात होगी इसी वास्ते १ आदमी भी नहीं उतारागया."

शनिवार को भी लड़ने नहीं गये दूरही परे जमाये खड़े रहे इसी दिन आराबों को उतारा सुबह ही हुक्म हुवाकि आदमी भी उतरें नक़ारा बजते ही किरावल (आगे चलने वाली फ़ौज) में से ख़बर आई कि ग़नीम भाग गया है चीन तैमूर सुलतान को हुक्म हुवा कि लशकर को बढ़ाकर ग़नीम के पीछे जावे और मोहम्मद अली जंगजंग, हिसामुद्दीन अली ख़लीफ़ा, मोहब अली ख़लीफ़ा, कूकी बाबा क़शका, दोस्त मोहम्मद, बाबा क़शका, बाक़ी ताशकंदी, वली फ़रमलबाश, इन सरदारों को मददगार मुक़र्रर किया गया कि सुलतान के साथ रहकर उसके कहने से बाहर न जावें। रात के वक़्त मैंभी उतरा ऊंटों के वास्ते हुक्म हुवाकि नीचे के घाट से जो देख लिया गया है उतारे जावें वह दिन इतवार का था संकर मोद से १ कोस भर १ छोटी सी नदी पर पड़ाव हुआ जो लोग मददगारी पर तईनात हुवे थे खूब नहीं गये थे दोपहर के पीछे संकर मोदसे चले थे और तड़के १ तालाबपर संकर मोद के आगे ही उतर पड़े थे इसीदिन मेरे खानदादा का छोटा बेटा तखता बेग सुलतान आकर मिला.

२६ जमादिउल आख़िर शनिवार (चैतसुदि १। २१ मार्च) को बादशाह लखनऊ की सैर करके गोमती नदी से उतरे नदी में नहाने से दहिना कान भारी होगया कई दिन दर्द रहा.

उर्दू दो एक मंज़िल रहगया था कि चीन तैमूर का आदमी आया कि ग़नीम सरू नदी के उधर बैठा है मदद भेजो बादशाह ने क़ौल (अपने साथ की फ़ौज) में

पे १,००० जवान भेजा दिये थे.

७ रज्जब शनिवार (चैत सुदि ८ । २८ मार्च) को बादशाह अवध से दो तीन कोस ऊपर को कूच कर और सरू नदी पर उतरे दूसरे दिन तक शेख़ बायज़ीद सरू के उस तर्फ़ अवध के सामने पड़ा था और उसने ख़त भेजकर सुलतान से बात चीत की थी दोपहर पीछे सुलतान और कराचा नदी से उतरे बायज़ीद के ५० सवार तीन चार हाथियों वहां थे पर वे ठहर न सके भाग गये इन्होंने कई आदमियों को गिराकर सिर काटे और भेजे.

शेख़ बायज़ीद जंगल को भाग कर बचा चीन तैमूर सुलतान ४० कोस तक पीछा करके पठानों के जोरू बच्चों को पकड़ लाया बादशाह बंदोबस्त के वास्ते कुछ दिनें अवध में रहे अवध से ऊपर सात आठ कोस पर सरू के के में शिकार की जगह अच्छी सुनी गई थी और पीर मोहम्मद जा बान वहां भेजा गया था वह कक्कर और सरू के घाटों को देखकर आया और बादशाह १२ गुरुवार (चैत सुदि १२। २ अप्रेल) को शिकार के विचार से उधर रवाने होगये.[1] सन ९३५ हि.

३ मोहर्रम शुक्रवार सन ९३५ (आसोज सुदि ५ । १९ सितम्बर) को असकरी आकर खिलवतख़ाने में मिला बादशाहने इसको चंदेरी जाने से पहिले मुलतान के वास्ते बुलाया था.

दूसरे दिन मीरख़्वांद मुवर्रिख़, मौलाना शहाबुद्दीन मोअम्माई मीर इब्राहीम कानूनी हिरात से आकर मिले.

१ इसके पीछे ६ महीनों का हाल और पठानों की लड़ाई का परिणाम कुछ नहीं

गवालियर का दौड़ा

५ रबिवार (आसोज सुदि ७ । २० सितम्बर) को पिछले दिन से बादशाह गवालियर जाने के वास्ते जमना से उतरकर आगरे के किले में आये फ़खर जहां बेगम और खदेजा सुलतान बेगम को जो काबुल जाने वाली थीं बिदा करके सवार हुवे मोहम्मद ज़मान मिरज़ा रुख़सत लेकर आगरे में रहगया था। बादशाह उसरात को चार पांच कोस चलकर १ बड़े तालाब के ऊपर उतर कर सोगये तड़के ही नमाज़ पढ़कर सवार हुवे दो हर केसरा नदी के किनारे डालकर तीसरे पहर को फिर चले और पिछले दिन से धोलपुर से १ कोस पच्छिम को जहां बाग़ और महल उनके हुक्म से बन. वे गये थे ठहरे यह जगह पहाड़ के सिरे पर थी और वह रे लाल पत्थर का था और मकान बनाने के लायक़ था इसलिये बादशाह ने फ़रमाया कि इस पहाड़ को ज़मीन तक काटें अगर एक ही टुकड़ा पहाड़ का इतना ऊंचा रहजावे कि उस के अंदर मकान कोरें जासकें तो मकान बनावें और जो इतना ऊंचा न रहे तो उसको चोरस करके हौज़ खोदलें वह इतना ऊंचा नहीं निकला कि १ ही पत्थर में कोई मकान बनसके इसलिये उस्ताद शाहमोहम्मद संगतराश को अठपहलू हौज़ उस पत्थर में काटने का हुक्म दिया गया और बहुत से सिलावट उसकाम पर लगादिये इस हौज़ से उत्तर को बहुत से पेड़ आम और जामन वग़ैरा

को लगे हुवे थे बादशाह ने उन पेड़ों में १० गज़ लंबा और इतना ही चौड़ा कुवा खुदा दिया जिसका पानी उस होज़ में जाने लगा इस होज़ के पच्छिम में सुलतान सिकंदर का बनाया हुआ १ बंद था जिसपर मकानभी बने थे और यह बंद ऊपर का बरसाती पानी आने से बड़ा सा तालाब बनजाता था इसके आस पास पहाड़ थे बादशाह ने पूर्ब में भी १ही पत्थर के चबूतरे और पच्छिम में मसजिद बनाने का हुक्म दिया.

मंगल और बुध को बादशाह इसी काम की सलाह के लिये वहां ठहरे जुमेरात को सवार होकर दिन में चम्बल से और रात क्वारी नदी से उतरे जिस में मेह हो जाने से बहुत सा पानी आगया था घोड़े तो तिराकर उतारे गये और बादशाह नाव में बैठकर उतरे.

१० जुमे के दिन (आसोज सुदि १२।२५ सितम्बर) को वहां से चले दोपहरी १ गांव में तेर करके पहर रात गये गवालियर से १ कोस उत्तर चार बाग़ में उतरे जो पिछली साल में उनके हुक्म से बनाया गया था दूसरे दिन गवालियर की उत्तर तर्फ़ की घाटियों को देखते हुवे हथियापोल दरवाज़े से जिसके पास राजा मानसिंह की बनाई हुई इमारतें हैं गवालियर में गये और राजा बिक्रमाजित की इमारत में होकर जहां रहीमदाद बैठा था दोपहर पीछे उतर आये रात को कान के दर्द से कुछ अफ़ीम खाई सुबह को उसके खुमार से बहुत तकलीफ़ रही और उलटी भी हुई तो भी मानसिंह और बिक्रमाजीत की इमारतों में फिरकर सबकी सैर की

वे लिखते हैं कि ये बग़ैर कैंडे की हैं तो भी अजीब इमारतें हैं और सब छिले हुवे पत्थरों की हैं। सब राजों की इमारतों से राजा मानसिंह की इमारत अच्छी और ऊंची है इसके १ ज़िले (हिस्से) में जो पूर्ब की तर्फ़ है ख़ूब सजावट कीगई है इसकी ऊंचाई ४०।५० गज़ की होगी सब १ पत्थर से तराशी और चूने से सफ़ेद की गई हैं कहीं २ चार खंड हैं नीचे के खंड में बहुत अंधेरा है बैठने के पीछे कुछ उजाला दिखाई देता है यहां हमने शमै (बत्ती) की रोशनी में फिरकर सैर की इस इमारत का हर ज़िला पांच २ गुंबद का है–और गुंबदों के बीच २ में चारों तर्फ़ छोटी २ बुर्जियां हैं जैसा कि हिन्दुस्तान में दस्तूर है इन पांचों गुंबदों के ऊपर तांबे के टुकड़े सोना चढ़ाकर (कलश) लगाये हैं बाहर की दिवारों पर हरे रंग की काशीकारी (पच्चीकारी) कीगई है जिसमें सब जगह केले के पेड़ बने हैं। पूर्ब ज़िले (बिभाग) की बुर्ज में हथिया पोल है यहां पूरा हाथी महावत सहित बना है इससे इस दरवाज़े को हथिया पोल कहते हैं इस इमारत के चार खंड हैं नीचे का खंड इस हाथी के पास है ऊपर के खंडों पर गुंबद हैं दूसरे खंड में बैठकें हैं मगर नीचे हैं उनमें हिन्दुस्तानी सजावटें तो बहुत कीगई हैं मगर बग़ैर हवा के हैं।"

मानसिंह के बेटे बिक्रमाजीत की इमारतें क़िले के उत्तर में ठीक २ हैं बेटे की इमारतें बाप की इमारतों के बराबर नहीं हैं। १ बड़ा गुंबद बनाया है जिसमें बहुत अंधेरा रहता है और देर तक खड़े रहने के पीछे उजाला नज़र आता है। इस बड़े गुंबद के नीचे भी १ छोटी सी इमारत है

जिसमें कहीं से भी उजाला नहीं आता है इसी बड़े गुंबद के ऊपर रहीमदाद ने छोटा सा बंगला बनाया है वह बिक्रमाजीत की इन्हीं इमारतों में बैठा था."

"बिक्रमाजीत की इमारतों में से १ रस्ता बनाया गया है जो उसके बापकी इमारतों में जाता है और बाहर से बिलकुल नहीं मालूम होता है और अंदर भी किसी जगह नहीं देखा जाता है कहीं २ से जो रोशनी आती है वही रस्ते के तौर पर है."

"हम इन इमारतों की सैर करके सवार हुवे रहीमदाद के बनाये हुवे स्कूल में होकर दक्खन की तरफ़ उस बाग़ में गये जो १ बड़े होज़ पर रहीमदाद ने बनाया है उसको देखकर बहुत देर से उस चार बाग़ में आगये कि जहां उर्दू से आकार उतरे थे इस बागीचे में बहुत फुलवार बोई गई थी लाल फूलों का कनेर बहुत था और जगह का कनेर तो शफ़तालू रंग का होता है और ग्वालियर का कनेर लाल और अच्छे रंग का है मैंने गवालियर से कुछ लाल कनेर लेजाकर आगरे के बाग़ों में लगाये हैं."

"इस पहाड़ में दक्षिण को १ बड़ा तालाब है जिसमें बरसात का पानी भर जाता है इस तालाब के पच्छिम में १ मंदिर बहुत ऊंचा है सुलतान शमसुद्दीन एलतमश ने इस मंदिर की बग़ल में जुमा मसजिद बनाई है यह मंदिर इतना ऊंचा है कि क़िले में इससे ऊंची कोई इमारत नहीं है धौलपुर के क़िले से गवालियर का क़िला और यह मंदिर साफ़ दिखाई देता है। कहते हैं कि इस मंदिर के पत्थर सब इसी बड़े तालाब को खोदकर लिये हैं."

"इस बागीचे में लकड़ी का १ बंगला था जो बहुत नीचा और बिना कैंडे का था इसमें हिंदुस्तानी ढंग के और भी कई मकान भद्दे से बने हैं।"

"दूसरे दिन दोपहर पीछे फिर मैं गवालियर की देखी हुई इमारतों के देखने को सवार हुआ मानसिंह के किले के बाहर की इमारत जिसका नाम बादलगढ़ है देखकर हाथिया पोल से अंदर पहुँचा और सब जगह फिर कर ओदा में गया जो पश्चिम को किले से १ दरा है यह किलेकी १ दीवार से तो बाहर है जो पहाड़ के ऊपर बनी है मगर इसके सिरपर फिर दोहरी दीवारें बनाई गई हैं जिनकी ऊंचाई ३०।४० गज़ के क़रीब है अंदर की दीवार बहुत लम्बी है ये दीवारें इधर उधर से किले में जा मिली हैं इन दीवारों के बीच में इनसे छोटी और नीची एक भीत पानी के वास्ते बनाई गई है वहाँ १ बाय (बावड़ी) बनी है जिसमें १०।१५ सीढ़ियां उतर कर पानी तक पहुंचते हैं यह पानी बाय की भीत में जाता है वहां से बड़ी दीवार में होकर निकलता है बाय के दरवाज़े पर सुलतान शमसुद्दीन एलतमश का नाम और सन ६३६ (संबत १२८६) १ पत्थर में खुदा है।"

"इस बाहर की दीवार के नीचे किले से बाहर १ बड़ा तालाब है इसके और ओदा के बीच में फिर १ और बड़ा तालाब है जिसके पानी को किले वाले दूसरे तालाबों के पानी से अच्छा समझते हैं इस ओदा के ३ तर्फ़ बड़े तालाब से मिला हुआ पहाड़ का १ कराडा है जिसके पत्थरों का रंग बयाने के पत्थरों कासा तो लाल नहीं है पर कुछ भूरासा

है इस ओदा के इधर उधर पहाड़ को काटकर छोटी बड़ी मूर्तियां खोदी हैं दक्खिन दिशा में १ बड़ी मूर्ती २० गज़ ऊंची है और ये सब मूर्तियां बिलकुल नंगी हैं ओदा के अंदर उनदोनों बड़े तालाबों के बीच में २५ कुवें खुदे हुवे हैं जिनका पानी खेती बाड़ी में देते हैं फूल और पेड़ बोते हैं ओदा बुरी जगह नहीं है एक तौर की जगह है उसकी बुराई पास की मूर्तियों से है मैंने उन मूर्तियों को उठा देने का हुक्म दे दिया"

"मैं ओदा से फिर क़िले पर चढ़ा सुलतान पोल की जगह देखी जो हिन्दुओं के वक्त से बंद है शाम की नमाज़ रहीमदाद के बग़ीचे में पढ़ी रात को उसी बग़ीचे में रहा"

"१४ मंगलवार (आसोज सुदि १५। २९ सितम्बर) कौरा ना सांगा के दूसरे बेटे बिक्रमाजीत के आदमी आये जो अपनी मां पदमावती समेत रणथंभोर के क़िले में रहता था गवालियर को आने से पहिले असोक नाम एक हिन्दू की तर्फ़ से जो मोतबर आदमी इसी बिक्रमाजीत का है १ आदमी ने आकर बंदगी और ताबेदारी की बात कही थी और ७० लाख की जागीर मांगी थी हमने यह ठहरा कर कि जब वह रणथंभोर का किला सौंप देगा तो उसकी मर्ज़ी के मुवाफिक परगने दिये जावेंगे उसके आदमी को रुख़सत किया था और उसके गवालियर में आने के वास्ते मयाद भी मुकर्रर क़रदी थी मयाद के कई दिन पीछे रहगये थे यह असोक बिक्रमाजीत की मां पदमावती का नजदीकी रिश्तेदार है इसने मां बेटों को भी समझा दिया है और उन्होंने भी इसके शामिल होकर ताबेदारी क़बूल की है जब संगाने सुलतान महमूद

को ज़ेर किया था और सुलतान संगा की क़ैद में पड़ा था तो संगा ने ताज कुलाह और सुन्हरी कमर (पटका) सुलतान महमूद का जो तारीफ़ के लाइक था लेकर सुलतान को छोड़ा था और अब वही ताज. कुलाह और सुन्हरी कमर (पटका) बिक्रमाजीत के पास था बड़ा भाई उसका रतन सीजो बाप की जगह राना हुआ है और अब चीतौड़ में राज करता है उसने ताज. कुलाह और कमर मुझे देना करके रण थंमोर के बदले बयाने का क़िला मांगा था मैंने बयाने की बात से हटाकर रण थंमोर के बदले में शमसाबाद देने का इक़रार किया था - उसी दिन उसके इन आदमियों को जो आये हुवे थे खिल अत पहिना कर और ८ दिन में बयाने आजाने की मोहलत देकर बिदा किया."

"फिर हमने इस बागीचे से सवार होकर गवालियर के मंदिरों को देखा बाज़े मंदिर २ खंड के और बाज़े ३ खंड के हैं मगर नीचे २ पुराने ढंग के हैं दरवाज़े और मूर्तियां पत्थर में खोदी हुई हैं बाज़े मंदिर मदरसे (पाठशाला) की ढंग के हैं आगे तो बड़े ऊंचे गुंबद हैं और अंदर मदरसे कीसी कोठड़ियां हैं हर कोठड़ी पर १ हलका गुंबद पत्थर का तराशा हुआ है और नीचे की कोठड़ियों में पत्थर की मूर्तियां हैं मैं इन इमारतों को देखकर गवालियर के पच्छिमी दरवाजे से बाहर आया और किले के दक्षिण में घूमकर रहीम दाद के चार बाग़ में उतरा जो हथिया पोल के आगे है उसने चार बाग़ में बड़ी तय्यारी कर रक्खी थी ख़ूब खाने खिलाये और नज़रे भी बहुत कीं जो ४० लाख की थीं फिर इस चार बाग़ से सवार होकर डेरे के अपने चार बाग़ में

आगया."

" १५ बुधवार (कातिक बदि १। ३० सितम्बर) को उस झरने की सैर के लिये गया जो गवालियर से ६ कोस पूर्व और दक्खिन की तर्फ़ है बहुत देर करके सवार हुआ था तो भी दोपहर पीछे वहां पहुंचा पहाड़ से १ पनचक्की के बराबर पानी गिरता था नीचे बड़ा तालाब बनगया था जिसके किनारे पर बड़े बड़े पत्थर बैठने के लायक़ पड़े थे मगर यह पानी हमेशा नहीं रहता है मैंने वहां बैठकर माजून खाई फिर पानी के ऊपर जाकर निकास तक देखा और १ ऊंचाई पर चढ़कर देरतक बैठा रहा बजंत्रियों ने बाजे बजाये गवैये गाये आबनूस का पेड़ जिसको हिंदुस्तानी तेंदू कहते हैं जिन लोगों ने नहीं देखा था उनको दिखायागया फिर पहाड़ से उतरकर शाम पड़े पीछे सवार हुआ और आधीरात को १ जगह नींद लेकर दिन निकले से पहिले २ चारबाग़ में आ गया."

१७ शुक्रवार (कातिक बदि ३। २ अकतूबर) को बादशाह ने सामोचा नाम गांव में जाकर नीबू और सदाफल के बाग़ देखे और पहर दिन चढ़े चारबाग़ में आगये जो वहां पहाड़ के दरे में था.

१९ रविवार (कातिक बदि ५। ४ अकतूबर) को बादशाह चारबाग़ से कूच करके क्वारी नदी से उतरे और रस्ते में १ जगह दुपहरी तेर करके दिन छुपे चंबल से उतरे और कुछ रात गये धोलपुर के क़िले में पहुंचे और १ चराग़ की रोशनी में जो अबुलफ़तह ने बनाया था वहां की सैर करके बंद के ऊपर नये चारबाग़ में जा उतर पड़े

दूसरे दिन जाकर उन्होंने उस टेपी दार होज़ को दे-

रखा जो १ही पत्थर में खोदा गया था और उसमें पानी भराकर इधर उधर से बराबर कराया॰

बुधकी रात को सीकरी की तरफ़ सवारी हुई रात को का न में बहुत दर्द हुआ तड़के ही वहां से चलकर १ पहर में सीक री पहुंचे और नये बाग़ में ठहर कर वहां के मकानात और कु वे अच्छे तैयार न होने से कारी गरों को सज़ादी फिर शामको सीकरी से सवार होकर मंढागर होते हुवे आगरे पहुंचे और क़िले में जाकर खुदेजा सुलतान बेगम से मिले जो काम हो- जाने से फ़खूजहां बेगम के साथ काबुल न जासकी थी फिर जमना से उतर कर बाग़ हश्त बहिश्त में आगये.

३ सफ़र शनिवार[1] (कातिक बदि ४। १७ अकतूबर) को सब बेगमें जमना के ऊपर आकर महलों में उतरीं बादशा ह शाम के वक़्त जाकर उनसे मिले और वहीं से नाव में बैठ गये॰

५ सफ़र सोमवार (कातिक सुदि ६। १९ अकतूबर) को बादशाह ने बिक्रमाजीत के पहिले और पिछले एलचियों के साथ अपने क़दीमी हिन्दुओं में से देवा के बेटे[2] को भे जा कि रणथंभोर सौंपने और ताबेदारी करने के वास्ते अ पनी रीति रसम के मुवाफ़िक़ अहदनामा करें बादशाह लि खते हैं कि "यह हमारा आदमी जो देखकर समझकर और यक़ीन करके आया और वह (बिक्रमाजीत) जो अपने बातों पर जमा रहा तो मैंने भी इक़रार किया है कि जो खुदा

(१) मूलग्रंथ में मंगल भूल से लिखा गया है।

(२) मूलग्रंथ में इसका नाम तो लिखा है मगर ठीक नहीं पढ़ाजाता

पूरा करे तो उसको उसके बापकी जगह राना करके चीतोड़ में बैठा दूंगा।"

दिल्ली आगरे में जो ख़ज़ाने सुलतान इबराहीम और सिकंदर के थे वे सब उड़ चुके थे इसलिये बादशाह ने लशकर के सामानों दारू (बारूत) तोपचियों और बंदूकचियों की तनख़ाहों के लिये ८ सफ़र गुरुवार (कातिक सुदि ९। १२ अकतूबर) को हुक्म दिया कि सब जागीरदारों की जागीरों में से १३० लाख कचहरी में लावें और लड़ाई के सामानों में ख़र्च करें.

१० शनिवार (कातिक सुदि ११। २४ अकतूबर) को सुलतान मोहम्मद बख़शी का प्यादा शाह-क़ासिम नाम जो १ बेर पहिले भी ख़ुरासान वालों के वास्ते ख़ातिरी के फ़रमान लेगया था फिर इस मज़मून के फ़रमान लेकर गया कि हिंदुस्तान के पूरब पच्छिम के बाग़ियों और हिन्दुओं की तरफ़ से ख़ातिर जमा होगई है ख़ुदा चाहे तो इसी गर्मी में जैसे होसका मैं वहां पहुंचूंगा।

इसी दिन से दोपहर पीछे बादशाह ने पारा खाना शुरू किया.

२१ बुधवार (मगसर बदि ७। ४ नवम्बर) को १ हिंदुस्तानी प्यादा कामरां और ख़्वाजा दोस्त ख़ावंद की अर्जियां लाया ख़्वाजा दोस्त ख़ावंद १० ज़िलहिज्ज (भादों सुदि ११। २९ अगस्त) को काबुल में जाकर हुमायूं से पहिले खाने हुवा था १७ ज़िलहज्ज (आसोज बदि ४। २ सितम्बर) को कामरां काबुल में आया और उसने ख़्वाजा से बातचीत करके उससे २० ज़िलहज्ज (आसोज बदि ३०। १३ सितम्बर) को क़ि

ले जफ़र की तरफ़ रवाने करदिया इन अर्जियों में और अ च्छी २ खबरें भी थीं जैसे शाहज़ादे तुहमास्प(१) ने उजबकों परच ढ़ाई की और उनके रईस को दामुगां में पकड़ा और मारा तन था उसके आदमियों का क़तल आम किया. उबेदखां क़ज़ लबाशों की खबर पाते ही हिरात का घेरा छोड़ कर मर्व में चलागया और समरकंद वग़ैरा के सुलतानों को बुलाया और मावराउलनहर (तूरान) के सब सुलतान उसकी मदद के वास्ते जाते हैं.

यही पाजी (पैदल) यह खबर भी लाया है कि हुमायूं की यादगार तुग़ाई की लड़की से लड़का हुआ है कामरां ने भी काबुल में अपने तुगाई सुलतान अली मिर्ज़ा की लड़की से शादी करली है.

इसी दिन बादशाह ने सैयद रूकनी शीराज़ी को खिल अत पहिनाकर इनाम दिया और फ़व्वारे दार कुंवों के बना देने का हुक्म किया.

२३ सफ़र शुक्रवार (मगसर बदि ९।६ नवम्बर) को बा दशाह को ऐसा बुखार चढ़ा कि मसजिद में नमाज़ पढ़ने को नहीं जासके किताबखाने में बड़ी मुशकिल से नमा ज़ पढ़ी और इस बीमारी में उन्होंने एक किताब का तर्जु मा कविता में करडाला.

२९ सफ़र गुरुवार (मगसर बदि ३।१२ नवम्बर) से आ राम होने लगा ८ रबीउल अव्वल शनिवार (मगर सुदि ९ २१ नवम्बर) को वह तरजुमा पूरा होगया.

(१) यह ईरान के शाह इसमाईल सफ़वी का बेटा था.।

२८ सफ़र बुधवार (मगसर बदि १४। ११ नवम्बर) को बादशाह ने जगह २ के लशकरों के नाम हुक्म भेजदिया कि मैं सवारी करूंगा तैयार होकर जल्दी आजावें.

६ रबीउल अव्वल रविवार (मगसर सुदि १०। २२ नवम्बर) बेग मोहम्मद तालीकची आया जो पिछले मोहर्रम के आखीर में हुमायूं के वास्ते खिलअत और घोड़ा लेगया था.

१० चंद्रवार (मगसर सुदि ११। २३ नवम्बर) को बंकक सावेस लागरी और हुमायूं का १ नौकर बयानशेख नाम आया बंककसा तो हुमायूं के बेटे की सूनजी (नामकर्ण) के लिये आया था सो बादशाह ने उसका नाम अलअमान रक्खा और बयान शेख बंककसा से बहुत पीछे चला था उसने ६ सफ़र शुक्रवार (कातिक सुदि ९। २३ अकतूबर) को कशम(१) के नीचे की दोशंबा नाम जगह से हुमायूं को छोड़ा था १० रबीअव्वल चंद्रवार (मगसर सुदि ११। २३ नवम्बर) को आगरे में आया और जलदी आया १ बेर यही बयान शेख क़िले ज़फ़र से ११ दिन में कंधार पहुंचा था.

शाहज़ादे तुहमास्प सफ़वी के आने और उजबक के शिकस्त पाने की खबर भी यही शेख बयान लाया जिसकी तफ़सील यह है कि शाहज़ादा तुहमास्प इराक़ से ४०,००० आदमियों के साथ जो रूम के बंदूकचियों के तौर पर तैयार किये गये थे बड़ी तेज़ी से गया बुस्ताम और दा-

(१) अर्थात कशम नाम परगने के दोशंबा नाम स्थान।

सुग़ान में उज़बक का रस्ता रोक कर उसके तमाम आदमि
यों को मारडाला फिर इसी तरह जलदी से जाकर कोकबे
के बेटे क़ंबर अली को भी ज़ेर करलिया. तबतो उबेदख़ां
थोड़े आदमियों से हिरात के पास ठहर नसका बलख हिसा
र, समरक़ंद, और ताशकंद के सब सुलतानों के पास बड़ी
ताकीद से आदमी दौड़ा कर मर्व में आगया ताशक़ंद से मारा
क सुलतान का बेटा सेवंजकख़ां समरक़ंद और मयानका
ल से कोजूमख़ां, अबूसईद सुलतान, पोलाद सुलतान, जा
नबेग के बेटों के साथ हिसार से हमज़ा सुलतान और
महदी सुलतान के बेटे बलख से क़रार सुलतान आकर
मर्व में उबेदख़ां से मिलगये ये सब १ लाख ५००० आदमी
थे इनका जासूस ख़बर लाया कि शाहज़ादा तुहमास्प स
फ़वी उबेदख़ां को हिरात के पास थोड़े से आदमियों से
बैठा सुनकर ४०००० आदमियों के साथ दौड़ा हुआ आया
था अब इस भीड़ भड़क्के की ख़बर सुनकर रादकान के
रमनों में खाई खोदकर बैठगया है इस ख़बर से उजबकों
ने ग़नीम को कमज़ोर समझ कर यह सलाह की कि हमसब
ख़ान और सुलतान तो मशहद में बैठे रहें और कई सुल
तानों को २०००० आदमियों से भेजें जो कज़िलबाश के उर्दू
के आसपास फिराफिरा कर उनको घबरादें उजबकों ने
यह बात ठहरा कर मर्व से कूच किया शाहज़ादा भी मश
हद से निकला जाम नाम स्थान के पास लड़ाई हुई उजब
क हारे बहुत से सुलतान पकड़े और मारे गये.

१, ख़त में ऐसा भी लिखा था कि कोजूमख़ां के सि
वाय और किसी सुलतान के बचनिकलने की सही ख़बर

नहीं है पर लशकर के साथ जो आदमी थे अभी उनमें से कुछ र-
हे है। हिसार में जो सुलतान थे वे हिसार को छोड़कर निक
ले हैं इब्राहीम जानी का बेटा इसमाईल चिलमा नाम हिसार
में रहा है.

बादशाह ने उसी बयान शेख़ के हाथ से हुमायूं और का
मरां के नाम ख़त लिखाकर जलदी से भेज दिये

१४-शुक्रवार (मगसर सुदि १५। २७ नवम्बर) को खत प
त्र तैयार होकर बयान शेख़ को सौंपे गये और १५ शनिवार-
(पोस बदि १। २८ नवम्बर) को उसे आगरे से रवाने किया ग-
या बादशाह ने ख़्वाजा कलां के नाम भी उसी मतलब के ख़त
अपने हाथ से लिखकर भेजे.

(१)१९-बुधवार (पोषबदि ४। २ दिसम्बर) को बादशाह
ने मिरज़ाओं, सुलतानों तुर्की और हिंदी अमीरों को बुला
कर सलाह की तो यह बात ठहरी कि इस बर्ष में किसी न कि-
सी तर्फ़ को १ लशकर जाना चाहिये और इससे पहिले अस
करी पूर्व को रवाने होजावे- अमीर और सुलतान लोग गंगा
के उधर अपने २ लशकरों से आकर असकरी के साथ हो
जावें और जिधर जाने की सलाह ठहरे उधर ही कूच करजा
वें यही बात लिखकर २२ शनिवार (पोष बदि ७। ५ दिसंब
र) को २२ दिन की मयाद पर ग़यासुद्दीन कोरची को सु-
लतान जुनेद बरलास और पूर्व के अमीरों के पास दौड़ाया
गया और ज़बानी बातें भी कहलाई गईं कि ज़रबज़न, अ
राबे, और बंदूकें वग़ैरा जो लड़ाई के हथियार हैं उनके

(१) असल में भूल से २९ लिखी है।

तैयार होने तक अपने से पहिले असकरी के साथ भेजे जाते हैं गंगापार के सब अमीरों और सुलतानों के नाम हुक्म लिखा गया कि असकरी के पास जमा होकर जिधर की सलाह ठहरे उधर ही रवाने होजावें और वहा के दौलतख्वाहों (संत्रियों) से सलाह करलें अगर ऐसा काम हो कि मेरी जरूरत पड़े तो मैं इस आदमी के आते ही जो मयाद पर जाता है सवार होजाऊंगा॰ अगर बंगाली दोस्ती के ढंग पर हो और ज़ियादा काम नहो कि जिसमें मेरी ज़रूरत पड़े तो वैसा लिखदो सो मैं देखकर यहा खड़ा न रहूं दूसरी तरफ़ चला जाऊंगा और तुम शुभ चिंतक आपस के एक मते से असकरी को लेजा कर उधर के काम पूरे करो॰

असकरी का सामान बढ़ाना

२९ शनिवार (पोष बदि ३०। १२ दिसम्बर) को बादशाह ने बादशाही कासा खिलअत और तलवार का परतला पहिना कर असकरी को अलमतोग (झंडा फरेरा) नक्कारह तवेला तपचाक (तुरकी घोड़े) १० हाथी ऊंट खच्चर और सब सामान बादशाही के इनायत किये और दरबार में बैठने का हुक्म दिया उसके मुल्ला और अतकाको तुकमें लगे हुवे चकमन(१) और दूसरे नौकरों को ३ जोड़े कपड़े के दिये॰

३० रविवार (पोष सुदि १। १३ दिसम्बर) को बादशाह सुलतान मोहम्मद बख्शी के घर गये उसने रस्ते में

(१) चपकन या अचकन॰

पा अंदाज (कपड़े) बिछाकर दोलाख से ज़ियादः की चीज़ें नजर कीं फिर बादशाह दूसरे कमरे में जाकर बैठे और माजून खाई तीसरे पहर जमना से उतर कर खिलवतखाने में आगये.

आगरे और काबुल के बीचमें मीनारों और घोड़ों कीडाक

४ रबीउलसानी जुमेरात (पोष सुदि ५ । १७ दिसंबर) को यह बात ठहरी कि आगरे से काबुल तक चकमाक बेग और बादशाही नवीसदः शम्सगाची डोरी से नापकर ९ । ९ कोसके ऊपर १२ । १२ गज ऊंचे मीनारे (लाट) बनावें जिनपर एक एक चोबुर्जा हो और ६ । ६ कोस पर डाक चौकीके घोड़े बांध दें यामची (डाकिया) और साईस को खाना और घोड़ों को घास मुकर्रर करदें घोड़े बांधने की जगह खालिसे के परगने में हो तो ये चीज़ें वहां से दें नहीं तो अमीरों के परगनों से दिलावें । इसी दिन चकमाक बेग आगरे से रवाने होगया ये कोस मील के मुवाफ़िक़ बांधे गये थे और इस माप की डोरी ४० गज़ की रखी गई. गज़ ९ मुट्ठी का था ऐसी १०० डोरी का एक कोस हुआ ।

१ बड़ा दरबार

(१) ८ मङ्गलवार (पौष सुदि ९। २१ दिसम्बर) को बाग़ की खुशी (गार्डन पार्टी) हुई बादशाह उत्तर दिशा के नये बने हुवे अठपहलू बंगले में बिराजे उनके दहने हाथ को ५।६ गज़ हटकर तोगा सुलतान, असकरी, ख्वाजा अबदुल शहीद के बेटे ख्वाजा कलाँ ख्वाजा हुसेन और खलीफा और समरक़ंद से आये हुवे मुल्ला और हाफ़िज़ बैठे, बायें हाथ को ५।६ गज़ की दूरी पर मोहम्मद ज़मान मिरज़ा मानक एसन सुलतान, सैयद रफ़ीक़ सैयद रूमी, शेख अबुलफ़तह, शेख जमाली, शेख शहाबुद्दीन अरब, और सैयद दखनी बैठे इस उत्सव में क़ज़लबाश उजबक और हिन्दुओं के वकील भी आये थे शाह क़ज़लबाश (ईरान) के एलची को दहने हाथ की तर्फ़ ७०।८० गज़ दूर १ शामियाना खड़ा करके बैठाया गया और अमीरों में से यूनस अली को क़ज़लबाशों के पास बैठने का हुक्म हुआ इसी तौर से उजबक के एलचियों को बायें हाथ पर बैठाया अमीरों में से अबदुल्लाह उनके पास हुक्म के मुवाफ़िक़ बैठा,

खाना आने से पहिले पहिले सब खान सुलतान बड़े बड़े आदमी और अमीर मुहरों, रुपयों, पैसों, कपड़ों, और दूसरी चीजों की नज़र लाये बादशाह ने फ़र

(१) मूल में लेखक की भूल से ६ तारीख लिखी है और जो ६ सही हो तो शनीचर चाहिये।

माया कि मेरे आगे रेलूचे (क़ालीन) पर डाल दें मोहरें और रुपये तो रेलूचे पर डाले गये कपड़ा और दूसरी चीज़ों के ढेर उनके बराबर लगाये गये.

नज़रों के बीच में ही मस्त हाथियों और मस्त शेरों को सामने के अराल (आंगन) में लड़ाया गया तोचकार[1] भी लड़ाये गये फिर पहलवान कुश्ती लड़े पीछे खाना (भोजन) आया.

खाने के पीछे ख्वाजा अबदुल शहीद और ख्वाजा कालां को केश के अबरों के जुब्बे (जामे) और तूबक़[2] मुनासिब खिलअतों के साथ दिये गये मुल्ला फ़र्रुख़ हाफ़िज़ और उनके साथियों को चपकन पहिनाये गये-कोजूम[3] खां[3] और उसके छोटे भाई हसन चलपी के एलची को केश के तुकमे दार जुब्बे उनके लायक़ इनायत हुवे अबूसईद[4] सुलतान महरबान खानम उसके बेटे पोलाद सुलतान के एलचियों और शाह के एलचियों को तुकमेदार चपकन और क़िमाश (रेशम) के जामे दिये गये २ ख्वाजा और २ बड़े एलची को जो कोजूम खां और उसके छोटे भाई हसन चपली के नौकर थे सोने की तोल से चांदी और चांदी की तोल से सोना तोल कर इनाम में मिला सोने का तोल ५०० मिसक़ाल[5] का था

(१) तोचकार तुर्की में ढका (२) १ प्रकार की तुर्की पोशाक।

(३) कोजूम खां मोहम्मद खां शेबानी का भाई था।

(४) अबूसईद खां कोजम खां का बेटा या भतीजा था।

(५) मिसक़ाल ४॥ माशे का होता है ५०० मिसक़ाल के १८७५ तोले

जो काबुल की तौल से सेर भर का होता है और चांदी का तौल २५० मिसक़ाल या आध सेर काबुल का था ख़्वाजा और सुलतानी उसके बेटों, हाफ़िज़ ताशकंदी, मौलाना फ़र्रुख़ उसके साथियों और ख़्वाजा के नौकरों और दूसरे तु[र्]कानियों को भी चांदी और सोने का अलग २ इनाम हुआ यादगार नासिर को तलवार का परतला मिला।

दूसरा परतला मोहम्मद अली जालेबानं को इनायत हुआ जो गंगा पर लकड़ी का पुल बांधकर इनाम का हक़दार होगया था और मोहम्मद बंदूकची, पहलवान हाजी मोहम्मद पहलवान बहलोल और वाली यार शेख़ी को एक एक ख़ंजर इनाम में मिला सैयद दाऊद गर्मसेरी को मोहरें और रुपये दिये- अपनी लड़की मासूमा, और अपने लड़के हिंदाल के नौकरों, को तुकमेदार चपकनें और क़िमाश के ख़िलअत बख़्शे- इंदजान विलायत और वतन से जो लोग आये थे उनको चपकनें क़िमाश के ख़िलअत सोना चांदी और सबतरह के सामान से मिले नौकरों और काहमर्द की रैयत के ऊपर भी ऐसी ही इनायतें हुई

खाना होचुकने के पीछे हिन्दुस्तान के बाज़ीगर अपने २ तमाशे दिखाने के लिये आये नटनियों ने आकर अपनी कलाबाज़ी दिखाई बादशाह लिखते हैं कि हिंदुस्तान की लोलियां (नटनियां) बाज़े काम ऐसे करती हैं

और २५० मिसक़ाल के ९३ ।।। तोले हुवे इसवक़ के लदार रुपया तोले भर का गिना जाता है और तोले भर सोना २२॥) में आता है इस हिसाब से १ एलची को १८७५) की चांदी और २११०९) का सोना मिला

जो वलायत की नटनियों से नहीं देखे गये हैं उनमें से १ यह है कि ७ कपड़े अपने माथे और आंगों में डालकर २ हाथकी ऊंगलियों और २ पांव की ऊंगलियों में फुरतीसे बदल लेती है दूसरा करतब यह है कि मोर की सी चाल चलकर १ हाथ तो ज़मीन पर टिकारखती हैं १ हाथ और २ पावसे ३ कड़े जल्दी फिरा लेती हैं वलायत की लोलियां २ लकड़ियां अपने पांवों से बांधकर चलती हैं और ये नहीं बांधती हैं फिर २ लोलियां वलायत में एक दूसरे को पकड़ कर दो एक गुलाचें खाजाती हैं और हिन्दुस्तान की लोलियां एक दूसरी के सहारे तीनचार गुलाचें खाती हुई अधर चली जाती हैं एक और कला यह है कियेक लोली ६।७ गज़लंबी लकड़ी का सिरा अपनी कमर से लगाकर और उसको सीधी पकड़ कर खड़ी होजाती है और दूसरी लोली उस लकड़ी पर चढ़कर कला खेलती है फिर एक यह है कि एक छोटी लोली बड़ी के माथे पर चढ़कर सीधी खड़ी होजाती है और वह बड़ी लोली इधर उधर दोड़ती फिरती है और छोटी वैसे ही चुप साधे हुवे उसके सिरपर खड़ी रहती है और फिर वह भी अपने करतब दिखती हैं।

पातरें भी बहुत आई थी और अपने अपने नाच नाचती थीं.

शाम के क़रीब बादशाह ने मोहरें रुपये, और पैसे लुटाये बड़ी भीड़ होगई थी रात को बादशाह ने ५।६ मुसाहिबों को अपने पास खिंच लिया और पहर भर से ज़ियादा बैठे रहे.

दूसरे दिन दोपहर को बादशाह नाव में बैठकर हश्त-बहिश्त बाग़ में चलेगये.

चंद्रवार को असकरी जो सफ़र की तैयारी करके आया था इस्मासमें बिदा होकर पूर्व को गया.

धौलपुरजाना

मंगल के दिन बादशाह धौलपुर के हौज़ बाग़ और इमारतों के देखने को गये १ पहर पर १ घड़ी जाने पर बाग़ से सवार हुवे थे और १ पहर ५ घड़ी रात गये धौलपुर के बाग़ में पहुँच गये

११ गुरुवार (पोष सुदि १२। २४ दिसम्बर) को नये कुवे से जो पहाड़ में २६ स्तंभ काटकर बनाया गया था पानी-निकालना शुरू हुआ बादशाह ने जैसे आगरे के उस्ताकारों और मज़दूरों को इनाम दिया था वैसे ही यहाँ के सिलावटों खातियों और सब मजूरों को भी दिया पानी से कुछ बास आती थी इसलिये फ़रमाया कि १५ दिन तक आठ पहर बराबर अरहट चलाकर पानी निकालें- जुमे के दिन पहिले पहर में १ घडी बाक़ी थी कि बादशाह धौलपुर से सवार हुवे अभी सूरज नहीं डूबा था कि नदी से उतर गये

उजबक औरकज़लबाशकीलड़ाई

१६ मंगलवार (माहबदि २। २९ दिसम्बर) को देवसलतान का १ नोकर जो उजबक और क़ज़लबाश कोल

ड़ाई में मौजूद था आया और उसने यह बयान किया कि जाम नाम स्थान के पास आशूरा (१० मोहर्रम ओसाज सुदि १२ । २५ सितम्बर) को दिन तुर्कमान और उजबक की लड़ाई हुई जो सुबह से दो पहर पीछे तक होती रही उजबक ३ लाख और तुर्कमान ४० । ५० हज़ार थे मगर लोग १ लाख का तखमीना करते थे और उजबक अपने आदमियों को १ लाख ५ हज़ार बताते थे कजल्ल बाश जो अपने लशकर को रूम के कायदे पर तोपों और बंदूकों से मज़बूत करके लड़ते हैं उनके पास १००० अराबें और ६००० बंदूकची थे शाहज़ादा (तुहमास्प) और ख्वाजा सुलतान २०००० अच्छे जवानों से अराबों में खड़े हुवे दूसरे अमीरों ने अराबों के बाहर दायें बायें पैर जमाये थे उजबकों ने आते ही इनको हरा दिया तब अंदर वाले अराबों को जंजीरों से निकले यहां बड़ी लड़ाई हुई उजबकों ने तीन दफ़े हमला किया आखिर उनकी हार हुई कोजूमखां, उबैदखां और अबू सईद सुलतान पकड़े गये अबू सईदखां ज़िंदा था और बाकी ८ सुलतान मारे गये उबैदखां का सिर नहीं मिला धड़ मिला उजबकों के ५० हज़ार और तुर्कमानों के २०००० आदमी मारे गये.

पूरब की मुहिम

इसी दिन गयासुद्दीन कोरची जो १६ दिन की मयाद पर जौनपुर से गया था वापस आया सुलतान जुनैद वगैरा खरीद पर चढ़ गये थे इसलिये मयाद पर नहीं पहुंचसके

सुलतान जुनेद ने ज़बानी कहला दिया कि यहां के मामले ऐसे नहीं मालूम होते कि बादशाह आप जावें फिर(१) भी अलबत्ता(२) आजावें और इस ज़िले के सुलतानों खानों और अमीरों को हुक्म होजावें कि मिरज़ा के काम में हाज़िर होजावें उमेद है कि सब काम आसानी से पूरे होजावेंगे

सुलतान जुनेद ने तो यह कहला भेजा था मगर बादशाह मुल्ला मोहम्मद मज़हब के इन्तज़ार में थे जिसको राना सांगा की लड़ाई के पीछे एलची बनाकर बंगाले में भेजा था और उसके आने में आजकल२ होरही थी·

१९ शुक्रबार (माह बदि ५ । १जनवरी) को बादशाह माजून खाकर कुछ निज सेवकों के साथ खिलवतखाने में बैठे थे कि शाम को मुल्ला ने आकर मुजरा किया बादशाह ने उससे एक एक बात पूछकर यह जान लिया कि बंगाली दोस्ती और बंदगी के ढंग पर हैं·

इतवार को बादशाह ने तुर्क और हिंद के अमीरों को खिलवतखाने में बुलाकर सलाह की तो यह बातें हुईं कि बंगाले जाना बे फ़ायदा है अगर बंगाले जाया जावे तो रस्ते में १ जगह भी मालदार नहीं हैं जिससे लशकर को मदद पहुंचे और पश्चिम में कई जगहें हैं जो पास भी हैं और मालदार भी हैं और वहां के आदमी काफ़र हैं रस्ता भी पास है पूर्व दूर है आख़िर यह बात ठहरी कि पश्चिम को

(१) अस्करी।
(२) अवश्य।

ही जाना चाहिये मगर नज़दीक होने से कई दिन पीछे पूर्व की तर्फ़ से दिल जमई करजावें और फिर ग़यासुद्दीन कोर ची को १० दिन की मयाद पर पूर्व के अमीरों के नाम फ़रमान देकर दौड़ाया गया - जिनमें लिखा था कि सब सुलतान ख़ान और अमीर जो गंगा के इधर हैं असकरी के पास जमा होकर दुशमनों के ऊपर जावें और ग़यासुद्दीन फ़रमानों को पहुंचाके पीछे वहां की खबर लेकर मयाद पर जलदी आजावे.

बलोचों की लूट

इन्हीं दिनों में महदी कोकलताश की अरजी आई कि बलोचों ने आकर कई जगह लूट मार की है बादशाह ने इस काम के वास्ते तैमूर सुलतान को मुक़र्रर करके हुक्म दिया कि उधर के अमीर आदिल सुलतान, सुलतान मोहम्मद दूलदी, खुसरो कोकलताश, और मोहम्मद अली जंगजंग वग़ैरा सरहिंद और समाने से परगना सुलतान में चीन तैमूर सुलतान के पास जमा होकर ६ महीने की रसद सहित बलोचों पर जावें और उसके साथ … और उसका हुक्म मानें ये फ़रमान अबदुलग़फ़्फ़ार तवाची को दिये गये कि पहिले चीन तैमूर को जाकर फ़रमान दे वहां से अमीरों के पास जाकर उनको लशकरों सहित उस जगह लेजावे जहां चीन तैमूर ने छावनी डालने की तजवीज़ की हो अबदुल गफ़्फ़ार खुद भी इस छावनी में रहे और जिसकी सुस्ती या बंदोबस्ती देखे अरजी में लिख भेजे उसका

मनसब दूर करके जागीर भी उतार ली जावेगी.

धौलपुर जाना

रवीवार की रात २९ [(१)] (माह बदि १४। १० जनवरी) को ३ पहर ६ घड़ी के अमल में बादशाह जमना से उतर कर धौलपुर को रवाने हुवे और इतवार को तीसरे पहर वहां पहुंच कर नीलोफ़र के बाग़ में उतरे अपने अमीरों और पास रहने वालों को भी बाग़ के आस पास जमीनें बतलाकर अपने २ वास्ते बाग़ लगाने और मकान बनाने का हुक्म दिया.

३ जमादिउल अव्वल जुमेरात (माह सुदि ४। १४) को बाग़ के पूर्व और दक्षिण कोन में हम्माम के वास्ते जगह तजवीज़ होकर १० गज़ लंबे और १० गज़ चौड़े हौज़ बनाने का हुक्म हुआ.

इसीदिन क़ाज़ी ज़िया और नरसिंह देव की अर्ज़ी आगरे से ख़लीफ़ा की भेजी हुई पहुंची जिनमें लिखा था कि सिकंदर का बेटा महमूद बहादुर को पकड़ लेगया है बादशाह ने यह ख़बर सुनते ही कूच की ठहरादी शुक्रवार को ६ घड़ी दिन चढ़े नीलोफ़र बाग़ से सवार हुवे और शाम को आगरे में जा पहुंचे मोहम्मद जमान मिरजा धौलपुर जाता हुआ रस्ते में मिलगया तैमूर सुलतान भी इ-

(१) हिंदी हिसाब से यह शनीचर की रात थी क्योंकि मुसलमान रात से तारीख को शुरू करते हैं।

सो दिन आगरे में आगया था.

शनिवार को तड़के ही अमीरों को बुलाकर सलाहकी और १० गुरुवार (माह सुदि ११। २१ जनवरी) को पूर्व जाना ठहर गया.

तूरान पर चढ़ाई.

इसी दिन (शनिवार) को काबुल से ख़बर आई कि हुमायूं ने उधर के लशकरों को जमा करके सुलतान उवैस के साथ ४०।५० हज़ार आदमियों से समरकंद जाने का इरादा किया है। सुलतान उवैस का छोटा भाई शाह कुली हिसार को गया है तरसून मोहम्मद ने तरमज़ से जाकर काबादियान को लेलिया है और मदद मंगाई है हुमायूं ने तोलक कोकलताश को बहुत से आदमियों और उन सब मुग़लों के साथ जो मौजूद थे तरसून मोहम्मदखां की मदद को भेजा है पीछे से आप भी जाने वाला है.

बादशाह का पूर्व को कूच.

१० जमादिउल अव्वल जुमेरात (माह सुदि ११। २१ जनवरी) को बादशाह नाव में बैठकर ज़रफ़िशां बाग़ में उतरे तोग नक्कारा और लशकर को जमना पर बाग़ के सामने उतरने का और जो लोग सलाम को आये थे उन्हें नाव में बैठकर आने का हुक्म हुआ.

शनिवार को बंगाले का एलची इसमाईल अपने

नज़राने लाकर हिन्दुस्तान के क़ायदे से १ गज़ पास तक आ कर सलाम करके लौट गया फिर उसे मामूली खिलअत जिसे सरसोनिया कहते थे पहिनाकर लेगये उसने दस्तूर के मुवाफ़िक ३ दफ़े घुटना टेक कर नुसरतशाह[1] की अर्ज़ी और अपनी नज़र लाकर आगे रक्खी और लौटगया.

सोमवार को ख्वाज़ा अबदुलहक़ आया बादशाह जमना से नाव में उतर कर ख्वाजा के डेरे में गये और मिले

मंगल को हसन चलपी ने आकर बंदगी की.

लशकर निकलने के वास्ते कई दिन चार बाग़ में ठहरना पड़ा

१७ गुरुवार (फागुन बदि ३। २९ जनवरी) को घड़ी दिन चढ़े पीछे कूच हुआ बादशाह नाव में बैठकर आगरेसे कोस पर अनवार नाम गांव में उतरे.

इतवार को उजबक के एलचियों को बिदा हुई कोचूमखां के एलची अमीन मिरज़ा को कमर खंजर जरी का जोड़ा और ७०००० टके इनाम मिले अबूसईद सुलतानके नौकर मुल्ला तुग़ाई महरबान खानम के नौकरों और उसके बेटे पौलाद सुलतान को तुकमेदार चपकनें और किमाश के खिलअत पहिनाये गये और नक़द रुपया भी हरएक को जैसा जिसका दरजा था मिला.

दूसरे दिन ख्वाजा अबदुलहक को आगरे में रहने के लिये और ख्वाजा कलां के पोते ख्वाजा यहा को जो उजबक सुलतानों और खानों की तर्फ़ से एलची होकर आया था

(१) बंगाले का बादशाह।

समरकंद जाने के वास्ते रुखसत मिली

हुमायूं के बेटा होने की मुबारकबाद के लिये मिरज़ा लबेजी और कामरां की शादी की मुबारक बाद के वास्ते मिरज़ा बेग तुगाई को १० हज़ार की सायक (सामग्री) देकर भेजा गया जामा तो बादशाह पहिने हुवे थे और कमर (पटका या पेटी) जो बांधे हुवे थे ये दोनों चीज़ें मिरज़ाओं (हुमायूं और कामरां) के वास्ते भेजी गई हिंदाल के वास्ते मुल्ला बहिश्ती के हाथ कमर खंजर जड़ाऊ, दवात जड़ाऊ, सीपकी संदली (कुरसी) पहिना हुआ नीमचा (नीमास्तीन) तकबंद और बाबरी अक्षरों के लिखे हुवे कुछ लेख भेजे हिंदुस्तान में आने के पीछे जो तरजुमा लिखा था और जो शेर (काव्य) कहे थे और खत जो बाबरी लिपि में लिखे गये थे हुमायूं और कामरां के वास्ते भेजे

मंगलवार को जो लोग काबुल जाते थे उन्हें खत लिखकर दिये आगरे और धौलपुर में जो इमारतें बनानी दिल में विचारी थीं उनके वास्ते मुल्ला क़ासिम, उस्ताद शाहमोहम्मद सिलावट और शाह बाबा बेलदार को ज़िम्मेवार करके बिदा किया.

फिर पहर दिन चढ़े अतवार से सवार होकर तीसरे पहर को दरिया पुर में उतरे जहां से चंदवार १ कोस था.

गुरुवार की रात को अबदुल मलक क़ोरची को हुसैन चलपी के साथ किया और शाह जालूक को उजबक खानों और सुलतानों के एलचियों के साथ भेजा.

जब पिछली ४ घड़ी रात रही तब बादशाह दरियापुर से सवार होकर दिन निकले पहिले चंदवार पहुंच कर नाव

में बैठे और चंदवार से आगे निकलकर उर्दू में आगये जो फ़तहपुर में उतरा था.

फ़तहपुर में १ पहर ठहरे शनीचर को तड़के ही वज़ू करके सवार हुवे राहरी के पास पहुंचकर नमाज़ पढ़ी सूरज निकलने पर राहरी की १ बड़ी ऊंची जगह के नीचे से नाव में बैठे तरजुमा लिखने के लिये ११ सतर का मिसतर बनाया अल्लाहवाले लोगों की बातों से दिल में कुछ चोट लगी थी राहरी के परगनों में से जाकोन नाम परगने के पास नावों को किनारे पर लाकर रात भर नावों में रहे दिन निकलने से पहिले २ फिर नावों को चलाया और नावों में ही सुबह की नमाज पढ़ी सुलतान मोहम्मद बख्शी और शमशुद्दीन मोहम्मद ख्वाजा कला के नोकर को लेकर आये उनके खतों और उस नोकर की बातों से काबुल के ठीक २ हाल मालूम हुवे.

तीसरे पहर इटावे के सामने १ बाग़ के पास उतरकर जमना में नहाये और नमाज़ पढ़कर इटावे की तरफ़ आये और उसी बाग़ के वृक्षों की छाया में एक ऊंचे कराड़े पर बैठकर जवानों को नदी में ढकेला और खाना जो महदी ख्वाजा ने भेजा था खाया - शाम को नदी से उतरकर पहर रात गये उर्दू में आये लशकर जमा होने और काबुल वालों को शमशुद्दीन मोहम्मद के हाथ से खत लिखने के वास्ते दो तीन दिन वहां ठहरे

३० जमादिउलअव्वल बुधवार (फागुन सुदि १। १० फ़रवरी) को इटावे से ८ कोस चलकर मोरी दादसर में उतरे काबुल को जाने वाले खत जो बाक़ी रहगये थे वे

इस मंज़िल में लिखे हुमायूं को लिखा कि जो अब तक ठीक काम नहीं हुआ हो तो इस फ़सल में लुटेरों को मना करो जिससे सुलह की जो बात ठही है बिगड़ने न पावे और यह भी लिखा था कि मैंने काबुल की विलायत खालसे करली है लड़कों में से कोई उसकी इच्छा न करें

हिंदाल को बुलाने, कामरां को खूब रयासत करने, मुलतान उसको देने, और बेगमों के आने के वास्ते भी लिखा था यह सब लिखावटें शमशुद्दीन मोहम्मद को सौंपी गईं और ज़बानी बातें भी उससे कही गईं जुमेरात को उसे बिदा करके जुमे को बादशाह रवाने हुवे और ८ कोस पर जूमंडना नाम गांव में उतरे कनाक को जो सरहद के अमीरों की अच्छी बुरी खबरें लाया था रुखसत करके उन अमीरों को फ़रमान लिखवाये कि चोरों और लुटेरों का बंदोबस्त करके आपस में मेल मिलाप रखें.

चलपी के पास से शाह कुली ने आकर लड़ाई की खबरें अर्ज़ कीं बादशाह ने इसी के हाथ से शाह[१] को ख़त लिखाकर हसन चलपी के देर तक रहने का उज़्र कहलाया.

२ जमादिउल सानी शुक्रवार (फागुन सुदि ३। १२ फ़रवरी) को शाहकुली को बिदा करके शनिवार को बादशाह फिर ८ कोस चले मकोरा और मजादली के बीच में ठहरे जो कालपी के परगनों में से थे।

४ रबिवार (फागुन सुदि ५। १२ अप्रेल) को ८ कोस

(१) शायद कि शाह ईरान से मुराद है।

पर कालपी के परगने देरपुर (धीरपुर) में पहुंचकर दो महीने पीछे अपने सिर के बाल काटे और संगर (संकर) नदी में नहाये

चंद्रवार को १४ कोस पर चौरगढ़ (छत्तरगढ़) में कि वह भी कालपी का परगना था डेरे हुवे.

६ मंगलवार (फागुन सुदि ७ । १६ फ़रवरी) कराचा का हिन्दुस्तानी चाकर माहम (हुमायूं की मा) का फरमान जो कराचा के नाम था लेकर आया बादशाह लिखते हैं कि यह उसी तौर से लिखा था जैसा कि मैं अपने हाथ से परवाने लिखता हूं बहीरे लाहोर और उस तर्फ़ के आदमियों को अगुवा बुलाया था यह फ़रमान ७ जमादि उल अव्वल (माह सुदि ८ । १८ जनवरी) को काबुल से लिखा गया था.

बुधवार को ७ कोस पर आदमपुर में मुकाम हुआ इसी दिन तड़के से बादशाह अकेले सवार हुवे और दुपहर तेर करके जमना के किनारे आये और किनारे २ चलकर घाट से उतरे आदमपुर के सामने उर्दू के पास शामयाने खड़े कराके माजून खाई सादिक़ को कलाल से कुश्ती लड़ाया कलाल दावा करके लड़ने को आगरे में आया था और रस्ते की थकान का उज़र करके २० दिन की मोहलत मांगी थी जिसके ४०।५० दिन होगये थे- सादिक़ खूब लड़ा और कलाल को आसानी से गिरादिया. सादिक़ को १०००० टके ज़ीन समेत घोड़ा तुकमेदार चपकन और खिलअत इनाम में मिला कलाल कुश्ती में गिर पड़ा था तो भी बादशाह ने नाउमेद नकरके खिलअत और ३००० टके उसको भी दिये इस मंजिल में अराबों को

नावों से उतारने उनके और देगों के लेजाने के वास्ते ज़मीन बराबर करने तक ४ दिन ठहरना पड़ा

१२ सोमवार (फागुनसुदि १३। २२ फरवरी) को बादशाह तख्ते रवान (खासे) में १२ कोस चलकर कड़े में गये फिर वहां से १२ ही कोस पर जाकर करबे में उतरे जो कड़े का परगना था करबे से ८ कोस पर फ़तहपुर हसवे में जाकर महींदाकी सराय में ठहरे उहरने के पीछे यहीं सुलतान जलालुद्दीन ने आकर सलाम किया वह अपने छोटे बेटे को भी साथ लायाथा.

१७ शनिवार (चेतबदि ३। २७ फरवरी) को तड़के ही कूच करके ८ कोस पर दकदकी में गंगा के किनारे पर मुकाम हुआ जो कड़े परगनों में का गांव था

इतवार को मोहम्मद सुलतान मिरज़ा कासिम हुसेन सुलतान वगैरा इसी मंज़िल में आये सोमवार को असकरी ने आकर बंदगी की ये सब लोग पूर्ब की तर्फ़ से मदद कोलिये आये थे क्योंकि ऐसा हुक्म होचुका था कि ये सब लशकर असकरी के साथ गंगा के उस तरफ घूमते रहें और जहां उर्दू आकर ठहरे येभी उसी के सामने आकर उतरजा यें.।

इधर रहने के दिनों में लगातार ये खबरें चली आती थीं कि सुलतान महमूद के पास १ लाख पठान जमा होगये हैं वह शेख बायज़ीद और बब्बन को बहुत से आदमियों से सरवार की तर्फ़ भेजकर आप फतहखां शिरवानी के साथ गंगा के किनारे २ चलकर चुनार के ऊपर आता है और शेरखां सूर जिसको पिछले साल में रुआयत करके बहुत से परगने दिये गये थे और जो इस ज़िले में छोड़ा हुआ था वह भी इन प-

ठानों में आया हुआ है बल्कि शेरखां और कई दूसरे अमीर गंगा उतर आये हैं सुलतान जलालुद्दीन के आदमी बनारस को न रख सके और भाग निकले हैं.

पठानों की यह सलाह है कि नावों को बनारस के किले में छोड़कर गंगा के किनारे आवें और जंग करें.

दकदकी से कूच होकर ६ कोस पर कड़े से ३.४ कोस इधर गंगा के किनारे पर मुकाम हुआ बादशाह नाव में आये थे.

इस मंज़िल में सुलतान जलालुद्दीन के ज़ियाफ़त करने से ३ दिन मुकाम रहा.

जुमे के दिन बादशाह कड़े के क़िले में जाकर सुलतान जलालुद्दीन के घर पर उतरे उसने मेहमानी करके खाना पेश किया बादशाह ने खाने के पीछे उसको और उसके बेटे को इकतासी और नीमास्तीन पहिनाई और उसके अर्ज़ करने पर उसके बड़े बेटे को सुलतान महमूद का ख़िताब दिया.

फिर बादशाह कड़े से सवार होकर १ कोस आये और गंगा के किनारे पर ठहरे और शाहरुक को जो माहम के पास से आया था ख़त लिखकर इसी मंज़िल से बिदा किया गया ख़्वाजा कलां के पोते ख़्वाजा याहा ने बादशाह के वाकों की जो वे लिखा करते थे नक़ल मांगी थी इसलिये बादशाह ने नक़ल कराके शाहरुक के हाथ भेजी.

फिर वहां से तड़के ही कूच होकर ४ कोस पर डेरे हुवे बादशाह उसीतरह नाव में आये और पहिलवान सादिक को ८ पहलवानों से कुश्ती कराई.

दो पहर पीछे सुलतान मोहम्मद बख्शी नाव में उधर से आया और सुलतान सिकन्दर के बेटे महमूदखां के भाग जाने की खबर लाया जिसको ये बागी लोग सुलतान महमूद कहते थे

एक जासूस भी जो यहां से गया था बागियों के बिखर जाने की खबर लाया इसी बीच में ताज खां सारंग खानी की अर्जी भी मुवाफिक बयान जासूस के आई यही सुलतान मोहम्मद ने भी अर्ज किया था कि बागियों ने आकर चुनार को घेरा था और कुछ लड़ाई भी की थी मगर बादशाह के आने की पक्की खबर सुनकर वहां से उठगये और जो पठान बनारस से उतर आये थे वे भी लौटे और घबराहट में गंगा से उतरने में दो नावें डूब गईं और कुछ आदमी बह गये.

तड़केही बादशाह नाव में बैठे आंधी आई मेंह बरसा हवा ठंडी होजाने से बादशाह ने माजून खाई और मंजिल पर आये दूसरे दिन भी वहीं ठहरे.

मंगल को कूच हुआ आगे दूर तक हरियाली देख-कर बादशाह नांव से उतरे घोड़े पर सवार होकर सैर करने को गये गंगा के किनारे पर १ फटा हुआ पुल था जो बेखबरी से बादशाह के पांव रखते ही टूट गया और बादशाह फुरती से उछलकर किनारे पर आगये और घोड़ा भी उचक गया बादशाह लिखते हैं कि जो मैं घोड़े परहोता तो घोड़े समेत उचकजाता

फिर बादशाह ३३ हाथ में गंगा को पैर कर उतरेगये पानी ठहरा हुआ था और नांव को आग की तरफ़ जहां

गंगा जमना मिलती है मंगलवार १ घड़ी ४ पहर के पीछे उर्दू में आगये.

बुध को दो पहर होते ही लशकर जमना से उतरने लगा जो ४२० नावों में था.

१ रजब शुक्रवार (चेतसुदि २ संवत १५८६। १२मार्च) को बादशाह भी उतरे और ४ सोमवार (चेतसुदि ५। १५ मार्च) को जमना के किनारे से बिहार की तर्फ़ कूच हुआ ५ कोस पर लवायन पर डेरे हुवे बादशाह उसी तरह से नाव में आये लशकर इसवक्त पानी से उतर रहा था ज़रबज़न अराबों (तोपों) के वास्ते जो आदमपुर से नाव में उतार लिये गये थे प्रयाग से फिर नावों में लादकर लाने का हुक्म हुआ

इस मंज़िल में फिर दो पहलवानों की कुश्ती हुई और दोनों को इनाम मिला.

आगे कीचड़ और दलदल बहुत होनेसे रस्ता देखने और साफ़ करने के लिये ३ दिन मुक़ाम रहा घोड़े और ऊंटों के वास्ते १ ऊंचा घाट मिला जिसमें होकर बोझे की गाड़ियों को उसी जगह से (जहां मुक़ाम था) उतारने का हुक्म हुआ.

जुमेरात को कूच हुआ बादशाह साफ़ रस्ता आने तक नावों में आये जब तूस नदी उर्दू के बराबर आगई तो नांव से उतरकर सवार हुवे और तूस के ऊपर होकर तीसरे पहर को उर्दू में पहुंचे जो नदी से उतर गया था इस दिन ६ कोस की मंज़िल हुई थी दूसरे दिन भी वहीं मुक़ाम रहा

शनिवार को कूच होकर १२ कोस पर नोलाया में गंगा के किनारे मुक़ाम हुआ उसजगह से कूच होकर ६ पर नोलाखा

र में डेरे हुवे यह भी गंगा के किनारे पर था इस जगह से कूच हुआ तो ७ कोस पर तातूर में ठहरे यहां बाक़ीखां ने बेटों सहित सिनार से आकर सलाम किया इन्हीं दिनों में काबुल से मोहम्मदी बख़्शी की अरज़ी पहुंची जिसमें बेगमों के रवाने होने का हाल लिखा था.

बुधवार को बादशाह चुनार का क़िला देखते हुवे क़िले से १ कोस पर उतरे प्रयाग से चलने के पीछे उनके बदन में छाले होगये थे यहां उनका इलाज उस तरीक़े से किया गया जो रूम में नया निकाला था - यानी मिर्च को मिट्टी की देग में उबाल कर उसकी धूनी ली और ज़ख़्मों को गर्म पानी से धोया दूसरे दो घंटे लगे

यहीं किसी ने आकर कहा कि उर्दू के पास १ शेर और भेड़िये देखे गये हैं दूसरे दिन बादशाह ने उस जगह को जा घेरा और हाथी भी मंगाये मगर शेर और भेड़िये नहीं निकले १ अरना भैंसा निकला फिर आंधी आई और धूल बहुत उड़ी जिससे बादशाह तकलीफ़ पाते हुवे नाव तक आये और नाव में बैठकर लशकर में पहुंचे जो बनारस से २ कोस ऊपर को ठहरा था.

बादशाह का इरादा हाथियों की शिकार खेलने का था जो चुनार के तलहटी के जंगल में बहुत होते थे मगर बाक़ीखां महम्मूदखां के सोन नदी के किनारे में होने की ख़बर लाया इस लिये दुशमन पर धावा करने की सलाह होकर वहां से कूच हुआ ९ कोस पर कादूरलबे में उतरा जहां से १९ सोमवार (बैसाख बदि ५ । २९ मार्च) को रात को आगरे में काबुल से आये हुओं को इनामके

रुपये देने के लिये ताहर को आगरे की तर्फ़ बिदा किया बादशाह नाव में बैठे और गोदी नदी तक जाकर लौट आये जो जौनपुर के नीचे बहती है यह नदी तंग थी तोभी उतरने के लिये अच्छी थी सिपाही नावों में और हाथी घोड़े तैरकर उतारे गये यहां बादशाह ने पिछले साल की मंज़िल भी देखी कि जहां से जौनपुर को गये थे.

पानी पर ठीक हवा चलने से बादशाह की नाव का बादबान बड़ी नाव के बांधा गया इससे वह बहुत जल्दी चली उर्दू बनारस से आकर १ कोस ऊपर को ठहराया बादशाह २ घड़ी दिन से यहां पहुंच गये दूसरी नावें भी जो पीछे से आरही थी जलदी से आकर पहररात गये आगई.

चुनार में हुक्म हुआ था कि मुग़लबेग हरकूच में रास्ते को तनाब (जरीब) से नापे और जब बादशाह नाव में हों तो लुतफ़ीबेग दरिया के किनारे से पैमाइश करे इस सीधा रस्ता ११ कोस था और पानी के किनारे का १८ कोस.

दूसरे दिन भी वहीं मुक़ाम रहा.

बुध को भी बादशाह नाव में सवार होकर ग़ाज़ीपुर से १ कोस नीचे उतरे जुमेरात को वहीं महमूद खां नूरखानीने आकर मुजरा किया इसी दिन जलालखां, बहारखां, बिहारी, फ़रीदखां, नसीरखां, शेरखां, सूर, अलावलखां सूर, और दूसरे कई अफ़ग़ान अमीरों की अर्ज़ियां आईं इसीतरह अबदुलअज़ीज़, मीर आखोर आबदार, की अर्ज़ी लाहोर से ८ जमादि उल आख़िर (फागुन सुदि ८। १८ फरवरी) की लिखी हुई आई जिस दिन यह अर्ज़ी लिखी जाती थी क़राचा का हिंदुस्तानी चाकर जो कालपी से भेजा गयाथा

वहां पहुंच गया था अरज़ी में लिखा था कि अबदुल अज़ीज़ और दूसरे मुक़र्रर किये हुवे लोग ९ जमादिउल आखिर को नीलाब में बेगमों को पेशवाई को गये थे और अबदुल अज़ीज़ चिनाब तक साथ था फिर जुदा होकर लाहौर में पहिले चला आया और यह अर्ज़ी भेजी.

जुमे को बादशाह कूच करके उसी तरह से नांव में रवाने हुवे मंज़िल पर पहुंचने तक सूरज को गहन लग गया था बादशाह ने रोज़ा (व्रत) रक्खा.

दूसरे दिन बादशाह चोसा नदी तक जाकर नावमें बैठे मोहम्मद ज़मान मिरज़ा भी पीछे से नांव में आया और उसके कहने से बादशाह ने माजून खाई.

उर्दू कर्मनासा नदी के किनारे उतरा था बादशाह लिखते हैं कि हिंदू कर्म-नासा से बहुत बचते हैं जो परहेज़गार (धर्मज्ञ) हिन्दू थे वे इसमें नहीं गये और नांव में होकर इसके पास ही गंगा से उतरे उन लोगों का ऐसा मत है कि जो यह पानी किसी से छूजावे तो उसके कर्मों को नष्ट कर देता है इसी से इसका यह नाम (कर्मनासा) हुआ है.

बादशाह ने नांव में कुछ दूर तक कर्म नासा में जाकर गंगा के उत्तर किनारे पर आकर वहीं नावें भी ठहरवादी यहां कुछ जवान शेखी से कुशती लड़े। साक़ी मोहसन ने दावा करके कहा कि में ४।५ आदमियों को कमर पकड़ सकता हूं १ आदमी को पकड़ा वह तो उसी दम गिरपड़ा शादमान ने मोहसन को गिरादिया जिससे वह बहुत शर्मिंदा हुआ फिर और पहिलवान भी आकर कुशती लड़े

शनिवार को तड़के ही आदमी कर्मनासा का घाट देखने के लिये भेजेगये पहर दिन चढ़े कूच हुआ बादशाह सवार होकर १ कोस तक घाट की तरफ़ नदी में गये और घाट को दूर देखकर उसी तरह नाव में बैठे हुवे उर्दू में आगये जो जौसे से १ कोस पर उतरा था.

इसदिन बादशाह ने फिर वही इलाज मिर्च का किया जो बहुत गर्म था उनका बदन खून से भरगया बड़ी तकलीफ़ हुई.

रस्ता साफ़ करने के लिये उसदिन वहीं मुक़ाम रहा.

सोमवार[1] की रात को अबदुल अजीज के खत का जवाब लिखकर भेजा गया सोमवार को तड़केही बादशाह नाव में बैठे और बोझ के वास्ते भी नावें वहीं खिचवा मंगवाई - पिछली साल बकसर के आगे बहुत दिनों तक जहांवे बैठे रहे थे वहां पहुंच कर पानी से उतरे और उस जगह की सैर की वहां नदी के किनारे उतरने के वास्ते सीढ़ियां बनाई गई थीं जो ४० से ज़ियादा और ५० से कम थीं मगर अब ऊपर की दो रहगई थीं बाक़ी को पानी ने ढहा दिया था.

फिर बादशाह ने नाव में बैठकर माजून खाई और उर्दू से १ ऊंची जगह पर हरियाली में नाव को ठहराकर पहलवानों की कुशती देखी सोते वक़्त उर्दू में आगये

अगली साल भी इसी जगह कि जहां अबउर्दू उतरा था बादशाह गंगा में से तिरकर निकले थे फिर घोड़े और ऊं

(१) हिन्दी हिसाब से यह इतवार की रात थी मुसलमानों में वार रात से लगता है और हिन्दुओं में दिन से।

ट पर सवार होकर सैर देखी थी और अफ़ीम खाई थी

मंगल को सुबह ही करीब बर्दी मोहम्मद अली रक़ा बदार और बाबा शेख २०० जंगी जवानों से दुश्मनों की ख़बर लाने के लिये भेजे गये और बंगाले के एलची को हुक्म हुआ कि इन ३ बातों में से १ को अर्ज़ करे (१)

बुध को यूनस अली मोहम्मद ज़मान मिरज़ा के साथ बिहार की तर्फ़ से ख़बर लाने के लिये भेजा गया बिहार के शेख़ज़ादों की अर्ज़ियां आने की ख़बर आई.

जुमेरात को तरदी बेग मोहम्मद जंगजंग को तुर्कों और हिन्दी अमीरों के १००० तर्कशबंदों के साथ बिहारवालों के नाम ख़ातिर तसल्ली के फ़रमान देकर भेजा गया ख़्वाजा मुर्शद इराक़ी को सरकार बिहार का दीवान करके तरदी मोहम्मद के साथ किया गया.

दूसरे दिन मोहम्मद ज़मान मिरज़ा ने शेख़ ज़ेन और यूनस अली की कुछ बातें लिखकर मदद मांगी थी सो कुछ तो मोहम्मद जमान मिरज़ा के जवान ही मदद पर लिखे गये और कुछ नये नौकर रखे गये.

१ शाबान शनिवार (असाढ़ सुदि २। १० अप्रेल) को कूच हुआ बादशाह सवार होकर गये भोजपुर और भईया को देखकर उर्दू में लौट आये.

मोहम्मद अली और दूसरे सरदार जो ख़बर लाने को भेजे गये थे रस्ते में हिन्दुओं की १ टोली को हटाकर सुलतान महमूद के नज़दीक जा पहुंचे उसके पास २००० आदमी

(१) ३ बातों का कुछ ब्यौरा नहीं लिखा है।

थे तो भी वह ख़बर पातेही दो हाथियों को मारकर चलदिया और अपने १ सवार को किनावल (ख़बर देनेवाले) के तौर पर कुछ आदमियों से छोड़गया जब तुरकों में से २० जवानों के क़रीब पहुंच गये तो वे भी ठहर न सके भाग निकले इन्होंने कई आदमियों को गिराकर १ का तो सिर काट लिया और दो एक अच्छे जवानों को पकड़ लिया.

बादशाह दूसरे दिन कूच करके नांव में बैठे इस मंज़िल में मोहम्मद ज़मान मिरज़ा को ख़ासा ख़िलअत, तलवार तपचाक (घोड़ा) और कमर इनायत हुआ और उसने वलायत बिहार के वास्ते घुटना टेका (सलाम किया)

बादशाह ने बिहार में से १ करोड़ २५ लाख (टके का मुल्क ख़ालिसे करके मुरशिद इराक़ी को उसका दीवान किया.

गुरुवार को कूच होकर बादशाह नांव में बैठे नावें सब खड़ी हुई थीं बादशाह ने उनको बराबर चलने का हुक्म दिया पूरी नावें जमा नहीं हुई थीं तो भी नदी के पाट से इनकी पंगत बड़ी निकली नदी कहीं ओछी कहीं गहरी और कहीं ठहरी हुई थी इसलिये बादशाह सब नावों को बराबर २ नहीं लेजा सके नावों के फ़ुरसट में १ घड़ियाल आगया १ मछली घड़ियाल से डरकर इतनी ऊंची उछली कि १ नांव में आ पड़ी उसको पकड़ के बादशाह के पास लेगये बादशाह ने मंज़िल पर पहुंचकर नई पुरानी नावों के नाम आशायश, आरायिश, गुंजायिश, और फ़रमायिश रक्खे,

जुमे को कूच हुआ मोहम्मद ज़मान मिरज़ा बिहार जाने को तैयारी करके बादशाह से बिदा हुआ - बंगाले से

दो मुखबर खबर लाये कि बंगाली लोग मखदूम आलमकी सरदारी में गंडक नदी पर २४ जगह मोरचे बना रहे हैं सुल तान महमूद और अफ़ग़ान भी नदी से उतर कर उधर चले गये हैं बादशाह ने लड़ाई का भरम होने से मोहम्मद ज़मान मिरज़ा को रोक लिया और शाह सिकंदर को तीन चारसौ आदमियों से बिहार में भेज दिया.

शनिवार को जलालखां और बहारखां आये जिन को बंगाली नज़र क़ैद रखते थे इन्होंने बादशाह से कहा कि हम बंगालियों से लड़कर निकल आये हैं.

इसी दिन बंगाले के एलची इसमाईल मीता को हुक म लिखा गया कि उन तीनों बातों का जवाब नहीं आया है जो मेल रखना है तो जवाब देने को जलदी आवे.

इतवार को कूच होकर परगने आरी में मुकाम हुआ यहां खबर आई कि फ़रीद का लशकर सौ डेढ़ सौ नावों से गंगा और सरू (सरजू) के संगम पर सरू नदी के उधर ठह रा हुआ है ये लोग बे अदबी से रस्ता रोके हुवे थे तोभी बाद शाह ने सुलह के लिहाज़ से जो बंगाली के साथ होगई थी बंगाले के एलची इसमाईल को जो खिदमत में हाज़िर हो गया था फिर मुल्ला मज़हब के साथ उन तीनों बातों का जवा ब लाने के वास्ते बिदा किया और उससे यह भी कहदिया कि मैं ग़नीम के निकालने को इधर और उधर से जाऊंगा तुम्हारे कबज़े की जो ज़मीन और नदी है उसमें कुछ नुकसा न नहीं पहुंचेगा - दूसरी बात यह है कि फ़रीद के लशकर से कहदो कि रस्ता छोड़ कर ख़रीद में आजावे मैं भी तुर्कों को भेजूंगा जो तसल्ली देकर उसको उसकी जगह पर लेआवें और

जो वह घाट से नहीं हटेगा और अपनी इज्जत नहीं छोड़े गा तो जो कुछ खराबी उसपर आवेगी वह हमारी तर्फ़ से नहीं होगी उसीकी अपनी पैदा की हुई होगी। बुध के दिन बंगाले के एलची इसमाईल मेता को मामूली खिलअत पहिना कर इनाम दिया गया जुमेरात को दाऊद और उसके बेटे जलालुद्दीन के पास तसल्ली का फ़रमान मोरखजमाली के हाथ भेजा गया - इसीदिन माहम का नौकर आया और खत लाया वह बाग़ सफ़ा के उधर से अलग हुआ[1] था.

शनीचर को बादशाह ईराक़ के एलची मुराद क्रोरची से मिले.

इतवार को मामूली चीजें देकर मुल्ला मज़हब को बिदा किया.

सोमवार को खलीफ़ा और बाज़े अमीर इसवास्ते भेजे गये कि दरिया से एक साथ उतर जाने का रास्ता देख आवें.

बुधवार को फिर खलीफ़ा इसी काम के वास्ते मयान दुआब (दोनों नदियों के बीचे) में भेजा गया.

बादशाह अरोके पास दक्खिन की तरफ़ से नीलोफ़र की बहार देखने को गये शेख गोरन नीलोफ़र का बीज (कंवलगटा) लाया बादशाह लिखते हैं कि यह पिस्ते से बहुत मिलता है खूब चीज है इसी का फूल नीलोफ़र होता है हिंदुस्तानी नीलोफ़र को कंवल ककड़ी-

(१) अर्थात उसने बाग़ सफ़ा के उधर माहम को छोड़ाथा.

कहते हैं.

सोन नदी के नीचे बहुत से रूख देखकर बादशाह नदी से उतरे और उधर गये और वहां मुनीर नाम स्थान को जो २।३ कोस पर था देखकर बागों में होते हुवे फिर सोन पर आये नहाकर और नमाज़ पढ़कर उर्दू को लौटे कुछ मोटे घोड़े थग गये थे उनको दम लेने और ठंडा होने के लिये पीछे छोड़ आये जो ऐसा न करते तो मर जाते। उन्होंने मुनीर से लौटते वक़ यह हुक्म दिया था कि १ आदमी सोन नदी के किनारे उर्दू तक १ घोड़े के क़दम गिना करे बादशाह जब ६ घड़ी रात गये उर्दू में पहुंचे तो २३१०० क़दम गिने गये थे जो ४६२०० क़दम आदमी के हुवे जिनको बादशाह ने ११॥ कोस लिखा है मुनीर से सोन तक ३॥ नांव में जाने के १२ और लौटने के १५।१६ कोस मिलाकर उस दिन की सैर ३० कोस की बताई है.

जुमेरात को जोनपुर से जुनेद बरलास और वे लोग जो वहां से आये मगर देर करके आये थे जिससे बादशाह ने उनको झिड़का और उनसे मिले भी नहीं मगर क़ाज़ी ज़िया को . लाकर मिले.

फिर तुर्क और हिन्दी अमीरों को बुलाकर नदी से उतरने की सलाह ठहरी कि गंगा और सरू के बीच में ऊंची जगह पर उस्ताद अली कुली फ़रंगी देग और मुस्तफ़ा को रखकर बहुत से बंदूकचियों के साथ वहां से लड़ाई शुरू करें और मुस्तफ़ा दोनों नदियों के संगम पर नीचे की खरदे के सामने जहां बहुत सी नावें

खड़ी हैं बिहार और गंगा की तर्फ़ से अपने हाथियों को ल गाकर लड़ाई में मशग़ूल हो इसके पास भी बहुत से बंदूक़ची हैं मोहम्मद ज़मान मिरज़ा और वे लोग जिनका नाम लिखा गया है मुस्तफ़ा की पीठ के पीछे से जाकर मदद करें.

उस्ताद अली कुली और मुस्तफ़ा के पास ज़रब ज़न मारने और देग रखने के लिये मोरचे उठाने को बहुत से बेलदार और कहार भेजे गये और उनपर जमादार तईनात किये गये जो सामान और मसाला लाने ले वें असकरी. खानों और सुलतानों को हुक्म हुआ कि वे भी हलदी के घाट से सरू में उतर कर मोरचों की तर्फ़ से दुश्मन के ऊपर जावें.

सुलतान जुनेद और क़ाज़ी ज़िया ने अर्ज़ की कि ८ कोस पर १ ऊंचा घाट है सेरूपज़ई को हुक्म हुआ कि दो एक जालेबानों सुलतान जुनेद महमूदखां. और क़ाज़ी ज़िया के आदमियों को लेजाकर देखें अगर घाट हो तो वहीं से उतर जावें.

लोग यह भी कह रहे थे कि बंगाली भी हलदी घाट पर अपने आदमी रखने की फ़िकर में हैं.

सिकंदर पुर के शिकदार (कोटवाल) महमूदखां की अर्ज़ियां आईं कि मैंने हलदी घाट पर ५० नावें जमा करके नाव वालों को मज़दूरी देदी है मगर वे लोग बंगाली की अवाई सुनकर बहुत घबराये हुवे हैं बादशाह ने उन लोगों के वापस आने तक जो घाट देखने को गये थे ठहरना पसंद न करके अमीरों को स-

लाह के वास्ते बुलाया और कहा कि सिकंदरपुर और जर
सूक से दादू और मेराज तक सब जगह सरू के घाट हैं मैं
बहुत सी फ़ौज को हुक्म देता हूं कि हलदी घाट से नावों में उ
तर कर बंगालियों के ऊपर जावें और इनके जाते ही उस्ताद
अली कुली और मुस्तफ़ा तोप बंदूक़ ज़र्बज़न और फरंगी
देग से लड़ाई शुरू करदें और उन (बंगालियों) को निका
लदें हम भी गंगा से उतर कर उस्ताद अली कुली की मदद
पर खड़े होजावें और जब फ़ौज घाट से उतर कर पास आवे
तो यहां से लड़ाई शुरू करके ज़बरदस्ती उतरजावें उधर मोह
म्मद ज़मान मिरज़ा वग़ैरा जो तईनात होचुके हैं बिहार और गं
गा की तरफ़ से मुस्तफ़ा के आगे लड़ाई शुरू करदें.

जब यह सलाह जमगई तो बादशाह ने उस लशकर को
जो गंगा के उत्तर में था ४ फ़ौजें करके असकरी को उनपर
सरदार किया और हलदी घाट पर भेजा। १ फ़ौज में तो अस
करी अपने नोकरों से था १ में सुलतान जलालुद्दीन शर्क़ी,
एक में क़ासिम सुलतान, बेख़ूब सुलतान, वग़ैरा उजबक सर
दार थे और १ में मूसा सुलतान जुनेद सुलतान, और वह
लशकर था जो जोनपुर से आया था.

इस लशकर में तख़मीनन २००००, आदमी होंगे उसपर
ताकीद करने वाले भेजे गये कि इसी रात में उसे सवार करादें

इतवार को तड़के ही से लशकर गंगा को उतरने ल
गा बादशाह पहर भर दिन चढ़े नाव में बेठकर उतरगये ती
सरे पहर फ़ीरूयज़र्द वग़ैरा जो घाट देखने गये थे आये इ
नको घाट तो नहीं मिला मगर रस्ते की, तथा नावों के मि
लने की, और तईनाती फ़ोज की, ख़बरें लाये.

मंगल को बादशाह घाट से उतरे और दोनो नदियों के संगम पर लड़ाई की जगह से कोस भर ठहरे जहां से उस्ताद अलीकुली के गोले मारने का तमाशा देखने गये जिस ने इसदिन फ़रंगी के पत्थर से दोनावों को मारकर डुबो दिया बादशाह १ बड़ी देग को लड़ाई के स्थान पर लेजा कर उसके वास्ते जगह बनाने के लिये मुल्ला गुलाम कोज मादार और कई सिपाहियों तथा फुरतीले जवानों को मददगार छोड़कर चले आये और उर्दू के पास नाव लेजाकर रात के वक्त डेरे में सोगये·

पिछली रात को नावों के सवारों में बड़ी गड़बड़ मची चहरों (सिपाहियों) ने अपनी नांव की लकड़ी पकड़कर ख़बरदार ख़बरदार का शोर मचाया बादशाह फ़रमायश नाम नांव में सोये हुवे थे जो आशायश नाम नांव की बग़ल में थी एक एक चौकीदार वहां था आंख खोलकर देखा तो एक आदमी आशायश के ऊपर हाथ रखकर चढ़ने के इरादे में था इसने पत्थर मारा तो वह फौरन पानी में जाकर फिर निकला और चौकीदार पर तलवार मार कर चलागया उसके थोड़ा सा ज़ख़म आया वह गड़बड़ उसी बात की थी पहिली रात को भी नांव के पास दो एक चौकीदारों ने कई हिन्दुस्तानियों को भगाया था और उनकी २ तलवारें और १ खंजर छीन लिया था·

बुध को बादशाह गुंजायश नाम नांव में बैठकर गये और जहां से पत्थर चलाये जाते थे वहां पहुंचकर हरेक को कामपर लगाया और औगान, तरदीबेग, मुग़ल के साथ १००० जवान भेजे कि दो तीन कोस ऊपर जाकर

जैसे बनसके नदी से उतरें जब ये असकरी के उर्दू के साम
ने पहुंचे तो बंगाली २०।३० नावों में नदी से उतरकर औ
र पैदल होकर धावा ही किया चाहते थे कि इन्होंने घोड़े
दौड़ाकर उनको भगादिया कई आदमियों के सिर काट
लिये बहुतों को तीर से मारा और ७।८ नावें पकड़लीं.

दूसरे दिन बंगाली कई नावों में मोहम्मद जमानमिर
जा की तरफ़ लड़ने को गये उसने भी उनको भगा दिया ३
नावों के आदमी डूब गये १ नाव को पकड़ कर बादशाह
के पास लाये बादशाह ने हुक्म दिया कि ७।८ नावें जो औ
गान बर्दी वगैरा ने पकड़ी हैं सब लोग उनमें बैठकर सवे
रे मुंह अंधेरे नदी से उतर जावें.

दूसरे दिन असकरी का आदमी आया कि वह गहरे
पानी से तो उतर गया है कल जुमेरात को बागियों पर जा
वेगा बादशाह ने हुक्म भेजा कि और लोग भी जो उतर
गये हैं असकरी के साथ होकर ग़नीम के ऊपर जावें.

तीसरे पहर के वक़्त उस्ताद के पास से आदमी आया
कि पत्थर तैयार होगया है क्या हुक्म है बादशाह ने फ़र
माया कि इस पत्थर को न फेंकें मेरे आने तक दूसरा प-
त्थर और तैयार करलें.

बादशाह पिछले दिन से १ छोटी सी बंगाली नांव में
बैठकर मोर्चों में गये उस्ताद ने १ दफ़े तो पत्थर मारा फि
र कई दफ़े फ़रंगियां मारीं

बादशाह लिखते हैं कि बंगाली आतिश बाज़ी में
मशहूर थे इस दफ़े ख़ूब देखा गया तो मालूम हुआ कि
१ जगह तो ताककर नहीं मारते हैं जिस तरह होता है

उसी तरह पार देते हैं मैंने उसी वक्त उनके सामने कुछ नावों को सरू में उतारने का हुक्म दिया २० नावें फ़ौरन बगैर किसी मदद के उतर गईं ऐशान तेमूर सुलतान, तोख़ता बूगा सुलतान, बाबा सुलतान. आरायशखां और शेख़ गोरन को हुक्म हुआ कि जाकर इन नावों की रखवाली करें.

फिर बादशाह वहां से चलकर १ पहर के अंदर २ उर्दू में आगये आधीरात के क़रीब उन नावों से यह ख़बर आई कि फ़ौज तो आगे निकलगई हम नावों को लिये जाते थे कि बंगालों की नावोंने एक तंग जगह में लड़कर लड़ाई की हमारी १ नाव में पत्थर लगा उसका पाया टूटगया इस लिये न उतर सके.

जुमेरात को सुबह ही मोरचों से ख़बर आई कि सबना के और उनके सब सवार चढ़कर बादशाही फ़ौज के सामने आरहे हैं बादशाह भी जलदी से सवार होकर उन नावों पर ग ये जो रात को उतारी गई थी और आदमी दौड़ाकर मोहम्मद सुलतान वगैरा मिरज़ाओं से कहलाया कि फ़ौरन उतर कर अ सकरी से जामिलें और ऐशान तेमूर, सुलतान तोख़ता, बो गा सुलतान, को जो इन नावों पर थे उतरने का हुक्म दिया और बाबा सुलतान अपनी तर्दूनानी की जगह पर नहीं आ या था ऐशान तेमूर सुलतान फ़ौरन १ नाव में अपने ३०। ४० घोड़ों और नोकरों को बैठाकर उतर गया उसके पीछे एक और नाव भी उतरी इनको देखकर बंगालियों के बहुत से पिया दे इस तरफ़ आये तेमूर सुलतान के ७। ८ आदमी सवार होकर उनके सामने गये और सुलतान के सवार होने तक लड़ भिड़ कर उनको सुलतान की तरफ़ खेंच लाये सुलतान भी सवा

र हुआ और दूसरी नांव भी पहुंच गई सुलतान ने ३५ सवा
रों और बहुत से पियादों के साथ दोड़कर उनको बिलकुल
भगादिया उसने बहुत अच्छा काम किया कि अव्वल तो
दोड़कर सब से पहिले पहुँचा दूसरे बहुतकम आदमियों से
जाकर उन बहुत से पयादों को भगाया फिर तो तोख़ता बो
ग़ा सुलतान भी उतर गया दूसरी नावें भी पैदरपे उतरने लगीं
हिंदुस्तानियों और लाहोरियों ने वांसोके गट्ठे पकड़ पकड़
कर उतरना शुरू किया। बंगाली नावें यह हाल देखकर मो
रचों के आगे से पानी के नीचें भागने लगीं दरवेश मोह
म्मद सारबान और दोस्त एशक आक़ा वग़ैरा कई जवानों
के साथ मोरचों के आगे से उतर गये बादशाह ने सुलतानों
के पास आदमी दोड़ाया कि जो लोग उतरें उनको जमा क
रले और जब आगे की फ़ौज नज़दीक पहुँचे तो उसकी
बग़ल में से निकलकर ग़नीम के ऊपर धावा करें.

सुलतानों ने ऐसा ही किया जब वे ३।४ टुकड़ियां हो
कर ग़नीम के पास पहुँचे तो वह पयादों को आगे करके
आराम से ठहरता २ चला १ तर्फ़ तो असकरी की फ़ौज में
से कूकी ने अपनी जमाअत से और दूसरी तर्फ़ से सुलता
नों ने धावा किया ग़नीम को गिराया और मारा बसंतरा
य नाम १ बड़े हिन्दू को कूकी ने गिराकर सिर काट लिया
उसके बचाने को १०।१५ आदमी उतरे और वहीं मारेग
ये तोख़ता बूग़ा सुलतान, दोस्त एशक आक़ा, और मुग़
ल अबदुल वहाब ने दुशमन के आगे पहुँच कर ख़ूब तल
वारें मारीं मुग़ल तिरना नहीं जानते थे तो भी पानी से उत
र गये थे.

बादशाह की नावें पीछे थी उन्होंने आदमी भेजकर मंगाईं तो फ़रमायिश नाम नाव पहिले आई बादशाह उसमें बैठकर बंगालियों की छावनी देखने को गये फिर गुंजायिश नाम नांव में बैठकर नदी पर आये मीर मोहम्मद जालाबान ने अर्ज़ की कि सरू नदी के ऊंचे स्थान पर से उतरना अच्छा है बादशाह ने हुक्म देदिया कि जिधर यह कहे लशकर उधर से ही उतरे। उतरते हुवे इक्का ख्वाजा की नांव डूब गई बादशाह ने उसकी जागीर छोटे भाई क़ासिम को इनायत करदी.

दो पहर पीछे जबकि बादशाह नहारहे थे सुलतानों ने आकर सलाम किया बादशाह ने उनकी तारीफ़ करके महरबानी होने की उमेद दिलाई असकरी भी उसी वक़्त आया मुख्य उसीका देखना था और यह अच्छा शकुन था.

रात को बादशाह गुंजायिश नाम नांव में सोरहे क्योंकि उर्दू नदी से नहीं उतर चुका था.

जुमे (शुक्रवार) को बादशाह गांव कूंडिया परगने नरहन ज़िले खरीद में उतरे जो सरू नदी के उत्तर में था.

रविवार को कूकी शाहमारूफ़ की खबर लाने के लिये भेजा गया जिसे बादशाह ने बड़ी महरबानी करके पिछले साल में सारन की वलायत दी थी वह कई बेर अपने बाप से लड़ा था और उसको हराया था मगर जब सुलतान महमूद ने बिहार लिया और बब्बन तथा बायज़ीद उससे जामिले तो वह भी लाचार उसके साथ होगया था और इनदिनों में उसको अर्ज़ियां आई थीं परन्तु लोग उसकी तर्फ़ से अच्छी बातें नहीं कहते थे जब असकरी हलदी से उतरकर बंगालियों पर गया तो वह इसी जगह उससे आमिला था.

इन दिनों में जब्बन और बायज़ीद की यह ख़बरें आती थीं कि वे सरू नदी से उतरने की फ़िकर में हैं.

इन्हीं दिनों में संभल से ख़बर आई कि अली यूसफ़ और उसका एक मुसाहिब जो उसी के ढंग का था दोनो १ दिन में मरगये यूसफ़ ने संभल में एक तरह का अच्छा बंदोबस्त कर रक्खा था बादशाह ने अबदुल्लाह को वहां की हुकूमत पर भेजा जो ५ रमज़ान शुक्रवार (जेठ सुदि ६। १४ मई) को बिदा हुआ.

इन्हीं दिनों में चीन तेमूर सुलतान की अरज़ी आई कि जो अमीर मुक़र्रर हुवे थे बेगमों के काबुल से आजाने पर साथ नहीं जासके हैं मगर मोहम्मदी और दूसरे अमीर उसके साथ १०० कोस की दौड़ करके गये और उन्होंने बलोचों को खूब ज़ेर किया है.

बादशाह ने अबदुल्लाह से चीन तेमूर सुलतान, दोलदी मोहम्मदी, और उधर के दूसरे अमीरों और जवानों को हुक्म लिखाया कि चीन तेमूर सुलतान के साथ आगरे में जमा होकर तैयार रहें कि दुशमन जिधर जावें उधर ही वे भी कूच करें.

८ सोमवार (जेठ सुदि ६। १७ मई) को दरिया खां का पोता जलालखां जिसके लाने के लिए शेख़ जमाली गया था अपने सब मोतबर अमीरों के साथ बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर होगया इसी दिन याहया लोहानी भी कि जिसने अपने भाई को बंदगी के लिये भेजा था आगया लोहानी जाति के ७।८ हज़ार पठान उमेदवारी में आगये थे बादशाह ने उनको नाउमेद न करके बिहार से १ करोड़ का

खालिसा करके ५० लाख का इलाक़ा महमूदखां लोहानी को इनायत किया और इतना ही जलालखां के वास्ते रक्खा. फिर १ करोड़ और नज़राने में क़बूल करके इस रुपये की तहसील के लिये मुल्लागुलाम यसावल को भेजा और मोहम्मद ज़मान मिरज़ा को जोनपुर की विलायत दी.

गुरुवार की रात को खलीफ़ा का नौकर गुलाम अली बंगाले के एलची इसमाईल के पास से खत लेकर आया जिसमें लिखा था कि नुसरत शाह ने वे तीनों बातें मानलीं और सुलह मंजूर करली है। इधर बादशाह ने भी यह चढ़ाई पठानों को ज़ेर करने के वास्ते की थी जो अब कुछ तो भाग कर छुप रहे थे और कुछ आकर चाकर होगये थे और जो थोड़े से रहे थे वे बंगाली के ताबे थे और बंगाली ने उनको अपनी तर्फ़ लेलिया था इसके सिवाय बरसात भी आगई थी इसलिये बादशाह ने उन शर्तों के जवाब में सुलहनामा लिख भेजा.

इसी दिन तीसरे पहर के वक्त शाह मोहम्मद मारूफ़को खासा खिलअत और तबचाक (घोड़ा) इनायत होकर रुखसत दीगई पिछले साल के दस्तूर पर सारन उसकी जागीर में रही और कंदल(१) तरकशबंदों (सिपाहियों) के भरती करने के वास्ते इनायत हुई इसीतरह इसमाईलजलवानी कोभी सरकार से ७२ लाख की जागीर दीगई खिलअत और तपचाक घोड़ा भी मिला और वह विदा किया गया और यह बात ठहरी कि दोनो एक एक भाई भी

(१) परगने का नाम मालूम होता है।

र बेटे से आगरे में नोकरी करते रहें.

गुंजायश और आरायश नाम नावें २ बंगाली नावों स मेत जो बंगाले से हाथ आई हुई　नावों मेंसे चुनी गईथी त्रिमुहानी के रस्ते से ग़ाज़ीपुर को लेजाने के लिये बंगालियों को सोंपी गई आसायश और फ़रमायश नावें साथ रहने के लिये सरू नदी में ही रखी गई.

जब बादशाह की खातिर बिहार और सरवार की तर्फ़ से जमा होगई तो सोमवार को चोपारे और चतरमोक के घाटे से अवधकी तर्फ़ कूच करके सरू (सयू) के किनारे २ दस कोस तक आये सोमवार को ही दूसराईल जलवानी. अलावलखां लोहानी. और औलिया खां शिरवानी ५।६ अमीरों से आकर मिले.

इसी दिन ईशान तेमूर सुलतान को नारनोल के परगने से ३० लाख और ३० लाख ही तोखता बूगा सुलतान को शमशाबाद के परगने से इनायत हुवे.

दो मंज़िलें बीच में देकर बुध को चतर मोक नदी के किनारे सिकंदरपुर में मुक़ाम हुवा इसी दिन से लोग नदी से उतरने लगे और उन नमकहरामों की यह खबरें आने लगीं कि सरू से उतरकर लखनऊ को गये हैं बादशाह ने तुर्क और हिन्दुस्तानी अमीरों मेंसे जलालुद्दीन शर्क़ी अलीखां फरमली. निज़ामखां क्रेमश उजबक, कुरबान चर्ख़ी. और हुसेनखां दरियाखानी को उन पर भेजा.

१ पहर ५ घड़ी रात गये बरसात के बादल घिर आये और दम भर में आंधी और मेंह ऐसे ज़ोर का आया कि कम कोई डेरा खड़ा रहा बादशाह अपने डेरे में बैठे हुवे लिख

रहे थे उनको काग़ज़ समेटने की भी फ़ुरसत न मिली डेरा साय बान समेत उनके ऊपर गिर पड़ा चांवं चूर २ होगई बादशाह को ख़ुदा ने बचाया किताब काग़ज़ भीग गये बादशाह ने बड़ी मि हनत से उनको इकट्ठा करके बानात के बुकचे में लपेटा और किताबों को ऊपर रखकर ऊपर कम्मल ढक दिया. २ घड़ी पीछे जब मेंह थमा तो तोशकखाने की कनात खड़ी करके बत्ती जलाई और बड़ी महनत से आग सुलगाकर काग़ज़ों और किताबों को सुखाते रहे और सुबह तक सोये नहीं.

जुमेरात को नदी से उतरे और जुमे को सवार होकर खरीद और सिकंदर पुर को देखने गये अब्दुल्लाह और बाक़ी ने लखनऊ का लेना लिखा था.

शनीचर को बादशाह ने कूकी को भेजा कि अपनी जमाअत से आगे जाकर बाक़ी के साथ होजावे.

इतवार को जुनेद बरलास और हसनखलीफ़ा को मुल्ला अयाक़ के नौकर और मोमन अतका के भाई भी बाक़ी के पास भेजेगये और हुक्म दिया गया कि हमारे आने तक जो कुछ तुमसे होसके उसके करने में कसर न रक्खो.

सोमवार को फ़तह पुर के ज़िले में सरू नदी के किनारे पर कालरा नाम गांव में मुक़ाम हुआ जो लोग बहुत तड़के कूच करगये थे वे रस्ता भूलकर फ़तहपुर के बड़े तालाब की तर्फ़ चल दिये थे बादशाह ने आदमी दौड़ाये कि जो आद मी नज़दीक मिलजावें उनको लौटा लावें और कोचक ख्वा- जा को हुक्म हुआ कि रात को उस तालाब पर रहकर लश कर जो उधर गया है लेआवे.

बादशाह आगे रस्ते से आशायिश नाम गांव में बैठकर मंजिलतक पानी में आये रस्ते में शाहमोहम्मद दीवाने का बेटा जो बाकी के पास से आया था लखनऊ की यह सही खबर लाया कि १३ रमज़ान शनिवार (जेठसुदि १४। २२मई) को लड़े मगर लड़ाई में कोई बड़ा काम नकर सके जब लड़ाई होरही थी तो घास के गंजों, कुप्पों और छप्परों में आग लगगई जिसके मारे क़िला अंदर से भाड़ की तरह तप गया इसलिये क़िले की दीवार पर खड़े न रहसके क़िला ले लिया गया और वे लोग दलू (डलमऊ) को कूच करगये

इस दिन भी बादशाह १० कोस चलकर परगने सकरी के जवर नाम गांव के पास सरू नदी के किनारे पर ठहरे.

बुध को जानवरों के आराम के वास्ते वहीं मुक़ाम रहा यहां कुछ लोगों ने कहा कि शेख बायज़ीद और बब्बन गंगा से उतरकर जोगा और चिनार के रस्ते से अपनी बस्तियों को जाने की फिकर में हैं बादशाह ने अमीरों को बुलाकर सलाह की और ईशान तेमूर सुलतान, मोहम्मद सुलतान मिरज़ा, तोखता बूगा सुलतान, क़ासिम हुसेन सुलतान, बेखूब सुलतान, मुज़फ्फर हुसेन सुलतान, क़ासिम ख्वाजा, जाफ़र ख्वाजा, और ख्वाजा खानबेग को असकरी के नोकरों के साथ और कोकका ख्वाजा को आलमखां कालपी, मलक दादगए करांणी, ऊदी सिरवानी, हिंदी अमीरों के साथ बब्बन और बायज़ीद के पीछे धावा करने का हुक्म दिया.

रात को बादशाह सूरहूरपुर की नदी में नहाते थे उस वक़्त बत्ती की रोशनी में बहुत सी मछलियां पानी के ऊपर

आकर जमा होगई जिंन बादशाह और उनके पास वालों ने पकड़ ली.

जुमे को उसी सूरहरपुर नदी की १ साखा पर डेरे हुवे उसवक्त कुछ अंधेरा था लशकर उतर रहा था बादशाह ने नदी के पानी को रोक कर १ कुंवा १० हाथ लंबा और इतनाही चौड़ा अपने नहाने के वास्ते बनाया.

२७ (असाढ़ बदि १३। १२ जून) की रात को वहीं डेरे रहे तड़के ही उसनदी से अलग होकर तूसनदी से उतरे इत वार को भी इसी नदी पर ठहरे २९ सोमवार (रमज़ान) (असाढ़ सुदि १। ७ जून) को भी उसी जगह मुकाम था इस रातको खूब साफ़ आसमान न था तो भी कई आदमियों ने चांद देखा और क़ाज़ी के पास जाकर गवाह दी.

मंगल की सुबह (१ शव्वाल) को बादशाह ईद की नमाज़ पढ़कर सवार हुवे १० कोस चलकर गोदी नदी से १ कोस पर उतरे तीसरे पहर को बादशाह ने माजून खाई शेख़ ज़ैनमुल्ला शहाब, ख़्वांद मीर, वग़ैरा अपने मुसाहिबों को बुलाया पिछले दिन से पहलवानों की कुश्ती हुई.

बुध को भी वहीं मुक़ाम रहा. मलिक शर्क़ जो ताज खां के लाने को चुनार में गया था वहां आया फिर कुश्ती पहलवानों की हुई यहां लोहानी को १५ लाख की जगह सरकार से दीगई और खिलअत पहिनाकर बिदाकिआगया.

दूसरे दिन ११ कोस चलकर गोदी नदी से उतरे और वहीं नदी के पास ठहरे मुलतानों और अमीरों की जो दोड़ पर गये थे यह ख़बर आई कि दलमऊ जाकर अभी गंगा से नदी उतरे है बादशाह ने ख़फ़ा होकर उन को लिखा.

कि गंगा से उतरकर ग़नीम का पीछा करते हुवे जमना से भी उतर जावें और आलमखां को साथ लेकर दुशमनों को शिकस्त दें.

फिर बादशाह २ मंज़िल बीच में करके दलमऊ पहुंचे और गंगा के घाट से उतरकर पास ही उतर पड़े कुछ उर्दू तो उसी दिन उतरगया बाकी दूसरे दिन उतरा जबतक बादशाह वहीं ठहरे रहे यहां बाक़ी ताशक़ंदी भी अपने लशकर समेत आकर हाज़िर होगया फिर १ मंज़िल बीच में करके कोड़ा के पास आरंद नदी पर ठहरे कोड़ा दलमऊ से २१ कोस था.

जुमेरात को वहां से कूच होकर परगने आदमपुर में मुकाम हुआ ग़नीम के पीछे नदी से उतरने के लिये पहिले से कुछ जालेबान कालपी में भेज दिये गये थे कि वहां जितनी कुछ नावें पावें लेआवें सो दूसरात को कुछ नावें आगई और घाट भी मिलगया मगर बादशाह दुशमनों की खबर आने के लिये कुछ दिनों तक वहीं ठहरे और बाक़ी समावरू को पानी से उतारकर खबर लाने के लिये भेजा.

जुमे को दोपहर पीछे बाक़ी आया अमीरों ने पहिले शेख़ बायज़ीद और बब्बन को हराया फिर उनके भले आदमी मुबारकखां को कई आदमियों से मारा कई सिर और १ क़ैदी भेजा बाक़ी ने वहां का हाल मुफ़स्सल अर्ज़ किया.

१३ - इतवार (असाढ़ सुदि १५ । २० जून) को बादशाह जमना के ऊपर पहुंचे और पानी से १ तीर के टप्पे पर डेरे खड़े कराकर उतरे.

सोमवार को जलाल ताशक़ंदी अमीरों और सुलतानों के पास से आया और यह खबर लाया कि बब्बन और

शेख बायज़ीद झोंपे के परगने से भाग गये हैं। बादशाह ने बरसात आजाने और ५। ६ महीने की दौड़ धूप में घोड़ों और सिपाहियों के थक जाने से सुलतानों और अमीरों को हुक्म लिखा कि "नई मदद आने तक वहीं किसी अच्छी जगह पर ठहर जावें"। तीसरे पहर के वक्त बाक़ी शगावल को उसके लश्कर के साथ बिदा किया और मूसा मारूफ़ फ़रमली को जो सरू नदी से उतरते वक्त हाज़िर होगया था ३० लाख की जागीर अमरोह के परगने से दी खासा सिरोपाव और ज़ीन समेत घोड़ा देकर अमरोहे को बिदा किया.

जब इन तर्फ़ों से दिलजमई होगई तो ३ पहर १ घड़ी रात जानेपर बादशाह ने कालपी पर धावा किया मंगल को नौलाबर नाम परगने में दुपहरी तेर की और घोड़ों को जव देकर शाम को फिर सवार हुवे और ३ पहर रात तक १३ कोस चलकर कालपी के परगने शिव कसन पुर में बहादुर खां शिरवानी के क़बरस्थान में जा सोये तड़के ही नमाज़ पढ़कर वहां से रवाने हुवे १६ कोस चलकर दो पहर को इटावे में पहुंचे महदी ख्वाजा पेशवाई को आया पहर रात गये वहां से सवार हुवे और रस्ते में नींद लेकर १६ कोस पर फ़तहपुर गयरी में दोपहर को जा उतरे। फिर तड़के ही फ़तहपुर से सवार हुवे सो १७ कोस चलकर आधीरात को आगरे के हश्त बहिश्त बाग़में दाखिल होगये.

दूसरे दिन जुमे को मोहम्मद बख्शी और कुछ दूसरे लोगों ने आकर सलाम किया दो पहर पीछे जमना से उतरकर ख्वाजा अबदुल हक़ से मिलकर क़िले में गये और सब बेगमों से मिले.

बलख़ी खरबूज़े बोनेवाले ने जो इसी काम के लिये छोड़ा गया था कुछ खरबूजे खड़े किये थे वह लाकर नज़र किये बादशाह लिखते हैं कि "खूब खरबूज़े थे एकदो बूटे मैंने अंगूर के बाग़ हश्त बहिश्त में बुवाये थे उनमें भी अच्छे अंगूर लगे थे शेख गोरन ने भी १ टोकरा अंगूर का भेजा था यह देखकर हिन्दुस्तान में अंगूर और खरबूज़ों के होजाने से बहुत खुशी हुई"

"इतवार की आधीरात गई थी कि माहम भी आगई। अजब बात यह है कि जिसदिन १० जमादिउल अव्वल (माह सुदि ११ - २१ जुलाई) को हम लश्कर समेत सवार हुवे थे उसी दिन यह लोग भी काबुल से निकले थे"

जुमेरात १ ज़ीक़ाद (सावन सुदि ३। ८ जोलाई) को बड़े दीवानख़ाने में दरबार के वक़्त हुमायूं और माहम[1] ने अपनी २ सोग़ातें दिखाईं १५० कहार मज़दूरी देकर कचहरी के नोकर के साथ ख़रबूज़ा अंगूर और दूसरे मेवे लाने के लिये काबुल को भेजे गये.

३ शनिवार (सावन सुदि ५। १० जोलाई) को हिन्दू बेग जो काबुल से आया था दरबार में हाज़िर हुआ इसी दिन हिसामुद्दीन खलीफ़ा खिदमत में आया.

इतवार को अब्दुल्लाह जो तिरमुहानी से संभल में अली यूसफ़ के मरजाने पर भेजा गया था आकर हाज़िर हुआ.

११ इतवार (सावन सुदि १२। १८ जोलाई) को कंबरअ

(१) हुमायूं की मां

ली अरमून, शेख़ शरीफ़ कराबाग़ी लाहौर के रोज़ीनादारों और चौधरियों और अबदुल अज़ीज़ को पकड़ लाने के लिये भेजा गया क्योंकि शेख़ शरीफ़ ने तो अबदुल अज़ीज़ को बहका ने या उसकी तर्फ़दारी से उसके जुलम नकरने के महज़र लाहोर वालों से ज़बरदस्ती लिखाकर उनकी नक़लें कराई शहरों में भेजी थीं और अबदुल अज़ीज़ ने भी कई हुक्म नहीं माने थे और कई बुरी बातें कीं और कहीं थीं.

१५ जुमेरात (भादों बदि १। २२ जुलाई) को चीन तेमूर सुलतान तिजारे से आकर हाज़िर हुआ जलाबान सादिक़ और ऊदी कमाल पहलवानों की कुशती हुई.

१९ सोमवार (भादों बदि ५। २६ जोलाई) को शाह क़ज़लबाश के एलची मुराद कोरची को मुनासब कमर खंजर और खिलअत पहिना कर और २ लाख टके इनायत कर के रुख़सत कियागया.

इन्हीं दिनों में सैय्यद मशहदी ने गवालियर से आकर रहीमदाद के बाग़ी होने की अर्ज़ की बादशाह ने ख़लीफ़ा के नोकर शाह मोहम्मद मोहरदार को नसीहत की बातें लिखकर उसके पास भेजा कुछ दिनों पीछे उसका बेटा तो पकड़ा आया मगर उसकी मरज़ी आने की न थी बादशाह ने उसका वहम दूर करने के लिये मंगल[1] ५ ज़िलहज्ज (भादों सुदि ६-१० अगस्त) को नूरबेग को गवालियर भेजा ४ दिन पीछे नूर बेग ने आकर रहीमदाद ने जो कुछ कहा था अर्ज़ किया बादशाह उसकी मरज़ी के मुवाफ़िक़ फ़रमान लिखकर

(१) मूलग्रंथ में भूल से शनिवार लिखा है।

भेजने को थे कि १ नौकर ने आकर अर्ज़ की कि उसने मुझे अपने बेटे के भगा लाने के लिये भेजा है और उसका इरादा आने का नही है यह सुनते ही बादशाह ने चाहा कि गवालियर पर सवार होजावें मगर ख़लीफ़ा ने अर्ज़ की १ दफ़े में उसको न सीहत का ख़त लिख भेजूं शायद फिर रस्ते पर आजावे बादशा ह ने यह सलाह मानकर शहाबुद्दीन ख़ुसरो को भेजा.

७ जुमेरात (भादों सुदि ८। १२ अगस्त) को ख़्वाजा मह दी इटावे से आया ईद के दिन (भादों सुदि ११। १५ अगस्त) को हिन्दू बेग को ख़ासा खिलअत और तपचाक घोड़ा इना यत हुआ हसन को जो तुर्कमानों में चगताई कहलाता था सिरोपाव कमरखंजर जड़ाऊ और ७ लाख का परगना बख़्शा गया.

सन ९३६ हि.

३ मोहर्रम मंगल (आसोज सुदि ४। ७ सितम्बर) को शहाबुद्दीन ख़ुसरो के साथ शेख़ मोहम्मद गौस गवालियर से रहीमदाद की सिफ़ारश करने के लिये आया जो १ दर वेश और भला आदमी था इसलिये बादशाह ने रहीमदाद का गुनाह उसकी ख़ातिर से बख़्श दिया शेख़ घूरन और नूरबे ग को गवालियर में भेजा कि जाकर गवालियर शेख़ को सौं प आवें.

नोट.

यहां तक छपे हुवे बाबर नामे में लिखा हुआ है. इसके आगे बाक़ी हाल अकबर नामे से लिखा जाता है।

अकबरनामेसे

हुमायूं का बदख्शां से आना.।

(१) हुमायूं जो मीर सुलतान अवेस को बदख्शां में छोड़कर अचानक हिंदुस्तान को चलदिया था १ दिन में काबुल पहुंचा वहां कामरां कंधार से आया ही था मिलने पर उसने हैरान होकर जाने का सबब पूंछा तो कहा कि हज़रत की बंदगी का शौक़ मुझे खेंचे हुवे लिये जाता है और वहां से चलकर बहुत जलदी आगरे में पहुंचा.

बादशाह हुमायूं की मां केसाथ तख़्त पर बैठे हुवे हुमायूं की ही बातें कर रहे थे कि अचानक हुमायूं उनके क़दमों में जागिरा उसके देखते ही उनका कलेजा ठंडा और आंखों में उजाला होगया.

मिरज़ा हैदर ने तारीख़ रशीदी में लिखा है कि सन-९३५ (संबत १५८५।८६) में हुमायूं फ़क़ीर अली को छोड़कर हिंदुस्तान में गया उन दिनों में मिरज़ा अनवर मर चुकाथा जिसका बादशाह को बहुत रंज होरहा था हुमायूं के जाने से उनको कुछ तसल्ली होगई और बहुत दिनों तक खिदमतमें हाज़िर रहा बादशाह मुसाहिबों के मुवाफ़िक़ उसके साथ सलूक करते थे और कहते थे कि हुमायूं बहुत अच्छा मुसाहि

(१) मालूम होता है कि बादशाह ने हुमायूं को फिर बदख्शां भेज दिया था.

बहै.

बदख़्शां

हुमायूं के पीछे सुलतान सईदखां जो काशग़र के ख़ानों में से था। रशीदख़ां को यारकंद में छोड़कर सुलतान वैस वग़ैरा अमीरों के बुलाने से बदख़्शां लेने के लिये गया मगर मिरज़ा हिंदाल पहिले ही क़िले ज़फ़र में जा पहुंचा था सईदख़ां ३ महीने तक उस क़िले का घेरा रखकर ख़ाली हाथों लौट गया.

बादशाह ने जब यह ख़बर सुनी तो ख़्वाजा ख़लीफ़ा को बदख़्शां जाने का हुक्म दिया उसने जाने में ढील की तो हुमायूं से पूछा कि तुम अपने जाने में क्या सलाह देखते हो हुमायूं ने अर्ज़ की कि मैंने हज़ूर से दूर रहकर बहुत दुख भुगता है और यह इरादा करलिया है कि अपनी मरज़ी से तो दूर न रहूं। हुकम की और बात है। यह सुनकर बादशाह ने मिरज़ा सुलेमान को भेजदिया और सुलतान सईद को लिखा कि इतनी वास्तेदारी होने पर भी तुम्हारे इस बरताव से बड़ा तअज्जुब हुआ अब हमने मिरज़ा हिंदाल को बुला लिया है और मिरज़ा सुलेमान को भेजा है अगर हक़दारी को मंज़ूर रखकर बदख़्शां मिरज़ा सुलेमान को देदोगे जो जमाईयों[१] में से है तो ठीक होगा। हमतो अपने से अलग करके मीरास वारिस को सौंप चुके हैं आगे तुम जानो.

मिरज़ा सुलेमान के काबुल में पहुंचने से पहिले ही ब-

(१) मिलकियत, अर्थात जिसकी मिलकियत थी उसको देचुके हैं।

दख़्शां दुशमनों से ख़ाली होगया था जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है.

जब मिर्ज़ा सुलेमान बदख़्शां में पहुंचा तो मिर्ज़ा हिंदाल बदख़्शां उसको सोंपकर हुक्म के मुवाफ़िक़ हिन्दोस्तान को रवाने होगया.

हुमायूं का संभल में जाकर बीमार होना.

हुमायूं को बादशाह ने कुछ अर्से पीछे संभल जाने की रुख़सत दी जो उसकी जागीर में था वहां उसको बुख़ार आने लगा और बीमारी ऐसी बढ़गई कि बादशाह ने ख़बर सुनकर उसको दरिया के रस्ते से दिल्ली में बुला लिया और अपने सामने हकीमों से इलाज कराने लगे दिल्ली में जितने अच्छे हकीम थे उन सबने ही बहुत इलाज मालजा किया लेकिन आराम न हुआ.

एक दिन बादशाह जमना के उसपार बैठे हुवे थे इलाज के वास्ते सियाने लोगों से सलाह कर रहे थे कि मीर अबुल बक़ा ने जो बड़ा मोलवी था अर्ज़ की कि बड़े लोगों ने ऐसा कहा है कि ऐसे मोक़ों पर जबकि हकीम लोग इलाज करने से थक जावें तो जो चीज़ सब से प्यारी हो उसको सिर सिदक़े करके (उतारे में देकर) ख़ुदा की दरगाह में आराम होने की दुआ करना चाहिये.

बादशाह ने कहा कि हुमायूं के पास तो सब से अच्छी चीज़ मैं हूं सो मैं ही अपने को उस पर से निछावर करताहूं

ख़ुदा क़बूल करे॰

ख़्वाजा ख़लीफ़ा और दूसरे पास रहने वालों ने कहा कि वे ख़ुदा की इनायत से जलदी अच्छे होजावेंगे और आपके साये में पूरी उमर भोगेंगे आप ऐसा क्यों फ़रमाते हैं जिन बड़े लोगों का बचन अर्ज़ किया गया है उसका मतलब दुनियां के किसी बढ़िया मालके सदक़े (दान) करने का है सो वही हीरा जो ख़ुदा की देन से इब्राहीम की लड़ाई में हाथ आया है और जिसे आपने उन्हें बख़्श दिया है उसी को वार करके ख़ैरात करदेना चाहिये॰

बादशाह ने फ़रमाया कि इस माल की क्या हक़ीक़त है और वह क्योंकर हुमायूं का बदला होसकता है मैं अपने को उसपर क़ुरबान करता हूं क्योंकि उसपर काम कठन आपड़ा है अब मुझमें उसको इस हालत से देखने की ताक़त नहीं रही है।

यह कहकर वे इबादतख़ाने (सेवास्थान) में गये और अपना निज कर्म करके ३ बेर हुमायूं के आस पास फिरे और अपने बदन में कुछ भारीपना देखकर बोले कि "हम ने उठाया उठाया" उसीकाल से उनका बदन जलने और हुमायूं का बुख़ार उतरने लगा सो थोड़े ही दिनों में इसको तो आराम होगया और बादशाह की तबीअत गिरते गिरते बहुत ही गिरगई तब उन्होंने हाथ पकड़ कर हुमायूं को तख़्त पर बैठाया और आप तख़्त के नीचे लेटगये॰ ख़्वाजा ख़लीफ़ा॰ कंबर अली बेग॰ तरूदी बेग॰ हिंदू बेग॰ और बहुत से अमीर उसवक़्त हाज़िर थे बादशाह ने उनके सामने हुमायूं को बहुत सी नसीहतें करके कहा कि

असल मुराद हमारी यह है कि भाईयों को मत मारना चाहिये कितने ही क़सूरवार हों। फिर जब बादशाह के मरने की नौबत पहुंची तो ख़लीफ़ा ने जो हुमायूं से डरता था महदी ख्वाजा को बादशाह बनाना चाहा और ख्वाजा महदी भी बादशाही की हवस में पड़कर दरबार में धूम धाम से आने लगा मगर खरी कहनेवाले अमीर ख़लीफ़ा को समझाकर सीधे रस्ते पर लेआये और उसने महदी ख्वाजा को दरबार में आने से मना कर दिया और डोंडी पिटवा दी कि कोई उसके घर भी न जावे इससे सब ठीक होगया.

बादशाह का अंतकाल

६ जमादि उल अव्वल सन ९३७ (पोस सुदि ७ सम्बत १५८७। २६ दिसम्बर सन १५३०) को चार बाग़ में बादशाह का देहान्त होगया.

यह बादशाह बड़े सिपाही बड़े आलिम (पंडित) और बड़े शाइर (कवि) थे इन्होंने दीवान तुरकी. मसनवी मवीन. रिसाले वालदिये. वाके आत बाबरी. वग़ैरा कई उमदा २ किताबें तुरकी बोली में बनाई थीं फ़ारसी भाषा के भी अच्छे कवि थे गाने में भी ख़ूब समझने थे लड़ाई का इल्म भी अच्छा जानते थे इनके ४ बेटे हुमायूं, कामरां, असकरी, और हिंदाल. थे और ३ बेटियां १ मां से थीं १ गुलरंग बेगम, २ गुल चहरा बेगम ३ गुलबदन

बेगम. (१ लड़की मासूमा बेगम थी जो मोहम्मद ज़माँ मिरज़ा को ब्याही थी.)

बादशाह के मुसाहिब

इनके मुसाहिब और पास रहने वाले भी सब मौलवी, मुनशी, शाइर, हकीम और दाना थे जिनमें से खास खास (मुख्य) ये थे.

(१) अमीर अबुल बक़ा
(२) शेख़ ज़ैन सदर, शेख़ ज़ैनुद्दीन ख़वाफ़ी का पोता[१]
(३) शेख़ अबुल वज्द फ़ारग़ी, शेख़ ज़ैन का मामूं
(४) सुलतान मोहम्मद कोसा
(५) मौलाना शहाबुद्दीन मो अम्माई
(६) मौलाना यूसुफ़ी तबीब (वैद्य)
(७) मुर्ख़ बिदाई
(८) मुल्ला बक़ाई
(९) ख़्वाजा निज़ामुद्दीन ख़लीफ़ा वज़ीर
(१०) मीर दरवेश मोहम्मद सारबान
(११) ख़्वांद मीर मुवर्रिख़ (इतिहास वेत्ता) इसने हबीबुल सियर[२] वग़ैरा कई किताबें तवारीख़ की बनाई हैं.

---

(१) इसने तुज़ुक बाबरी का तर्जुमा फ़ारसी में किया था (हबीब-उल-सियर)

(२) हबीब-उल-सियर में भी बादशाह का हाल हिन्दुस्तान में आने से पहिले का है.

(१२) ख्वाजा कलां बेग - बड़ा अमीर था.

(१३) सुलतान मोहमदी दोलदी, यह भी बड़े अमीरों में से था.

इति.

हस्ताक्षर लाला परीक्षितलाल
अजयगढ़ बुन्देलखंड

॥ श्रीः ॥

विज्ञापन

निम्न लिखित पुस्तकें हमारे यहां बिक्रार्थ मौजूद हैं जिन महाशयों को शौक़ हो वह हमसे मंगाकर फ़ायदा उठावें.

- अकबर नामा
- शाह जहां नामा
- नौशेरवां नामा
- खानखाना नामा
- नसीहत नामा
- जीवन चरित्र राजा बीरबर
- जीवन चरित्र राना सांगा
- जीवन चरित्र राना रतन सिंह व विक्रमाजीत व बनवीर
- जीवन चरित्र महाराना उदय सिंह
- जीवन चरित्र महा राना प्रताप
- जीवन चरित्र राजा पृथ्वी राज व पूरन मल व राज सिंह व आसकरन भीम व भारमल व भगवन्तदास राजगान कछुवाहा आमेर
- जीवन चरित्र महाराजा मानसिंह आमेर नरेश
- जीवन चरित्र राव माल देव रईस आज़म मारवाड़
- जीवन चरित्र राव बीकाजी बीकानेर नरेश

अल्मुश्तहिर

"मुन्शी देवीप्रसाद मुंसिफ़"

(जोधपुर.)

हिन्दुस्तानकाहाल

जो

बाबर बादशाह ने दिल्ली फ़तह करने के

पीछे सन ९३२ (संवत १५८३) में लिखा

हिन्दुस्तान का अनोखापन

हिन्दुस्तान पहिली दूसरी और तीसरी अक़लीम[1] में है चौथी अक़लीम की कोई जगह हिन्दुस्तान में नहीं है अजब बादशाहत है हमलोगों की वलायत से उसका आलम ही निराला है उसके पहाड़. दरिया. जंगल. बन. जानवर. दरख़्त. आदमी. बोली. हवा. और मेंह. सब दूसरी ही तरह के हैं काबुल के आस पास में जो गर्म इलाक़े हैं वे बाज़ी बातों में तो हिन्दुस्तान से मिलते हुवे हैं और बाज़ी बातों में नहीं भी मिलते. सिंध नदी के किनारे से ही ज़मीन. पानी. पेड़. पत्थर. क़ौम और क़बीले राह. रसम. सब हिन्दुस्तानी ढंग के हैं.

उत्तर का पहाड़ (हिमालय) या सवालख

ऊपर का लिखा हुआ उत्तर का पहाड़ सिंध नदी से निक-

(१) यूनानी हकीमों ने पृथ्वी के ७ विभाग मानकर सब देशों को उनमें बांट दिया है.

ता हुआ कशमीर की तर्फ़ चलागया है इसमें कशमीर के ता बे की विलायतें हैं जैसे परबली और सहमनक. इनमें से अ भी तो बहुत सी कशमीर की ताबेदारी में नहीं हैं मगर पहि ले थी कशमीर से आगे इस पहाड़ में बहुत ही क़ौम क़ बीले वलायतें और परगने हैं बंगाले और समरक़ंद तक यह पहाड़ चलागया है.

पहाड़ी लोग

हिन्दुस्तान के आदमियों में से जो लोग इस पहाड़ में रहते हैं उनके बाबत बहुत ही पूछ ताछ कीगई मगर कोई आदमी उन लोगों की सही ख़बर नहीं देसका इतना ही क हा कि इन पहाड़ के रहने वालों को केस (खेस या खस) कहते हैं मैंने अपने दिल में कहा कि हिन्दुस्तान के आद मी "श" को "स" बोलते हैं और इस पहाड़ में बड़ा शहर कशमीर (कसमेर या खासमेर) है मानो ख़सियों का पहा ड़। क्योंकि मेर पहाड़ को कहते हैं और खसिया इस पहा ड़ के आदमियों का नाम है कशमीर के सिवाय दूसरा शहर पहाड़ के नाम से सुनाभी नहीं गया है इसलिये होसकता है कि कसमेर कहागया है कस्तूरी, दरयाई, क़ूनास, केसर, सीसा, और तांबा इन लोगों की जमा पूंजी है.

इस पहाड़ को हिन्दुस्तान के आदमी सवालख बोल ते हैं हिंदी ज़बान में सौ हज़ार और उसकी चौथाई को स वालाख बोलते हैं और पहाड़ को परबत कहते हैं जिसके मायने १२५ हज़ार के हुवे इन पहाड़ों में से बर्फ़ कभी अल

ग नहीं होती हिंदुस्तान की बाज़ी विलायतों से जैसे कि ना
हार, सरहिंद, और इस्माईल हैं यह पहाड़ बर्फ़ से सफ़ेद दि
खाई देता है यही पहाड़ काबुल में हिंदूकुश कहलाता है औ
र काबुल से दक्षिण दिशा में झुकता हुवा पूर्व को चलागा
या है इसके दक्षिण में तो कुल हिन्दुस्तान ही हिन्दुस्तान
है इस पहाड़ के और इन नामालूम खस लोगों के उत्तर में
तिब्बत की विलायत है.

दरिया.

इसपहाड़ से दरिया निकलकर हिन्दुस्तान में बहते हुवे
जाते हैं सरहिंद के उत्तर में ६ दरिया जो सिंध, भट, चनाब
रावी, ब्याग (ब्यासा) और सुतलज हैं इसी पहाड़ से नि-
कले हैं मुलतान के पास ये सब सिंध में मिलकर सिंध के
नाम से पुकारे जाते हैं और पश्चिम की तर्फ़ जाकर ठठ्ठे की
विलायत में होते हुवे समुन्दर में मिलजाते हैं.

इन ६ दरियाओं के सिवाय और दरिया भी जमना,
गंगा, रहत, कोड़ी, सरू, और गंडक, जैसे बहुत हैं जो
सब गंगा से मिलकर गंगा कहलाते हैं और पूर्व की तर्फ़
जाकर बंगाले की विलायत में होते हुवे समुंदर में गिरते हैं
इन सब दरियाओं का खज़ाना यही सवालख पहाड़ है.

और भी कई दरिया हैं जैसे चंवल, ब्यास, (बनास)
बनबाप (पुन पुन) और सोन जो हिंदुस्तान के पहाड़ों में से

(१) इसी से इस पहाड़ का नाम संस्कृत में धवलगिर है।

निकले हैं। इन पहाड़ों में बर्फ़ बिलकुल नहीं होती है औरये दरिया भी गंगा में मिलजाते हैं.

हिन्दुस्तान के और पहाड़

हिन्दुस्तान में और भी पहाड़ हैं उनमें १ पहाड़ उत्तर से दक्षिण को चलागया है इस पहाड़ का सिरा दिल्ली की बिलायत में सुलतान फ़ीरोज़शाह की इमारत जहांनुमा के पासहै जो १ पहाड़ी पर बनी है दिल्ली की तलहटी में तो यह पहाड़ छोटे २ टुकड़ों में इधर उधर बिखर कर बड़े २ पत्थरों के पहाड़ बनाता है और जब मेवात की बिलायत में पहुंचता है तो यही टुकड़े बहुत बड़े होजाते हैं मेवात से निकलकर बयाने की बिलायत में चलेजाते हैं. सीकरी, बाड़ी और धोलपुर के पहाड़ भी इन्हीं पहाड़ों मेंसे हैं गवालियर जिसे गालयूर भी लिखते हैं उसके पहाड़ भी इसी पहाड़ के बच्चे हैं. रणथंभोर, चीतोड़, मंडू और चंदेरी के पहाड़ भी इसी पहाड़की नसें हैं ये कई २ जगह ७ । ८ कोस तक बीच में से फ़ेंढ़गयेहैं और फिर नीचे २ होकर मिलभी गये हैं इन पहाड़ों में पत्थर और जंगल हैं इनपर बर्फ़ कभी नहीं बरसती है हिन्दुस्तान में कई दरियाओं के ख़ज़ाने यही पहाड़ हैं.

हिंदुस्तान की अकसर बलायतें मैदानो और चोरस ज़मीनों में हैं इतने शहर और इतनी बिलायतें हिंदुस्तान में है पर कहीं बहता पानी नहीं है यहां बहता पानी यही दरिया हैं बाज़े शहरों में जहां ऐसे मौके थे कि नहर खोदकर पानी निकाला जावे पानी भी लाये हैं बाज़ी जगह काले पानी भी हैं

इससे कई बातें होसकती हैं एक यही है कि वहां के खेतों और बाग़ों को पानी देने की बिलकुल हाजत नहीं होती है.

खारवें और सिंचाई.

खरीफ़ की फ़सल (सावनुसाख) की पैदावार तो मेंह के पानी से होजाती है. और अचंभे की बात है कि जो रबी (ऊंधालु साख) को मेंह का पानी नहीं पहुंचे तोभी होजाती है पोदों को एक दो साल तक रहट या डोल से पानी निकालकर देते हैं फिर पानी देने की ज़रूरत हरगिज़ नहीं होती है हां बाज़ी तरकारियों में पानी देना पड़ता है लाहोर, दीपालपुर और सरहिंद वग़ैरा में अरहट से पानी देते हैं जिसके लिये १ बड़ा रस्सा कुंवे के बराबर बटते हैं और रस्सियों में लकड़ियां बांधकर कुछ घड़ियां उन लकड़ियों से बांध देते हैं इन रस्सों और घड़ियों को उस चर्ख़ (रहट) पर जो कुंवे के ऊपर होता है डालकर उसके दूसरे सिरे पर दूसरा चक्कर फिराते हैं उसके किनारे दूसरे चक्कर के किनारों से मिलकर उन घड़ियों वाले रहट को घुमाते हैं जिससे पानी गिरता है नीचे मोरियां बनी होती हैं जिनमें से जिधर चाहते हैं पानी को लेजाते हैं मगर आगरा, बयाना और चंदवाड़, वग़ैरा में डोल से पानी देते हैं और यह बड़ी महनत का काम है और इसमें जोखम भी है कुवें पर दो २ सिरों की लकड़ी गाड़कर उसके बीचमें गलतक (भवन) लगाते हैं लंबी लाव और बड़े डोल (चड़स) को बांधकर उस भवन पर डालते हैं एक सिरा इस लाव का बैल से बांधकर एक आदमी चड़स का पानी गिराता

है बैल बार बार चलकर पानी निकालता है और लाव बैल के चलने के रस्ते से जो गोबर और पेशाब से भरा हुआ है लोटकर कुंवे में पड़ती है बाज़ी खेतियों को ज़रूरत होने पर औरत मर्द घड़ों में पानी खेंचकर सींचते हैं.

वलायत शहर और बाग़.

हिंदुस्तान के मुल्क और शहर बहुत मैले होते हैं उस की तमाम ज़मीनें और बसतियां १ ही ढंड की हैं बाग़ों में दीवारें नहीं होतीं अक्सर जगह मैदान भी हैं बाज़ी हरिया लियों. दरियाओं. और नदियों में बरसात का पानी रुकक र गंदा होजाता है क्योंकि वहां से उसका निकलना मुशकिल होता है और कहीं बाज़े कुंवों में भी पानी के रहने की जग ह होती है इतने बहुत शहर और मुल्क कुवों या कुंडों के पानी पर जो बरसात में भर जाते हैं गुज़ारा करते हैं हिन्दुस्ता न में मुल्को और गावों का आबाद और उजड़ होना एक ही वक़्त में होजाता है इसीतरह बड़े २ शहरों के रहने वा ले जब भागने पर होते हैं तो १ दिन या आधे दिन में ही ऐसे भा गजाते हैं कि उनका कुछ पता या निशान नहीं रहता है औ र जो कहीं बसना होता है तो नहर खोदना या बंदा बांधना न हीं पड़ता बहुत से आदमी इकट्ठे हुवे और टांका बना लि या कुंवा खोद लिया घर बनाने या दीवार उठाने का भी काम नहीं है घास फूस और पेड़ों से जो बहुत सारे होते हैं झोंप ड़े बना लिये फ़ौरन गाँव या शहर बसगया.

जानवर.

हिन्दुस्तान के जंगली जानवरों में से १ फ़ील है जिस को हिन्दुस्तानी हाथी कहते हैं यह कालपी की सरहदों में होता है वहां से पूर्व की तर्फ़ जितने दूर जावें जंगली हाथी ज़ियादा मिलते हैं जिनमें से पकड़ कर भी लाये जाते हैं आगरे और मानकपुर में ३०।४० गांव वालों का काम हाथी पकड़ना ही है वेही हाथी की कचहरी में भी जवाब (रपोट) करते हैं.

हाथी बड़े डील डौल का जानवर है तो भी जैसा कहें और हुक्म दें वह वैसा ही करता है उसका मोल छोटे बड़े होने पर है जैसा होता है वैसा ही बेंच देते हैं पर जितना बड़ा होता है उतना ही ज़ियादा उसका मोल भी होता है ऐसा कहा जाता है कि बाज़े टापुओं में हाथी १० गज़ का होता है मगर इन तर्फ़ों में तो ४।५ गज़ से ज़ियादा कभी नहीं देखा गया.

हाथी का खाना और पीना सब सूंड से होता है ऊपर के २ दो दांत होते हैं दीवार और दरख़्तों को इन्हीं दांतों से ज़ोर करके गिरा देता है लड़ाई और हरएक काम ज़ोर का इन्हीं दांतों से करता है आज अर्थात (हाथीदांत) भी इन्हीं दांतों को कहते हैं हिंदुस्तानियों में इन दांतों की बड़ी क़दर होती है दूसरे जानवरों की तरह बाल और रुयें हाथी पर नहीं होते हिन्दुस्तान के लोगों में हाथी पर बड़ा भरोसा होता है हरेक लशकर वाला अपनी फ़ौज के साथ ज़रूर कई हाथी रखता है हाथी में ताक़त और समझ बूझ भी ख़ूब होती है वह बड़े दरियाओं और तेज़ बहने वाली नदियों से बहुत सा बोझ ले

कर सहज में उतर जाता है दूसरे जिन गाड़ियों को चार पांच
सौ आदमी खेंचते हैं उनको दो तीन हाथी यौंही खेंच लेजाते
हैं मगर उसका पेट बहुत बड़ा है ३। ४ ऊंटों का दाना १ हाथी
खालेता है.

दूसरा गेंडा है यह भी बड़ा जानवर है इसका डील डौल -
३। ४ भैंसों के बराबर होता है उन विलायतों (तुर्किस्तान व
गैरामें) जो बात मशहूर है कि गेंडा हाथी को अपने सींग पर
उठा लेता है सो शायद गलत ही है। उसकी नाक पर १ सींग
होता है जिसकी लंबाई १ बैंत से ज़ियादा होती है २ बैंत की
तो नहीं देखी गई। उसके बड़े सींग से १ किश्ती आबखोरे
की और १ खाली तो बनगई थी और ३।४ किश्ती का टुक
ड़ा और भी पड़ा रहगया था। उसका चमड़ा बहुत मोटा होता
है जोरदार कमान से बगल खोलकर खूब ज़ोर का तीर मारा
जावे तो उसमें ३।४ अंगुल तक बैठ सकता है कहते हैं कि उस
की बाज़ी जगह में चमड़ा ज़ियादा होता है दोनों कांधों से दोनों
आंखों के किनारों तक तो जगह (उस चमड़े से) खाली होती
है दूर से ऐसा मालूम होता है कि जैसे कोई जोड़ पहिने हुए हो
गेंडा दूसरे जानवरों में से घोड़ों के साथ ज़ियादा मिलता हुआ है
जैसे घोड़े का बड़ा पेट नहीं होता वैसे ही इसका भी बड़ा पेट नहीं
है घोड़े में जैसे शितालंग (टखने) की जगह एक ही हड्डी हो
ती है वैसे ही इसके शतालंग की जगह भी है और जैसे घोड़े
के हाथ (अगले पैर) में कोवदूक (लचक) होती है वैसे
इसके हाथ में भी लचक है मगर यह हाथी से ज़ियादा दरा
होता है और उतना पालूकड़ और ताबेदार भी नहीं होजा
ता परशावर (पिशोर) और हस्तगर के जंगलों में गेंडा बहुत

होता है और बीच की वलायत में सरू के पास भी यह सींग मा
रता है हिन्दुस्तान की चढाइयों में परशावर और हस्तगर के
जंगलों में शिकार खेलते वक्त गेंडे ने बहुत आदमियों के सींग
मारे थे १ शिकार में मकसूद नाम चहरे (चेले) के घोड़ों को
अपने सींग से १ तीर के बराबर फेंक दिया था और इसी सब
बसे इसका नाम मर्ग हुआ है.

दूसरे भैंसा बहुत बड़ा जानवर है इसके सींग इस (विला
यती भैंस) की तरह पीछे को मुड़े हुवे हैं मगर चिपके हुवे न
हीं हैं यह बहुत नुकसान देनेवाला और फाड़नेवाला जानवर है.

फिर नील गाय है उसकी ऊंचाई घोड़े के बराबर होती है
पर उससे कुछ पतली है नर नीला होता है इसीसे शायद उस
को नीलगाय कहते हों उसके २ छोटे छोटे सींग हैं और गले
में १ बेल से बड़े कुछ बाल होते हैं और उसका "तबाग" गाय के
बराबर होता है मादीन का रंग गेंडे कासा है.

फिर १ कोतापाचा है जो सफ़ेद हरन के बराबर बड़ा हो
ता है मगर उसके चारों पांव कोताह (ओछे) होते हैं इसलि
ये कोतापाचा कहलाता है उसका सींग गेंडे कासा होता है अ
गर बहुत छोटा। गेंडे की तरह यह भी बर्षा बर्षी अपना सींग गि
रा देता है दौड़ने में बहुत कायर है इसी वास्ते जंगल से नहीं नि
कलता है.

फिर १ नर हरन "कूला" जैसा काली पीठ और सफ़ेद पेटका
होता है पर उसका सींग कूला से बड़ा और खम्दार है हिंदुस्तानी
कालहरा कहते हैं असल में काला हिरन होगा जिसको घटा
कर कालहरा करदिया है। इसकी मादीन सफ़ेद होती है इसी
कालहरे से हरन पकड़ते हैं इसके सींगों में फंदों का जाल बांध

कर पैरों में गेंद से बड़ा १ पत्थर लटका देते हैं जो छोड़ने के पीछे बहुत चलने नहीं देता है फिर जंगली कलहर को देख कर इसे छोड़ देते हैं यह हरन बड़ा लड़ाका होता है फ़ौरन ल ड़ने लगता है और सींगों से लड़कर दूसरे हरन को भगाता है आगे पीछे आने जाने में वह जाल जो इसके सींगों से बंधा होता है उस जंगली हरन के लिपट जाता है और फिर जब वह भागना चाहता है तो यह पालोकड़ हरन उसको नहीं भागने देता है और जो पत्थर उसके पैरों में बांधा जाता है वह इसे भी भागने से रोकता है। इस तरकीब से बहुत से हरन पकड़ लेते हैं और पा लकर उसी तरह दूसरे हरनों को पकड़ने के लिये उनके भी जाल लगाते हैं इन पाले हिरनों को घर में लड़ाते हैं जो खूब लड़ते हैं.

हिन्दुस्तान के पहाड़ों की तलहटियों में १ हिरन बहुत छो टा भी होता है जिसकी लंबाई १ बर्ष के बकूली के बराबर हो ती है इसका मांस बहुत नर्म और मज़ेदार है.

एक कावक नाम छोटा जानवर और होता है पर वला- यत के बड़े तूकचार के बराबर.

फिर मेंमूं हैं जिसे हिंदुस्तानी बंदर कहते हैं यह भी कई तरह का होता है १ तो वह जिसे उन विलायतों (तूरान वग़ैरा में) लेजाते हैं और बाज़ीगरी सिखाते हैं दरे नूर के पहाड़ों, सफ़ेद पहाड़ की तलहटियों, खैबर की घाटियों, और उससे बहुत नीचे हिंदुस्तान में होता है पर उनसे ऊपर की जगहों में नहीं होता उसके बाल पीले मुंह सफ़ेद और पूंछ लंबी होती है.

एक और तरह का बंदर है जो स्वात और बाजोड़ में देखाजाता है वह उन बंदरों से जिनको उन वलायतों में लेजा ते

हैं बहुत बड़ा होता है उसकी दुम बहुत लंबी होती है बाल सफ़े
द और मुंह बिलकुल काला. ऐसे बंदर को लंगूर कहते हैं ये हि
न्दुस्तान के पहाड़ों और जंगलों में पैदा होता है.

एक तरह का बंदर और भी है जिसका मुंह, बाल, औ
र सब बदन काला होता है इसको समंदर के टापुओं से लाते हैं.

एक और क़िसम का बंदर टापुओं से लाया जाता है
उसका रंग नीला और पीला पोस्तीन के मुवाफ़िक होता है
और सिर भी चौड़ा होता है बदन भी दूसरे बड़े बंदरों से बड़ा
होता है यह बहुत काटने वाला होता है.

फिर नौला है जो छोटे कैस (१ जानवर) से छोटा है
दरख़्त पर भी चढ़ जाता है हम इसको मुबारक समझते हैं.

एक और क़िसम का चूहा होता है जिसे गलहरी कह
ते हैं यह हमेशा दरख़्तों पर रहता है दरख़्तों के ऊपर और
नीचे लगा हुआ बड़ी तेज़ी से दौड़ता है.

पखेरू

उड़नेवाले जानवरों में से मोर बहुत रंग और रूप का
जानवर है मगर उसका बदन ऐसे रंग और रूप के लायक न
हीं है कुलंग के बराबर होता है मगर कुलंग के बराबर ऊंचा
नहीं होता नर और मादीन के सिर में २३ पर होते हैं जिनकी
ऊंचाई २।३ उंगल की होती है मादीन में कुछ रंग और रूप
नहीं है नर का रंग चमकते हुवे सोसनी और गला नीले रंग
का होता है गरदन से नीचे पीठ पर पीले नीले और भी कई
रंगों के बूटे होते हैं जिनसे बड़े बूटे वैसेही रंगों के पीठ के नी

वे दुमनक हैं इन रंगीन परों के नीचे १ छोटी सी दुम भी दूस
रे जानवरों के दुम के मुवाफ़िक होती है ऊपर की दुम सो
भाऊ है। कंधों के ऊपर लाल पर होते हैं थोड़े २ मोर तो आ
दमी के क़दके बराबर होता है जो बाजोड़, स्वात, और
उनसे नीचे तो मिलता है ऊपर कुनड़ और लमगानो वग़ै
रा में और कहीं नहीं। उड़ने में करगावल से भी भद्दा है ए
क दो दफ़े से ज़ियादा नहीं उड़ सकता उड़ न सकने से ही पहा
ड़ों में रहता है जबकि आदमी के बराबर ऊंचा उड़उड़ कर
१ जंगल से दूसरे जंगल में जाता है तो गीदड़ से क्यों नहीं चो
ट खाता होगा.

मोर का मांस अबूहनीफ़ा(१) के मज़हब में हलाल है
बे मज़ा नहीं है तीतर के मांस से मिलता हुआ है मगर ऊंट
के मांस की तरह नफ़रत से खाया जाता है.

फिर एक तोता है जो शहतूतों के पकने पर नेकनि(२)
हार और लमगानों में आता है दूसरी रुतों में नहीं आता तो
ते भी कई तरह के होते हैं एक वह है जिसको उन वलाय
तों में लेजाते हैं और बोलना सिखाते हैं.

दूसरे भी १ छोटी जातिका १ और छोटा तोता होताहै
उसको भी बोलना सिखाते हैं इस जाति के तोते को जंग-
ली कहते हैं जो स्वात, बाजोड़, और उन तर्फ़ों में बहुत हो
ता है पांच पांच और छै छै हज़ार का एक एक दल उड़ता
फिरता है इन तोतों और उन तोतों में बदन का तो बहुत फ़र्क़

(१) मुसलमानी धर्म शास्त्र का १ आचार्य।

(२) काबुल का १ परगना।

है मगर रंग दोनो का एकही तरह का होता है।

एक किसम का तोता इस जंगली तोते से भी छोटा होता है उसके सर के बाल भी लाल होते हैं मगर पूंछ पर दो उंगल तक सफ़ेदी होती है इसी जाति में से कईयों की पूंछ भी लाल होती है ये तोते बोलते नहीं हैं. इनको कश्मीरी तोते कहते हैं

एक और भी तोता जंगली से छोटा लाल चोंच का होता है वह बातें करना खूब सीख लेता है.

मैं ख़याल किया करता था कि तोते और मैना जो कुछ सीखते हैं वही कहदेते हैं अपनी अक़ल से कोई बात-ख़याल करके नहीं कहसकते मगर इन दिनों में अबुलक़ासिम जलायर ने जो मेरे पास के नोकरों में से है अजब बात कही कि इस किसम के १ तोते का पिंजरा छुपा दिया गया था तोते ने कहा कि मेरा मुंह खोलदो मेरा सांस घुटने लगा है एक बार जब उसको नदी के किनारे पर टांग रक्खा था आदमी बैठे हुवे थे मुसाफ़र चलेजाते थे तोते ने कहा लोग चलेगये तुम नहीं जाते हो। यह बात सच्ची हो या झूठी सो तो कहने वाला जाने परन्तु जबतक कोई अपने कान से न सुनेले यक़ीन नहीं करसकता.

एक तरह का तोता और भी बहुत अच्छे रंगों का होता है लाल रंग के सिवाय दूसरे रंग भी उसमें होते हैं मगर वे अच्छी तरह से याद नहीं रहे थे इसलिये तफ़सीलवार नहीं लिखे गये वह बहुत खूबसूरत तोता है उसको बोलना भी सिखाते हैं मगर यह एब भी है कि टूटे हुवे चीनी के बरतनों को तांबे के थालपर रखने में जैसी भोंडी आवाज़ आती है वैसी ही इसकी भी बोली होती है.

फिर १ मैना है यह लमगानों में बहुत होती है और वहां से नीचे हिन्दुस्तान में और भी बहुत होती है इसको कन्द्रि सभें हैं सिर काला, पीठ सफ़ेद. बदन कलचिड़ी से बड़ा होता है देर में बोलना सीखती है.

उसमें की १ जाति को बंदावी कहते हैं बंगाले से लाते हैं रंग काला और बदन भी कुछ छोटा होता है चोंच और पांव पीले. दोनो कानों से चमड़ा कुछ लटका हुआ. यही बदसूरती है इसको भी बोलना सिखाते हैं. खूब बोलती है और साफ़ बोलती है.

इससे पतली एक और भी मैना होती है जिसकी आंखें लाल होती हैं वह बोलने वाली नहीं होती उसे शारक कहते हैं

मैंने जिनदिनों गंगा पर पुल बांधकर दुशमनों को भगाया था तो लखनऊ, अवध, और उनतर्फों में एक क़िसम की शारक देखी थी जिसकी छाती सफ़ेद, सिर चितकबरा और पीठ काली। ऐसी शारक कभी नहीं देखी गई थी इस जाति का जानवर शायद बोलना नहीं सीखता है.

फिर १ नोजा है इसको बूकलमूं भी कहते हैं सिर से दुम तक ५।६ रंग कबूतर के गले की तरह से चमकते हुवे रहते हैं "कबक दरी" के बराबर होता है शायद यह हिन्दुस्तान का कबकदरी है जैसे कबकदरी (चकोर) पहाड़ों की चोटियों पर फिरा करता है यह भी फिरता है काबुल की वलायतों में से परवराद के पहाड़ों और उन से नीचे के पहाड़ों में भी सब जगह होता है वहां से ऊंची जगह पर नहीं होता। अजब चीज़ है कहते हैं कि जब जाड़ा पड़ता है तो पहाड़ों की तलहटियों में उतर आता है बहुत लोग ऐसा भी कहते हैं

कि जब अंगूर के बाग़ से निकलता है तो फिर उड़ नहीं सकता तब उसे पकड़ लेते हैं खाने के जानवरों में से है उसका मांस बहुत मज़ेदार होता है.

फिर तीतर है पर वह हिंदुस्तान में ही है और दूसरी जगह ऐसा नहीं है गर्म वलायतों में सबही जगह होता है मगर उसकी कई जातियों के जानवर हिंदुस्तान के सिवाय दूसरी वलायतों में नहीं होते हैं इसलिये मैंने उसका भी बयान किया है उसका बदन ऊंचाई में कुलंग के बराबर होता है पीठ के परों का रंग जंगली मुरग़ियों के रंग से मिलता हुआ, गला और छाती सियाह और उसमें सफेद २ तिल आंखों में दोनों तर्फ़ लाल डोरे पड़े हुवे. इसतौर से बोलता है कि " शरदार मश करक " उसकी बोली में सुनाई देता है- "शर" तो धीमा और "दार मशकरक" पूरा निकलता है. इस्तराबाद के तीतर " हीतूनी लार" कहकर बोलते हैं अर्बस्तान और उस तर्फ़ के तीतर " बिलशुक्र, तदूमा. उलन. अम" बोलते हैं मादीन का रंग जवान करगावल के रंग से मिलता हुआ होता है जो बखराद से बहुत नीची होती है.

एक और जानवर तीतर जैसा होता है जिसको कंजल कहते हैं उसका बदन भी तीतर जैसा होता है उसकी बोली चकोर से बहुत मिलती है मगर वह इससे बहुत तेज़ होता है नर और मादे के रंग में फ़रक़ कम है वलायत परशावर. हस्तनगर. में और उसके नीचे के मुल्कों में भी होता है ऊपर की वलायतों में नहीं होता

फिर १ बलबकार है जो चकोर के बराबर बड़ा होता है डीलडौल पलाऊ मुरग़े कासा होता है रंग भी

मुरग़ियों कासा लिलाड़ से छाती तक लाल। यह हिन्दुस्तान के पहाड़ों में होता है.

फिर १ जंगली मुरग़ा है इसमें और घर के मुरग़ों में यही फ़रक़ है कि यह जंगली मुरग़ा करग़ावल की तरह गोड़ता है.

फिर घर का मुरग़ा है यह रंग रंग का नहीं होता बाजोड़ के पहाड़ों से नीचे तो होता है ऊपर नहीं होता एक तरह का कलकार बाजोड़ के पहाड़ों में भी होता है जिसका रंग बहुत अच्छा होता है.

फिर १ ख़ासा है जो घरेलू मुरग़ों के बराबर होता है और भांति भांति के रंगों का। यह भी बाजोड़ के पहाड़ों में मिलता है.

फिर १ पोदना है जो हिन्दुस्तान का ही जानवर नहीं है पर उसकी कई क़िसमें ऐसी भी हैं जो हिन्दुस्तान में ही होती हैं जैसे १ पोदना है जो उन वलायतों में जाता है और वहां के पोदने से बड़ा और मोटा होता है १ और पोदना है जो वलायत में जाने वाले पोदने से बहुत छोटा होता है इसकी टांगें और चूंच लाल रंग की होती हैं और चरखल की तरह से झुंड में उड़ता है ऐसा ही १ और पोदना है जिसके गले और छाती में सियाही ज़ियादा होती है और भी १ छोटा सा पोदना है जो काबुल में कम कम जाता है काज़े से कुछ बड़ा होता है काबुल में उसको कोरातू कहते हैं.

फिर १ चरखल (पक्षी) है जो तूगदाक़ के बराबर होता है शायद यह हिन्दुस्तान का तूग़दाक ही है. इसका मांस बहुत मज़ेदार होता है कई पंखेरुओं की जांघ अच्छी होती

है कार्ड का औरअंग, मगर इसके सब बदन के मांस में ही मज़ा है

फिर १ जुर्रा है उसका बदन तोगदरी से कुछ बड़ा पर कुछ पतला होता है नर की पीठ तोगदान कीसी होती है और छाती काली, मादीन एक ही रंग की होती है जुर्रे का मांस भी बहुत लज़्ज़तदार होता है जैसे चरख़ल तोगदान से मिलता हुआ होता है वैसे ही जुर्राह तोग़दरी से मिलता हुवा है।

फिर १ "बाग़री करा" हिन्दुस्तान का है जो उधर के बाग़री करा से छोटा और पतला होता है.

पानी और पानी के किनारों में रहने वाले परेवरू.

फिर वे परेवरू हैं जो पानी और पानी के किनारों में रहते हैं उनमें से १ बतंस बड़े डील डौल का जानवर है उसके पर और पांव आदमी के क़द के बराबर होते हैं उसके सिर और गले में बाल नहीं होते गले में थैली जैसी १ चीज़ लटकी रहती है पीठ काली और छाती सफ़ेद । कभी २ काबुल में चला जाता है १ साल असी कदमीक से पकड़ लाये थे खूब हिलगया था उसको देने के वास्ते जो मांस फेंका जाता था उसे चोंच से ले लेता था कभी नीचे नहीं गिरने देता था १ दफ़े ६ नालों का जूता और १ बार १ जंगी मुर्ग़े को परों समेत खागया.

फिर १ सारस है यह हिन्दुस्तान में जितना बड़ा होता है और जगह नहीं होता इसको नूरबह कहते हैं ढीक से छोटा होता है घरमें भी खूब हिल जाता है.

फिर १ मसकसा है क़दमें सारस के बराबर मगर बदन में बहुत छोटा बगलक (बुगले) से मिलता हुआ लेकिन उससे बड़ा और चोंच भी उसकी चोंच से लंबी और काली सिर सौसनी गलासफ़ेद पर चितकबरे.

फिर १ बगलक (बुगला) है जिसकी गरदन सफ़ेद है और तमाम बदन काला बलायतों में भी जाता है.

बगले से छोटा लगलग है जिसको हिन्दुस्तानी बक और बेक कहते हैं.

एक और लगलग है जिसका रंग और डौल लग लगों कासा होता है और उन वलायतों में भी जाता है इ सकी चोंच काली और सफ़ेद होती है और उन लगल गों से छोटा भी है.

फिर १ और जानवर है जो बुगले और लगलग दो नों से मिलता हुआ है उसकी चोंच बुगले से लंबी और ब ड़ी होती है और बदन लगलग से छोटा.

फिर १ बरककला है जो बगले के बराबर होता है उसकी पीठपर, और पांव उससे ऊंचे होते हैं.

और १ सफ़ेद बरक कला काले सिर और काली चोंच का होता है विलायतों में भी जाता है हिन्दुस्तान के बरक कलां से छोटा है.

फिर १ और पानी का पखेरू है जिसे गरमपा कहते हैं सोना पोचीन से बहुत बड़ा होता है नर और मादीन दो नों एक ही रंग के होते हैं हश्तनगर में हमेशा होता है कभी लमग़ानों में भी चला जाता है बरके से कुछ ऊंचा और हिन्दुस्तानी बरक से छोटा नाक उठी हुई छाती सफे

द पीठ काली। आंख मज़ेदार.

फिर एक रम्हा है जो लोरकोट के बराबर काले रंग का होता है.

फिर एक और सार होता है जिसकी पूंछ और पीठ काला होती है.

फिर एक आला करगा हिंदुस्तान का है जो वलायत के आला करसवान से कुछ पतला होता है और छोटा और गले में थोड़ी सी सफ़ेदी होती है.

फिर एक जानवर और बबराय नाम गक्के से बहुत मिलता हुआ है लयगानों में उसे जंगल का मुरगा कहते हैं सिर और छाती काली. पंख और पूंछ बहुत लाल.। उड़ने में मज़ा होने से जंगल को नहीं छोड़ता है इसलिये इसको जंगल का मुरगा कहते हैं.

एक और रात को उड़ने वाला बड़ा जानवर है जिसे चमगादर बोलते हैं उससे भी १ बड़ा चमगादर और है जो चपालाग के बराबर होता है उसका सिर सूअर कुत्ते का सा है जिस पेड़ पर रहने का विचार करता है उसकी १ डाली पकड़ कर औंधा लटक जाता है और यह एक अनोखापन है.

फिर १ हिन्दुस्तानी गक्का है जिसे मैना कहते हैं गक्के से ताब भाव छोटा होता है गक्का काला अबलक़ है और यह भूरा अबलक़.

फिर १ और जानवर एक है जो सामदूलाग और ममोले के बराबर लाल रंग का होता है परों में कुछ कालोंछ भी रहती है.

फिर एक मकर-करछा है काल-दगाज़ से मिलता हुआ पर उससे कुछ बड़ा इकरंग काला.

फिर १ कोयल है जिसकी लंबाई कव्वे के बराबर होती है और उससे कुछ पतला. इस तौर से बोलता है कि मानो हिंदुस्तान का बुलबुल यही है हिन्दुस्तान के आदमियों के नज़दीक भी बुलबुल के बराबर ही आदर पाता है और जिन बाग़ों में घने दरख़्त होते हैं वहां रहता है.

फिर एक और जानवर शक़राक़ की शक्ल कासा होता है पेड़ों पर लिपटा फिरता है शक़राक़ के बराबर होता है और उसका रंग तोते जैसा हरा है.

दरयाई जानवर.

पानी के जानवरों में एक शेर आबी (पानी का शेर) है जो भीलों में होता है और केलश से मिलता हुआ, कहते हैं कि आदमी बल्कि भैंस को भी पकड़ लेगया है.

फिर १ सयार है यह भी केलश की शकल का होता है हिंदुस्तान के सब दरियाओं में होता है एक को पकड़ कर लाये थे ४।५ गज़ लंबा था इससे भी बड़ा होता है उसकी चोंच आध गज़ से ज़ियादा लंबी और नीचे की चोंचों में बारीक २ दांतों की पंक्तियां थीं यह पानी के किनारों पर निकल कर सोया करता है।

फिर पानी का सूर है यह भी हिन्दुस्तान के सब दरियाओं में होता है इसको भी पकड़ कर लाये थे ४।५ गज़ लंबा होगा इससे बड़ा भी होता है इसकी भी चोंच (थुथनी)

आध गज़ की थी पानी से १ बार निकलता है मगर सिर नहीं दिखाकर फिर पानी में चला जाता है दुम दिखती रह ती है इसकी चोंच भी सियार (सीसार) कीसी होती है और वैसे ही उसमें दांत भी परऔर बदन मछली कासा हो ता है पानी में खेलता हुआ मशक जैसा दिखाई देता है स ह नदी में जो पानी के सूर होते हैं वे खेलते वक्त पानीसे पानी से बिलकुल निकल आते हैं लेकन यह तो मछ ली की तरह कभी भी बाहर नहीं आता है.

फिर एक घड़ियाल है यह बहुत बड़ा होता है सर नदी में लशकर के बहुत से आदमियों ने इसको देखा था यह भी आदमियों को पकड़ता है जिनदिनों हम सरू के किनारे पर थे तो एक दो आदमियों को पकड़ लेगया था गाजीपुर और बनारस में वहां के ३।४ आदमियों को पक ड़ा था इसी इलाक़े में मैंने घड़याल को दूरसे देखा मगर खूब जांच कर नहीं देखागया.

फिर एक किलका मछली है जिसके दोनों कानों के पास २ हड्डियां निकली हुई होती हैं जो एक एक उंग ल लंबी होती हैं पकड़ते वक्त वह इनदोनों हड्डियों को हिलाती है जिनसे अजब तरह की आवाज़ निकलती है शायद इसीबात से उसको किलका कहते हैं.

हिन्दुस्तान की मछियां मज़ेदार होती हैं उनमेंकां टे भी कम होते हैं यह अजब चालाक मछलियां हैं एक द फ़े १ पानी में २ तर्फ़ से जाल डाले हुए थे जो हर तर्फ़ को पानी से १ गज़ ऊंचे थे तोभी मछलियां जालों से एक एक गज़ ऊंची कूद कूद कर निकल गईं हिन्दुस्तान के कई २

तालावों में छोटी २ मछलियां भी हैं जो कड़ी आवाज़ या पांव की आहट होने पर फ़ौरन पानी से एक गज़ या आधा गज़ कूदकर निकल आतीं हैं.

फिर मेंडक हैं लेकिन ये मेंडक पानी के ऊपर ७.।८ गज़ दौड़ते हैं.

हिन्दुस्तान के फल

हिन्दुस्तान में जो फल होते हैं उन में से १ आम है जिसको नग़ज़क कहते हैं अमीर खुसरो ने कहा है कि बाग़ों को अनोखापन देनेवाला हिन्दुस्तान के मेवों में अनोखा हमारा नग़ज़क है यह खुशबूदार होता है बहुत खाया जाता है मगर अच्छा कम होता है कच्चे को तोड़ लेते हैं घर में पकाया जाता है कच्चा (केरी) खट्टा और बुरा होता है मगर मुरब्बा उसका भी अच्छा होजाता है ग़रज़ हिन्दुस्तान का खूब मेवा यही है इसका पेड़ बहुत बढ़जाता है कई लोगों ने आम की ऐसी तारीफ़ें की हैं कि खरबूज़े के सिवाय सब मेवों से बढ़िया है मगर लोगों की ऐसी तारीफ़ें करने के बराबर नहीं हैं कारदी जाति के शफ़तालू से मिलता हुआ है बरसात में पकता है २ तरह का होता है येक तो वह जिसे दबाकर पिलपिला करके १ जगह में छेद करते हैं और दबा २ कर उसका रस पीते हैं दूसरे को कारदी शफ़तालू की तरह छिलका छीलकर खाते हैं उसका पत्ता भी शफ़तालू से कुछ मिलता है उसका तना (गोड) भोंडा और बेडोल होता है बंगाले और गुजरात

में आम अच्छा होता है॰

फिर १ केला है जिसको अरब लोग मवूज़ कह ते हैं उसका पेड़ कुछ बड़ा नहीं होता है बल्कि पेड़ भी कहा नहीं जासकता घास और पेड़ के बीचमें १ चीज़ है उसका पत्ता असांकस से मिलता हुआ है मगर २ गज़ लंबा और १ गज़ चौड़ा। उसके बीच में दिलकी तरह से १ डाली निकलती है कली का गुच्छा इसडा ली में होता है वह भी बड़ा और बकरी के दिल जैसा होता है फिर जो पत्ता इस गुच्छे में निकलता है उसकी जड़में ६।७ अंकुरों की पंक्ति होती है यही अंकुर केले होते हैं फिर जब वही डाली जिसकी सूरत बकरी के दिल कीसी होती है निकलती है तो उस बड़े गुच्छे के पत्ते भी खुलजाते हैं और केलों की क़तार नज़र आने लगती है केले में २ खूबियां भें हैं १, तो उसका छिलका सहजमें उतारा जाता है दूसरे उसके गूदे में गुठली वग़ैरा कोई चीज़ नहीं होती वह बैंगन से लंबी और पतली १ चीज़ कुछ मीठी होती है॰

बंगाले के केले बहुत मीठे होते हैं केले का पेड़ भी खूबसूरत होता है उसके चौड़े २ पत्ते भी जो अच्छे हरे रं ग के होते हैं बहुत भले दिखाई देते हैं

फिर एक इमली है जिसको हिंदी खुरमा (हिंदुस् तान का छुहारा) कहते हैं उसके पत्ते काले २ बूया के पत्तों से मिलते हुवे हैं मगर उससे बहुत छोटे। यह भी देखने में कुछ अच्छा दरख़्त है बड़ा भी होता है छाया भी बहुत होती है॰

फिर १ महुवा है हिन्दुस्तान की अकसर इमारतें म
हुवे की लकड़ी की होती हैं महुवे के फूल से अरक खेंच
ते हैं और उस फूल को अंगूर की तरह सुखाकर खाते
भी हैं और अरक भी खेंचते हैं किशमिश सें कुछ मिल
ता हुआ होता है और कुछ बद मजा भी। पर उसकी बा
स बुरी नहीं है खा सकते हैं यह जंगली भी होता है.

फिर एक खिरनी है इसका पेड़ बड़ा नहीं होता है तो
छोटा भी नहीं होता फल पीले रंग का होता है संजद से पतला
मज़े में अंगूर से मिलता हुआ पर पीछे जाकर बद मज़ा भी है
तो भी बुरा नहीं है खाया जाता है उसके बीज का छिलका ब
हुत पतला होता है.

फिर जामन है उसका पत्ता ताल के पत्ते जैसा होता है
पर उससे जियादा गोल और जियादा हरा। पेड़ भी खूबसूरती
से खाली नहीं है फल काले अंगूर से मिलता हुआ मगर ब
हुत खट्टा, खूब मज़ेदार नहीं है।

फिर कमरक है पाँच पहलू का होता है गीनालू के ब
राबर बड़ा और ४ उंगल लंबा पककर पीला होजाता है इ
समें भी गुठली नहीं होती कच्चा टूटा हुआ बहुत कड़वा हो
ता है उसकी खटाई सवाद लगती है बुरी और बेमज़ा न
हीं है।

फिर कटहल है यह बहुत बुरी शक्ल और बुरे मज़े का
मेवा है उसकी सूरत ऐनमैन बकरी की ओजड़ी जैसी है ज
नकि कीपा की तरह अंदर से बाहर को उलट दिया गया हो
उसका मज़ा मीठा है उसके भीतर फिंदक के मुवाफ़िक छुहारे
से मिलते हुवे दाने होते हैं मगर वे दाने गोल होते हैं लंबे

नहीं होते उनमें कम गूदा छुहारे से बहुत नर्म होता है इसको खाते हैं मगर यह चिपचिपा बहुत होता है जिससे कोई २ आदमी मुंह और हाथों में चिकनाई लगाकर खाते हैं. कटहल डाली में भी लगता है और पेड़ में भी, बल्कि जड़ में भी। ऐसा मालूम होता है कि पेड़ से बहुत कीपा लटका दिये हैं.

फिर १ बड़हल है जो सेव के बराबर बड़ा होता है उसकी बास बुरी नहीं है अजब पिलपिला और बे मज़ा मेवा है।

फिर एक बेर है फ़ारसी में इसको कुनार कहते हैं यह कई तरह का होता है आलूचे से कुछ बड़ा है एक बेर हुसेनी अंगूर के डोल का भी होता है वह अकसर अच्छा नहीं होता मैंने बांदे में १ बेर देखा था जो बहुत अच्छा था वृष और मिथुन (जेठ असाढ़) में इसके पत्ते झड़ जाते हैं और कर्क (सावन भादोंमें जबकि बरसात का भर होता है फिर पत्ते फूटकर हरा भरा होजाता है और फल कुंभ तथा मीन (माह फागुन) में पकता है।

फिर एक करौंदा है इसका पौदा हमारी विलायत के जक़े के पौदे से मिलता हुआ है जक्का पहाड़ों में होता है और यह जंगलों में। इसका मज़ा मरमीखान से मिलता है पर यह उससे ज़ियादा मीठा है और रस में कम.

फिर १ बेसाला (शायद फालसा) है अलूचे से बड़ा कच्चे सुर्ख सेब से मिलता हुआ मज़े में खट्टा पर कुछ अच्छा इसका पेड़ अनार से ऊंचा जाता है और पत्ते बादाम के पत्तों जैसे मगर कुछ उभरे हुवे.

फिर १ गूलर है जिसका फल पेड़ में निकलता है अं

और से मिलता हुआ होता है पर अजब बेमज़ा है.

फिर आमला है वह भी पंच पहलू होता है कसीली और बे मज़ा १ चीज़ है पर उसका मुरब्बा बुरा नहीं है बहुत फ़ायदे का मेवा है उसका पेड़ ख़ूब सूरत होता है.

फिर एक चिलग़ोज़ा है उसका पेड़ पहाड़ी होता है इस की मींगी बुरी नहीं है अख़रोट और बादाम के बीच की १ चीज़ है बहुत छोटी और गोल.

फिर १ खजूर है इसका पेड़ लमगा .... भी होता है उसकी डालियां चोटी पर इकट्ठी रहती हैं और उसके पत्ते भी डाली की जड़ से .... तक दोनों तर्फ़ लगते हैं उसका पेड़ खड़दड़ा और बदरंग होता है फल अंगूर से मिलता हुवा. पर अंगूर कुछ बड़ा होता है कहते हैं कि बनासपती में खजूर की २ बातें जानदारों से मिलती हुई हैं एक तो यह है कि जैसे किसी जानदार का सिर काट डालने से उसकी जिंदगी खतम होजाती है वैसे ही खजूर का सिर काटदेने से पेड़ भी सूख जाता है दूसरे जैसे जानदारों में नर के बग़ैर बच्चा नहीं होता है वैसे ही नर खजूर की डाली लाकर मादीन खजूर में जोड़ने से फल लगता है पर इस बात का भेद मालूम नहीं है.

खजूर में जहां से डाल पात निकलते हैं वह जगह सफ़ेद होती है और उसमें १ सफ़ेद चीज़ पनीर (फटे हुवे दूध) जैसी निकलती है वहां चीरा लगाकर उसमें पत्ते को इसतौर से जोड़ देते हैं कि उस चीरे में से जो रस निकलता है वह उस पत्ते पर होकर घड़े में गिरता है जिस पेड़ पर बांध देते हैं यह रस उसी वक़्त खाया जावे तो मीठा सा पानी है

और जो ३। ४ दिन पीछे खावे तो नशीला होजाता है १ दफ़े जबकि मैं बाड़ी को गया था तो उन गाँवों को जो चंबल नदी पर थे देखता १ एक घाटी पर पहुंचा वहां वे लोग मिले जो इस तरह खजूर का रस निकाला करते हैं मैंने थोड़ा सा रस खाया मगर नशा न हुआ शायद बहुत खाना चाहिये कि जिस से नशा मालूम हो·

फिर नारगील है जिसे अरबलोग नारजील और हिन्दुस्तानी नारयल कहते हैं इसकी काशें (खापें) करते हैं बड़ी काली काश (नारेली) का पियाला भी बनाते हैं इसका पेड़ वैसा ही है जैसा खजूर का होता है फ़रक़ यही है कि नारयल की डाली में पत्ते ज़ियादा होते हैं पत्तों का रंग भी चमकीला होता है जैसे अखरोट के ऊपर हरा छिलका होता है वैसा ही इसके ऊपर भी हरा छिलका रहता है मगर इसके छिलके पर रेशा (जट) होता है तमाम जहाजों और नावों के रस्से इसी जट के बटे जाते हैं जब नारियल का छिलका उतार लिया जाता है तो उसपर एक तर्फ़ को सूराख़ की तिखूटी जगह जाहिर होती है जहां थोड़े से इशारे में छेद होजाता है और अंदर जो पानी खोपरे के जमने से पहिले होता है वह इस छेद से निकल आता है इसको पीते हैं मज़ा बुरा नहीं है जैसा खजूर के गूदे का रस बनाया हो·

फिर १ ताड़ है ताड़ की डालियां भी उसकी चोटी पर होती हैं ताड़ पर भी घड़ा बांधकर खजूर की तरह रस लेते हैं जिसको ताड़ी कहते हैं इसका नशा खजूर के रस से तेज़ होता है ताड़ की डालियों में १ और १।। गज़ तक कोई पत्ता नहीं होता है फिर ३०।४० पत्ते १ जगह से फूटकर डालीभर

निकलते हैं ये पत्ते लंबाई में १ गज़ के क़रीब होते हैं इनमें हिंदी खतों को दफतर के तौर पर बहुत लिखते हैं हिंदुस्तान के आदमी जो अपने कानों के चौड़े छेदों में पहनने को कुछ नहीं होतो इन पत्तों के कुंडल बनाकर पहनते हैं और इन्हीं ताड़ पत्रों की चीजें कानों में पहिनने के लिये बना कर बाज़ारों में भी बेचते हैं ताड़ का पेड़ खजूर से बढ़कर सुंदर और सुडौल होता है।

फिर नारंगी और नारंगी से मिलते हुवे मेवे हैं नारंगी लमगानों में बहुत छोटी और नाफ़दार (नाभीवाली) होती है जो बहुत नर्म नाज़ुक और रसीली होती हैं और खुरासान की नारंगी से उसको कुछ लगाव नहीं है वह ऐसी कोमल होती है कि लमगानों से काबुल तक १३। १४ फ़रसंग (४० मील) आने में ही बाज़ी नारंगियां खराब होजाती हैं और इस्तराबाद (ईरान) की नारंगियां जिनको समरकंद में लाते हैं २७०। २८० फ़रसंग (८१०। ८४०) मील पर भी मोटा छिलका और कमरस होने से नहीं बिगड़ती हैं बाजोड़ की नारंगियां बिही के बराबर होती हैं उनमें रस भी बहुत होता है. पर यह दूसरी नारंगियों से खट्टा ज़ियादा होता है।

ख्वाजा कलां ने कहा कि मैंने बाजोड़ में ऐसी नारंगियों के १ पौदे को लेकर गिना तो ७.००० नारंगियां निकलीं.

मेरे दिल में हमेशा यह बात आया करती थी कि नारंगी का नाम नारंज अरबी के तौर पर बनाया हुआ सा है सो ऐसा ही निकला क्योंकि बाजोड़ के लोग नारंज को नारंग कहते हैं.

फिर एक नीबू है यह बहुत होता है और मुरगी के अंडे के बराबर बड़ा और डोल में भी वैसा ही। इसकी जड़ को जो ज़हर खाया हुआ आदमी ओटाकर पीले तो ज़हर का विकार दूर होजावे.

फिर नारंगी से मिलता हुआ एक और तुरंज है स्वात और बाजौड़ के लोग उसको बालंग कहते हैं उसका मुरब्बा होता है. हिन्दुस्तानी तुरंज को आलजोर (बिजोरा) कहते हैं यह २ तरह का होता है एक मीठा और सीठा, दूसरा कड़वा, मीठा खाने में नहीं आता है मगर उसके छिलके का मुरब्बा बनता है लमगानों के तुरंज इसी तौर के मीठे और कड़वे हैं मगर हिन्दुस्तान के तुरंज खट्टे होते हैं उनका शरबत बहुत सवाद और मज़ेदार होता है तुरंज छोटे खरबूज़े के बराबर होता है छिलका खड़खड़ा और ऊंचा नीचा.

फांक पतली और नोकदार होती है रंग नारंगी से पीला. पेड़ भी बड़ा नहीं होता बहुत छोटा और बूंटा बूंटा होता है मगर पत्ता नारंगी से बड़ा.

फिर नारंगी से मिलता हुवा १ मेवा संगतरा है तुरंज से कुछ छोटा। इसका छिलका भी साफ़ होता है खरदड़ा नहीं इसका पेड़ जर्दालू के बराबर बड़ा होता है पत्ता नारंगी से मिलता हुवा यह ख़ूब खट्टा होता है और शरबत भी ख़ूब सवाद और मज़ेदार बनता है यह भी नीबू के मुवाफ़िक़ हाज़िमे को बढ़ाने वाला है नारंगी की तरह घटाने वाला नहीं.

नारंगी से मिलता हुआ फिर १ बड़ा लीमू है जिस

को हिन्दुस्तान में गलगल कहते हैं डौल में तरवसम का जा से मिलता हुआ मगर तरवसम की तरह दोनो तर्फ़से पतला नहीं है छिलका भी संगतरे कासा चिकना होता है अजब रसीला फल है.

फिर १ चीज़ नारंगी से मिलती हुई और भी है जिसका डौल भी नारंगी कासा ही है मगर रंग बहुत पीला. नारंगी नहीं है तो भी उसकी बास नारंगी जैसी है और खट्टी खूब होती है.

फिर १ सदाफल नारंगी जैसा ही है डौल अमरूद कासा. और रंग बिही कासा. मीठा होता है मगर नारंगी जैसा खट मिट्ठा नहीं.

फिर नारंगी जैसा ही अमरू फल है.

फिर नारंगी जैसा करना भी है जो गलगल नींबू जितना बड़ा होता है यह अधखट्टा है.

फिर नारंगी से मिलता हुआ अमलबेद है इस बरस तो अभी देखने में नहीं आया है कहते हैं कि सुई उसमें डालदेवें तो पानी होजावे। शायद ज़ियादा खट्टा होने से ऐसा होता हो या उसकी ख़ासियत ही ऐसही हो उसकी खटाई भी नारंगी और नीबू के बराबर होगी उसकी उमदा किसमों में से कमला है जो हाजीपुर और बंगाले में होता है. मज़ा मीठा खटाई लिये हुवे बहुत ही मज़ेदार है वलायत पर हाला और उनतर्फ़ों में भी कुछ ऐसे ही कमले होते हैं मगर वैसे मज़े के नहीं.

फिर एक नारंगी और है जो हाजीपुर जैसे ६ गांवमें होती है. कुछ मीठी. बल्कि खटमिट्ठी. इसकी खटाई

और मिठाई बराबर की ही है.

फूल.

हिन्दुस्तान के फूलों में से १ जासून है बाज़े हिंदुस्तानी उसको गुड़ल भी कहते हैं घास नहीं है पौदा है जिसमें संटियां होती हैं फूल गुलाब से बड़ा होता है उसका रंग अनार के फूल से गहरा और गुलाब से बड़ा। मगर गुलाब तो कली में १ दफ़े ही फूलता है और यह और यह जासून जब फूल चुकता है तो उसी फूल में से फिर दिल जैसी १ चीज़ निकलती है और उसमें से फिर फूल जैसी पंखड़ियां निकल आती हैं यों तो ये दोनो एक ही फूल हैं लेकिन बीच में से दिल की तरह १ चीज़ निकलकर उन्हीं पंखड़ियों में दूसरा फूल फूलजाना अनोखे पन से खाली नहीं है यह फूल पेड़ पर बहुत रंगीला और सुहाना लगता है पर बहुत नहीं ठहरता १ दिन में ही मुरझा कर गिर पड़ता है बरसात के ४ महीनों में बहुत और बहुत खूब खिलता है शायद साल भर में और भी बहुत दफ़े खिलता हो मगर इतना बहुत नहीं.

फिर १ कनेर है वह सफेद भी होता है और शफ़तालू जैसा लाल भी। ५ पंखड़ियों का होता है लाल कनेर शफ़तालू के फूल से कुछ मिलता है मगर कनेर के फूल १४।१५ इकट्ठे खिलते हैं और दूर से १ बड़े फूल के मुवाफ़िक़ दिखाई देते हैं इसका बूटा गुलाब के बूटे से बड़ा होता है लाल कनेर के फूल में कुछ बास भी रहती है औ

र कुछ भला भी लगता है यह भी बरसात के ३।४ महीनों में बराबर फूलता है और साल भर में भी अकसर पायाजाता है.

फिर १ केवड़ा है उसकी शकल अजब तरह की है तो भी उसकी खुशबू बहुत भीनी होती है अरब लोग कावी कहते हैं मुशक (मुशक वेद) में यह ऐब है कि उसमें कुछ सूखापन होता है इसलिये इसको तर मुशक कह सकते हैं बहुत पाकीज़ा खुशबू रखता है फूल की लंबाई डेढ़ बालिश्त (बेंत) की होती होगी और पत्ते तो और भी लंबे होते हैं इस फूल में कांटे भी होते हैं वह गुंचे (गुच्छे) की तरह गठा हुआ होता है ऊपर के पत्ते हरे और उनमें कांटे भी बहुत होते हैं अंदर के पत्ते सफ़ेद और नर्म होते हैं अंदर के पत्तों में "मयानगी हाय" के मुवाफ़क १ शकल (भुट्टा) होता है यह शकल मालूम नहीं क्या है इसकी फ़ारसी मालूम नथी इसलिये इसी तौरसे लिखदिया है। यह १ चीज़ होती है। जिसमें से खुशबू आती है। नरसल के नये निकले हुवे बूंटे से मिलती हुई है मगर इसके पत्ते उससे चौडे हैं और कांटेवाले। तना (गोड़) बहुत खड़्ड़ा और जड़ें भी निकली हुईं.

फिर १ केतकी भी केवड़े से मिलती हुई है मगर कुछ छोटी मगर कुछ छोटी और रंग भी ज़ियादा पीला और खुशबू भी बहुत हलकी.

दूसरे फूल गुलाब और नरगिस वग़ैरा जो वलायत में हैं वे सब हिंदुस्तान में भी होती हैं.

फिर सफ़ेद यासमन भी होती है इसको चमेली कहा

[illegible] विलायतों की चमेलियों से बड़ी भी है और खुशबू भी ज़ियादा है.

फिर १ गुलचंपा है इसका पेड़ बहुत बड़ा और सुडौल होता है और इस फूल की खुशबू भी बहुत खूब है गोया बनफ़शा और नरगिस की खुशबू का मिला हुआ एक अतर है रंग पीला और शकल में सोसन से मिलता हुआ.

फ़सलें

उन विलायतों में ४ फ़सलें होती हैं और हिन्दुस्तान में ३ ही. ४ महीने गरमी के, ४ बरसात के, ४ जाड़े के. महीने चांद के हिसाब से शुरू होते हैं हर तीसरे वर्ष १ महीना बरसाती महीनों पर फिर ३ वर्ष में १ जाड़ों के महीनों पर और ऐसे ही ३ बर्षों में १ महीना गरमी के महीनों पर बढ़ाते हैं यह इनका लोंद है.

चैत, बैसाख, जेठ और असाढ़ जो गरमी के महीने हैं मीन, मेष, वृष और मिथुन से, बरसाती महीने सावन, भादों, कुंवार और कातिक, कर्क, सिंह, कन्या और तुला से, और जाड़ों के महीने अगहन, पोस, माह, और फागुण, वृश्चिक, धन, मकर, और कुंभ की (संक्रांतों) से मुताबिक़ हैं.

हिन्दुस्तानी आदमियों ने जो फ़सलों को ४। ४ महीनों पर ठहराया है हर फ़सल के २।२ महीनों को गरमी बरसात और जाड़े के दिनों पर लगाया है, जेठ और असाढ़ जो २ पिछले महीने गरमी के हैं गरमी के दिन कहे जाते हैं बरसात के महीनों में से २ पहिले महीने श्रावन और भादों, को बरसात के दिन और जाड़े के २ बिचले महीने पोस माह को जाड़े के दिन माने हैं इसतौर से ६ फ़सलें (ऋतु) होजाती हैं.

दिनों के नाम सनीचर, इतवार, सोमवार, मंगलवार, बुध

वार. बृहस्पतिवार. और शुक्रवार रखे हैं.

घंटे घड़ी और पहर

जैसे हमारी वलायत में रातदिन को २४ हिस्से करके १ हिस्से का नाम १ सायत (घंटा) रखा है और १ सायत को ६० में बांटकर हरएक हिस्से को दक़ीक़ा कहा है रातदिन के १४४० दक़ीक़े होते हैं १ दक़ीक़ा ६ मरतबे बिस्मिल्लाह समेत फ़ातहा पढ़ने के बराबर है कि १ दिनरात में ८६४० दफ़े फ़ातिहा बिस्मिल्लाह समेत पढ़ सकते हैं। और हिन्दुस्तान के लोगों ने रातदिन को ६० हिस्सों पर बांटकर एक हिस्से को १ घड़ी कहा है फिर दिनके ४ और रात के ४ हिस्से करके हरएक हिस्से का नाम १ पहर रखा है जिसको फ़ारसी में पास कहते हैं उस वलायत में पास और पासवान (पहरेवाले) सुने जाते थे मगर ऐसे खास तौर के मालूम न थे कि जैसे हिन्दुस्तान के तमाम बड़े शहरों में बहुत से लोग मुकर्रर हैं जो घड़ीयाली कहलाते हैं.

घड़याल.

घड़याल १ चौड़ी चीज़ पीतल की ढली हुई थाली के बराबर है उसका दल २ अंगल का होता है इस पीतलको घड़याल कहते हैं और ऊंची जगह पर लटकाते हैं फिर १ कटोरी रखते हैं जो सायत (घंटे) के प्याले के बराबर होती है जिसके नीचे १ छेद होता है और वह हर घड़ी पानी से भरजाती है घड़ियाली घड़ीघड़ी इस कटोरी को पानी में डालकर देखते रहते हैं दिन निकलने पर जब वह एक दफ़े भरजाती है तो घड़याल पर १ मोगरी मारते हैं और दूसरी दफ़े २, पहर होने तक इसी तरह घड़ी २ मारा करते हैं जब पहर पूरा होजाता है तो मोगरी को जलदी २ मारकर घड़याल बजाते हैं जो

वह पहिला पहर है तो कुछ देर ठहरकर १ और बजादेते हैं दूसरे पहर पर २ तीसरे पहर ३ चौथेपर ४ फिर। दिन तो पूरा होजाता है रात को भी इसी तरह १ पहर से शुरू करके ४ पहर रात के भी पूरे करते हैं पहिले घड़ियाली इसी तरह रातदिन में पहरे के पूरे होते ही उसके पहिचान की गिनती बजादेते थे मगर रात को जब आदमी जागते थे तो उन को ३ घड़ी और ४ घड़ी बजती सुनकर यह मालूम नहीं होता था कि दूसरा पहर या तीसरा, इसलिये मैंने हुक्म दिया कि रात की और दिन की घड़ियों के बजाने के पीछे भी पहर की पहिचान के वास्ते घड़ियाल बजा दिया करें जैसे पहिले पहर की ३ घड़ी बजाने के पीछे कुछ देर ठहरकर पहर की निशानी के लिये एक और बजावें कि जिससे मालूम होजावें कि यह ३ घड़ी पहिले पहर की और तीसरे पहर पर ४ घड़ी बजाने के पीछे भी पहर की पहिचान के वास्ते ३ और बजादें। यह बहुत अच्छा हुआ कि अब जो कोई रात को नींद से जागता है तो घड़याल की आवाज़ सुनते ही जान लेता है कि कितनी घड़ी कितने पहर पर बजी हैं.

फिर १ घड़ी ६० हिस्से पर बांटी हुई है हर हिस्से का नाम पल रात दिन के ३६०० पल होते हैं और पल का प्रमाण पलक मारने का है जो रातदिन में २ लाख १६०० आंख झपकने के बराबर है हिसाब करने से १ पल ८ दफ़े कुल्हु अल्लाह् बिस्मिल्लाह् समेत पढ़ने के क़रीब है और रातदिन २८३०० दफ़े कुल्हु अल्लाह बिस्मिल्लाह् समेत पढ़ने के बराबर है.

तोल

हिन्दुस्तान के आदमियों ने तोल का भी १ क़ायदा बां धा है ८ रत्ती का मासा, ४ मासे का टांक जो ३२ रत्ती का होता

है पांच मासे का १ मिसकाल (४० रत्ती का) ६४ तोले का १ सेर फिर यह बंधी बात है कि हर जगह ४० सेर का मन होता है और १२ मन की मानी और १०० मानी का १ सनासा। मोती और जवाहरात को टांक से तोलते हैं।

गिन्ती

हिन्दुस्तानियों ने गिनती भी खूब निकाली है १०० हजार को १ लाख कहते हैं, १०० लाख को १ करोड़. १०० करोड़ को १ अरब. १०० अरब को १ खरब. १०० खरब को १ नील १०० नील को १ पदम. और १०० पदम को १ संख। दूसरी गिन्ती ठहराने से हिन्दुस्तान में बहुत माल होने की दलील पाई जाती है.

हिन्दुस्तान के आदमी.

हिन्दुस्तान के अकसर आदमी काफ़िर होते हैं हिंदुस्तानी आदमी काफ़िर को हिंदू कहते हैं हिंदू अकसर तनासुखी (आवा गमन को मानने वाले) हैं आमिल (हाकिम) ठेकेदार और कारगुज़ार (काम करने वाले) सब हिंदू हैं हमारी वलायतों में जंगलों के फिरने वाले आदमियों के नाम कबीलों पर हैं* फिर जो कारीगर है वह पीढ़ी दर पीढ़ी वही काम करता आता है.

* और यहां वलायतों और गांवों में रहने वालों के उन्हीं के ऊपर नाम हैं

हिन्दुस्तान में नहीं.

हिन्दुस्तान कम लताफ़त (ताज़गी मज़ेदारी) का है उसके लोगों में रूप नहीं मिल बैठने की खूबी नहीं. आना

जाना नहीं, तबिअत (दानाई) नहीं, समझ नहीं, अक्ल नहीं, बखशिश नहीं, मुरव्वत नहीं, उसको कारीगरियों और कामों में हिसाब नहीं, डौल नहीं, नापतौल नहीं। घोड़ा खूब नहीं मांस अच्छा नहीं अंगूर खरबूजे और मेवे अच्छे नहीं बर्फ़ नहीं ठंडा पानी नहीं, बाजारों में अच्छे खाने नहीं अच्छी रोटी नहीं हम्माम नहीं मदरसे नहीं शमा (बत्ती) नहीं, मशाल नहीं शमेदान नहीं शमे और मशाल की जगह बहुत से चीकटये लोग होते हैं जिन्हें दीवटी कहते हैं जो बायें हाथ में १ छोटा तिपाया पकड़े रहते हैं जिसके ३ पायों में से १ पाये में शमेदान की सिरे की तरह से १ कीला लोहे का गड़ा होता है उस्से और दूसरे पाये से बेक टीला सा पलीता अंगूठे के बराबर बांधते हैं और सीधे हाथ में १ कद्दू (कुप्पी) रखते हैं जिसमें १ तंग सूराख होता है जहां से तेल की पतली धार गिरती है जब उस पलीते पर तेल डालना होता है तो उस कुप्पी में से डालते हैं ऐसी दीवटें वे लोग सौ सौ दो दो सौ रखते हैं जो शमे और मशाल की जगह काम में लाते हैं उनके बादशाहों और अमीरों को जब रातों में शमे का काम पड़ता है तो मैले कुचैले दीवटिये इस दिये को लाकर उनके पास खड़े होजाते हैं।

दरियाओं और नदियों के सिवाय पहाड़ की तलहटियों और झीलों में बहता पानी नहीं बागों और मकानों में बहती नहरें नहीं इमारतों में सफ़ाई हवा डौल और नाप नहीं रैयत और छोटे आदमी सब नंगे पांव फिरते हैं और लंगोटा कहकर १ चीज़ बांधते हैं जो नाभी से २ बैंत नीची आड़ी लटकी रहती है इस लत्ते के नीचे फिर १ लत्ता और होता है

जिसको दोनो जांघों मेंसे पीछे को निकालकर लंगोटे में खु
ड़स लेते हैं इनकी औरतें १ लुंगी (सारी) बांधती हैं जो आधी
तो कमर मे बंधी रहती है और आधी सिर पर डाल लेती हैं.

हिन्दुस्तान में जो खूबी है वह यही है कि बड़ी वलायत
है सोना चांदी उसमें बहुत है उसकी बरसात की हवा बहुत खू
ब होती है कभी २ ऐसा दिन भी होजाता है कि १०।१५ दफ़े
मेंह बरसता है यहां के मेहों मे १ दम में पानी के रेले आजाते हैं
जहां कुछ भी पानी नहीं होता वहां दरिया बहने लगता है। बरस
ने और गरमी हुई जगह में खड़े होने से हवा अजब अच्छी
लगती है हवा न बहुत गर्म होती है न बहुत ठंडी मगर एब यही
है कि बहुत गीली और रसीली होती है उस वलायत की कमा
नों से भी बरसात में तीर नहीं माराजाता निकम्मी होजाती हैं
कमान नहीं जीवा (बकतर) किताब कपड़े असबाब वग़ैरा
सब में सील पहुंच जाती है इमारत भी बहुत नहीं ठहरती है.

बरसात के सिवाय जाड़े और गरमी में भी हवायें अच्छी
होती हैं. मगर उत्तर की हवा हमेशा उठती है खाक धूल इतनी उ
ड़ती है कि एक दूसरे को नहीं देखसकते इसको आंधी कहते
हैं।

गरमियों में बृष और मिथुन (जेठ असाढ़) के महीने
बहुत गर्म होते हैं मगर उतने बेढंगे गर्म नहीं होते जितने किं
धार और बलख़ के होते हैं वहां की आधी गरमी के बराबर
यहां गरमी होती है.

एक दूसरी खूबी यह है कि हर पेशे और कारीगरी के क
रने वाले लोग बेहद और बेशुमार हैं हर काम और हर चीज़
पर बहुत से कारीगर लगे हुवे हैं जो बाप दादों से उसी चीज़

बाबर नामे का शुद्ध पत्र ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	का	११	३	[illegible]	चेला

मी रोज़ काम करते थे। और यहां एक आगरे में [illegible]
रे के सिलावटों में से ६८० आदमी मेरी इमारतों में हररो-
ज़ काम करते थे फिर आगरा. सीकरी. बयाना. धौलपु-
र. गवालियर. और कौल में १४९१ सिलावट हर रोज़ मेरी
इमारतों में काम बनाते थे इसी तौर से हर पेशे और हर का-
म के आदमियों का हिंदुस्तान में पार और अंत नहीं है.

जमा.

ये विलायतें जो बहीरे से बिहार तक अब मेरे पास हैं ५२ करोड़ की हैं जिसकी तफ़सील यह है कि २८ करोड़ के परगने तो कई राव और राजों के कबज़े में हैं जिन्होंने क़दीम से ताबेदारी करके इन परगनों को इस्तक़ामत (१) (हमेशा) के तौर पर पाया है.

हिन्दुस्तान से. उसकी जगह और ज़मीन से. उस के लोगों से. उसकी ख़ासियतों और कैफ़ियतों से. जो कुछ कि मालूम और तहक़ीक़ हुआ था वह लिखा गया और फिर भी अगर लिखने के लायक कोई चीज़ नज़र आई या सुनाने के लायक कोई बात सुनी गई तो वह

(१) सदासर्वदा।

जिसको दोनो जाघों मेंसे पीछे को निकालकर लंगोटे में खु
डस लेते हैं इनकी औरतें १ लुंगी (सारी) बांधती हैं जो आधी
तो कमर मे बंधी रहती है और आधी सिर पर डाल लेती हैं.

हिन्दुस्तान में जो खूबी है वह यही है कि बडी वलायत
[illegible]

सूचना

इस वृतांत में बाबर बादशाह ने हिन्दुस्तान की हरेक चीज़ की अ
पने देश की चीज़ से तुलना की है इसीलिये तुर्की भाषा के नाम औ
र शब्द लिखने पड़े हैं जिनका अर्थ ठीक २ मालूम न होने से वि
शेष टीका और टिप्पणी नहीं होसकी है पाठक क्षमा करें औ
र सज्जनता से इस बात को अपने ध्यान में रखें कि मैंने अपने
देशी भाईयों को बिदेशी बादशाहों की रीति और नीति का कुछ
ज्ञान होने के लिये यह अनुबाद यथा साध्य यथार्थ रूप से कि
या है और अपनी तरफ़ से कुछ पलेथन नहीं लगाया है ॥

देवीप्रसाद.

जोधपुर.

पृ.	पं.	अ.	शु.	पृ.	पं.	अ.	शु.
२९६	१०	वर	पर	३२९	२२	८३॥	९३॥।
"	१२	फेर दिवा	फेर दिया	"	२६	१८७५	८७॥
२९८	१०	चो	को	"	२८	२११०८	२०९।=
२९९	२२	करांगी	करोंगी	"	"	स्मीना	सीना
"	२३	तातार खं	तातार खां	३३१	२०	देखस	देखसु
३०७	१	खबर	खबरें	"	२१	कोल	कौल
३०९	५	तरबेल	सरवत	३३२	१३	नं	ने
३१०	२५	सोक्षम	सोक्षम	"	"	हो	ही
"	२६	पुल	हाल	"	२१	कोरवी	कौरवी
३११	१९	उचा	ऊंचा	"	२३	गवरीद	खरीद
"	२०	तराग	तराश	३३४	३	वी	थी
३१२	१९	उतर	उत्तर	३३५	३	१	
३१३	६	है	हैं	"	८	मकाम	मकान
"	१२	नीचे	नीची	"	१०	१४	१४ जनवरी
३१७	२३	हैहोह	बड़ी ही	"	१९	बेठा	बेटा
"	२५	से	में	"	"	का	को
३२०	२२	खाने	रवाने	३३७	२०	रहेव	रहेने
३२३	१५	डोरा	डोड़ा	"	२२	या	था
३२५	१९	खाने	रवाने	३३८	५	तो	जो
३२६	१३	चास	घासदाना	"	२१	गुमवार	गुरुवार
३२७	२४	१८७५	१८७॥	३३९	७	वा	चो
३२८	३	कंठी	कंदी	"	८	जावगेन	जाकीन
"	३	फरु	फर्रु	"	१५	पहर	पहरबादशाह
"	४	व	य	"	१७	ठकेला	ढकेला
"	५	साने	सोने	३४०	१३	ओर	ओर
"	२२	वक	वक्त	३४१	६	फरवरी	फरवरीको

पृ॰	पंक्ति	अशु॰	शु॰	पृ॰	पंक्ति	अशु॰	शु॰
३४२	७	वही	वही	३५०	१८	स्नाय	साय
"	१५	आोव से	आये से	३५१	२०	उपली	उछली
३४३	२	गगा	गंगा	३५२	२५	उसको	उसकी
३४५	२५	किंनार	किनारे	"	३१	सलाह	सलाहकी यह सलाह
"	"	सुता आ	सुकाम हुआ	३५४	२३	सवकर	सुनकर
"	"	ही	ही कोस	"	२५	ठहर	ठहर
३४६	३	कुनार	कुनार	३५७	२	मर	मरकुधर
"	४	रवा	रखा	३५८	१	साय	सास
"	८	गये थ	गये थे	३५९	३	घूगा	लूगा
"	११	गस:	गमि	"	६	लठ	जम
"	१६	तो।न	सोन	"	२३	कह	कर
"	१७	नाव	नाव	३६०	२१	चही	वही
"	२१	कुनारके	कुनारकी	३६१	२५	या	था
"	२४	कहेरलव	कदेरलव	३६५	५	ऊार	ऊपर
"	२५	को	की	३६७	१	जिन	जिन्हें
३४७	८	के	से	"	१०	१२	६
"	६	वलो	चली	"	२५	नदी	नहीं
"	११	आही	आरही	३६८	२०	भेजा	सेजे
"	१२	सो	सी	३६९	८	असरोह	असरो हे
"	१३	घ	थे	३७०	२	याया	सा था
"	१४	लवफो	उलफी	"	"	सा	सो
"	२५	सेया	सेजा	"	२०	सेजा	सेजा
"	"	गवा	गया	"	२१	सुदी	सुदी
३४९	१५	किनारे	किनारे पर	३७३	१७	और	वह
३४९	२	सेजा	सेजा	३७५	१५	कुले में	कुले
"	[illegible]	कुंको	कुंकी	३७६	[illegible]	उनपर	उनपर